कुमारपाळ राजानो रासः



दुहा ॥ श्री सरसति भगवति नमुं ॥ बुद्धि तणी दातार ॥ मूरखने पंडित करे ॥ करत न लावे वार १ ॥ आगळ पंडित जे हुआ ॥ वर्त्तमान कहेवाय ॥ वळि पंडित जे होइसे ॥ ते सरसति सुपसाय २ ॥ मूरख छाली चारतो ॥ नहिं मुख वयण विलास ॥ तेहने तूठी कालिका ॥ कीधो काळीदास ३ ॥ तिम मुजने सुप्रसन हुवो ॥ सुमति दियण सरसत ॥ मुज मन कमल विकास कर ॥ हंसासण द्यो मत्त ४ ॥ मति दे माता मुज भणी ॥ हुं सेवूं तुज पाय ॥ मुज वयणे रस आपजे ॥ सहुने जेम सुहाय ५ ॥ सज्जन माणस गोठडी ॥ मीठा बोली नार ॥ मीठा भोयण सरस वयण ॥ सहुने प्यारां च्यार ६ ॥ सुलळित सरसा शुभ वयण ॥ सरसति द्यो ततकाळ ॥ तुज सुपसाए वरणवुं ॥ कुमारपाळ भूपाळ ७ ॥ रिषभ वीर विचमे हुआ ॥ उत्तम नरना वृंद ॥ पण इण सरिखो जोवतां ॥ न हुवो कोइ नरिंद ८ ॥ दया पळावी जेण नृप ॥ देश अटार मझार ॥ उत्तम कारज आचरयां ॥ कीधा पर उपगार ९ ॥ जिन सासन

दीपावीओ ॥ कहिशु तास चरित्र ॥ सावधान थइ सां
भळो ॥ थाशे श्रवण पवित्र ॥ १० ॥

ढाळ. ॥ चोपाइनी देशी. ॥ लाख जोयण जंबु प
रिमाण ॥ दक्षिण भरत क्षेत्र तिहां जाण ॥ देश तिहां
दीपे गुजरात ॥ आंबादिक फळ नव नव भात १ ॥
गुण गिरुओ तिहां नवसे गाम ॥ दहीथळी छे तेनो
नाम ॥ गढ मंदिर उंचा आवास ॥ लोक सुखी रिद्धिनो
निवास २ ॥ जिन मंदिरने पोषधशाळ ॥ श्रावक धर्म
करे सुविशाळ ॥ श्री जिनवर पूजे त्रिण काळ ॥ ध्या
वे नहि कोइ आळपंपाळ ३ ॥ राज करे तिहां त्रिभुवनपा
ळ॥ चार गामनो ते भूपाळ ॥ कसमीरदेवी राणी तास ॥
विनयवती मुख मधुरी भाष्य ४ ॥ तास तणी कूखे उप
न्या ॥ त्रणि पूत्र आगर रुपना ॥ अवर सुता तेने थइ
दोय ॥ नाम कहु सुणज्यो सहु कोय ५ ॥ कुमारपाळ
महिपाळ कृतपाळ ॥ ए त्रणे सुत अति सुकमाळ ॥ प्रेम
ल देवळ रूपे रंभ ॥ देखी सहुने हुवे अचंभ ६ ॥ निज
भुज बळ वरतावी आण ॥ त्रिभुवनपाळ जाते चहुआण
॥ तिण कुळ हुओ कुमर नरिंद ॥ दीपायो कुळ जेम
दिणंद ७ ॥ चौलकवंशी अभिनव इंद ॥ दीपे जिम

तारामे चंद ॥ गुरु श्री हेमाचारिय तास ॥ श्रावक कीधो धरी उलास ८ ॥ कुमारपाळ किम पाम्यो राज्य ॥ धर्म तणां किम कीधां काज ॥ पाटण किम लीधो संपराण ॥ अरियण किम मनावी आण ९ ॥ किम कीधा वळि परउपगार ॥ अढार देश पळावी अमार ॥ श्री जिनभुवन कर्यां केटलां ॥ बिंब भराव्या जिनवर भला १० ॥ बिंब प्रतिष्टा किणि परे करी ॥ किम संघवि थयो उलट धरी ॥ संघ भगति किणि जुगते करी ॥ केटला वरस राज धुर धरी ११ ॥ किणि परे भमियो देश विदेश ॥ अरिथी किम ऊगरयो नरेश ॥ पहिलि ढाळ एटलो सहु ॥ कहि जिनहरष आगळ हवे कहु ॥ १२ सर्व गाथा १२ ॥

ढाळ २ जी.

दुहा ॥ चौलकवंशे नृप हुअड ॥ कल्प कुवज अवनीश ॥ कल्याणक पुर भोगवे ॥ गाम लाख छत्रीश १ ॥ किण एक अवसर करि कटक ॥ लीधो गुज्जर देश ॥ संग्रामे जयसिरिवरि ॥ मारयो पुहवि नरेश २ ॥ देश भळावी सेवकां ॥ निज पुर पुहुतो राय ॥ राज्यकाज सुख भोगवे ॥ पूरव पुन्य पसाय ३ ॥ पनरमे

पाट भुअडने ॥ कुमारपाळ भूपाळ ॥ भुअड रायनी पुत्रिका ॥ मीणलदे सुकमाल ४ ॥ कंचुकथाने आ पियो ॥ वेटीने गुजरात सकळ चारित्र कहु हवे ॥ सां भळज्यो तजि वात ५ ॥

ढाळ. ॥ कपुर होवे अति उजळोरे ॥ ए देशी ॥ गुज्जर देश मांही भलोरे ॥ देश अवल वढियार ॥ गाम तिहां पंचासरोरे ॥ लोक सुखी दातारर १ ॥ भवियण सुणज्यो ए अधिकार ॥ कुमारपाळ भूपाळनोरे ॥ सफळ होशे अवताररे ॥ भ० २ ॥ सीलंगसूरी आव्या तिहारे ॥ वहु मुनिवर परिवार ॥ आचारज गुण उजळारे ॥ चरण करण भंडाररे ॥ भ० ३ ॥ निरवद्य थानक उतरयारे ॥ पाळे पंचाचार ॥ धर्म तणी दे देशनारे ॥ पडिवोहे नरनाररे ॥ भ० ४ ॥ देह चिंताए एक दिनरे ॥ पहुता वनह मझार ॥ झोळी दीठी झूलतीरे ॥ एक झाडमे तिणि वाररे ॥ भ० ५ ॥ वाळक ते मांहे रमेरे ॥ रुपे देवकुमार ॥ शुभ लक्षण अंग जेहनेरे ॥ दीपे जिम दिनकाररे ॥ भ० ६ ॥ जिण तरु

दीठी मायडीरे ॥ रुपसुंदरी तस नाम ॥ गुरु पुछी सहु वातडीरे ॥ ते नारीने तामरे॥ भ० ८ ॥ रुपसुंदरी कहे रेवतीरे ॥ सुगुरु सुणो गुणवंत ॥ गुज्जर देशनो राजी ओरे ॥ तेह हुतो मुज कंतरे ॥ भ० ९ ॥ भुअड राय ते मारीयोरे ॥ ते वयरी बळवंत ॥ गरभवतीने एकलीरे ॥ नाठी हुं बीहंतरे ॥ भ० १० ॥ इणे वनमां आवी रहीरे ॥ पुत्र जण्यो इण ठाम ॥ हुं इहां अबला एकलीरे ॥ भोजन फळ आरामरे ॥ भ० ११ ॥ ज्ञानी सुगुरु विचारीनेरे ॥ नाम धर्यो वनराज ॥ ए नृप गुज्जरनो हुस्येरे ॥ करस्ये उत्तम काजरे ॥ भ० १२ ॥ माए सुणी गुरु बोलडारे ॥ हरखी चित मझार ॥ कही जिनहरख बीजी थईरे ॥ ढाळ इणे अधिकाररे ॥ भ० १३ ॥ सर्व गाथा ४० ॥

ढाळ ३ जी.

दुहा ॥ गुरु गिरुआ तिहांथी चल्या ॥ आव्या पूरव ठाम ॥ श्रावक जन तेम्ही कह्यो ॥ बाळ चारित्र अभिराम १ ॥ सुणज्यो श्रावक वातडी ॥ इण वनमां एक बाळ ॥ तिहां जइ लावो तेहने ॥ ते थास्ये भूपाळ २ ॥ राजा करसण सुत तुरी ॥ महिपि किर सुदक्ष ॥ वा-

ळरणाथी सेवीए ॥ फळ लहीए परतक्ष ३ ॥ तेह भणी लावो इहां ॥ करो सुगुखा तास ॥ श्रधावंते श्रावके ॥ मानी गुरुनी भास ४ ॥

ढाळ ॥ पहिली भावना भावीएजी ॥ ए देशी ॥ वन मां जइ विवहारीयाजी ॥ लाव्या वाळक तेह ॥ जननी शुं घर राखीयोजी ॥ करि भगति गुण गेह १ ॥ सलुणा सुगज्यो अचरिज वात ॥ सांभळतां रस पामस्योजी ॥ उत्तम नरनी ख्यात ॥ स० २ ॥ ए आंकणी ॥ ते वाळक मोटा थयोजी ॥ किना करे अपार ॥ विवहारी वाळक भणीजी ॥ आपी सबली मार ॥ स० ३ ॥ श्रावक लोक कहे इस्युंजी ॥ घर सरिखो नही यात्र ॥ पोस्यो पन्नग सारीखोजी ॥ एतो थयो कुपात्र ॥ स० ४ ॥ सींह तणो बाळक भलोजी ॥ पण सोभे वन मांह ॥ सहु मिलि तस मायनेजी ॥ वयण कहे इम तांहि ॥ स० ५ ॥ वहेनसुत मोटो थयोजी ॥ विणसि हवे इण ठाम ॥ जइ सेवो कोइ राजवीजी ॥- जिम वाधे तुम्ह माम ॥ स० ६ ॥ राज सेवाथी पामस्योजी ॥ राज्य तणो फळ खास ॥ माय पुत्र लेइ करीजी ॥ पमाउल पास ॥ स० ७ ॥ सूरपाळ छे माउलोजी

॥ लूटे जन पद गाम ॥ ते पासे जाइ रह्योजी ॥ करे चोरिनो काम ॥ स० ८ ॥ देश लुटी वनमां रहीजी ॥ एक दिवश वनराज ॥ जीमण बेठो मायनिजी ॥ भाखे घृत नहीं आज ॥ स० ए ॥ लूखो अन्न भावे नहींजी ॥ लूखे दुखे पेट ॥ लूखे काया लडथडेजी ॥ नासे वळ बुद्धि नेट ॥ स० १० ॥ लूखे आउखुं घटेजी ॥ लूखे तृप्ति न थाय ॥ लूखे रातंधो हुवेजी ॥ लूखे उद्यम जाय ॥ स० ११ ॥ जिणेकारण शास्त्र कह्योजी ॥ घृत भोजननो सार॥ नर मंमण जिम पाघडीजी॥ स्त्री मंमण शिणगार ॥ स० १२ ॥ भोजन मंडण घृत कह्यो जी ॥ घृत कायानो नूर ॥ तपियांनां लोचन वरेजी॥ जो लहे घृत भरपूर ॥ स० १३ घृतसें लागे रुअम्नोजी ॥जेहवो तेहवो अन्न॥ सालि दालि घृत विण न किआ जी ॥ घृत जिमे ते धन्य ॥ स० १४ दध बाळक सहुने गमेजी ॥ घृत अमृत संसार ॥ भीजी ढाळे घृत भलीजी ॥ कहि जिंन हरख विचार ॥ स० १५ सर्व गाथा ५९ ॥ ढाळ ४ थी.

दुहा ॥ घृत पाखे भावे नहीं ॥ बेसि रह्यो वन राय ॥ चाकर नर तेमी कहे ॥ घृत लावो किहां जा

ये १ ॥ घृत लेवा नर संचर्यो ॥ पण पामे नहि छे क ॥ चिहुं दिशे पंथ निहाळतां ॥ पंथी दीठो एक २॥ छे वछियायत वाणियो ॥ घृतनी कूली शीश ॥ देखी सळियायत थया ॥ तूठ्यो सहि जगदीश ३ ॥ ते पासे नर जइ कहे ॥ मूंक कुमली शाह ॥ कुडलियो मूंके नहीं ॥ वळ बांध्यो तिण ठाह ४ ॥ पांच तीर हुता कने ॥ भागी नाख्यां दोय ॥ तिर खेंची कहे आव ज्यो ॥ जो मांटीपण होय ५ ॥ सूंरयो देखी तेहने ॥ नाठा ते ततकाळ ॥ स्याल तणो शो आशरो ॥ सिंह भरे जिहां फाळ ६ ॥

ढाळ ॥ धर्म पखे कुण जीवनीरे ॥ शरणे राखण हार ॥ ए देशी ॥ माण लेइ नाशी गयारे ॥ कायर थया अपार ॥ एकलने तिणे वाणियेरे ॥ नली मनावी हाररे ॥ १ सत्त न मूकीए ॥ सत्ते वाधे मामोरे ॥ सत्ते सुरनर नामे ॥ सत्ते रीझे कामोरे ॥ स० ए आंकणी ॥ बांधी चाले मलपतोरे ॥ कायर नर हथियार ॥ काम पड्या ताकी गलीरे ॥ तासु करी विचारोरे ॥ स० ३ ॥ शंका धोती मां हुवेरे ॥ मूढ गमावीरे लाज ॥ अंव गमी हथियार

दुहा ॥ घर सूरा मठ पंडिया ॥ गंम गमारी गोठ ॥ सत्ता माहि बोलावियों ॥ धटहड धूजे होठ १ ॥

ढाळ पूरवनीज ॥ जे सूरा पूरा हुवेरे ॥ ते झाले हथीयार ॥ जे नर कायर नासणारे ॥ फोकट व हे ते भाररे ॥ स० ५ ॥ सत्यवंत ते वाणियोरे ॥ खांची नाखे तीर ॥ नासी ते घर पहुतलारे ॥ तिलभर न धर्यो धीररे ॥ स० ६ ॥ विनवियो वनरायनेरे ॥ घृत कुडलिओ जाय ॥ पण चलियो ते अति घणुंरे ॥ यत्नो न जाये रायरे ॥ स० ७ ॥ ततखिण तेडयो वाणियोरे ॥ आव्यो जिहां वनराज ॥ घृत देइने बोलियोरे ॥ अरज सुणो माहाराजरे ॥ स० ८ ॥ राज्य योग्य तुं साहिबारे ॥ वगडे फरे किम धीर ॥ राजहंस शोभे न हीरे ॥ वेठो छीछर तीररे ॥ स० ९ चतुर वचन तेह नां सुणीरे ॥ बोल्यो तव वनराय ॥ नहि प्रधान कोइ माहरेरे ॥ जे करे बुद्धि उपायरे ॥ स० १० तुं जो मुज पासे रहेरे ॥ घालुं जमने बाथ ॥ सींह अने वळी पाखरयोरे ॥ वळतो केहने हाथरे ॥ स० ११ पासे ते रह्यो वाणियोरे ॥ बुद्धि तणो महिराण ॥ चोथी ढाळ पुरी थइरे ॥ कहि जिनहरख सुजाणरे ॥ स० १२ स.

र्वे गाथा ७७ ॥

ढाल ५ मी.

दुहा ॥ राज्य किस्यो विण वाणिया ॥ नदी की
सी विण नीर ॥ साह कीस्यो विण दोकने ॥ लाज
किसी विण चीर १ ॥ मद पाखे मेगल किस्यो ॥ तु
री किस्यो विण तेज ॥ दीपक विण मंदिर किस्यो ॥
उंघ किसि विण सेज २ ॥ लूण विना शी रसवती ॥
कंठ विना स्यो गीत ॥ कंत विना शी कामिनी ॥ प्री
ति विना स्यो मीत ३ ॥ नंद मिल्यो वनरायने ॥
प्रबल बुद्धि भंडार ॥ लखमीनो टोटो किस्यो ॥ ले
स्ये राज्य अपार-४ ॥

ढाळ ॥ नगर सुदर्शण अति भलो ॥ एदेशी ॥
भुवन नृपना आदमी ॥ आव्या गुज्जर देश ॥ धन
उघरावी एकठों॥ कीधो सहु शुविशेश ॥भु० १॥ सोनैया
नाणो भलो ॥ लेइ लाख चोवीस ॥ च्यार सयां वा
जी करी ॥ चाल्या धरिय जगीस ॥भु०२॥ लूटी
लियो तिण वाणिये ॥ जोजो तास विवेक ॥ सबल
खजानो कर चढ्यो ॥ राख्या सुहड अनेक ॥भु०३॥
थाणा भाजी रायनां ॥ करी सबळ संग्राम ॥ वद्धि अ

ने दळ आगळो ॥ करे स्वामिना काम ॥भु०४॥ दे
श सहु साध्यो जिणे ॥ वाळी निज गुजरात ॥ भूअ
डराये सांभळ्यो ॥ फरी पूछी नवि वात ॥ भु०५ ॥
गुज्जर देश तणो धणी॥ हुओ नृप वनराय ॥ हरखी क
हे परधानने ॥ जोवो भूमीका कांय ॥भु०६॥ नयर अ
नोपम वासिअे ॥ रहे जेम मुज नाम ॥ परधाने गो
वाळियो ॥ ते तेमाव्यो ताम ॥ भु०७ ॥ तुम्हने पुछुं
भाइओ ॥ चारो तुम्हे गाय ॥ भूमि भली होवे जी
हां ॥ तो अम्हने वतलाय ॥भु०८॥ वयण सुणी व
नरायनां ॥ तव बोल्यो गोपाळ ॥ भूमि भली सूरातमा
॥ आपुं हुं भूपाळ ॥भु०९॥ नृप प्रधान गोवाळियो
॥ आव्या माळि वन मांहि ॥ गोवाळ साथे कूतरो ॥
ससलो तिणे ठाह ॥भु०१०॥ नाठो लुंमी देखिने ॥ धा
यो ससलो केम ॥ कौतिक देखि राजा हस्यो ॥ ते
फिरियो बहु वेम ॥भु०११॥ नासी छूटो कूतरो ॥ स
सिला हुइ जीत ॥ नगर भली इहां थापना ॥ करिशु
भल्ली रीत ॥ भु०१२॥ ठाम जोइ घर आविया ॥ ते
हरख्यो भूपाळ ॥ कहे जिनहरख ए पांचमी ॥ ते क
हि जो भलि ढाळ ॥ भु०१३॥ सर्व गाथा १४. ॥

ढाळ ६ ठी.

दुहा ॥ शुभ दिन शुभ महुरत घडी ॥ शुभ वे
ळा शुभ वार ॥ नगर वसाव्यो नीतिशुं ॥ बार गाउ वि
स्तार १॥ रुडो गढ रळियामणो ॥ मंदिर महल अवा
स ॥ चोरासी चहुटा तिहां ॥ मंडाव्यां अति खास २॥

ढाळ ॥ श्री नवकार जपो मन रंगे ॥ए देशी॥ प
ऊढ पाटण नगर मंडाव्यो ॥ जाणे सूरपूर वासजी॥
लोयण देखी त्रिपति न पामे ॥ गुण केता कहुं तास
जी ॥प०१॥ सोनइया रुपइया केरी ॥ घमे जिहां टं
कशाळजी ॥ माणकचोके झवेरी परखे ॥ माणेक मो
ती लालजी ॥प०२॥ दंतारा दोसीना चउटां ॥ वेचे
वस्त्र अमोलजी ॥ सार पटोळां चीर सुरंगा ॥ नारी
कुंजर ओळजी ॥प०३॥ नाणावटी तिहां नाणां परखे॥
सोनो घमे सोनारजी ॥ गंधियाणां गांधीने हाटे ॥ वे
से वैद अपारजी ॥प०४॥ फांद पंपोळे वेगा हाटे ॥
विवहारीया सुकमालजी ॥ चावे पान हसे रळियाळा
॥ जीमे चोखा दाळजी ॥प०५॥ माळी फुल वेचे तंबो
ळी ॥ वेचे बीडां पानजी ॥ घी वेचे ते घीया सबला
॥ कणिया वेचे धानजी ॥प०६॥ चीतारा जेह चीत्र

आलेखे ॥ कंसारा कुंभारजी ॥ इश्वर गइवरनी अ
ति मोटी ॥ शाळा कीध अपारजी॥प०७॥ त्रिपोळियो
पुर मध्य विराजे ॥ नाचे जिहां नट नाटजी ॥ रशि
या राग आलापे रुमा ॥ गुण कहे चारण भाटजी ॥
प०८॥ वरण अढार वसे विगताळा ॥ सुखिया सघ
ळा लोकजी ॥ आस्या न करे कोइ केहनी ॥ घरमां
सघळा लोकजी ॥प०९॥ चोरी करी परधन कोइ न
लीये ॥ कोइ न पामे खातजी ॥ शुद्ध विवहारे सहु
को चाले ॥ न करे कोइ परतातजी,॥प०१०॥ राज
भुवन रचनाए किधां ॥ थइए देखि खुशालजी ॥ गो
ख सुरंगा जाळि अनुपम ॥ वेठा जिहां वहु दामजी
॥प०११॥ वाहनशाळा आयुधशाळा॥ लेखशाळा दा
नशाळजी ॥ मांडवि राय करावी मोटी ॥ चउमुख
अति चोसालजी ॥प०१२॥ पुरपाटण जाणे सुरपाटण
॥ वनराय तिहां भूपाळजी ॥ कहे जिनहरष सहु सां
भळज्यो ॥ ए थइ छठ्ठी ढाळजी ॥ प० १३ ॥ सर्व
गाथा १०७ ॥

ढाळ ७ मी.

दुहा ॥ दाण तणी जिहां मांनवी ॥ मांनविआ न

र जाण ॥ न्यायवि थइ बेठा लिये ॥ विविध वस्तुनो दाण ॥ परदेशी आवे तिहां ॥ लेइ वस्तु अपार ॥ न्याय रायनो देखिने ॥ मांमी तिहां वखार २ ॥ वाहन आवी अति घणां ॥ लावी वस्तु अनेक ॥ दाण भरी वेची तिहां ॥ व्यापारी सुविवेक ३ ॥

॥ ढाळ ॥ चोपाइनी. राग मारु मध्ये ॥ ए देशी ॥

सोनो रुपो सीस कथीर ॥ त्रांबो पीतळ मोती हीर ॥ दांत दाढ सुंदर कचकडा ॥ दाण तास थे आगळ खर्मा १॥ सालू अतलस सूफ सकलात ॥ मयरक मिसरु नवनावि भात ॥ चीनी पीतांबर चुंनडी ॥ नीलक कसवीने पांमडी २ ॥ हिंग मरी साकरने द्राख ॥ नान्ही मोटी हरमी लाख ॥ लविंग एलची मिरच कंकोल ॥ जायफळ जावंत्रीने बोळ ॥ कस्तुरी केसर घनसार ॥ खांम टोपरां नहि कोइ पार ॥ वस्तु अनेक आवी तिहां सार ॥ आवी मांमवि दाण अपार ३ ॥ व्यापारी विणजारा घणा ॥ करे विणज देशावर तणा ॥ वासी वस्तु रहे नहि काय ॥ आवी ते सघळी वेचाय ४ ॥ पुन्य खेत्र पाटण कहेवाय ॥ दान मान सनमान लहाय ॥ मीठा बोलाने दातार ॥ घर घर मामया शत्रुकार ५ ॥ जिनव

रना उंचा प्रासाद ॥ घुरे दमामा घंटानाद ॥ देवळ शी व तणां पण घणा॥रुडाने वळी रळियामणां ७ ॥ पोषध शाळा नहि कोइ पार॥करे चोमास तिहां अणगार॥ वा नी वन,सुंदर आराम ॥ वाव,तळाव सरोवर ठाम ८ ॥ सहसल्रिग सर सोहामणुं ॥ उत्तम मानसरोवर भणुं ॥ खिर निर मांहे कमळ,सुगंध ॥ आवे भ्रमर म्रहेवा गंध ९ ॥ सुदरी सजी सोळे शणगार ॥ रमझम पाय नेवर झमकार ॥ कंचणे कळस विमळ शिर धार ॥ पाणी भ रवा आवी नार १०॥ नरनारी जळ क्रिमा करे ॥ ज ळचर केल करे बहुपरे ॥ वृक्ष तणी तिहां जाति अ पार ॥ कहेतां जेहनो न लहु पार ११॥ पाटणनो सव ळो विस्तार ॥ जाणे अमरपुरी अवतार ॥ कहि जिन हरष ढाळ सातमी ॥ नही धान धननी जिहां कमी ॥ १२. सर्व गाथा १२४ ॥

ढाळ ८ मी

दुहा ॥ वादी वीर विचक्षणा ॥ व्याख्यानी सुवि वेक ॥ वीणा वाजिंत्र वांसळी ॥ वेस्या विप्र अनेक १॥ वास व्यापारी वाणीया ॥ वोहरा वस्तु वखार ॥ वेद व्यास वैश्नव घणा ॥ वेदी वरण अढार २ ॥ मूरति म्र

सा विश्नुनी ॥ वाणी विद्यावंत ॥ वेषधार ने वरतिया॥ वणकर वसे अनंत ३॥ वरघोमा वर कन्यका ॥ वाजे वारंवार ॥ वृषभ वहेल ने वाहनी ॥वाघ वानर दरवार ४ ॥ वाडी वन वळी वावमी ॥ विउलसिरी ने वेल ॥ वालो सरहो वीझणो॥वनिता गति गज गेल ५॥व्याकर णी वाचाल नर॥विनयी लोक विचार॥वीसामा थानक जिहां ॥ विद्रुम मिलि अपार ६ ॥ विविध जिहां वृक्षा वळी ॥ वावन ववा एह ॥ जोयां जिण पुर पामीए ॥ ते पाटण गुण गेह ७ ॥

ढाळ ॥ चंद्राओलानी देशी ॥ नर समुद्र पाटण सहीरे ॥ मनुष्य न लहिये पारो ॥ ज्ञानी विण न शके गणीरे ॥ जिम जळ पारावारो ॥ जिम जळ पारावार अपार ॥ एक दिवश नारी भरतार ॥ जोवे वि पणी तणो विस्तार ॥ भूला पमया संध्यानी वा र ॥ जीनेर सरजीरे १ ॥ राजभुवन ते आइ ॥ राय भणी कहेरे ॥ स्वामी सुण मुज वात ॥ पुष हि यमे दहीरे ॥ए आंकणी॥ रोती रमती विनवेरे॥ ताहरा नगर मझारो॥ अम्हे दंपति भूलां पमयारे ॥ पाम्यो न हीं भरतारो ॥ पाम्यो नहीं भरतार जोवंतां ॥ डुभर रा

ति गइ रोवतां ॥ नासे राणो छे गुण गेह ॥ जमणी आंखे काणो तेह ॥जी० २॥ एणे अहिनाणे मुज ध णीरे ॥ निरती करावो रायो ॥ पडहो वेगे वगामीयोरे ॥ राणा काणा थाओ ॥ राणा काणा नामे थाये ॥ ते आवो बोलाव्या राए ॥ राय तणे छे कोइक काम॥ सहु आवी मिलज्यो इण ठाम ॥जी० ३॥ जमणी आंखे जे टलारे ॥ राणा काणा नामो ॥ नवसें नवाणुं थयारे ॥ सहु ए भेळा तामो ॥ सहु भेळा थया नृप दरवारे ॥ राय बोलावी नारी ते वारे ॥ सोधी ले ताहरो भरतार ॥ नृप वयणे सोधे ते नार ॥जी० ४॥ फिरि फिरि जो या सहुरे ॥ तोही न लाधो कंतो ॥ ए मांही नहीं मुज धणीरे ॥ सांभळे नृप गुणवंतो ॥ सांभळे तुं गुणवंत नरे शर ॥ फरि खबर करो अलवेसर ॥ पडो वगाडयो बीजी वार ॥ राणो काणो मिल्यो तेवार ॥जी० ५॥ म हाराय मुजने मिल्योरे ॥ हवे माहरो भरतारो ॥ रा ये अचरीज पाम्योरे ॥ लहीए पमोद अपारो ॥ लह्यो प्रमोद विनोद अपार ॥ एह नगर सहुमें सरदार ॥ न र नारी संख्या नहीं कांय ॥ पाटणपुर एहवो कहेवा य ॥जी०६॥ जिण नगरे सहु फुटरारे ॥ रुपे देवकुमा

रो ॥ममदा जाणे पदमनरे ॥ अपछरने अनुमानो ॥ अपछरने अनुमान विराजें ॥ मृगनयणी सशिवयणी छाजे ॥ अणहलियानो राख्यो नाम ॥ वास्यों अण हलवाडो गाम जी०७॥ साय विचारी एहवुंरे ॥ संता रुं गुरुरायो ॥ सीलंगसूरी तेडावीयारे ॥ वांदी गुरुना पायो ॥ वांदी गुरु मन मांही विचारी ॥ राज दियो मुज ए उपगारी ॥ गुण संभारयो तिण भूपाळ ॥ वार वार गुरु नमे त्रिकाळ ॥जी०८॥ राय कराव्यो खांतस्युंरे ॥ पंचासरि प्रासादो ॥ कोरी अनोपन कोरणीरे ॥ वाजे घंटा नादो ॥ वाजे घंटा भेरी नफेरी ॥ मूरति पासजिणेसर केरी ॥ थापी महिमा जास विशाल ॥ कहि जिनहरष आठमी ढाल ॥जी०९॥ सर्व गाथा १४०॥

ढाळ ९ मी..

दुहा ॥ संवत आठ बिमोतरे ॥ पाटण रचना कीध ॥ परहथ राज गयो थको ॥ वरष पंचासे लीध १॥ सात वरष वनराज नृप ॥ पाळ्यो पुहवी राज॥ जैन धर्म दिपावियो ॥ कीधां उत्तम काज २ ॥ शेवा भक्ति जिणंदनी ॥कीधी अंग उल्हास ॥ साधु भक्ति

पण साचरी ॥ समकित राख्यो पास ३ ॥ श्री जिन धर्म आराधिने ॥ पामी सद्गति जेण ॥ पाटणनो वन राज नृप ॥ हुओ गुणनी श्रेण ५ ॥

ढाळ ॥ नदी जमुनाके तीर उडे दोय पंखीयां॥ ए देशी ॥ तस पाटे योगराज वळी पदवी लही ॥ त प्यो वरस पांत्रीस अरि दम्या सही ॥ खिमराज महा राज हुओ सुत तेहनो ॥ तप्यो वरष पचवीश सुजश जग जेहनो ॥१॥ भुअड सबळ भूपाळ थयो तस पा टवी ॥ तप्यो वरष गुण त्रीस अकिरति वाटवी ॥ त स पाटे वइरीसीह थयो पाटण धणी ॥ राज कीयो प चवीश वरष किरती घणी ॥२॥ रत्नादित्य थयो तस पाटे अनुक्रमे ॥ पनर वरष जिन राज मध्य रंगे र मे ॥सामंतसिंह अवीह पाटे थयो तेहने ॥ सात वरष नो राज भोग थयो जेहने ॥३॥ सात पाट थया वर ष एकशो छन्नुये ॥ तिणे कुळे कोइ पुत्र पछोकड न वि हुवे ॥ जाणेजे ते राज्य लीयो ते परि कहुं ॥ भु अम तणो सुत करणराय शुणज्यो सहु ॥४॥ चद्रादि त तस पाट थयो चित गहगहो ॥ सोमादित नृप पाट पुण्ये लह्यो ॥ तस पाटे भुवनादित्य राय

ही ॥ तेहने पण त्रण पुत्र थया मन गहगही ॥५॥ राजकुंअरने दंडक वळी अभिराम ए ॥ तिणहे कुंमरनां नाम गुणे अभिराम ए ॥ राजकुमर जेठो ते परदेशे भमे ॥ देवके पाटण जाइ सोमेश्वरने नमे ॥६॥ इश्वर पूजा कीध तिणे विलासशुं ॥ नभ वाणी थइ ताम वयण भाखे इशुं ॥ अणहलवाडे पाटण नगर छे जिहां ॥ राजकुमर चली जाह उमाह धरी तिहां ॥७॥ सामंतसिंहनी वहेनसु तुजने परणशे ॥ इश्वरनुं ए वचन अमोघ सही हुशे॥राजकुमर चाल्यो तिहांथी उतावळो॥ आयो पाटण धीर शरीर सकोमळो ॥ इणे अवसर पाटणनो राय रेवामिये ॥ अश्व चमी रमवाने जाये वामिये ॥ हंसगते रेवंत चलत सुहामणो॥वाहे राजा ताम तुरीयने ताजणो ॥९॥ हाय हाय एम वाणी कुमर मुख उचरी ॥ पुछे सामतसिंह अश्व राखी करी ॥ हाय हाय तुं कांइ शब्द एहवुं भणे ॥ नवमी थइ जिनहरष ढाळ इणे अवसरे ॥१०॥ सर्व गाथा १५४ ॥

ढाळ १० मी.

दुहा ॥ राजकुमर कहे नृप शुणो ॥ म्हारी सुंदर वात ॥ विगमी सुधरे पण सही ॥ संगतिथी ए सात १॥

शस्त्र शास्त्र वाणी तुरी ॥ विणा नरपति नार ॥ पुरुष वि
शेष लही करी ॥ योगायोग विचार २ ॥ राजन तुंम
तिवंत नर ॥ हय चाले शुभ चाल ॥ गुणवंता गुणवंत
नी ॥ चावख घाव म घाल ३॥ राजा वयण सुणी इशां॥
जाण्युं ए बुद्धिवंत ॥ राजकुमर कोइक छे ॥ कारण
किणही भमंत ४॥ घोमा गति जाणे किशुं ॥ जो पामर
नर होय ॥ पण ए छे कोइ राजवी ॥ अवर न वी
जो होय ५ ॥

ढाळ ॥ ओधव माधवने कहेज्यो ॥ ए देशी ॥ दे
खी बुद्धि वळ लवणिमा ॥ देखी रुप उदार ॥ निज ब
हेन लीलावती ॥ परणावी तिणि वार ॥ १ ॥ जोज्योरे
ए गति कर्मनी ॥ टाळी न टळाय ॥ सुख दुख प्राणी भो
गवे ॥ तेतो कर्म पसाय ॥ जो० २॥ राजकुमर लीलाव
ती ॥ वीलसी सुखभोग ॥ उअरे बाळक उपन्यो ॥ रा
णीने थयो रोग ॥ जो० ३॥ मरण लह्यो तिण रोगथी ॥
काढ्यो पेट विदार ॥ बाळक दीठो जीवतो ॥ कीधी
तेहनी सार ॥ जो० ४॥ राजा ए दुख पामियो ॥ राणी
मरण विजोग ॥ निशि दिन झुरे दुख करी ॥ जोवो क
र्म संजोग ॥ जो० ५॥ यतः ॥ कुवेशे घर भंजणो ॥ वू

हापण अनाथ ॥ दहे वापिकि भूमडी ॥ गइ पियारे
हाथ ॥१॥ ढाळ पुर्वनी ॥ मूळ नक्षत्रे जनमियो ॥ ना
मे मूळराज ॥ वाधे विया चंदज्युं॥आव्यो जोवन सा
ज ॥ जो०६॥ मदमाता मामाजने॥माउल राज्य दीध
॥ गतमद चेत लह्यो वळी ॥ पाछो तिणे लीध ॥जो०
७॥ खीज्यो कुमर मामा प्रते ॥ मारणनो करेदाव ॥
अवसर पामी मारियो॥दीधो खमगनो घाव॥जो०८॥
निज सीशे छत्र धराविओ ॥ लीधो मामानो राज ॥
गुण केमे अवगुण कियो ॥ आणी कुळने लाज ॥जो०
९॥ श्लोकः ॥ भगनि सुत मूरख नृपति ॥ मदपानी जा
मात ॥ विसहर वाघ ने जाणही ॥ गुण कीधो ए सात
॥१॥ ढाळ पुर्वनी ॥ संवत नव अठाणवे ॥ बेठो मूळ
राय ॥ चामुंडराय तेहने थयो ॥ तेर वरष दीपाय ॥
जो०१०॥ तस पाटे वल्लभ थयो ॥ राज पाळ्यो छ
मास ॥ दुल्लभ वरष अग्यारनी ॥ उपर खटमास ॥जो०
११॥ भीमदेव थयो तेहने ॥ वर्ष बेताळीश॥ निज कुळ
नो दीपक थयो ॥ पाळ्यो राज जगीश ॥जो०१२॥
बे राणी भीमरायने ॥ वीकलदे नाम ॥ उदयमती बी
जी सती ॥ रुपे अभीराम ॥जो०१३॥ सुत विकलदे

वी तणो नामे खिमराज ॥ करण राणी बीजी तणो ॥ अधिको जसु लाज ॥ जो० १४॥ उदयमती भिमरायने ॥ व्हालो जीव समान ॥ तेहना सुतने ते भणी॥दीधो राज मधाने ॥जो० १५॥ करण मतापि आकरो ॥ प रजा मतिपाळ ॥ कहि जिनहरष पुरी थइ ॥ दशमी ए ढाळ ॥जो० १६॥ सर्व गाथा १७५ ॥

ढाळ ११ मी

दुहा ॥ करणराय पट रागिणी ॥ मीणल सुत जे संग ॥ किम परण्यो किम सुत थयो ॥ सुणज्यो कथा सुरंग १ ॥ किण राजानी दीकरी ॥ किम पाम्यो सन मान ॥ किण परे जनम्यो दीकरो ॥ सांभळज्यो धरि ध्यान २ ॥

ढाळ ॥ अलबेलाना गीतनी दशी ॥ देश विदेश सोहामणोरे लाल ॥ कर्णाटक विख्यात ॥ मेरे सांजनारे ॥ राज्य करे जयकेशरीरे लाल ॥ मीणल पुत्री कहाय ॥मे० १॥ जेसंगनी सुणज्यो कथारे लाल॥ नाम थयो सिद्धराय ॥मे०॥ ते पण कहीशुं आगळरे ला ल ॥ सुणतां सहुने सुहाय ॥मे० जे० २॥ मीणल यौ वन वय थइरे लाल ॥ बाप जोवा विमाह ॥मे०॥ करण

राय शुं मळियोरे लाल ॥ मीणलनो विवाह॥मे० जे०
३॥ बीजो परणी नवि शकिरे लाल करण॥दीयो अप
मान ॥मे०॥ मीणल रुप न पामियोरे लाल॥रुप विना
नहिं मान ॥मे० जे०४॥ राये तेहनें अवगुणीरे लाल॥
वात न आणें मुख ॥मे०॥ पति अपमानी कामनिरे ला
ल॥ हीयडे साले दुख ॥मे० जे०५॥ काष्ट भक्षण क
रिशुं सहीरे लाल ॥ मीणल कीध विचार ॥मे०॥ आ
व सखी वळी तेहनीरे लाल ॥ वळया थइ तैयार॥मे०
जे०६॥ वात सुणी कुमरी तणीरे लाल ॥ राय करण
नी माय ॥मे०॥ पुत्र वचन मान्यो सहीरे लाल ॥ अ
पजश वात सुणाय ॥मे० जे०७॥ कुंआरी कांठे च
डीरे लाल ॥ मीणल ताहरे काज ॥मे०॥ जगमां प
ड्हो वागशेरे लाल ॥ क्षत्री कुळने लाज ॥मे० जे०
८॥ आपण जेहने आदरिरे लाल ॥ मुंकीजे किम तेह
॥मे०॥ भूंमी पण पोता तणीरे लाल ॥ झटकी न दि
जे छेह ॥मे० जे०९॥ परण्यो पुत्र म पांतरोरे लाल॥
राखो रजवट रीत ॥मे०॥ जाणो तिम करज्यो पछी
रे लाल ॥ धरज्यो भीत अप्रीत ॥मे० जे० १०॥ वा
रंवार मायमी कहेरे लाल ॥ परण्यो करण सुभूप॥

मे०॥ मीणल सीलवती सतिरे लाल ॥ सकल कळा नहि रुप ॥मे० जे०११॥ राय न मानी ते भणिरे लाल ॥ मीणल दुख न माये ॥मे०॥ भोजन आभरण छे भलारे लाल ॥ कंत विना न सुहाय ॥मे० जे० १२॥ मात पीता बंधव सहुरे लाल ॥ परियण ने परिवार ॥मे०॥ एहनो सुख शा कामनोरे लाल॥ जो नहि सुख भरतार ॥मे० जे०१३॥ कंत मानी ते कामिनिरे लाल ॥ तेह सहागिणी नार ॥मे०॥ कंत न माने जेहनेरे लाल ॥ धिग तेहनो अवतार ॥मे० जे०१४॥ पुरुष भणी नारी घणीरे लाल॥ नारीने नर एक ॥मे०॥ ए जिनहरप अग्यारमीरे लाल ॥ ढाळ थइ सुविवेक॥ मे० जे०१५॥ सर्व गाथा १५२ ॥

ढाळ १२ मी.

दुहा ॥ मुजने प्रितम परिहरि॥ अहनिश दुखमें जाय॥ मंत्री आगळ सहु कह्यो॥ हिव दुख सह्यो न जाय॥ १॥ मंत्री कहे माता सुणो॥ चिंता म करो काइ॥ पुण्ये सहु थाशे भलुं॥ पुण्ये कष्ट पुलाय॥ २॥ पुण्ये मन वंछित मिले॥ पुण्ये भोग सयोग॥ पुण्ये भागे आपदा॥ पुण्ये देह नीरोग॥ ३॥ पुण्ये माने महिपती॥ पुण्ये

कंत॥पुण्ये ताहरे मानजी॥भागी जाशे चिंत॥ ४॥

ढाळ॥ म्हा माइ ढमरु वाजे॥ए देशी॥किण हिक अवसर नाटंगी॥जाणे चित्र लिखी झीणंगीहो॥ महाराय मंदिर आवी॥कर लेइ वीण वजावीहो॥म० १॥ए आंकणी॥जाणे अपछरनी अनुहारी॥म्हा निज हाथ समारीहो॥म०॥मुख अनुपम राग आला पे॥कामीनां हियमां कापेहो॥म०॥मुनीजनना ध्यान चुकावे॥सुरपतिने पण रिझावेहो॥म० २॥राजा रंज्यो तिण रागे॥लीणो नाटकणी आगेहो॥म०॥राय कर णं तणो चित्त पोम्यो॥निज चित्त सु राय चित्त चो र्योहो॥म० ३॥अेक गायेन ने वळी नारी॥सापणीने पंख समारिहो॥म०॥नृप आकुळ व्याकुळ थाये॥तेपा खे रह्यो न जायेहो॥म० ४॥मंत्री तेडी एम भासे॥ नट वी मुंको मुज पासेहो॥म०॥इण शुं म्हारो मन ला ग्यो॥तुम्हे म्हारो ए दुख भांगोहो॥म० ५॥मंत्रि मन मांही विचारे॥राजा पडयो नटुइ लारेहो॥म०॥नीची जात नाटकणी॥उत्तमनी ए नहीं करणीहो॥म० ६॥मं त्री मीणल संभारी॥म्हणे वस्त्र शणगारीहो॥म०॥रा णीने बोल शिखावी॥राजा पासे मोकलावीहो॥म० ७॥

नीद मळी सेज न धार॥अरथी नवी दोष विचारेहो॥म०॥ भुख्यो नर शाक न इच्छे॥कामी नर जाति न पुछेहो॥म०८॥पुछयो नही कुण छे जाते॥भोगवी ते ते णी रातेरे॥म०॥मीणल कर मुद्रमी मागी॥ राये दीधी थइ अनुरागिहो॥म०९॥थयो भात सम सुखदाइ॥मी णल निज मंदिर आइहो॥म०॥चिंतातुर मन थयो राजा॥लाग्या मुज पातिक ताजाहो॥म०१०॥ए अ कुळीणी मुज सुधो॥कागिणिशु हंस विलुधोहो॥म०॥ भुंमणशुं मृगपति रमीयो॥निज वश महातम गमीयोहो॥म०११॥पासी ल्युंकि विष खाऊ॥के कुआ मांहि झंपापाऊंहो॥म०॥मनमें एम राय विचारे॥जिनहरष ढाळ थइ वारेहो॥म०१२॥सर्व गाथा २०७॥

ढाळ १२-मी.

दुहा ॥ परतावे मनमें नृपति॥अन्न पाणीनो त्या ग॥मंत्रि तेडीने इम कहे॥पापी हणवा लाग॥१॥रे मूर ख तें माहरो॥कीधो लुणहराम॥मुढ हुओ हुं कामव श॥ते वार्यो नही ताम॥२॥मंत्री कहे करजोडीने॥री श म करज्यो तात॥मीणल छे छामी तुमे॥ते आवी छे रात॥३॥एह वचन नृप सांभळी॥हरख्यो चित्त म

झार॥भूषण वस्त्रादिक कियां॥वाध्यो मान अपार॥४
राय प्रधान प्रसंशीओ॥मागी निज निशान॥आणी दी
धी मुंद्रडी॥खुशी थयो राजान॥५॥

॥ ढाळ ॥ छानो ने छपनोरे वाल्हा मारा किहां र
ह्यो॥ए देशी॥कामणडुं कीधुंरे सोकरुली मिलीरे॥ राणी
मीणल केरे काजरे॥मासमले पूरेरे प्रसव थाए नहीरे
॥वागी वागी देशमल्ला मांहि अवाजरे ॥का०१॥ बार
वरष इणि परे उदरे रह्योरे॥वाधे वाधे तेतो मांहि वाळ
रे॥वेदना व्यापीरे मीणल नारीनेरे॥दाझिली अगनीनी
जाणे झाळरे॥का०२॥तेणे दुखेरे काष्ट भक्षण करेरे॥
विष हलाहल खायरे॥पासीरे लेइ प्राण तजुं सहीरे॥
मांमथ्या मरण उपायरे॥का०३॥मंत्रवादी नर तेडया
गारुडीरे॥तेमया तंत्र यंत्र जाणरे॥तेहनो कोइरे भेद ल
हे नहीरे॥वेदना थइ अप्रमाणरे॥का०४॥राय कहेरे
राणी द्वारेका चलोरे॥मरण भलो तिण ठामरे॥मीणल
चलीरे नृप वचने करीरे॥आवी आवी कारेली गामरे॥
का०५॥बुद्धिसुंदर नामे योगी मिल्योरे॥कागळ लिखा
व्यो तेणि वाररे॥करण राजाने जइ कहेजो इशुंरे॥मी
णल जण्यो छे कुमाररे॥का०६॥कागळीयो जइ पा

टणना रायनेरे॥पहुचाव्यो हाथोहाथरे॥कागळ वांची
ने राजा हरषीओरे॥नवनिधि पामी अविचळ आथिरे
॥का०७॥पूर सघळी वातडी विस्तरिरे॥तीरण बांध्यां
घर घर बाररे॥कामण जोवरे 'सोकनी' काढिनेरे॥पुत्र
जायों तेणी वाररे॥का०८॥तेटले वधाइरे 'खरी दीवी
रायनेरे॥राय घरे थया जयजयकाररे॥सोकनलीनारे
काळां मुख थयां सांभळीरे॥दुरजन थया सहु अश्वा
ररे॥का०९॥घर तेमावी मोणल कामनीरे॥नयणे दीठो
पुत्र सुरंगरे॥राये ने कीधारे ओछव अति घणारे॥नाम
ठव्युं जेसंगरे॥का०१०॥राय सुत वाधेरे रुप कळा गु
णेरे॥पूरवे मनोरथ मायरे॥ढाळने थइरे एतो तेरमीरे॥
कहे जिनहरष सुहायरे॥का०११॥सर्व गाथा २२४॥

ढाळ १४ मी

दुहा ॥ करणराय अन्याय तजि॥पाळे राज अ
खन्न॥सात हडा दुरे किया॥जास प्रताप प्रचन्न॥१॥डं
ड डांड डुविजिके॥ नर दुरे कियो डग॥काढ्या माकि
ण माकिणा॥थाप्यो कीरती थंभ॥२॥ओगणत्रिश व
र्षा लगें॥पाळयो जेण सुराज॥मरण करण राये ल
ह्यो॥किधां जिणे निज काज॥३॥पाट ठव्यो जेसगदे॥

सहु मिलिने नाम॥वर गुज्जरधर भोगवे॥सिद्ध धरावी नाम॥४॥

ढाळ ॥ इन्दर-आंबा आंबलीरे॥ए देशी॥इण अवसरे श्रीप पाटणीरे॥तीरथ करेवा जाय॥हीमाळे चढिया जइरे॥तीर्थ मुंइ फरसाय॥ १॥सज्जन सहु सुणज्यो अचरीज वात॥एतो सुणतां अधिक सुहात॥एतो मोटाना अवदात॥सज्जन० ए आंकणी॥अचजनाथ जोगी तिहारे॥सिद्ध बुद्ध जोगिणि साथ॥ते दीठा तिहां श्राक्षणेरे॥वांधा-चरण सनाथ॥स० २॥तिण जोगी बोलावीयारे॥किहांथी आव्या तुम्हे विप्र॥करजोडी आगळ रहीरे॥बोल्या वामन विप्र॥स० ३॥पाटण सिद्ध जेसंदेरे॥त्यांथी आव्या अम्हे जोइ॥सिद्ध नाम श्रवणे सुण्योरे॥खीजि जोगिणि दोइ॥स० ४॥विरुद धरावी एहवुंरे॥जोइजे जइ तेह॥कदलीपत्र वेसी करीरे॥अधर रही आवेह॥स० ५॥सिद्धराज पाटण धणीरे॥वेठो छे दरवार॥आवी तिहां ते जोगिणिरे॥दीठी राय ते वार॥ स० ६॥जोगिणिए बोलावीयोरे,॥ सिद्ध धरावे नाम ॥ सिद्धाइ देखण जणीरे॥ अमे आवी इण काम ॥स०७॥ आकाशे अहनिशि भमेरे॥जास न देखे कोइ॥अष्ट सि

द्ध पासे रहीरे॥सिद्ध कहावे सोइ॥स०८॥राजा चिंता तुर थयोरे॥शों उत्तर देउं आज॥सुभट सूर मुज छे घणारे॥ते खावाने काज॥स०९॥उत्तर आपे एहनेरें॥ तेह न दीसे कोय॥मधुर वचन राजा कहेरे॥सुण यो गिणि दोय॥स०१०॥घणी भूमि लाघी तुम्होरे॥आज रहो सुखवास॥म्हाणे उत्तर आपशुरे॥पण मनमांहि उ दाश॥स०११॥सूर सुभट मन चिंतवीरे॥हा ना कह्यो न जाय॥किम जिपाये योगिणिरे॥नाम खरो किम था य॥स०१२॥इण अवसर पूरमा वसेरे॥साकरीओ हरपा ळ॥सज्जन सुत छे तेहनोरे॥सुदरने सुकमाळ॥स०१३ ॥वाप भणी तिऐ पुछीयोरे॥नृप चिता किम जाय॥ कहे हरपाळ आगळ हुवोरे॥करण सवळ महाराय॥ स०१४॥तिणवारे कौतक थयारे॥मे वार्या छे ताम॥ इहां छे बुद्धे जीपणोरे॥तेतो नही किण पास॥स०१५ ॥बुद्धे कारज निपजेरे॥वळे न थाये तेह॥ढाळ थइ ए चउदमीरे॥ कहि जिनहरष सनेह ॥ स०१६॥ सर्व गाथा २२४ ॥

ढाळ १५ मी.

दुहा ॥ नृप नाम्हो खेसंगदे॥गरढो ना

निज सरिखा तेहने गमे॥इहां बोल्यो न सुहाय॥१॥ वात करे वटो पिता॥मंत्री नीसुणी वात॥राजा आग ळ वीनव्या॥तास कथन सुविख्यात॥२॥तमी लावो नृप कहे॥जिम तिम करी हरपाळ॥मुहुतो पोहतो तास घरे॥बोलाव्यो ततकाळ॥३॥राय बोलावे शेठजी॥सा करीयो कहे ताम॥महाराय जेसंगने॥मुजसें किस्यो काम॥४॥हुंतो हवे गरढो थयो॥बोल्यो पण नवि जा य॥नाक चुए लाळा पडे॥काम न कोइ थाय॥५॥डी ल गळ्यो मस्तक पळ्यो॥काने बहेरो खुंध॥कडि भा गी लागी जरा॥दुखे सघळी संध॥६॥ते माटे तुजने कहुं॥हुं गरढो नृप बाळ॥अणगमता शुं गोठडी॥गुण थाये विसराळ॥७॥

ढाळ ॥ राजा जो मिले॥ए देशी॥ तेह भणी तु म्हे कहेज्यो जाइ॥मुजथी गरज सरे नहिं कांइ॥राजा न कहो॥ए माहरी अरदास॥रा०॥मंत्री कहे सांभळो हरपाळ॥रुठ लेइ रहे तेतो बाळ॥रा०१॥राजा तस्कर मृगपति साप॥बाळक कवि छेडयां संताप॥रा०॥शस्त्र पाणीनो किस्यो विसास॥साते रुठयां करे विणास॥रा० २॥शिखामण देउ शी हरपाळ॥तुं बुद्धिसागर हुंतो बा

ळ॥रा०॥वांकी विसमी टाळणहार॥चालो शेठ म ला वो वार॥रा०३॥वयण इशां सांभळीने शाह॥श्री जि न पूजा अधिक उच्छांह॥रा०॥भोजन भक्ति मंत्रीनी कीध॥पान सोपारी फोफळ दीध॥रा०४॥ लेइ हरपा ळ आव्यो मंत्रीश॥हरख्यो जेसंगदे अवनीश॥रा०॥ सीश नमावी बेठो पास॥काको कहि बोलाव्यो तास॥ रा०५॥मुख मलके बोल्यो हरपाळ॥कामे काको क हे भूपाळ॥रा०॥राखी ताहरी सवळी लाज॥जाणीजे छे कोइक काज॥रा०६ ॥ यतः ॥ साते सायर हुं भ म्यो॥जंवुदीप पइठ॥काम विहुणो मीतमी॥करतो कोइ न दीठ॥१॥स्वारथ सबकूं वल्लहो॥पर वल्लहो नहीं को इ॥वछ धेनुने परिहरो॥जो थण दुध न होय॥२॥ढाळ पुर्वनी ॥ जेसंग कहे सांभळ तुं शेठ॥सहु बुद्धिवंता ता हरे हेठ॥रा०॥कारज तुजथी थाये जेह॥मुज थकी नवि थाये तेह॥रा०७॥तुजथी लाज रहे मुज आज ॥तुज्ज विण किणही न सीझे काज॥रा०॥योगिणि पू छे तास जबाप॥तुमथी थाये तेह साताव॥रा०८॥बोल्यो साकरीयो सीरताज॥म करो चिंता कांइ महाराज॥ रा०॥चंद्रहास दिवरावो लोह॥मूंवि करावो अधकी सो

द॥रा०९॥साकरनी करिशुं तरवार॥जोओ सभा मांहे जेणी वार॥रा०॥अम्हे कह्युं तव खाज्यो तेह॥कपट क्रियानो अवसर एह॥रा०१०॥आठ दीवसनी अवधी दीध॥घरे आवी सहु कारज किध॥रा०॥अन्य पुरुष हाथे हथीयार॥देश शीखाव्यो सहु विचार॥रा०११॥ राजा सभा आव्यो हरपाळ॥ बेठी योगिणि सभा विचाल॥रा०॥जोवा लोक मिल्या तिण ताळ॥ बोल्यो सो करीयो ततकाळ॥रा०१२॥कळा दिखावो मोटा राय ॥जिम जोगिणि निज थानक जाय॥रा०॥सिद्धि वुद्धि जिम थाये खुस्याल॥लोक मिल्या सहु देखे ख्याल॥रा०१३॥सिद्ध नाम तहारो तो साच॥जो योगिणि कहे निज मुख वाच॥रा०॥पूरी थइ ए पनरमी ढाळ॥ हरखीत चित जिनहर्ष भूपाळ॥रा०१४॥सर्व गा

ढाळ १६ मीः

ए दुहा॥ सिद्धराय बोल्यो तिस॥कळा अनेक क हाय॥कुण विद्या देखाडियें॥ जे तुम्ह आवे दाय॥१ ॥साकरीयो हरपाळ हवे॥बहु परे बोल्यो चांड॥लोह भखण विद्या सभी॥अणदीठी देखाड॥२॥लोह अणावो

नृप कहे॥ पुछे तुमचो काम॥ एक सुभट आव्यो तिसे॥ बोल्यो बे-करजोम॥ ३॥ कल्याणकटकपुरनो धणी॥ राजा पदम प्रमार॥ गज घोमा तरुवार, ए॥ भेट मोकली सार॥ ४॥ [illegible]

॥ ढाळ ॥ कागळीयो करतार भणी शी परे लिखुं रे॥ ए देशी॥ बुद्धि पसाये जी रे सहुने वाणीयारे॥ करे पुण्यनां पण काज॥ वणिक विहुणो राज न चाले सर्वथा रे॥ जोइ रावणनुं राज॥ बु० १॥ राय सभा मांही बेठा तिहां तिणे अवसरे रे॥ हाथे ग्रही तरुवार॥ चंद्रहास्य ए खमग प्रसंसे राजवी रे॥ जोवे वारोवार॥ बु० २॥ किशुं वखाणे राजन एह खडग भणी रे॥ कौतक कोइ दिखाम॥ लोह अणावो राय कहे हरपाळने रे॥ ए तरुआर संभाळ॥ बु० ३॥ झळहळतो काढी राजा अक्षण करे रे॥ साकस्यो तव उठि॥ साकरनी गोटे सगळो चाइ गयो रे॥ जइ झाली तव मुंठि॥ बु०॥ सिध्धि बुध्धिने मुंठि समर्पी रायजी रे॥ हवे एटली ए खाय॥ अचरीज जोवे लोक सहु परखद तणा रे॥ कहे एहवुं तव राय॥ बु० ५॥ में बोटी ए मुंठि न आपुं एहने रे॥ जोगिणि एह विचित्र॥ कहे हरपाळ अशुची लागे नहीं लोहडे रे॥ लोह सदाए पवीत्र॥ बु० ६॥ तोही नीर पखाळी

आपो एहनेरे॥करे सुचि हाथ विध॥खाओ के तजी मान नृपति पाए पडोरे॥कहो जेसंगदे सिध्ध॥वु०७॥ हवे विचारे मनमां इणि परे योगिणिरे किणी परे लोह च वाय॥ए आगळ अले हारी सहुये देखतांरे॥सिध्ध कहावे न्याय॥वु०८॥जेसंग नृपने पाये लागी योगिणिरे॥सि ध्ध खरो तुज नाम॥तुं सिध्धराय प्रताप अधिक कहे योगिणिरे॥पहुति आपणे ठाम ॥वु०९॥ नगरशेठ था प्यो हरपाळनेरे॥हरख्यो जेसंगराय॥हयगय पायक लायक लेइ चालीयोरे॥धार नगरमे जाय॥वु०१०॥ माळवपति जेणे नरहर राजा बांधीयोरे॥आण मनावी तास॥मदनभ्रम नृप मोह्न बंबक पाटण धणीरे॥ते पण कीधो दास॥वु०११॥जेसंगदे वश कीधा वयरी राजी यारे॥भरीया द्रव्य भंडार॥साजनदे प्रधान मिल्यो ते पुण्यथीरे॥सुणज्यो तास विचार॥वु०१२॥ऊंदिरा गाम तिहां साजनदे शेवियोरे॥कर्मे निरधन थाय॥पेट भरा इ पण थाए अति दोहिलोरे॥दुःख मांहिं दीन जाय॥वु. १३॥सुख तणे दुःखे दुःख थाये ते दोहिलारे॥दोहिला नान्हा वाळ॥कहे जिनहरप थइ ए पुरी सोळमीरे॥इणे अधिकारे ढाळ॥वु०१४॥सर्व गाथा २८३.

ढाळ १७ मी.

दुहा ॥ तेहने कहे कुळ देवता ॥ साजन सांभळ वात ॥ प्रभुता पामीश तुं घणी ॥ इहांथी जा खंभात ॥ १॥ सुर वाणी सुणी चालीयो ॥ गयो सकरपुर गाम ॥ भावसार रंगी घरे ॥ भाम्रो देइ रह्यो ताम ॥ २॥ तेह ने घेर रहेतां थकां ॥ केटलाएक दीन जाय ॥ घर भुंइथी धन पामीयो ॥ पुण्य योग जब थाय ॥ ३॥ साजनेद धन देखीने ॥ चिंते मनमां ताम ॥ ए धन नहीं मुज भाग्यनो ॥ माहरे कोइ न काम ॥ ४॥ मुंकी रंगी आगळे ॥ कनक कमाई तेह ॥ रंगी कहे सुण शेठजी ॥ तुं उत्तम गुण गेह ॥ ५॥

ढाळ ॥ वात म काढोहो व्रत तणी ॥ ए देशी ॥ शेठ सुणो मुंज वीनती ॥ देव दियो तुज एहोरे ॥ ए धन ताहरा भाग्यनो ॥ भोगव तुं ससनेहोरे ॥ शे० १॥ ए धानिक में पूरवे ॥ बार खणी एकवीसोरे ॥ तोही में पाम्यो नहीं ॥ एहनी किसी जगीसोरे ॥ शे० २॥ निरधन धन देखी करी ॥ भुख्यो भोजन पामीरे ॥ वश राखे निज मन भणी ॥ ते मोटा जग नामीरे ॥ शे० ३॥ कनक कढाई लेइ करी, जेसंगदे नृपपासेरे ॥

आगळ धर्यो ॥ सहु वृत्तांत प्रकासेरे ॥ शे०४॥व्यवहा
र शुद्ध श्रावक भणी ॥ कल्पे नहीं ए दामोरे ॥ ए धन
नो राजा धणी ॥खुशी थयो नृप तामोरे ॥शे०५॥ ध
न धन एहना सत्वने॥राय करे गुण ग्रामोरे ॥ गुणसायर
जाणी करी ॥ मंत्री थाप्यो तामोरे ॥शे०६॥ देश दीयो
शोरठ तणो ॥ मया करी महारायोरे ॥ बार बरष भुंइ
भोगवी ॥ झाझो माल उपायोरे ॥शे०७॥ नृप धन नि
ज हाथे कर्यो ॥ साढी बारह कोमोरे ॥ साते खेत्रे वा
वरे ॥ खरचे होमाहोमोरे ॥शे०८॥ एक दीन गार उप
रे चडयो॥ नेमि जिणंद जुहारयोरे ॥ भाव भगति जु
गति भली ॥ पूजी पाप निवारयोरे ॥शे०९॥ चैत्य प
डया दीठा तिहां ॥ मनमें थयो विखवादोरे ॥ धिग धि
ग मुझ जिवित भणी ॥ जो न करावुं प्रासादोरे ॥शे०
१०॥ जिर्णोद्धार करावतां ॥ आठ गुणो पुण्य थायो
रे ॥ धन खरचुं इहां नृप तणो ॥ एहिज लाभ उपा
योरे ॥शे०११॥ थानारुं ते थाइसे ॥ पुन्ये विघन पु
लास्येरे ॥ पुन्य थकी थास्ये भलुं ॥ पुन्ये पाप ठेला
स्येरे ॥शे०१२॥ श्री जिन गृह पाषाणमें ॥ तुरत करा
व्यो तामोरे ॥ दंड कळस तोरण धजा ॥ अति ऊंचो

अगीरामोरे ॥ शे० १३॥ झळके सूरजनी परे ॥ मेरु शिखर अवतारोरे ॥ इंद्रभुवननी उपमा नहीं तीन भुवन मझारोरे ॥शे० १४॥ चिहुंगति भ्रमण निवारवा॥ इस्यो भुवन निपजाव्योरे ॥ लाख गमे धन खरचियो ॥ मनमां नृप भय आव्योरे ॥शे० १५॥ पर द्रवे निप जावियो ॥ श्री जिन भूवन रसाळोरे ॥ इम जिनहर्ष विचारियो ॥ मंत्री सतरमी ढाळोरे ॥ शे० १६ ॥ सर्व गाथा ३०४॥

ढाळ १८ मी.

दुहा ॥ साजणदे मुहुर्त कियो ॥ ते न करे कोइ काम ॥ जिन मंदिर निपजाविने ॥ राख्यो अविचळ नाम ॥१॥ राजा लेखो पूछशे ॥ देश्श किस्यो जवाप ॥ प्रथम विचारी राखिये ॥ तो न हुवे संताप ॥२॥ इशुं विचारी आवियो ॥ जिहां वणथळी गाम ॥ तिहां वसा विवहारिया सहु मेल्या तिण ठाम ॥३॥

ढाळ ॥ आख्याननी देशी ॥ राग केदारो ॥ मिल्या सवळ महाजन सहु ॥ करमीरे धरमी पुन्यने काम ॥सिवजी सुंदर सोमजी ॥ रविजीरे नरहर शिवक साम ॥ ए चाल ॥ सामजी गणपति गोविंद ॥ ग

गजी गोवाळ ए॥श्रीपाळने तेजपाळ सूरो ॥ भेमजी पु
ण्यपाळ ए ॥ रतनजी रिणमल्ल राणा ॥ रामजी रिणधीर
ए॥धन्नो ने धनसार धनजी ॥ हरो हापो हीर ए ॥ मे
घजी ने माहवो वळी॥मदन मथुरादास ए ॥ नरसिंघ
नारद नानजी ॥ नरपाळ ने हरदास ए ॥ वाघजी घ
रसिंघ वीरा ॥ विमळसी वरधमान ए ॥ कमळसी
ने कृष्ण केशव ॥ देवजी दील दान ए ॥ जयचंद जी
वो अमर अमियो ॥ देवजी देवचंद ए॥खीमजी भला
भीमजी ॥ देवराज ने आणद ए ॥ विसराम मंगळ मा
लजी वळी ॥ अवर सहु तेमावीया ॥ पुन्य काजे ध
रीय उलट ॥ अंग रंगे आविया ॥ मंत्रीश बोल्यो
श्रावको॥तमो सांभळो मुज वात ए ॥ मे कीयो छे का
ज पुण्यनो ॥ राय करशे घात ए ॥ रायनो में धन ख
रच्यो ॥ एक चितमां चिंत ए ॥ करुं जिम तुमे कहो
मुजने ॥ तुमोछो पुण्यवंत ए॥इशुं सुणी विवहारीया॥
सहु कहे वचन सनेह ए ॥ धन्न बहु तुम पुण्य जोगे॥
तजो चिंता एह ए ॥ सुविचार मनमां धारीने ॥ वह
यडा तिहां विवहारिया ॥ आणी कागळ नाम सहुनां
॥ लिख्या जे उपगारिया ॥ करे हवे विचार मांहो

मांहि ॥ धन्न विराम ए ॥ कोटिधजा पण जीव न चले ॥ कृपण केइ किराम ए ॥ तुच्छ दाता घणा कीरपी ॥ एहने थो शीख ए ॥ पर द्रव्य लाफालोल करीने ॥ हवे मागे भीख ए ॥ कटुक एहवां वचन बोले ॥ गुण जेह गभीर ए ॥ तास वारी तेह राखे ॥ एह मर्म कहो विर ए ॥ धन्य एह नर एह सभ्रम ॥ नहीं को वळवंत ए ॥ आपण पासे आवियो ए ॥ जाणीने पुण्य वंत ए ॥ एह धोरी धवळ सरिखो ॥ नहीं ए गळियार ए॥ जिनहरष ढाळ अढारमी ॥ आख्यान जाति संभार ए ॥ १॥ माजने गाथा १९ ॥ सर्व गाथा ३२१॥

ढाळ १९ मी.

दुहा ॥ धणिक एक आव्यो तिसे ॥ सांथरियो तिहां भीम ॥ मळगूंगळिओ निभ्रमो ॥ दाता मांही सीम ॥ १॥ विनय करीने बोलीयो ॥ केही काजे वेव ॥ मोटा महाजन शेठीया ॥ भेळा थई एगठ ॥ २॥ पुन्य काज धन्य जोइए॥ तो मुज देज्यो काम ॥ महारी शक्ति हुं करिश ॥ हुं पण आपीश दाम ॥ ३॥ केटलाएक हडहड हस्या ॥ हवे थाशे सहु काम ॥ ऊठ कोटि केरो धणी ॥ आव्यो एणे ठाम ॥ ४॥ जे हुता ...

खमा ॥ स्वागति कीधी तास ॥ आदर देई इम कहे ॥ वेसो आवी पास ॥५॥

ढाळ ॥ ते मन मोह्यो नेमजी ॥ ए देशी ॥ श्री जिन मंदिर कारणे ॥ मंमावे सहु दाम ॥ जीम तणे हाथे दियो ॥ कागळ वांचे ताम ॥श्री०१॥ वत्तो खोळो ज पाथर्यो ॥ ए यो मुज शिर भार ॥ तुम मुरसीए उपाममुं ॥ म करो कोइ विचार ॥श्री०२॥ तुम्हे मोटा विवहारिया ॥ कीधां पुण्य अनेक ॥ मुजने मोटो कीजीए ॥ यो अनुमति सुविवेक ॥श्री०३॥ मीठे वयणे वाणियो ॥ भाखे वारोवार ॥ तेहनो विनय निहाळिने ॥ बोल्या सहु सुविचार ॥श्री०४॥ ल्यो लाहो लख मि तणो ॥ भरो सुकृत भंमार ॥ सही आदेश इसी पर ॥ हरख्यो हियमा मझार ॥श्री०५॥ साजणदे कर संग्रही ॥ आव्यो निज घरबार ॥ भोजन भगति भली करी ॥ स्वामी सुणो विचार ॥श्री०६॥ रतन अमुलक एह छे ॥ सोनईया सिरदार ॥ आणी कीधा आगळे ॥ मणी माणेक अवार ॥श्री०७॥ साजनदे कहे शेठजी ॥ हिवणां खप नहीं कांइ ॥ नृप मुज पासे जे मागशे ॥ तव हुं लेइश आइ ॥श्री०८॥ धन माता तुज धन पि

ता ॥ धन धन म्हारो आरंभ ॥ उपगारि सिर सेहरो ॥ तुं जिनशासन थंभ ॥श्री०९॥ वचणे संतोषियो भीमने ॥निरमळ चित्त नीसल्ल ॥ इण अवसर राय आगळे ॥ चाडी कीधी चुगल्ल ॥श्री०१०॥ द्रव्य तुमारो महारायजी ॥ साजनदे सहु लीध ॥जिन मंदिर निपजावियो ॥ पोतानो नाम कीध ॥श्री०११॥ खीज्यो राजा जेसंगदे ॥ आणो तेहने रे बांधि ॥ मल गमे इम माहरो ॥ तोडुं तेहनी रे सांधि ॥श्री०१२॥ चाल्या सुभट लेवा भणी ॥ आव्या मुहुताने पास ॥ तुमने तेमे जेसंगदे ॥ चालो धरी उल्लास ॥श्री०१३॥ चुगली कीधी छे ताहरी ॥ मरथा जेसंदेना कान ॥ ढील म करहवे चालतुं ॥ नहिंतर करशे हेरान ॥श्री०१४॥ नाणो सोरठ देशनो ॥ नृप लेशे ततकाळ ॥ कहे जिनहरष हवे सुणो ॥ ओगणसमी ए ढाळ ॥श्री०१५॥ सर्व

चाह ॥ खोळे घाल्लुं धन सहु॥एक पाणीवळ मांह ॥२
॥ नर शुणी आव्या नृप कने ॥ कहे शुणो महाराज॥
मंत्री तुह्मने तेमिया ॥ धनालेवाने काज ॥३॥ नृप
खीज्यो वळी अति घणुं ॥ चाल्यो सुभट सहित ॥ गढ
गिरनारे आवियो ॥ सनमुख मंत्री पहुत ॥४॥ धन
बहु मुंकी आगळे ॥ मुहतो लाग्यो पाय ॥ पण राये
न बालावियो ॥ मनमां भर्यो कषाय ॥५॥

ढाळ ॥ नायकानी देशी ॥ भृकुटी करीने बोलि
योरे ॥ जाणे जम साख्यातरे ॥ जेसंगदे० ॥ सोरठनो
धन किहां सहुरे लाल ॥ लेखे पुछो वातरे ॥ जे०भृ
०१॥ साजणदे करजोडीनेरे ॥ कहे सांभळ राजनरे॥
जे०॥ शा माटे खीजो तुह्मेरे लाल ॥ कहो ते आलुं
धन्नरे ॥ जे०भृ०॥ पण सेवकनी वीनतीरे ॥सफळ क
रो नरनाहरे ॥जे०॥ गिरि चढी जात्रा कीजिएरे ला
ल ॥ लीजे पुन्यनो लाहरे ॥जे०भृ०३॥ वचन शुणी
सीतळ थयोरे ॥ गिरि चमियो मन रंगरे ॥जे०॥ जि
न प्रासाद निहाळीयोरे लाल ॥ उलस्यां अंगे अंगरे
॥जे०भृ०४॥ उंचो पहोळो अति घणोरे ॥ इंद्र
भुवन विस्ताररे ॥जे०॥ चित्र लिखित भली कोरणीरे

लाल ॥ दीठां हरख अपाररे ॥जे०भृ०५॥ नेमी विंब निरखी करीरे ॥ इम भाखे जेसंगरे ॥ जे० ॥ जनम सफळ थयो तेहनोरे लाल ॥ कर्यो प्रासाद उत्तंगरे ॥जे०भृ०६॥ मात पिता धन्य तेहनरे ॥ धन्य तेहनो अवताररे ॥जे०॥ एहवो देवळ उधर्योरे लाल॥ मंत्री कहे ते वाररे ॥जे०भृ०७॥ ए देवळ तुमे उधर्योरे ॥ धन तुमचो अवताररे ॥जे०॥ मात पीता धन ताहरारे लाल ॥ सफळ कीयो संसाररे ॥जे०भृ०८॥ सोरठनो धन सहु इहांरे ॥ लाग्यो छे महाराजरे ॥जे०॥ ते भणी कहो तो आलियेरे लाल ॥ जो धन शुं हुए काजरे ॥जे०भृ०९॥ राजा हरखी बोलियोरे ॥ तें कीधो पुण्य काजरे ॥जे०॥ए धन मुज सुकियारथोरे॥लाल तें राख्यो मुज नामरे ॥जे०भृ०१०॥ चुगले चुगली ताहरीरे॥कीधी खीज्यो तेणरे ॥जे०॥ चाडन होवे आपणोरे लाल॥सरवस्त दीजे तेणरे ॥जे०भृ०११॥ एहवा वर जे चाडियारे ॥ चुगली करे जे रोजरे ॥जे०॥ तेडी कीधा एकवारे लाल ॥ जाण्यो देशे मोजरे ॥जे०भृ०१२॥ मुखे लिहाला चोपड्यारे॥ छेद्यां नाकने कानरे ॥जे०॥ लेइ खर आरोपियारे

लाल ॥ शिर मुंडया भुंमी बानरे ॥ जे० भु० १३ ॥ न
गर मांही तें फेरियारे ॥ राख्या नहिं पुर मांहीरे ॥
जे० ॥ कूटी कांढया बाहेरे लाल ॥ सहुने हाथे सं
हारे ॥ जे० भु० १४ ॥ चुगलो संही बिटबनारे ॥ राय
थयो सुप्रसन्नरे ॥ जे० ॥ साजनदासनमाननरे लाल ॥
वळीय कहे धन धन्नरे ॥ जे० भु० १५ ॥ पुण्य थकी ज
श पामियोरे ॥ पुण्य थकी मान्यो रायरे ॥ जे० ॥ क
हे जिनहरष ए एटलेरे लाल ॥ ढाळ बीसमी थायरे ॥

एणे अवसर आवीयो ॥ भंभवाणीओ ताम ॥
श्री जिन मंदिर कारले ॥ स्वामी ए ल्यो दाम ॥ १ ॥
साजनदे कहे श्रीमने ॥ शेठ सुणो अम्ह वात ॥ काम न
हीं हवे धन तणो ॥ तें राखी अखियात ॥ २ ॥ मंत्रीस
राजे में करयो ॥ निरमायल जिन द्रव्य ॥ काम नहीं
मुज तेहशुं ॥ में खरचेव्यो सर्व ॥ ३ ॥ रतन अमूलक
आपिया ॥ साथरिये तिण वार ॥ साजन ताम करा
वियो ॥ श्री जिन कोटे हार ॥ ४ ॥ देव द्रव्य भक्षण
करे ॥ परनारीशुं प्रेम ॥ ते नर जाये सातमी ॥ शास्त्रे

बोल्यो एम ॥ ५॥ पाप भीरु भीमो सही ॥ राख्यो न हीं जिन द्रव्य ॥ ए धन विष फळ सारिखो ॥ इम जा णे ते भव्य ॥ ६॥ साजनदे पुन्यातमा ॥ आव्यो पाटण मांह ॥ राय तणे चरणे नम्यो ॥ राय प्रसंसे तांह ॥ ७ ॥ राजा मंत्री एक मन ॥ बांधी प्रिति अपार ॥ हेमस य किण परे मिल्या ॥ ते सुणज्यो अधिकार ॥ ८॥

॥ ढाळ ॥ सुंदरदेना गीतनी देशी ॥ कोटीक गण गु ण भूरी ॥ वयरी शाखाहो दीपे जगमां परगमीरे ॥ चंद्र गछ दिन्नसुरि ॥ धन्य अवतारीहो प्रणमतां स फळी घडीरे ॥ १ ॥ श्री यशोभद्रसुरी ॥ तेहने पाटेहो प रतख जाणी दिवाकरुरे ॥ पदमसुरी तसु पाटे ॥ जेण पाम्याहो सुरगतिना सुख सुंदरुरे ॥ २ ॥ श्री गुणसेन मु निराय ॥ देवचंद्रसुरीहो नयर धंधुके आवीयारे ॥ ति हां वसे चाचो शाह ॥ मोढ सुवंशेहो चाहरी नारी भा वीयारे ॥ ३ ॥ सुपन लह्यो तिण नार ॥ अति रळियातो हो रयण चिंतामण सोहतोरे ॥ गुरुने दीधो तेह ॥ गुरुने पुछयोहो फळ तेहनो मन भावतोरे ॥ ४ ॥ श्री गुरुए कह्यो विचार ॥ सुंदर थाशेहो पुत्र तुमारे अति भलोरे ॥ दी क्षा लेशे तेह ॥ महिमाधारीहो थाशे महियल गुणनि

ळोरे ॥५॥ इम कही चाल्या सूरि ॥ उअरे बाधेहो वा ळक पुण्ये आगळोरे ॥ जनम्यो नवमे मास ॥ मात पि तानोहो सफळ मनोरथ तव फळ्योरे ॥६॥ इग्यारे प चताल ॥ काति सुदनीहो पुनम जनम थयो इशेरे ॥ वाणी थइ आकाश ॥ संजम लेशेहा जिनशासन दिपा वशेरे ॥७॥ ओछव करीय अपार ॥ चंगदेव नामेहो पांच वरषनो ते थयोरे॥आव्या अवसर जाणि॥देवचंद सुरिहो वांदण संघ सहु गयोरे ॥८॥ चंगदेव मायनी साथ ॥ वांदण आव्योहो जइ बेठो गुरु वेसणेरे ॥ सुण श्राविका कहे शुरि ॥ बोल समारीहो सुत अम्हने आ लो भणेरे ॥९॥ कहे श्राविका तिणीवार ॥ सुत किम दोधेहो जाये पुज विचारीएरे॥म्हेशरी मुज भरतार॥ कोपे तहनेहो शो उत्तर देइ वारीयेरे ॥ वहेन सुणो क हे संघ ॥इ सुत आपोहो गुरुने पुण्य होशे घणोरे॥ वा इ लज्यावंत॥ना न कहाणेहो आप्यो पुत्र सोहामणोरे ॥१०॥ गुरु चाल्या लेइ बाळ ॥ उदयन मंत्रीहो करण पुरि तिहां आवीयारे॥बाळ भळाव्यो तास ॥ तस घर बाधेहो दिन दिन कांती सुहावियारे ॥११॥ घर आ व्यो तिणवार ॥ बाळक चाचोहो घरमांहि देखे नहीरे॥

पुत्र न दीसे केम ॥ नारी भाखेहो गुरुने में दीधो सहीरे ॥१२॥ वचन सुणी वीष थाय ॥ ए शुं कीधुंहो मूरख रांन अभागणीरे ॥ दीकरो कीम देवराय ॥ लाव ज इनेहो जिम घर राखुं तुज भणीरे ॥१३॥ कोप करी तिण वार ॥ अन्न पाणीनोहो चाचे त्याग कर्यो तिहां रे ॥ आव्यो मन धरी रीश ॥ श्री गुरु आपेहो देशण मधुर स्वरे जिहांरे ॥१४॥ बेठो सभा मझार॥ गुरुनी वाणीहो अमीय समाणी सांभळीरे ॥ ढाळ थइ एकवीस ॥ सुंवरदेनीहो ए जिनहरषे अटकळीरे ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ३८८ ॥

ढाळ २२ मी.

दुहा ॥ गिरुआ गुरुनी देशणा ॥ श्रवण अमृत रस धार ॥ आठ पुरुष दुष्कर कह्या॥निलता इणे सं सार ॥ ॥१॥ दाणी गुण ग्याता तपी ॥ समता सील सुजाण ॥ परमतनी चिंता लहे ॥ किसो न राखे मान ॥२॥ तुं दानो शीर सेहेरो ॥ तें आप्यो सुत दान॥ तुज समवड जग को नहिं ॥ जश अविचळ जाभा न ॥३॥ महाभारथ माहिं कह्यो ॥ जिणे कुळे यति न

य ॥ ४ ॥ शरम मांहि चाचो पमझ्या ॥ बोल्यो नहिं मुख लाज ॥ उठ्यो करीने वंदणा ॥ चिंते न सर्यो काज ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ झांजरनी ॥ उदयन तेमी जाय ॥ शाहे चाचानेहो मंदिर आपणे ॥ भोजन भगति कराय ॥ पान सोपारीहो देइ इम भणे ॥ १ ॥ धन ताहरो अवतार ॥ तुं नर मांहेहो सिंह समोवडि ॥ कुळ उतार्यो पार ॥ अन्य जमारोहो ताहरो एक घडी ॥ २ ॥ तें दीधो सुत दान ॥ नव खंड मांहिहो नाम रखावियो ॥ गुरुनो राख्यो मान ॥ तुं जग धरमीहो धरम सुहावीयो ॥ ३ ॥ तुं मुज साहमी आज ॥ त्रिण लक्ष सोवन हो ए ल्यो माहरा ॥ करो धरमनां काज ॥ चरण सदाइंहो नमीये ताहरा ॥ ४ ॥ शेठ कहे तिणवार ॥ त्रण लक्ष सोवनहो लेइ हुं शुं करुं ॥ में दीधो सुत सार ॥ पुण्यने काजेहो मन कांधुं खरुं ॥ ५ ॥ लाजे देइ पुत्र ॥ चाचो आव्योहो पोताने घरे ॥ जिन शासननो सूत्र ॥ संघ राख्योहो असो ओछव करे ॥ ६ ॥ नव वरषानो हेव ॥ हुओ दीधीहो दीक्षा तेहवे ॥ नाम दीयो सोमदेव ॥ दिन दिन वाधेहो वय गुण जेहने ॥ ७ ॥ एक दिन गुरुने साथ ॥ चाली आव्याहो नागपुरी मू

री ॥ वसे धनद बहु आधि ॥ सुखीआ जेहनेहो गो
महिसी तुरी ॥ ८॥ कोइक पूरब पाप ॥ तास पसाए
हो वे निबहारीओ ॥ पाम्यो दुःख संताप ॥ निर्धन
हुओहो धन सहु हारीओ ॥ ९॥ धनद चिंते मन मां
ह ॥ पुण्य न कीयोहो तो निरधन थयो ॥ चिंतामें
दिन जाय ॥ भूमि खणेवाहो उद्यमवंत भयो ॥ १०॥
उठी स्वामी विहार ॥ मांहि सिहाळाहो आज्ञा निसर्यो
॥ द्वारे कीधो अंवार ॥ मुनी गोचरीएहो आवी संच
र्या ॥ ११ ॥ धर्मलाभ मुनी दीध ॥ नर नारि बेहो मन
मां हुख दहे ॥ मुनीवर पगलां कीध ॥ बेंस दीयतांहो
किम लज्या रहे ॥ १२॥ गळगळ स्वर नर नार ॥ भा
खे स्वामीहो घेंस किम दीजीए ॥ छे सुजतो आहार॥
कृपा करीनेहो भगवंत लीजीए ॥ १३॥ वोहरी घेस ते
वार ॥ कीध समस्याहो चेले गुरु भणी॥धन आंगणे
अबार॥ घेस वोहरावीहो दीसे कीरपणी ॥ १४॥ शेठ सु
ण्यो सुदक्ष ॥ शिष्य उदासीहो कोयलो उररे बेसार्यो
परतक्ष॥ हाट कटोळोहो हुओ इणीवरे ॥ १५॥फळी म
नोरथ माळ ॥ हीयमें हरख्योहो गत लखमी लही॥
बाबीशमी थइ ढाळ ॥ सहुने आगेहो जिनहरषे कही

॥१६॥ सर्व गाथा ४०ए.

ढाळ १३ मी.

दुहा ॥ श्री गुरुजी तुमे माहरी ॥ राखी जगमां लाज ॥ तुज सुपसाये में लह्यो ॥ गयो निधान सु आज ॥१॥ धन विण कोइ गणे नहीं ॥ धन विण न धरे प्रेम ॥ धन विण हुए अळखामणो ॥ धन विण धर्म न नेम ॥२॥ धन अधिको संसारमें ॥ धन विण माय न ताय ॥ एहवो धन ते सुगुरुजी ॥ पाम्यो तुज पसाय ॥३॥ हेम थयो कोयला टळी ॥ वाध्यो हर्ष अपार ॥ ए गुरुने पद आपस्यो ॥ करीश महोछव सार॥४॥ योग्य जाणी पद आपीयो ॥ सोमदेवने ताम ॥ हेमचंद्रसूरे दीयो हेमाचारज नाम ॥५॥

ढाळ ॥ वीछीयानी ॥ मुने वहालोरे लागे वीछीयो ॥ए देशी॥ कासमीर भणी चाल्या हवे ॥ सारद आवी सनमुखरे ॥ हेम कर्म तणे बळे थइ छती ॥ वर आपे तास प्रतक्षरे ॥का०१॥ एक दिन निज गुरु सिद्धचक्रनो ॥ मंत्र शीखवीयो धरी प्रेमरे ॥ देवाधिष्टित ते मंत्रने ॥ शुद्ध भावे साधे ते हेमरे ॥का०२॥ देवेंद्र मलयगिरि मुनीवरु ॥ हेमाचारज पुण्यवंतरे ॥

देवेंद्र मलयगिरि मुनीवरु ॥ हेमाचारज पुन्यवंतरे ॥
ए त्रिणे मीलीने चालीया ॥ सुग्राम कुमारे आवंतरे ॥
का० ३॥ धोबी धुवे जिहां लुगमां ॥ चीर उगाव्युं ति
हां दीठरे ॥ भमरा गुंजारव करी रह्या ॥ लोभाणा गंधे
इठरे ॥का०४॥ भमर भ्रम विलुधा भमी रह्या॥पदमणी
नारीने चीररे ॥ गंध पदम सुगंधे मोही रह्या॥तेहशुं मां
मी रह्या शीररे ॥५॥ सामी भमरा देखी करी॥हरख्या
श्री हेमसुरिशरे ॥ एहवुं देखीने पुछीयो॥धोबीने धरीय
जगीशरे ॥का०६॥ इण चीरे भमरा रणझणे ॥ पहेरे
ते कुण छे नाररे ॥ धोबी कहे मुनीवर सांभळो ॥ तु
मने कहुं विचाररे ॥का०७॥ इण गाम तणो अधिका
रीयो ॥ पदमणी छे तेहनी नाररे ॥ नामे ते रतनवती
सती ॥ तेहना ए चिर विचाररे ॥का०८॥ आचारज
अधिकारी घरे ॥ धर्मलाभ आवीने दीधरे ॥ अधि
कारी ऊठी भावशुं ॥ आवी वंदन कीधरे ॥का०९॥
आश्रम आपो रहेवा भणी ॥ रहीये तो पंच रातरे ॥
उतार्या निरवद्य थानके ॥ उपदेश दीये बहु भातरे ॥
का०१०॥ सुंदर वाणी सहु रीझवी ॥ समतारस पोषण
हाररे ॥ देवेंद्रसूरीश्वर देशणा ॥ सांभळी रीझे नर ना

रे ॥का० ११॥ इम चोमासो पुरो कर्यो ॥ अधिकारी ने कहे तामरे॥ हवे इहांथी अमे चालशु॥ रहेवु नही ए कण ठामरे ॥का० १२॥ आचार अमारु पाळवुं ॥ सुविहित न रहे एक ठामरे ॥ रहेतां संजम मेलु हुवे॥ अधिकारी भाखे तामरे ॥का० १३॥ कोइक काम क हो मुज भणी ॥ ओसीकल थाऊ केमरे ॥ अह्म आ गळ धर्म कह्यो भलो ॥ तुमशु तो लाग्यो प्रेमरे ॥का० १४॥ देवेंद्रसुरीश्वर इम कहे ॥ छे काम अपूरव एकरे ॥ कहेतां पण जिभ वहे नही ॥ न कह्या किम थाय विवेकरे ॥का० १५॥ छे लाज तणी ए वारता ॥ तेह थी विद्या सिद्ध थायरे ॥जिनहर्ष ढाळ त्रेवीसमी ॥ इ णीपरे भाखे मुनीरायरे ॥का० १६॥ सर्व गाथा ४३०.

ढाळ २४ मी.

दुहा ॥ तुज नारी छे पदमनी ॥ नगनपणे ते थाय ॥ वस्त्र तजी साधु अम्हे ॥ विद्या सिद्धि उपाय ॥१॥ अह्मे करु मंत्र साधना ॥ तुं लेइ रहे तरुआर ॥ जो चुके तन मन वचनथी ॥ तो हणजे तिणवार ॥२॥ गुण रज्यो राजा कर्यो ॥ तहत्त वचन तिणिवा र ॥ निणहे आचारज मिली ॥ पहुता गढ गिरनार॥

३॥ जिन प्रतिमा आगळ रही ॥ नागी पदमणी नार॥ आचारज मंत्र साधना ॥ नृप हाथे तरुआर ॥४॥ मेरु चूलिका नवि चळे ॥ न चळे शेष फुणिंद ॥ विधि लीखत जिम नवि चळे ॥ न चळे चित्त मुणिंद॥५॥

ढाल ॥ चुनडीनी ॥ तिणे अवसरे ते परतक्ष ॥ थयो विमळेशर ततकाळरे ॥ कहे मागो जे मुनी जोइए ॥ आपुं वर तुम सुविशाळरे ॥१॥ आचारजने सुर इम कहे ॥ इम विमळेशर जक्षरे ॥ करजोडी हुए परतक्षरे ॥२॥ ए आंकणी ॥ देवेंद्रसुरीसर मांगीयो ॥ कातिथि जिन प्रासादरे ॥ श्री सेरी समेमें आणवो॥मुजने द्यो विद्या वादरे ॥ आ०३॥ वळी मलयगिरि मुनी मागीयो॥सिद्धांत तणी करु वृत्तिरे ॥ परतक्ष थयो तो तुं हवे॥मुजने दे ए शक्तिरे ॥आ०४॥ हेमाचरज कहे देवता ॥मुजने दे विद्या एहरे ॥ जिन वचन वळे नृप बुझवुं॥ शासन दीपावे तेहरे ॥आ०

मेरे ॥आ०७॥गुरु नमी उभी शासन सुरी ॥ कहे वचन इशुं परतक्षरे॥ पदवी लायक छे आपजे॥हेमाचारज तुंज शिष्यरे ॥आ०८॥ एहवु कहीने देवी गइ ॥ ध्या नथी उठ्या स्वय मेलिरे ॥ मनमांहि हतुं देवी कह्यो॥ दूधने वळी साकर भेळिरे ॥आ०९॥ आचारज नाग पूरी भणी ॥ चाल्या लेइ परिवाररे ॥ जिहां वसे धनद विवहारियो ॥ आव्या हरख्यो नर नाररे ॥आ०१० ॥ संहु संघ चतुर्विध आगळे ॥ आचारज करे व खाणरे ॥ दान सिळ ने तप भावना ॥ च्यारे धर्मना भे द सुजाणरे ॥आ०११॥ च्यारे धर्म आराधतां ॥ शिं व सुख लहिए अनंतरे ॥ इंद्री दमीय तप कीजिये ॥ जिनवर गुरु भक्ति करंतरे ॥आ०१२॥ सदगुरुनी दे शना सांभळी॥पद ओछव कीधो धनदरे ॥ निज लख मि खरची वहु परे॥थाप्या श्री हेमनुणिंदरे ॥आ०१३ ॥ पाटे थापी श्री हेमने ॥ गुरु आव्या पाटण मांहिरे॥ पाटण राजा जेसंगदे ॥ रयवाडी चाल्यो उछांहरे ॥ आ०॥ हेमाचारज नृप निरखियो ॥ हीयडे हरख्यो तिणिवाररे ॥ राजा कहे श्री हेमसुरिने ॥ आवो नित महेल मझाररे ॥आ०१५॥ मुजने तुमे धर्म सुणाइवो॥

॥ उपजावो हर्ष विशाळरे ॥ जिनहरष कहे पूरी थइ ॥एटले चोवीशमी ढाळरे॥आ० १६॥सर्व गाथा ४,५१.

ढाळ २५ मी.

दुहा ॥ राजसभाए जायने ॥ बेसे हेमसुरिंद ॥ धर्म कहे वहु जुगतिशुं ॥ हितशुं सुणे नरिंद ॥ १॥ ख ट दरसण मांहि सुगुरु ॥ साचो खोटो धर्म ॥ किम जाणीजे ते कहो ॥ किम भागे मन भर्म ॥ २॥ धर्म प रीक्षा कीजीए ॥ तजीए दूर कुवट्ट॥ कसणे पोहोंचे ते खरो॥ जिम कंचण कसवट्ट ॥ ३॥ सद्गुरु जोइ पर्ट तरो ॥ जोवो भांति अभत्ति ॥ खरो धरम जब पामी ये ॥ थाये निरमळ मत्ति ॥ ४॥ यशोमति नारी परे॥ जो कीजे सुपरीख ॥ धर्म खरो तो पामीये ॥ जो ध रीये गुरु शीख ॥ ५॥

ढाळ ॥ हमीरीयानी ॥ हरीआमनि लागो ॥ ए देशी ॥ शखपुरी शख वाणीयो ॥ यशोमती तस नारीरे राजेसर ॥ मन मानी नही तेहशुं ॥ परण्यो बीजी वा ररे॥रा०॥शं० १॥ नवजोवन न्हानी प्रिया॥पोते गरढो जाणरे ॥रा०॥ रंग लाग्यो ते नारीशुं ॥ सुख विलसे सुविहाणरे ॥रा० शं० २॥ लीनो वचन लोपे नही ॥

करे नित जिजिकाररे ॥रा०॥ कस्यो खमे रंग रमें ॥
जमे भेळा नरनाररे ॥रा० शं०३॥ पहेलाने ते नवि ग
मे॥सोकमनी सूळी सालरे ॥रा०॥ खटके हृयमें अहनि
शि ॥ जेम मरमनी भाळरे ॥रा० शं०४॥ इण अवस
र मंत्रवादीयो॥आयो यशोमती गेहरे ॥रा०॥ वेसाणी
तिणि आगळे ॥ कर्म कथा कहे तेहरे ॥रा० शं०५॥
तेहने करुणा उपनी॥औध मूळी मंत्र तासरे॥रा०एहथी
बळद हुस्ये धणी ॥ फळशे ताहरी आशरे ॥रा०शं०
६॥ यशोमति कीधि रसवती ॥ मंत्र मूळी घाली मां
हरे ॥रा० जीमाव्यो भरतारने ॥ हियमा मांहिं उछां
हरे ॥रा०शं०७॥ नर फीटी पोठी थयो ॥ नाठां दा
ढी मूछरे ॥रा०॥ लांबा कान हलावतो ॥ लांबा सीं
गने पूंछरे ॥रा०शं०८॥ पूंछ हलावे हरखशुं ॥ देखी
न्हानी नाररे ॥रा० न्हानी नारी रावळि ॥ धव धव ग
इ तिवाररे ॥ रा०शं०९॥ स्वामी माहरा कंतने ॥ शो
क्ये पोठी कीधरे ॥रा०॥ ते नारीने तेडिने ॥ फळ आ
पो सुप्रसिद्धरे ॥रा०शं०१०॥ राय तेमावी यशोमति॥
पुछी तेहने वातरे ॥रा० बळद कीयो कां ए भणी ॥
फेमी नरनी जातिरे ॥रा०शं०११॥ यशोमति कहे. नृ

प शुणां ॥ नाहरो इहां नही दोषरे ॥रा०॥ प्रीतम वश
करी राखीयो ॥ वळी मुज उपरे रोशरे ॥रा०शं०१२
॥ मुजने प्रीतम अवगुणी ॥ एहनो हुइ रह्यो दासरे ॥
रा०॥ रीश सबळ मुज उपनी ॥ पोठी कीधो तासरे ॥
रा०श०१३॥ एहनो दोष सहुअछे ॥ बोहो एहनो शी
सरे ॥रा०॥ लेइ चडावो रासभे ॥ तो मुज उतरे री
शरे ॥रा०शं०१४॥ राय वखोमे बे भणी ॥ वे सरिखी
तुमे नाररे रा० ॥ बळद यशोमतिने दीयो ॥ रुमी परे
ए चाररे ॥रा०शं०१५॥ जळ पाये चारी वने ॥ करे
खीजमत संभाळरे ॥रा०॥ कहे जिनहर्ष इश्यो कर्यो
॥ इण पचवशमी ढाळरे ॥रा०शं०१६॥ सर्व गाथा
४७२॥

ढाळ २६ मी.

दुहा ॥ वियाधर वियाधरी ॥ वेशी विमाने जाय
॥ दुखिणि देखी यशोमति ॥ इणी परे पुछे शाय ॥१
प्रीतम शुण मुज वातडी ॥ ए दुखिणी काम नार ॥ व
नमां झूरे एकली ॥ ते मुज कहो विचार ॥२॥ सां
भळ नारि सुलक्षणि ॥ पशु कीयो निज कंत ॥ पशु
टळी थाये पुरुष ॥ ते नवि पुछयो तंत ॥३॥ दया उ

पनी नारिने ॥ पुछ्यो निज भरतार ॥ पशु टळी था
ये पुरुष ॥ दाखवो तेह विचार ॥४॥ विद्याधर बोल्यो
जडी ॥ छे वेलो जिहां नार ॥ ते खवरावे बळदने ॥
पुरुष थाय निरधार ॥५॥

ढाळ ॥ मेघमुनी कांइ मग मग मोले ॥ ए देशी
चाल्यो विमान विद्याधर केरो ॥ शब्द सुण्यो तिण ना
रि ॥ तिहां उग्यां तिण खड वन वेली ॥ चुंटी लीध
बुहारी ॥१॥ नृपति सुणो धर्म तणो अधिकारी ॥ जो
पुछे तो जोइ विचारी ॥ यशोमती चित धारी ॥ नृ०
२॥ छोड इकेको चारे तेहने ॥ आव्यो ते शुद्ध मूळ
॥ बळद टळीने पुरुष थयो तव ॥ थयो नारी अनूकु
ळ ॥नृ०३॥ वनस्पति सघळी सोझंतां ॥ साचे मूळ
पतिजे ॥ ज्ञान धरी ह्रियमे महाराजा ॥ खट दरशण
परखीजे ॥नृ०४॥ साचो धर्म हुवे ते ग्रहीओ ॥ खोटो
ते परीहरीओ ॥ शुद्ध देव गुरु शेवा कीजे ॥ शुद्ध धरम
आदरीओ ॥नृ०५॥ हरख्यो मन मांही जेसंगदे ॥
सांभली श्रीगुरु वयण ॥ शुद्ध धरम सांभळतां श्रवणे॥
जाग्यां ज्ञानना नयण ॥नृ०॥६॥ सिद्धपुरीमां राय मं
डाव्यो ॥ इन्द्र तणो तिहां थान ॥ ऊंचोने उतंग स

तोरण ॥ रुद्रमाळो अभिधान ॥नृ०७॥ आभे मंत्रि तेहनी पासे ॥ गाम राय-विहार ॥ श्री जिनवर प्रासाद मंमाव्यो ॥ ऊंचो अति विस्तार ॥नृ०८॥ विर जिनेश्वर मुरति थापी ॥ सुंदर अद्भूत रुप ॥ आव्यो श्री जिनवरनें देहरे ॥ देखी हरख्यो भूप ॥नृ०९॥ हेमाचारज पासे आवी ॥ वांदी गुरुना पाय ॥ इश्वर ने अरिहंत विचे अंतर ॥ ते कहो श्री मुनिराय ॥नृ० १०॥ हेमसुरी कहे सांभळ राजा ॥ अंतर विच अनंत ॥ इश्वर शीश निशापति सोहे ॥ ते जिन पाय नमंत ॥नृ०११॥ पूछो वळी सुतार नरेशर ॥ ते कहेशे अधिकार ॥ नृप तेमीनें पूछ्यो तेहने ॥ कहो तुम्ह शास्त्र विचार ॥नृ०१२॥ सुणो नृपति अम्ह शास्त्र मांहि ॥ एहवुं कह्युं जगदीश॥ नर सामान्य घरे पंचशाखा॥सात शाखा पुहविश ॥नृ०१३॥ इश्वर भूवन कही नव शाखा ॥ श्री जिन गृह एकविश ॥ देवळ इश तणो वन मांहि ॥ नगर भुवन जगदीश ॥नृ०१४॥ मंडप एक हुवे शिव मंदिर ॥ जिन गृह एकसो आठ॥ तिन छत्र शिर उपरे छाजे ॥ सिंहासन शुभ घाट ॥नृ० १५॥ पदमासन सोहे जिन मुद्रा ॥ नव ग्रह शेवे पाय

॥ आदि शक्ति रहे जेहने चरणे ॥ ते कहीये जिन राय ॥नृ०१६॥ भय उपजे नहीं जेहने देखी॥ दाता परम उल्हास ॥ ढाळ थइ जिनहरष एटली॥छवीसमी इण रास ॥नृ०१७॥ सर्व गाथा ४३४.

ढाळ २७ मी

दुहा ॥ अन्य देवने एहवी॥रचना करे न कोय॥ करे करावे हठ चमत्यो ॥ ते नर दुखीयो होय ॥१॥ अन्य देवना हाथमां ॥ चक्र बाण तरुआर ॥ जिनव रना कोइ हाथमां॥दीसे नहिं हथियार ॥२॥ ब्रह्मा वि श्नु महेशने ॥ पासे थापे नार ॥ जिन पासे दिसे नहीं ॥ नारी तणो परिवार ॥३॥ विश्वकर्माए इम कह्यो॥वा सग शास्त्र मझार ॥ सांभळी राजा हरखीयो॥जैन ध र्म जग सार ॥४॥ जिन भुवने कंचन कळस ॥ राय चडाव्यो रंग ॥ सैन्य सहित जेसंगदे॥आव्यो पाटण द्रंग ॥५॥

ढाळ ॥ नाचे इंद्र आणंदशुं ॥ ए देशी ॥ पाटण मांहि आवीयो ॥ वांदी श्री गुरु पायोरे ॥ तिण अव सरे जिन मंदिरे ॥ नेमि चरित्र वंचायोरे ॥पा०१॥ पांडव शेत्रुंजय चम्ती॥सिद्ध थया विचारोरे॥ब्राह्मण ते न

खमी शकत्या ॥ वोल्या वयण विचारोरे ॥पा०२॥ पामव हिमालय गळि ॥ पहोता मुगति मझारोरे ॥ स्व गेरोहिए मांहि कस्रो॥पुछे 'राय तिवारोरे ॥पा०३॥ स्वामी ए भट शु कहे ॥ सांभळी राय विचारोरे ॥ म हाभारथ माहि कस्रो॥तेह कहुं अधिकारोरे ॥पा०४॥ पामवनो काको कस्रो॥साचो सील गंगेवोरे॥दोधी शी ख कुटंवने ॥ सांभळज्यो सहु हेवोरे ॥पा०५॥ भुंइ कुमारी वाळज्यो ॥ एहवु कही मृत भृगोरे॥ उपाडयो गगेवने ॥ ले गया पर्वत श्रृगोरे ॥पा०७॥ विश्वानर जव मुकियो ॥ शब्द थयो मतवालोरे ॥ सो भीषम वा ळया इहां॥ त्रिणसे पामव आलोरे ॥पा०७॥ दाध्या छे इए भूमिका ॥ दुर्योधन हजारोरे ॥ करए तणी सख्या नहीं ॥ महाभारथ अधिकारोरे ॥पा०८॥ स्या पांमवनी भट कहे ॥ वात पुछे जेसंगोरे ॥ पामव पा ंडु नरिंदना ॥ शिद्धा शत्रुंजय श्रृंगोरे ॥पा०९॥ हरख्यो राजा इम कहे॥साचो श्री जिन धर्मोरे ॥ विप्र न जा णे शास्त्रमा ॥ भूल्या मिथ्या भर्मोरे ॥पा०१०॥ एक दि न ब्राह्मण वळी कहे ॥ सुण जेसगदे रायोरे ॥ आदि धं र्म नहीं एहनो ॥ वेद व्यास कहेवायोरे ॥पा०१

शुची मळे करी ए भर्या ॥ पवित्र नहीं मुख अंगोरे॥ धरम मरम जाणे नहीं॥न करे ज्ञान प्रसंगोरे॥पा०१२॥ उश्न निर पुण्ये पीए ॥ वस्त्र मुखे देइ बोलेरे ॥ अन्न पाक मागी खाये ॥ अशुचि न कोइ तोळेरे ॥पा० १३ ॥ इण वचने राय खिजीयो॥तुह्म विप्र मृखा बोलोरे॥ नवो धरम ए किम कहो ॥ वासग शास्त्र संभाळोरे ॥ पा०१४॥ तेमां जिन मंदिर तणा॥भेद कह्या बहु मर्मो रे ॥ पहिलि ते निर्णय करो ॥ पछे उथापो धर्मोरे ॥ पा०१५॥ मूळ धर्म छे जेहनो ॥ जैन धर्म कुण तो लेरे॥ढाळ सतावीशमी ॥ जिनहरष नृपति इम बोलेरे ॥पा०१६॥ सर्व गाथा ५१५०

ढाळ २८ मी.

दुहा ॥ जेणे धर्मे अश्व अज ॥ होमे नर पुन्य काज॥तेणे धर्मे किम कहो ॥ लहेशे शिवपुर राज॥ १॥ खोटो किम कहीए खरो॥ हिंसा धरम न होय ॥ जिनशासन मांहि दया॥इशो धर्म नहि कोय ॥२॥ ए टला दिन भूलो भम्यो ॥ गुरु करि मान्या विप्र ॥ हिं सा धरम समाचर्यो ॥ हवे ते छोड्या विप्र ॥३॥ त न जाणो धर्मनो॥भूला भमो सदीव ॥ अज्ञानी न

वी ओळखो ॥ सुक्षम बादर जीव ॥४॥ ब्राह्मण सहु हांक्या नृपत ॥ लाज्या मनमां ताम ॥ हेमशुरिना अह निंश ॥ राय करे गुण ग्राम ॥५॥

ढाळ ॥ जीराना गीतनी ॥ - जाणो नृपनो ला ग्यो सुरंग ॥ साचोरे साचो श्री जिन धर्मशु ॥ जेसंग दे सुण वात ॥ नवो करुं व्याकरण पंचांग ॥ हेमारे हे माचारज कहे इशुं ॥१॥ जेसंगदे सुण वात ॥ निसु णी ताहरी जग ख्यात ॥ जीभेरे जीभे निज कहिए किशुं ॥जे० ए आंकणी ॥ राय कहे सांभळ मुनीरा य ॥ मुजनेरे मुजने शुं पुछो तुम्हे ॥जे०॥ जिम तुम ने स्वामि सुख थाय ॥ कीजेरे कीजे छुं राजी अम्हे ॥जे०२॥ हेमसुरिसर कहे कासमिर ॥ सारदरे सारद भंमार छे ॥जे०॥ आदि व्याकरणनी मत गंभिर ॥ वी जेरे बीजे ठामे ते नथी ॥जे०३॥ वेगे सोय अणावो महाराय ॥ रचनारे रचना करुं व्याकरणनी ॥जे०॥ श्री सारद करे सुपसाय ॥ भक्तिरे भक्ति श्री गुरु चर्ण नी ॥जे०४॥ राये तेडव्या निज प्रधान ॥ भाखेरे भा खे कासमीरे जइ ॥जे०॥ तिहां श्री सरस्वति भगवति थान ॥ लावोरे लावो तुमे पोथी सही ॥जे०५॥ आ

णा निज प्रभुनी शिर धार ॥ चाल्यारे चाल्या काम मीरे जणा ॥जे०॥ आव्या जिहां सारद प्रसार ॥ की धारे कीधां अगरनां धूपणा ॥जे०६॥ तुठी सारद दे वी ते,वार ॥ आपीरे आपी आठे पुस्तिका ॥जे०॥ लेइ आव्या ते असवार ॥ नृपनेरे नृपने दिधी पुस्तिका ॥जे०७॥ दीठी पोथी सुंदर रुप ॥ आपीरे आपी हेमसुरिंदने ॥जे०॥ पोथी जोमी जोवे अनुप ॥ तुठि रे तुठि माय मुज मंदरे ॥जे०८॥ प्रणमी सारद चरण सुरंग ॥ हेमारे हेमाचारज सुरवरे ॥जे०॥ कीधो ति णे व्याकरण पंचांग.॥ दीधोरे दीधो राजाने कहे ॥जे० ए॥ राये तेमव्या पंमित जाण ॥ जोवोरे जोवो व्या करणी तुम्हे ॥जे०॥ कीधो ते व्याकरण प्रमाण ॥ प्रत्य यरे प्रत्यय देखी यहुं अम्हे ॥जे०१०॥ कासमीर दे श सारद चंद्रिकांति ॥ मूरतिरे मूरति प्रत्यय छे खरो ॥जे०॥ आंगळ छे जळ कुंम अखांति ॥पोथीरे पोथी ते मांही धरो ॥जे०११॥ मननां राय विचारे ताम॥ एतोरे एतो द्वेष अजी वहे ॥ जे० ॥ निष्कारण ए वयरनो ठाम ॥ जळमांरे जळमां कागळ किम रहे ॥जे०१२॥ ब्राह्मणने न गमे मुनिज्ञान ॥ फोकटरे

फोकट मच्छर मन धरे ॥जे०॥ हम भणी पुछे नृप ताम ॥ ब्रालणरे ब्राह्मण एहवुं उचरे ॥जे० १३॥ हम कहे नृप वार म लाय ॥ तेमत्यारे तेमत्या सहु पंडित भणी ॥जे०॥ राये निज प्रधान बोलाय ॥ भाखेरे भाखे वाणी सोहामणी ॥जे० १४॥ चालो पोथी लेइ सुजाण ॥ चाल्यारे चाल्या गर्व हीये धरी ॥जे०॥ लां बा करता प्रयाण ॥ आव्यारे आव्या सारद देहरे ॥ जे० १५॥ पोथी मुंकी कुंभ मझार ॥ जाण्योरे जाण्यो गळि जाशे सही ॥जे०॥ ढाळ अठावीशमी अवधार॥ रुडीरे रुडी जिनहरखे कही ॥जे०॥ सर्व गाथा ५२६.

ढाळ २९ मी.

दुहा ॥ हंस करे क्रिमा सरे ॥ तिन पोथी जळ माह ॥ झीले पण भीजे नही ॥ जळ मेल्हो अवगाह ॥१॥ काढी पुस्तक जोइयो ॥ भीनो नहीं लगार ॥ ब्राह्मण मुख झांखा पड्या ॥ आव्या नगर मझार ॥१॥ राजा आगे आवीने ॥ कहे पंडित प्रधान ॥ हे मसुरि मोटो यति ॥ साचो एहनो ज्ञान ॥३॥ एहवो कुण पंडित अवर ॥ करे व्याकरण जेह ॥ जळ मांहि पोथि तरी ॥ नयणे दीठी तेह ॥४॥ नृप हरख्यो

सांभळी वयण ॥ तेडा तेस्या ताम ॥ त्रिण वर्ष लगे त्रि णसें ॥ मोह मांग्या थे दाम ॥५॥ सोवन अक्षर पुस्त का ॥ मेळी देश अढार॥ क्रोध रिश-जाय वांचतां ॥ हियडे हर्ष अपार ॥६॥

ढाल ॥ जलालीयानी ॥ श्री हेमाचारज समोरे॥ नहीं कोइ एहनी जोडरे ॥ जगमां यति ॥ आठ व्या करण भण्या जिकेरे॥उभा रहे कर जोडरे॥ज०श्री०१॥ लाख सवा हेम विस्तर्यारे ॥ बीजा-हवे न सुहायरे ॥ ज०॥ अमृत भोजन जिणे भख्युंरे ॥ ते किम खीच ड खायरे ॥ज० श्री०२॥ क्षारो दाधि जळ किम रुचेरे ॥ जिणे कीधां पय पानरे ॥ज०॥ माणक हीरा विण जीयारे॥ मणिहारी किणि ग्यानरे ज० श्री०३॥ हेम व्याकरण दीठो जिणेरे ॥ तेहने न गमे अन्यरे ॥ज० हेम तणी वाणी भलीरे ॥ सहुको कहे धन धन्यरे ॥ ज० श्री०४॥ लागी प्रीति सुरीतशुंरे ॥ जेसंगदे ने हे मेरे ॥ज०॥ विण दीठां मन दूमणोरे ॥ दीठां वाधे प्रे मरे ॥ज०श्री०५॥ हेम वयण श्रवणे सुणीरे॥पाप भीरु थयो रायरे ॥ज०॥ आहेडो वार्यो सहुरे ॥ मच्छी जाळ जलायरे ॥ज० श्री०६॥ कोमी सोनइया वरप

नारे ॥ खरचे नृप पुण्य काजरे ॥ज०॥ मीएल नामे मुकीयोरे ॥ अकर मही महाराजरे ॥ज०श्री०७॥ अकर करे जे नर नवारे ॥ सो गाय हत्यानो पापरे ॥ज०॥ अकर उतारे तेहनेरे ॥ गौ कोडि छोडयानो लाभरे ॥ज०श्री०८॥ दढ धर्मी नृप जाणीनेरे ॥ हेम सुरी कर्यो विहाररे ॥ज०॥ तारे पर पोते वरेरे ॥ प्रतिबोद्धे नर नाररे ॥ज०श्री०९॥ श्रीफळ पान सोपारी यारे ॥ सुधी कनक महाकायरे ॥ ज०॥ जिम जिम दुरे संचरेरे॥ तिम तिम मुहगां थायरे॥ज०श्री०१०॥ उग्र विहारे विहरतारे ॥ देता शुद्ध उपदेशरे ॥ ज० ॥ तिण अवसरे एक देवतारे ॥ मध्य राते सुविशेशरे ॥ ज०श्री०११॥ कर जोडी कहे हेमनेरे ॥ स्वामी तजो अन्य देशरे ॥ज०॥ रहो तुम्हे गुजरातमारे ॥ थास्ये लाभ अशेशरे ॥ज०श्री०१२॥ सूर वचने गुरु आवीयारे ॥ पाटण नगर मझाररे ॥ज०॥ पाये नम्यो जे संगदेरे ॥ हरख्यां सहु नर नाररे ॥ज०श्री०१३॥ वंश विमळ चोलक तणोरे ॥ विमळदेव महाराजरे ॥ज

साररे ज०॥ खिमराजं सुत बुद्धि आगळोरे ॥ तिहुअ
णपाळ-सुविचाररे ॥ज०श्री०१५॥ तिन पुत्र दोय पु
त्री भलीरे ॥ सीलवती अभिरामरे ॥ज०॥ कहि जिन
हर्ष सुढाळएरे॥ ओगणत्रीशमी नामरे ॥ज०श्री०१६॥
सर्व गाथा ५५८ ॥.

ढाळ ३० मी.।

दुहा ॥ कुमारपाळ पहिलो कुमर ॥ वीजो तिम
महिपाळ ॥ कृतवाळ त्रिजो कहुं ॥ तीने सुत सुकमा
ळ ॥१॥ प्रेमलवाइ घुर सुता ॥ जेसंग सेनापत्त॥कृष्ण
देवने ते वरी॥सुख विलसे नित नित्त ॥२॥ वीजी देव
ळ कन्यका ॥ साकंवरी नरेश ॥ पूरण राजा परणीयो
॥ कारमेरी नाएश ॥३ अदभुत अश्व चढि करी ॥ ए
क दिन कुमर-नरिंद ॥ राजसभामां आवियो ॥उग्यो
जाणे दिणंद ॥४॥ हेमसूरि देखी करी ॥ पाम्यो हर्ष
अपार ॥ मुख साहो जोइ रह्यो॥नयणे अमृत धार॥५॥

ढाळ ॥ राग गोडी ॥ जंबुद्वीप मझार ॥ए देशी॥
हितशुं कुमर नरिंद हेमसुरिंदमें ॥ देखी हर्ष हैयो भ
र्योए ॥ धन धन मुनिवर एह ॥ देह दमे निज ॥ दुष्क
र मत एणे धर्योए ॥१॥ एक दिन वांदण जाय ॥ गि

रुआ गुरु जणी ॥ पोशाळें बहु प्रेमशुं ए ॥ कुमारपाल कर जोडि ॥ बेठो आगळें ॥ हित लाग्यो श्री हेमशुं ए ॥२॥ पूछे कुमर नरिंद ॥ हेम मुणिंदने ॥ नर सोहे किण गुण करीए ॥ सांभळ राय सुजाण ॥ सत्व गुणे करी ॥ परदारा संग परिहरिए ॥३॥ यह गणमां जि नं चंद ॥ तेज दिवाकर ॥ नृपमां राम नरेसरुए ॥सुर मां सुरपति देव ॥ कंचण धातुमां ॥ सत्व गुणे तिम सुं दरुए ॥४॥ एकलडो जिम सीह ॥ वन माहे वसे ॥ सत्व गुणे बीहे नहींए॥ रवी गयणं गण एक ॥ तिमि र नसाडतो ॥ जग उद्योत करे सहीए ॥५॥ सत्व वि ना नर जेह ॥ ते पशु सारीखा ॥ लेखामां न गणीजी येए ॥ सत्वे सिझे काज ॥ सत्वे शुर नमे ॥ अंगे सत्व धरीजीयेए ॥६॥ यतः ॥ सुर सुभट मल पंच जण ॥ कायर सो पंचास ॥ नीसत्व लक्ष लेखे नही ॥ सुरो एको खास ॥१॥ चाल पुर्वनी ॥ सुर पुरुष संबंध ॥ सुणज्यो सहु जणा ॥ शिव शास्त्रनी छे कथाए ॥ ह स्ति नागपुर द्रंग ॥ पांमव तिहां वसे ॥ सत्व सील गु ण नही तथाए ॥७॥ यज्ञ करेवा ताम॥पांमव उमह्या ॥ राय युधिष्टिर तेडीयोए॥अर्जुनने कहे एम ॥ लावे

कुमाहए ॥कनक तिहांथी खेमीयोए ॥८॥ एकाकी ब
ळवंत ॥ आव्यो वेगशुं॥सेतबंध रामेसरुए ॥ आगे र
थ नवि जाय ॥ अडकीने रह्यो॥चिहुं दिशि जोवे नर
वरुए ॥९॥ काष्ट पापाण न दीठ ॥ हरि हरे जो ग्यो
॥ दीठो तातो ऊंदराए॥अर्जुन चिंते ताम ॥ सोल सा
यर तरी ॥ राम नाम महिमा खरोए ॥१०॥ पाणीने
पापाण॥ सक्ति न तेहनी ॥ तिम इहां कारण छे सहीः
॥ ऊंदरनो शो जोर॥रुधे वाटने ॥ पण बळ पाखे ए
नहीं ए ॥११॥ देव दानव जक्ष जेह॥थाये ते इहा॥
मतक्ष थइ बोल्यो इहांए ॥ आ पुढवी हनुमंत ॥ बो
ल्यो इणि परे ॥ अर्जुन जाइश किहांए ॥१२॥ मुज
ने मुकव्यो राम ॥ रखवाळण भणी ॥ इण पाजे कोइ
नर बीजोए ॥ जाण न पामे॥राम॥तणी नही आग
न्या ॥अर्जुन मनमां मत खीजोए ॥१३॥ अर्जुन क
हे तिणवार ॥ में जावुं सही ॥ रो.वन लेवा इणे पंथे
ए॥ताहरो पति श्री राम ॥ खडसे तो किम ॥ जश का
म पुण्यनां कथेए ॥१४॥ करो तुम्हे पण पुण्य ॥ का
रज उत्तम ॥ क्रोध काळ दूरे हणीए ॥ ढाळ थइ ए
बीश ॥ अर्जुन इम कह्यो ॥ कहे जिनहर्ष हनु भणी

ए ॥१५॥ सर्व गाथा ५७८ ॥.

ढाळ २१ मी.

दुहा ॥ पद्म पुराणे हरी कह्यो ॥ करे करावे जे ह ॥ अनुमोदे साहाज्य थे ॥ सरिखुं पुण्य कहेह ॥१॥ सांभळ अर्जुन कपी कहे ॥ कंचणशुं जो काज ॥ तो जा बीजी वाटमी ॥ जाण न धुं इण पाज ॥२॥ अर्जुन कहे कपीनाथ सुण ॥ जाएवुं इण वाट ॥ कहे तो पाज बीजी करुं ॥ करुं सुगम वळी घाट ॥३॥ उठ्यो अर्जुन सत्व भरी ॥ वाहि असंखित बाण ॥पाज रची हनुमान कपी ॥ करे परीक्षा माण ॥४॥ सात ताननो रुप करी ॥ उछळी पग्यो जाम ॥ पाज उदरे वानरो ॥ थांकी वळी न ताम ॥५॥ अर्जुन बळ देखी करी ॥ कपि चिंते तिणिवार ॥ संग्रामे पुहुचुं नहीं ॥ एहनो सत्व उदार ॥६॥

ढाळ ॥ देह अशुची करी पुरियोए ॥ए देशी॥ कर जोडी हनुमंत कहेरे ॥ कांइ करो संग्राम ॥ तोनो आपु तुज गणीरे ॥ कहे ते करुं वळी काम ॥१॥ सुविचाररे राजन सांभळ कुमर नरिंद ॥ धर्म एहथी पामीए ॥ इम कहे हेम मुणिंद ॥सु०॥ सत्यवंत नर आ

नळेरे ॥ कोइ न मांगे पाय ॥ आपो आंगमीया पछे रे ॥ कुण राणो कुण राव ॥सु० १॥ तादृशो सत्व जो या भणीरे ॥ एह परीक्षा कीध ॥ कनक लेइ अर्जुन चल्योरे ॥ भ्रात भणी आणी दीध ॥सु० ३॥ अर्जुन सत्वे आगळोरे ॥ गुण गाजे सहु कोय ॥ सत्यवंतने सहु नमेरे ॥ यश पामे त्रय लोय ॥सु० ४॥ सत्व शो भे नहीं एकलोरे ॥ एकलो न सरे काम ॥ वाघ सिंघ गज अति बळोरे ॥ पशुय धरावे नाम ॥सु० ५॥ रथ न चले चक्र एकलेरे ॥ एक हाथे न लुणाय ॥ एक हाथे रोटी न्हविरे॥ एक पगे न चलाय ॥सु० ६॥ सत्व सील जो वे मिलेरे॥ थाये कारज सिद्ध॥ पग पग पामे सं पदारे॥ पग पग लहे नवनिद्ध॥सु० ७॥ परनारि जे परिहरेरे ॥ तिण घर कोमे कल्याण॥ परदारा संगम करेरे॥ निश्चे जा ये प्राण ॥सु० ८॥ राम घरणी रावण हरीरे ॥ तो छे दाव्यां सीश ॥ कीचक द्रुपदी कारणेरे ॥ भीम दशा करी रिश ॥सु० ९॥ परनारी नवी राचीएरे ॥ सांभळ भोळा सीख ॥ धार धणी परनारथीरे ॥ घर घर मांगे भीख ॥सु० १०॥ कळीकाळे सोनी थयोरे ॥ साह भ ल्यो संग्राम ॥ रत पाखे आंबो फळ्योरे ॥ मेह वुठ्यो

अभिराम ॥सु०११॥ सील तणी महीमा इसीरे ॥ देव दानव जक्ष दइत ॥ सील थकी पुहचे नहीरे ॥ स्वामी थाए जइत॥सु०१२॥ तिणे कारण परस्त्रि तजीरे ॥ पाळो सीळ अखंड ॥ सत्य सीळ अंगे धरेरे ॥ महिमा वधे चिहु खंड॥सु०१३॥ कुमर नरेशर आगळेरे ॥ वचने कह्यो इम हेम ॥ परनारिनो मुज जणीरे ॥ पुज्य करावो नेम ॥सु०१४॥ नीयम लीयो परनारीनोरे ॥ सीळ धर्यो अभिराम ॥ कहि जिनहर्ष एकवी समारे ॥ ढाळ थइ इण ठामे ॥ सु०१५ ॥ सर्व गाथा

ढाळ २२ मी.

दुहा ॥ श्री गुरुने करी वंदना ॥ उठ्यो कुमर नरिंद ॥ पहुतो मंदिर आपणे ॥ धरतो मन आणंद ॥ १॥ हेमसुरीना गुण वश्या ॥ निरमळ हिया मझार ॥ पर उपगारी एहवा ॥ थोडा इण संसार ॥ २॥ थोडो कंचन धातुमां ॥ थोडो चंदण वृक्ष ॥ तिम जग माहि थोडला ॥ पर उपगारी दक्ष ॥ ३॥

ढाळ ॥ श्री थंभण पासजी पुजियेजी ॥ ए देशी ॥ राग गोडी ॥ जेमंगदे सुत विण दुख धरेजी ॥ सु

श विण सुनो घरवास ॥ निसिदिन रहवुं उदाश ॥ जे०
॥ इण अवसर जेसंगदे राजा ॥ झुरे हीयमा मांही ॥
रात दिवश चित चिंता निवसे ॥ मुज घर अंगज
नाहिं ॥ जे० १॥ कोडि उपाय करे सुत कारण ॥ खर
चे द्रव्य विशेषे ॥ जे जिम दाखे राय करे तिम ॥ अ
रथी दोष न देखे ॥ जे० २ ॥ कनक तणो आवास अनोपम
॥ दीपक कोडि मझार ॥ जिण घर पुत्र नहिं अजुआळो ॥
तिण घर घोर अंधार ॥ जे० ३॥ रतन कनक मणी
माणेक मोती ॥ लिखमी पार न कोइ ॥ तोही पण ते
निरधन कहीये ॥ जिण घर पुत्र न होइ ॥ जे० ४॥
इम राजा मनमांहि विमासे ॥ कुण जोगवशे राज ॥
इस्यो विमासी चित्त उदाशी ॥ आव्यो जिहां गुरुरा
ज ॥ जे० ५॥ हेमाचारजने नृप पुछे ॥ मुज सुत छे
के नाहिं ॥ जेहवुं होय तेहवुं भाखो मुनि ॥ मत रा
खो मनमांहि ॥ जे० ६॥ अंबादेवी ध्यान धरेवी ॥ प्रत
क्ष थइ तिणवार ॥ गुरु पुछ्यो तेणे ना भाख्यो ॥ ही
यडे धरीय विचार ॥ जे० ७॥ श्री हेमाचारज कहे
ताहरे ॥ नंदन नहिं राजिंद ॥ ए सहु राज तुम्हारो
राजन ॥ लेस्ये कुमर नरिंद ॥ जे० ८॥ सुणी विखवा

द थयो मनमांहि ॥ बाहिर वात न काढि ॥ घर आ
व्यो पण मनमां विलखो ॥ अगनि परे देह गाढी ॥
जे० ९॥ पंडित सहु तेडया रायंगण ॥ पुछे मुज घर
पुत्र ॥ थास्ये कहीये ते मुज भाखो ॥ जेहथी रहे ध
र सुत्र ॥जे०१०॥ ग्रंथ शास्त्र जोईने पंडित ॥ भाखे
तास विचार ॥ ताहरे पुत्र नहीं न दुवाहिश ॥ जो क
रे लाख प्रकार ॥जे०११॥ ताहरो राज्य तणो पति
थास्ये ॥ कुमारपाळ भूपाळ ॥ सांभळी हियमा मांहि
उठी ॥ दुख पावकनी झाळ ॥जे०१२॥ शोकातुर रा
जाने जाणी ॥ एक विप्र कहे वाणी ॥ स्वामी अमारो
कह्यो करीजे ॥ गंगा जइ लावो पाणी ॥जे०१३॥
पग अडुआणा पाळा जळ लेइ ॥ सोमेश्वर जइ
पुजो ॥ थाणहार छे तो सुत थास्ये ॥ नही उपाय को
दुजो ॥जे०१४॥ अरथी काम करे नही श्यां श्यां ॥
पाज बंधावी राम ॥ इश्वर लाज तजीने नाच्यो ॥
अरथे चल्यो नृप ताम ॥जे०१५॥ आणी जळ पु
ज्यो सोमेश्वर ॥ भगते नामी सीश ॥ कही जिनहर्ष
बत्रीशमी ढाळे ॥ अरज करे अवनिश ॥जे०१६॥स
र्वे गाथा ६१८.

॥ढाळ ३३ मी॥

दुहा ॥ भाव भक्ति वहु जुक्तिशुं ॥ पुज्या एम खट मास॥बे कर जोडी इम कहे ॥ पूर पूर मुज आश ॥१॥ इश्वर आगळ विनती ॥ करे एम जेसंग ॥ सुत आपो सुप्रसन्न थइ ॥ जिम मुज हुवे उछरंग ॥२॥ इश्वर कहे जेसंग शुण ॥ पमियो छे शुं भर्म ॥ मं शुत किम जाये दीयो ॥ न लिख्यो ह्हारे कर्म ॥३॥ राय रीसाणो इम कहे ॥ इश्वर थइ वडव ॥ शुत नवि दीधो जाय तो ॥ सक्ति पायाल प्रइठ ॥४॥ इश्वर कहे हुं शुं करुं ॥ लिख्यो न मेटस्यो जाय॥जेहवुं जेना कर्ममें ॥ तेहवुं तेहवुं थाय ॥५॥

ढाळ ॥ करतां शुं तो मित सहु हुंसे करेरे ॥ए देशी॥ इश्वरना शुणी बोल नृपति घरे आवीयोरे॥नृ०॥ पुरजन लोके ताम सुनामी वधावीयोरे॥सु०॥ नाखे मुख निस्सास उदास सदा रहेरे ॥उ०॥ बे कर जोडी ताम सुजागणी इम कहेरे ॥सु०१॥ दीसो कां दीलगीर सधीरपणो किहांरे ॥स०॥ चिंता तुमने आज किस्यो कारण इहांरे ॥कि०॥ राय कहे चित लाय के राणी सांभळोरे ॥ के०॥ हियमे सबळी चिंत के

मुज मन भागळोरे ॥के० २॥ पुत्र नहीं मुज राज क
हो कुण राखशेरे॥क०॥ पुत्र विहुणी रीद्धि निशा श
शी विणजशेरे ॥नि०॥ आराध्यो खट मास इश जग
दीशनेरे॥इ०॥तिणे भाख्यो इम पुत्र नही तुज सीशमेरे
॥न० ३॥साभळी नृपनेनां वयण नेयण आंसू झरेरे ॥न०
॥ जाणे त्रुटयो हार सघन मोती खरेरे ॥स०॥ मसके
रोवे नार किसी गति राजनीरे ॥कि०॥ पामी रीद्धि स
मृद्धि किशाए काजनीरे॥कि० ४॥काणी पुत्री होय तो
ही दुख उनसमेरे ॥तो०॥ब्रांझ तणो अपवाद टळे स
हु लोकमेरे ॥ट०॥ निज हाथे निज भाण हणेवु सोहि
लुरे ॥ह०॥वांझीयडानु लोक महेणुं दोहिलुंरे॥म०
५॥ मंगळ वामे अमगळ माने वांझणीरे ॥मा०॥ होय
तने अपमान न माने निज धणीरे ॥न०॥ कांई सरजी
किरतार पुकारे कामिनीरे ॥पु०॥ श्यां किधा मे पाप
लह्या दुख भे भणीरे ॥ल०६॥ यत०॥ वांझि पुकारे
थळ चमी॥ हुं का जनमी माय॥पुत्र नहि खोल्यो पाल
णे ॥ वहु न लागी पाय ॥१॥ मंदिर मोटो धन घणा
॥ घर हाथी केकाण ॥ जस घर बाळक नहि रमे ॥
ते घर जाण मशाण ॥२॥ मंदिर सुना वाळ विण ॥

सुतथी वंश वधंत ॥ सुत विणुं घर जेहनुं ॥ ते कुळ
सह्नी गळंत ॥३॥ ढाळ पुर्वनी ॥ काळं विना जेम मेह
नेह विण रुसणोरे ॥नें०॥ लुण विना जेम धान मान
विण वेसणोरे ॥मा०॥ जोबन विण शणगार संपत्ति
विण माहुणोरे ॥सं०॥तिम मंदिर विण पुत्र न होये सो
हामणोरे ॥न०७॥ दंत विना गजराज राज विण पा
टवीरे ॥रा०॥ वस्तु अनोपम देखि विना धन साटवी
रे ॥क्रि०॥ पंखी जिम विण पंखं सरोवर जळ विनारे
॥स०॥ वास विना जिम फुल्ल सुगुरु विण आमनारे
॥सु०८॥ राय राणी मन मांहि विचारे एहवुंरे ॥वि०
॥ पुत्र विना घरबार न शोभे तेहवुंरे ॥न०॥ आलुं
सयल निधान वधोवध तेहनेरे ॥व०॥ जे कोई ये पुत्र
दीउ रिद्धि तेहनेरे ॥दी०९॥ जोगी जंगम सिद्ध सहु पु
छ्या जणारे ॥स०॥ तोही न हुवे पुत्र उपाय कर्या
घणारे ॥उ०॥ राय तणा मन मांहि कुमति आवी इशी
रे ॥कु०॥ मारुं कुमर नरिंद पुत्र मुज थाइशेरे ॥पु०
१०॥ वांको करे विचार के स्वारथ आपणेरे ॥के०॥
गयो गयो बुद्धिवंत अज्ञान पमयो घणेरे ॥अ०॥
स्वारथ वासो जीव न बीहे पापथीरे ॥न०॥ स्वारथ

सरिखो नीच जगतमां को नथीरे॥ज०११॥ कनकके तु नृप पुत्र हण्यो निज स्वारथेरे॥ह०॥लोभे कृष्न उपाय करे सायर मथेरे ॥क०॥ लोने कोणिकराय श्रेणिक ने मारीयोरे ॥श्रे०॥ लोभे करे अकाज रहे नही वा रीयोरे ॥र०१२॥ जग सहु स्वारथ सूत विचार नही किमेरे ॥वि०॥ निःकारण मति मूढ वैर वाधेरे इमेरे॥ वै०॥ राय हुतो बुद्धिवंत गई बुद्धि जेहनीरे ॥ग०॥ ढाळ थइ जिनहर्ष तेत्रीशमी एहनीरे ॥ते० १३ ॥ सर्व गाथा ६३६.

ढाळ ३४ मी.

दुहा ॥ हरण नाभी कस्तुरिका ॥ मणि अहि सि श धरंत ॥ हाथे नावे जीवतां॥वाघ दंत गय दंत ॥१ ॥ रात दिवश जेसंगदे ॥ जोवे दाय उपाय ॥ पुण्य जाम पोते घणो ॥ कुमरपाळ न मराय ॥२॥ कुमर पाळ मनमां चकत्यो ॥ न करे तास वेसास ॥ हाथ न आवे रायने ॥ आवे पण नही पास ॥३॥

ढाळ ॥ चरणाली चामुंड रण चडे ॥ ए देशी ॥ हवे जेसंगदे नृप कोपीयो ॥ मुंकया सुभट सनुरोरे॥ मारो वेगे दहथळी ॥ कुमर नरिंद कुळ चुरोरे ॥ह०

१॥ सुहम लेइ नृप आगन्या ॥ चाल्या थइ असवारो
रे ॥ संनद्ध वद्ध थइ करी ॥ लेइ सहु हथीयारोरे ॥
॥ह०२॥ वींटी वेगे दहयळी ॥ जुद्ध थयो असराळोरे
॥ नाठो कुमर नरेशरु॥मार्यो तिहुअणपाळोरे ॥ह०३
॥ पाटणमां आवी रह्यो ॥ खबर नही भूपाळोरे ॥ का
रण पाखे जोइज्यो ॥ कोप्यो राय कराळोरे ॥ह०४
॥ कुमरपाळ मन चिंतवे ॥ आतम काजे देशोरे ॥ छां
नो रहीये वेगळा ॥ शास्त्रे कह्यो उपदेशोरे ॥ह०५॥
यत. ॥ त्यजे देकं कुल स्यार्थे ॥ ग्राम स्यार्थे कुलं
त्यजेत् ॥ देश स्यार्थे त्यजे ग्राम ॥ आत्मार्थे सकलं
त्यजत् ॥१॥ चाल पुर्वनी ॥ चित विमासी चालीयो
॥ कुमर नरेशर तामोरे ॥ आव्यो वनेवी जिहां ॥ कृ
श्नदेव इण नामोरे ॥ह०६॥ वहु नेहे मिलीया वन्हे ॥
मांनी कह्यो वृतांतोरे ॥ कृश्नदेव कहे सांभळो ॥ मन
मां धरीय निरांतोरे ॥ह०७॥ दिन सरिखा नहीं केह
नां ॥ सुरिय तारा चंदोरे ॥ ऊगे ने वळी आथमे ॥
कवही तेज कवही मंदोरे ॥ह०८॥ सुर चक्रि अरिहं
तने ॥ सरिखा दिन नवि जायोरे ॥ मोटा पण आ
पद लहे ॥ अवरतुं शुं करेवायोरे ॥ह०९॥ किण दित्त

छत्र धरावतो ॥ करता हाल कलोलोरे॥किण दिन मा
गी जोखडी ॥ ऊभा ऊलाऊलोरे ॥ह०१०॥ किण दि
न वागा पहेरणे ॥ किण दिन नगन विरुपोरे ॥ सोभा
गी दोभागीयो ॥ कर्मनो एह सरुपोरे ॥ह०११॥ छा
नो बेशी रहे हमे ॥ वांका छे तुज दिशोरे ॥ पुन्य दउ
य ज्यारे हुस्ये ॥ छत्र धरावीश सिशोरे ॥ ह०१२ ॥
सुखे समाधे इहां रहो ॥ म करो चिंता कांइरे ॥ कुमा
रपाळ हवे तिहां रहे ॥ जेसंगदे मुद्धि पाइरे ॥ह०१३
॥ छानो हेरु आवीयो ॥ थयो अवधुत पुलायोरे ॥
पाटणमां आव्यो फिरी ॥ भरमा भेळो थायोरे ॥ह०
१४॥ दिन केटला तेमां रह्यो ॥ जेसंगने थइ जाणो
रे ॥ चोरी जेह सुगंधनी ॥ ढांक्यो न रहे भाणोरे ॥
ह०१५॥ छानो कहोने किम रहे ॥ भीक्षारीमां भूपो
रे ॥ ढाळ थइ चोवीशमी ॥ कहो जिनहर्ष सरुपोरे ॥
ह०१६॥ सर्व गाथा ६५५ ॥

ढाळ ३५ मी.

दुहा ॥ भरमा तेडया जीमवा ॥ जेसंगदे भूपा
ळ ॥ आव्या राउल सहु मिली ॥ गरढा धनवा वाळ
॥१॥ पाय पखाळि तेहनां ॥ लक्षण जोवे राय ॥ भ

रमा पग निर लक्षण ॥ कुमर पखाळे पाय ॥ २ ॥
दीठां लक्षण नृप तणां ॥ मेंगळ मच्छ आकार ॥ ध
ज सायर तोरण धनुष ॥ छत्र चामर उदार ॥ ३ ॥ चि
त चमक्यो नृप चिंतवे ॥ कुमरपाळ ए होय ॥ हवे
आव्यो छे सांकडे ॥ जिम अहि घडी समोय ॥ ४ ॥
मेंगळ पडयो अजामीये ॥ निकळी न शके जेम ॥ रा
य पडयो तिम सांकडे ॥ कहो निकळशे केम ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ छांहलीनी ॥ राय जेसंग विचारीए ॥
मंत्रि तेडया ते वारेए ॥ वारेए एहने जावा मत दीयोए
॥ ए भरमो जो जाश्येए ॥ तो तुझने दुख पाश्येए ॥
आसेए जाण न पावे इम कीयोए ॥ १ ॥ एहवुं कही नृ
प घर आवेए ॥ भोजन भात रंधावेए ॥ ध्यावे ए कुमर
पाळ मनमां इश्योए ॥ करमें मुज इहां आण्योए ॥ रा
ये पण मुज जाण्योए ॥ नाण्योए एहनो बीहक में
किश्योए ॥ २ ॥ कुड रच्यो मुज काजेए ॥ वयरी जेसं
ग गाजेए ॥ वाजेए मरण नगारां मुज शिरेए ॥ मूढ
जाणंतो हुं हुओए ॥ देखी पाखीने कुओए ॥ जुओ ए
आवीने मांहि पडयो खरोए ॥ ३ ॥ रसना वशे दुःख ल
हीयेए ॥ कहो हवे केहने कहीयेए ॥ सहीयेए इंद्रीने

वशे दुख घणाए ॥ कोइ उपाय हवे करुंए ॥ ए संक
टथी उगरुए ॥ परिहरुंए भोजन इहांथी भाजणाए ॥
४॥ जिमवा तमला रायेए ॥ भरमास्युं मिलि जायेए
॥ खायेए तिम इन वळी पाछो वमेए॥उभो थइने उव
केए ॥ छांटे भरीया सहु वकेए ॥ ते तकेए निकळवा
नो कोइ समेए ॥५॥ भरमे मिलि हांकी काढयोए ॥
खरमे मीले ते नाठोए ॥ माठोए रहेता थाये माहरोए
॥ जेसगराय आव्यो जिशेए॥भरमो देखे नहीं तिसेए॥
नृपतिशए मंत्रीस्युं खीज्यो खरोए॥६॥ किहां राउळ दी
से नहींए॥तुम आगळे नाठो सहीए॥इम कहीए हांक्या
सहु तुम्हे शुं कीयोए॥मंत्री कहे राजन सुणोए ॥ मुखे
वमन कर्यो घणोए ॥ सुगामणोए भरमे काढी मुंकी
योए ॥७॥ सीह संकटथी छुटियोए ॥ नावे तेह अपु.
वियोए ॥ रुठियोए ते हवे जाये किम यझोए ॥ लावो
तेहने पकमीए ॥ हाथ पावतशुं जकमीए॥ फकडीए न
ही तो थास्यो नृप कसोए ॥८॥ राउल केमे चाल्यो
ए॥ सेना लेइ माल्योए ॥ साल्योए सेनानीने दुख घ
णोए ॥ कुमर तणा जोतो पायए ॥ केमे उजाएयो जा
यए ॥ ते थायए अली कुमारनो भाहुणोए ॥९॥ वी

हयो अलीनो घर जइए ॥ कुमरनरिंदने शुद्ध थइए ॥ घरमेंए छे काढी दे इन थाणेए ॥ नहि तो मारीश तु जनेए॥ दोष म देइश मुजनेए॥वजनेए संगति करीजे आपणीए ॥ १०॥ अलि भाखे धीरज धरीए ॥ कां तुम्ह सहुनी मति फरीए॥इम करीए दंढ किस्यो लेवा मतोए ॥ कुडो कलंक न दीजीयेए ॥ चोर करी दंम लीजीयेए ॥ कीजीयेए मुज घरमां जोइ छतोए ॥ ११॥ जो निसरे मुज घर मांहिए ॥ तो हणज्यो सहुने साहीए ॥ इम कांए रैयत लोकने दुख दीयोए ॥ वचन इस्यां अलिनां सुणीए॥ रीसाणो सेना घणीए॥ अवगणीए घर तेहनो जोवरावीयोए ॥ १२॥ जोयंता लाध्यो नहींए॥ तिण खेद लह्यो मन मांहिए ॥ ते किहांए न जडयो फरी पाटण गयोए ॥ सेनानी राय पायनमीए ॥ ढाळ थइ पांत्रीशमीए ॥ घमघमीए नृप जिनहर्ष रातो थयोए ॥ १३॥ सर्व गाथा ६७३.

ढाळ ३६ मी.

दुहा ॥ राय रोशे थयो रातमो ॥ भाखे वयण कठोर ॥ मुह्ह लेइ शुं आवीयो ॥ जो लाव्यो नहि चोर ॥ १॥ नृप खिज्यो जाणी करी ॥ से[illegible] तिण

आर ॥ वळी आवे अलि मंदिरे ॥ लेई बहु-असवार॥ २॥ अलि जाण्युं वाजी बुरि ॥ हवे न राख्यो जाय॥ मंड थकी काढी करी ॥ कहे सांभळ महाराय ॥ ३॥ तुजनें राखी नवि शकुं ॥ आव्यो वळी कट्टक ॥ उभो म रहिश हवे इहां ॥ उतरि जाहि अट्टक ॥ ४ ॥ कटुक वचन कहुं जे भणी ॥ मुज बळ नहि लवलेश ॥ राय तणो भय छे घणो ॥ तुजनें भलो विदेश ॥ ५॥ परजापति सांभळी वचण ॥ भाखे कुमरनरिंद ॥ वळशो जे दि मुज दिहमा ॥ तो थास्ये आणंद ॥ ६॥

ढाळ ॥ धन धन श्री रिषिराय अनाथी ॥ ए देशी ॥ देइ दिलासा इणी परे अलिने ॥ चाल्यो कुमर भूपाळजी ॥ अयरीना भय आगो जाये ॥ जाण थइ ततकाळजी ॥ दे० १॥ सेनानी तव केमे उजाणो ॥ लेइ कटक सिरदारजी ॥ पाछो फिरी जोवे राजेशर ॥ केमे उद्दि स्नेह अपारजी ॥ दे० २॥ एता केमे माहरे बाहर आवी ॥ हवे नासी किहां जाउंजी ॥ भीमसिंघ हाली सरणे पइठो ॥ राखे राखे हुं दुख पाउंजी ॥ दे० ३॥ जेसंग नृपनोरे लश्कर आव्यो ॥ मुजने पकडी जास्येजी ॥ ए भयथी मुजने उगारशे ॥ पुण्य घणो

तुज थाशेजी ॥दे०४॥ उंडीरे खाड ते मांहीं वसार्यो॥ उपर झांखर नांख्यांजी ॥ धायो सेनानी पग पग आयो ॥ वयण इश्यां तिहां भाख्यांजी ॥दे०५॥ उर उपरो जोतां दृष्ट न आवे ॥ भीमने पुछे सेनानीजी ॥ इहां आव्यो ते किहां गयो एक नर ॥ भीम कहे सन मानीजी ॥दे०६॥ इहां तो आव्यो कोइ न दीठो ॥ न वी मानो तो जोओजी ॥ कूप कहुं तो आण जेसंग नी ॥ फोकट खोटी मत होओजी ॥दे०७॥ सेनानी कोप्यो भीम उपरे ॥ खेत्र फिरी सहु जोवेजी ॥ खा ण झांखर तिहां आवी रोसे ॥ भाला अणीए प्रोवेजी ॥दे०८॥ कुमर नरिंद कळा निज फोरवी ॥ आउध अणी नवि लाग्योजी ॥ राखणहारे राखी लीधो ॥ भय तेहनो पण भाग्योजी ॥दे०९॥ यतः ॥ जिनकुं राखे सांइयां ॥ मारी न शके कोय ॥ वाळ न वंका नव्हीए ॥ जो जगे वयरी होय ॥१॥ चाल पूर्वनी॥ सेनानो झांखो थइ वळियो ॥ भीमसेन हाली ते वार जी ॥ झांखर परहां करीने काढयो ॥ गुज्जरपति सु विचारजी ॥दे०१०॥ तुं साहसवंत जगमां मोटो ॥ जीव दयानो जाणजी ॥ पर उपगारी तुं सुविचारी ॥

तें राख्या भुज माणजी ॥ दे०११ ॥ जीम भणी वं
चने संतोख्यो ॥ तिहांथी चल्यो परदेशजी ॥ राज
लहिश तव तुज संभारीश ॥ ताहरी भक्ति करेशजी
॥दे०१२॥ गाम नगर पुर जोतो जाये ॥ आगळ व
नमां पश्वजी ॥ ऊंदर दरमांथी सोनइयां ॥ जेइ आ
वंतो दीठजी ॥दे०१३॥ ओळा ओळे मांनी बेठो ॥सो
नइयां एकवीशजी ॥ नाचे कुंदे करे कलोला ॥ जोवे
करि जगीशजी ॥दे०१४॥ ऊंदर ते दर मांहीं पेठो ॥
राये यहा ततकाळजी ॥ कहि जिनहर्ष सहु सांभळ
ज्यो॥छत्रीशमी ए ढाळजी ॥दे०१५॥सर्व गाथा६९४.

ढाळ ३७ मी.

दुहा ॥ बाहिर आवी जोइयो ॥ देखे नहिं धन
तेह ॥ उरहो परहो आफळी ॥ ततखिण छंडी देह ॥
१॥ कुमर है है मुख कहे॥पाम्यो मन विखवाद ॥ में
पापी ऊंदर हण्यो ॥ वृथा कीयो उन्माद ॥२॥ में जा
ण्युं ऊंदर तणो ॥ कंचनश्युं शुं काम ॥ दान पुण्य
नवि खरचवुं ॥ लीधां जाणी आम ॥३॥ पण मध्यम
ए मोहनी ॥ मोहे दुख जहे जीव ॥ पाप बंधाये मोह
थी ॥ दुर्ज्जय मोह अतिव ॥४॥ वळी विशेषे मोहिणी

॥ धन उपर अत्यंत॥धन काजे नार मरे ॥ करे कुक र्म अनंत ॥५॥ धन काजे ऊंदर मुओ ॥ में मार्यो धन काज ॥ ए धनथी शुं सीझशे ॥ पस्तावे महारा ज ॥६॥

ढाळ ॥ चमर ढळावे रायजादाहो राणी महोलमेंजी॥ ए देशी ॥ चाल्यो लेइ तिहांथीहो कुमर नरेशरु॥ आव्यो ऊंवरी गाम ॥देव नारीनेहो घरे आवी रह्यो ॥ पुण्य तणो ते ठाम ॥चा०१॥ उत्तम देखीहो नर तिण नारीये ॥ कीधी बहु मनुहार ॥ पंथी जाणीनेहो ते दिन प्रते करे ॥ भोजन भक्ति अपार ॥चा०२॥ परउपगारीहो माणस जे हुवे ॥ जे दुखियां आधार ॥ स्वारथ पाखेहो हितशुं जे मिले ॥ ते विरला संसार ॥चा०३॥ आगळ चालतांहो तीन दिवश थयां ॥ भूखे निडयो अंग ॥ ससुर भुवनथीहो इम्य वधू जाये ॥ निज पीहर मन रंग ॥चा०४॥ कुमर कुमलाणोहो दीठो नारीये ॥ आणी भाई प्रेम ॥सालि करंबोहो सुरभि जिमामीयो ॥ तृपत थइ कहे एम ॥चा०५॥ यत. करचलु पाणी एणवि ॥ अवसर दिन्नए मुछ्छीयो जिय ॥ पछ्छा मुआए सूंदरि ॥ घम सय दिन्नेण कंतेण

॥१॥ जं अवसरेण न हुयं ॥ दाणं विणो सुभा सियं व यणं ॥ पच्छा गय कालेण ॥ अवसर रहिएण कितेण ॥२॥ चाल पूर्वनी ॥ कुमर खुशी थइहो कहे तिण नारीने ॥ तुं मुज बहेन अमोल ॥ राज्य हुं लहीशुंहो तिलक करावशुं ॥ तुज हाथे मुज बोल ॥ चा० ६॥ इम कही चाल्योहो राय तिहां थकी ॥ आव्यो दह थली गाम ॥ राय जेसंगनेहो जाण थइ जिशे ॥ आव्यो लश्कर ताम ॥चा० ७॥ आवीने वींटयोहो गाम ते दहथली ॥ जाण न पावे राय ॥ पास बंधाणाहो मृगलानी परे ॥ आकुळ व्याकुळ थाय ॥चा० ८॥ साजन नामेहो तिहा कुंभार छे॥ आव्यो सरणे तास॥ राखे मुज हणतांहो तुं परजापति ॥ करी आव्यो तुज आश ॥चा० ९॥ इट नीमाहाहो मांही घालीयो ॥ जाणे नहीं तिहां कोइ॥ सुभट सहु आव्याहो पुर मांही वही॥ घर घर मुंक्यो जोइ॥चा० १०॥ जोतां नवि लाध्यो हो कुमर नरिंदने ॥ अण्या साजन राय ॥ पकडी साजननेहो सुभट कहे इशु ॥ कहेरे किहां गयो राय ॥चा० ११॥ खराने उखाणोहो करोछो सहु तुम्हे ॥ धोबीनो वाही वाही ॥ न चले स्त्री केमेहो वळ त्यारे

कूटे ॥ गाधीमीने साही ॥चा०१२॥ तिम तुमे न श
क्याहो कुमर प्रणी मही ॥ मांड्यो एह उपाय ॥ प
रज लूटेवाहो पण छे शिर धणी ॥ जेसंगदे महाराय
॥चा०१३॥ धीर थइनेहो बोल्यो आकरो ॥ दलपति
चित्त विमासी ॥ घरमां नवि दिसेहो किहांए कुंमारने॥
कुमरपाळ गयो नाशी ॥चा०१४॥ सैन्य लेइनेहो सेना
नी वळ्यो ॥ जइ वीनवीयो राय ॥ चोरनी गोठेहो
किहांक नाशी गयो ॥ कीमही न झाल्यो जाय ॥चा०
१५॥ साजन काढ्योहो कुंमरने मांहथी ॥ विप्र आ
व्यो तिण वाम ॥ त्रिण जण भेळाहो वात मिली करे॥
साजन पिता कहे ताम ॥चा०१६॥ वात मिलीनेहो
त्रण जणेशी करो ॥ लेश्यो गढ चित्रोम ॥ साजन
पितानेहो कुमर कहे इशुं ॥ शी काढोछो खोम ॥चा०
१७॥ वात करुंछुंहो अम्हे उपगारनी ॥ मोटो जग उ
पगार ॥ ढाळ थइछेहो ए सत्रीशमी ॥ कहे जिनहर्ष
विचार ॥चा०१७॥ सर्व गाथा ७१६॥

ढाळ ३७ मी.

दुहा ॥ धिग तेहनो अपवित्र कुळ ॥ धिग तेह
नो अवतार ॥ धिग तेहनो मांटीपणो ॥ जे न करे उ

पगार॥ १॥पर काजे तरुअर फळे॥पर काजे जळधार॥ पर काजे नरसा पुरुष॥लीधो जग अवतार॥ २॥उपगारी भारीखमा॥सहुने चाहे सुख॥ते विरला संसारमां ॥ जे भाजे परदुख ॥३॥ जे नर उपगारी नहीं॥ते सरज्या कांइ जग्ग ॥ निगुण जन्म अहिले गम्यो ॥ जिम व न केरो मृग्ग ॥४॥ एहवुं सांभळी नृप वयण ॥ हिरण कहे फिरि ताम ॥ निगुण जन्म मुजने करो॥पण सांभ ळ मुज गुण ग्राम ॥५॥ (ढाळ ॥ नदी जमुनाके तीर उभे दोय पंखीयां) ॥ए देशी॥ पग्हिा मंसाहारी मंस च रम तापस ग्रहे ॥ सींग ग्रहे जो गिंद नाभी मल महम हे ॥ नारी उपम नइण नाद भीनो रहुं ॥ परीहां नीगु ण सरीखो मुज कियो तुज शुं कहुं ॥६॥ दुहा ॥ मृ ग वाणी श्रवणे शुणी ॥ भाखे कुमर नरिंद ॥ निर्गुण पुरुष पशु सारिखो ॥ जाणे गायां वृंद ॥७॥ त्रण ल क्षण दुं खीर दहीं घृत उजळां ॥ पवित्रा देखुं चंद स दा दग् निरमळा ॥ गोबर करुं पवित्र वेतरणी तारहुं॥ गाय कहे सम निगुण न करे नृप वारिहुं ॥८॥ गाय वचन श्रवणे सुणी ॥ कुमरपाळ कहे वाण ॥ नहीं जे हमां उपगार गुण ॥ ते नर गर्दभ जाण ॥९॥ सरिखो

रहुं खट रित्ति के लोटुं छारमां ॥ भार वहुं निशि दिश न धुजूं ठारनां ॥ वोल्यो धु वहु रिद्धि के.रीश परुं न हीं ॥ परिहां गर्दभ निगुण उपमा किम लही ॥१०॥ गर्दभ वयण सुणी करी ॥ राजा करे विचार ॥ गुण हीणा नर आवीया ॥ काग तणे अवतार ॥११॥ पहिलो पावस मास के माळो हुं करुं ॥ पोखुं सहु कुटंब धनुपघरथी डरुं ॥ कोइ न देखे भोग के स ज्जन मेळवुं ॥ काग कहे सुणो राय निगुण नहीं भे ळवुं ॥१२॥ काग वयण नृप सांभळी॥भाखे एम सुजा ण ॥ निगुण पुरुष अज सारिखो ॥ जन्म तास अप्रमाण ॥१३॥ होम हुवे मुज मांस विप्र वेदी भखे ॥ देवी पुज प्रमाण न होवे मुज पखे ॥ न पीहुं डोही नीर न विख पोहोंचि अही ॥ छाग कहे किम राय तें मुज उपम कही ॥१४॥ निगुण पुरुषनी उपमा॥जेहने दिजे जोय॥राय कहे इण जगतमां ॥ इशो न दीशे कोय ॥१५॥ साजन तह्मारो सुत भलो ॥ कीधो मुज उपगार ॥ मुजने राख्यो जीवतो ॥ धन तु जाति कुंमार ॥१६॥ साजनने राजा कहे ॥ सांभळ मीत्र उछा ह ॥ मुज कुटंब लेइ जाइजे ॥ पुर उजेणी मांह ॥१७॥

ढाळ ॥ नंदनकु त्रिसला हुलरावे ॥ए देशी॥ मननी खांते विप्र संघाते ॥ चाल्यो कुमर नरिंदरे ॥ इच्छा चलतो पुर पुर भमतो ॥ धरतो मन आणंदरे ॥म०१ ॥ थयो मध्यान समे एक गामे ॥ आव्या लागी भूख रे ॥ राय कहे ब्राह्मणने एहवुं ॥ भूख तणुं छे दूखरे म०२॥ भोजननी शी परे हवे करशुं ॥ गांठ नहीं छे दामरे ॥ दाम विना कांइ काम न थाये ॥ ब्राह्मण बो ल्यो तामरे ॥म०३॥ भीख तणी विद्या मुज मांहि ॥ भीख भीखारी मांयरे ॥ अन्न घणोहि मांगी लावीश॥ चिंता न करो रायरे ॥म०४॥ चाल्यो भीख भणी ते ब्राह्मण ॥ लखो करंबो साररे ॥ अन्न उदक लेइने आव्यो ॥ राय आगळे तिणिवाररे ॥म०५॥ दिव्य क रंबो ओळवी राख्यो ॥ लेई रोटी भातरे ॥ भीख था ळ नृप आगळे मुक्यो ॥ राय विचारी वातरे ॥म० ६॥ अवसर देखी दाव न चुके ॥ ते कहीये बुद्धिवंत रे ॥ वात सहु मिळी अवसरनी ॥ अवसर जग वळवं तरे ॥म०७॥ इम जाणीने राजा कीधो ॥ भीख तणो आहाररे ॥ रयणी कपट निद्राए सुतो ॥ कुमर नरिंद तिवाररे ॥ म०८ ॥ ब्राह्मण उठी जिम्यो करंबो ॥ जा

सक पेट भरेयरे ॥ सेष लेइने राजा पासे ॥ आवी एम कहेयरे ॥म०९॥ स्वामी एह करंबो खाओ ॥ तृपति क रो निज प्राणरे ॥ न घटे ए जिमवो मुजने ॥ सांभळ मित्र सुजाणरे ॥म०१०॥ मुज छानो तें भख्यो करं बो ॥ लालचे चाल्यो चित्तरे ॥ विप्र कहे सांभळ नर नायक ॥ वात कहुं तुज नित्तरे ॥म०११॥ करंबो ए उघाडो आख्यो ॥ तिण में पडियो लीधरे ॥ मुजने प च्युं तिण तुम आप्युं ॥ ववको थोडो सिधरे ॥म० १२॥ विष आहार जाणीने खाधो ॥ तुमने किम देवा यरे ॥ करी परीक्षा तुमने लाव्यो ॥ दोष म देशो रा यरे ॥म०१३॥ अवसर देखी राय न बोल्यो ॥ बो ल्यां जाये मितरे ॥ ॥ भुप करंबो ते आरोग्यो ॥ राखी चित्ति सुरितरे ॥म०१४॥ विप्र भणी वयणे सं तोख्यो ॥ चाल्यो राय प्रभातरे ॥ चालतां चालतां कुशळ खेमे ॥ आव्यो नयर खंभातरे ॥म०१५॥ बा हिर बेठो छे तिण अवसरे ॥ दीठो अचरिज रायरे ॥ अहि मस्तके दीठो गंगेटो ॥ नाचंतो अभीरामरे ॥म० १६॥ इण अवसरे हेमाचारज मुनी ॥ थंमिल भूमें जा येरे ॥ देखी अहि मांथे गंगेटो ॥ सकुन विचार सोहा

वेरे ॥ म०१७ ॥ गुरु गीतारथ सघलुं जाणे ॥ सर्वज्ञ पुत्र कहावेरे ॥ ढाळ थइ अडत्रीशमी ए ॥ जिनहर्ष भली परे गावेरे ॥म०१८॥ सर्व गाथा ७५०.

ढाळ ३९.मी.

दुहा ॥ मारे जिमणे जोवता ॥ दीवो राय कुमार.॥ तिणे पण,दीवा हेमने ॥ विधे वाद्या तिणवार ॥ १ ॥ करजोडी कहे गुरु भणी ॥ हुं प्रभु भम्यो अपार ॥ अजीस राज न पामीयो ॥ दुखनो नाव्यो पार ॥ २ ॥ हेमसूरि हरखे कहे ॥ चिंता मननी टाळ ॥ अहिमस्तके गगेटीयो ॥ इण सुकने भूपाळ ॥ ३॥ इग्यारे नवाणुए ॥ महा वदि चोथ अदित ॥ पुष्यनक्षत्रे मध्य दिन ॥ राज्य लहीश सुवदित ॥४॥ इण वचने नृप हरखीयो॥ लाग्यो मुनीने पाय ॥ वचन अमोघ तमारमो ॥ थाशे सही रिषिराय ॥५॥ उदयन मन्त्री तिण समे ॥ आव्यो वदण जाम ॥ कुमारपाळ गुरु पुछियो ॥ एह रहे किण ठाम ॥६॥

ढाळ ॥ महिंदी लेवाने गइरे लाल ॥ लहुनो देवर साथरे ॥ रंगभीना सुधा साहीवा घर आइज्यो ॥ महिंदी रंग लाग्यो ॥ए देशी॥ जिनशासननो दीवलो

रे लाल ॥ जीवदया प्रतिपाळरे ॥ उदयन नामे वाणी
योरे लाल ॥ जाति भली श्रीमाळरे ॥ गुरु भाखे सहु
साखे ॥ साहीबा तुम्हे सुणज्यो एहनी कहुं कथा ॥
ए आंकणी ॥ चउमासा मांहीं चालीयोरे लाल ॥ घृ
त लेवाने कामरे॥कोइ सकुन थयो सकुनी तिहांरे ला
ल ॥ तेडीने कहे तामरे ॥गु०२॥सांभळ तुंतो वाणी
यारे लाल ॥ तुज न मळे इहां रिद्धरे ॥ करणावती
गुज्जर देशमांरे लाल ॥ तिहां पामीश नवनिद्धरे ॥गु०
३॥च्यार पुत्र उदा तणेरे लाल ॥ बाहड अंबड दो
यरे ॥ सोहलो चोहड च्यारे भलारे लाल ॥ गुण बो
ले सहु कोयरे ॥गु०४॥ सुत नारि साथे करीरे लाल
॥ आव्यो गुज्जर ठामरे ॥ एक देवी मणीधर मस्तके
रे लाल ॥ वेगी दीठी तामरे ॥गु०५॥ बोल्यो देवी सउ
णवीरे लाल ॥ सांभळ वणीक सुजाणरे ॥ थाय रा
जा के मंत्रवीरे लाल ॥ सकुन तणे परमाणरे ॥गु०६
॥ सकुन नमी आव्यो तिहांरे लाल ॥ नृप मुजरो ज
इ कीधरे ॥ ततखिण राजा सुप्रसन्न थइरे लाल ॥ मं
त्री मुद्रा दीधरे ॥गु०७॥ जेसंगराय बोलावीयोरे ला
ल ॥ उदयन मंत्री नामरे ॥ ते आव्यो अमने वांदवा

रे लाल ॥ उत्तम छे परिणामरे ॥गु०८॥ कुमर नरिं
द भळावीयोरे लाल ॥ उदयनने गुरुरायरे ॥ घर तेमी
जइ कुमर तणरे लाल ॥ भक्ति करे चित्त लायरे ॥
गु०९॥ इण अवसरे जेसंगनेरे लाल ॥ दोषी जइ क
ही वातरे ॥ उदयन मंत्रीशरने घररे लाल ॥ कुमर र
हे रवभातरे ॥गु०१०॥ जेसंग कटक चलावीयोरे ला
ल ॥ लावो पकडी तासरे ॥ मुहुताने जाण आगळ
थी थइरे लाल ॥ कुमर भणी कहे भासरे ॥गु०११
॥ आव्यो दळ जेसंगनोरे लाल ॥ इहांथी परहो नाश
रे ॥ तुजने मुजने दुःख आपशेरे लाल ॥ वैरीनो शो
वेसासरे ॥गु०१२॥ ताहरा गुण मुज मन वस्यारे ला
ल॥तुं गीरुओ गुण खाणरे॥तुजने हुं राखी नवी श
कुंरे लाल॥ते हुं पशु प्रमाणरे ॥गु०१३॥ कुमर कहे
मंत्री सुणोरे लाल ॥ ए शुं बोल्या बोलरे ॥ उपगारी
तुं आरीखनोरे लाल॥ नहीं कोइ ताहरी तोलरे ॥गु०
१४॥ उपगारी तु माहरोरे लाल ॥ तुं मुज ता
त समानरे ॥ ताहरा गुण विसरशे नहीरे लाल
॥ रहेशे हियमे ध्यानरे ॥ गु० १५ ॥ लश्कर आ
व्यो तटलेरे लाल॥नाठो कुमर नरिंदरे ॥ आ

शाळे पाथरोरे लाल ॥ बेठा हेमसुरिंदर ॥गु॰१६॥क र जोडी कहे मुज भणीरे लाल ॥ राखो हेमसुरींदर ॥ पुण्याढ्य पुरुष जाणी करीरे लाल ॥ घाल्यो भुंइ रे अगनीशरे ॥गु॰१७॥ लेइ भुंइराने बारणेरे लाल॥ खडकयां पुस्तक मालरे ॥ गुणचाळीशमी पुरी थइरे लाल ॥ जिनहर्ष कहे ए ढाळरे ॥गु॰१८॥ सर्व गा

ढाळ ४० मी.

दुहा ॥ सेनानी आयो तिसे ॥ जोय्रा उदयन गे ह ॥ तिहां किहां पाम्यो नही ॥ जोयो नगर फिरेह॥ १॥ आव्या सुभट उतावळा ॥ हेम तणी पोशाळ ॥ कुमरपाळ आव्यो हुवे ॥ तो गुरजि देखाल ॥२॥ हे म कहे इहां कोइ नथी ॥ तेहने राखुं सीध ॥ जोयो फिरी उपासरो॥सघळी सुद्धि किध ॥३॥ खोल्यो पण लाध्यो नही ॥ सुभट थया दिलगीर ॥ कटक गयो पाछो फिरी ॥ काढ्यो कुमर सधीर ॥४॥ हेम कहे सांभळ कुमर ॥ नहि इहा रहेवा लाग ॥ जा परदेशे निकळी ॥ फळशे ताहरो भाग ॥५॥

ढाळ ॥ म्हारे आगणीये आंबलो मोरीयो ॥ ए

देशी ॥ जिण देशे नहीं कोइ आपणो ॥ जिए देशे व
यरीनो साल ॥ तजीये ते दूरे देशमो ॥ तिहां रह्यानो
नहीं कोइ हवाल ॥जि०१॥ यतः ॥ हस्ती हस्त सह
स्त्रेण ॥ शत हस्ते न वाजिनो ॥ शृंगीणां दश सहस्ते
ह ॥ देश त्यागे न दुर्ज्जनः ॥१॥ चाल पुर्वनी ॥ तु
मने परदेशे भाइ भलो॥नवि जाणे जिहां नाम मुकाम॥
तिहां रहेतां कोइ न पराभवे॥सुख लहीये तेहिज निज
गाम ॥जि०२॥ हरख्यो नृप वचन सुणी करी ॥ पाय
लागी कहे वचन रसाळ ॥ मुजने तुमे राख्यो जीव
तो ॥ सहु प्राणीना तुमे छो प्रतिपाळ ॥जि०३॥ पहि
ली पण मुज उपर तुमे॥राख्यो छो हित प्रिति अपार॥व
ळी ए उपगार कीयो घणो ॥ ओसिंकल थास्युं किण
वार ॥जि०४॥ एहवुं कही राजा चालीयो ॥ आ
व्यो वटवद्र नयर मझार ॥ बेठो दीठो एक वाणीयो॥
तेहनो नाम छे कुटक विचार ॥जि०५॥ तेहने हाटे
राजा गयो ॥ खादिमनो तस पूछे पाम ॥ ए इमज
ए इमज भाखे मुखे॥राय चिंते दीशे छे अनाम॥जि०
६॥ तोळावी लीधा दाळीया ॥ बेशी तिहां ठंगे राय
॥ हरनंथ भखी पाणी पीयो ॥ उठी चाल्यो ते केने पा-

य ॥जि०७॥ अंचळ मही उगो राखीयो ॥ मुखे वों ले वळी भूंडी गाळ ॥ दीसे छे कोइ देवाळीयो ॥ निर्भ्रंछि कहे मुख परो. वाळ ॥जि०८॥ दोकडां दे मूठ चणा तणा ॥ राय भाखे शेठ म करे पुकार ॥ हवणां तो गांठे नही ॥ आपीश हुं तुज बीजी वार ॥जि०९॥ दाम देइ जा झखमारीमां ॥ फोकट खा ऽ किम जाइश माल ॥ माणस मिलियां तिहां चोकें नां ॥ मुख चाम्ये वाघे वळी गाळ ॥जि०१०॥ सांभळ्यो तुले सहु शेठीया ॥ थयो मुजने चणा उपर भ्रम ॥ एहने में पूछ्यो किम दियें ॥ कस्यो एणे ए एमज एम ॥जि०११॥ में जाण्युं फासु ए दीये ॥ लेइने खाधा तिणवार ॥ हवे करे विगोवा वाणीयो ॥ हवे कीजे कहो किशो विचार ॥जि०१२॥ लोके पण वार्यो नवि रहे ॥ धमधमीयो तव कुमर नरेश ॥ समजे ए तो सही आपथी ॥ ठीक पाडुं जो करीये पेश ॥जि०१३॥ नाख्यो नीचो नृप गळे ग्रही ॥ वळी दीधी उपर लात मार ॥ समजावी तिहांथी चालीयो ॥ विण मारे थाये नहीं सार ॥जि०१४॥ मुरख खर मुंज सु लोटणो ॥ विण कुटयां ए नावे हाथ ॥जीनहरप ढाळ

॥ दुहा ॥ दइणो सवहीथी बुरो ॥ देणे न रहे लाज
॥ दइणे दिणो हुइ रहे ॥ दइणो व्रमो अकाज ॥ १ ॥
मोटा पण दइणा थकी ॥ सहे पीयारी गाळ ॥ दइण
थी लघुता लहे ॥ दइणो परहो वाळ ॥ २ ॥ सुखे न
आवे निंद्रडी ॥ मुखे सदा निसास ॥ रहे उदास न भु
खडी ॥ माथे दइणो जास ॥ ३ ॥ लेइ पाछो नवि दी
ये ॥ परधन खाइ रहंत ॥ परभव ते भेंसा थइ ॥ ले
इ भार वहंत ॥ ४ ॥ सालि दालि घृत गोळथी ॥ भलो
जाविध आहार ॥ परधनथी सुख भोगवे ॥ ते सुख
किशो संसार ॥ ५ ॥ मुह मारी खाइ रहे ॥ पाछो जे
न दीयंत ॥ पण तिणो वैराणुं न दहे ॥ जदि तदि आ
इ लीयंत ॥ ६ ॥ परधन लेइ चिद्रवो ॥ जाणे माणुं सु
ख ॥ पण जग मांही जोवतां ॥ दइणा समो न दुख ॥ ७ ॥
॥ ढाळ ॥ घर आवोजी आंवो मोरीयो ॥ ए देशी
॥ इम चिंतवतो नृप चालीयो ॥ जोगीनो कीधो रूपा
॥ निज हाथे खडग ग्रही करी ॥ आव्यो गहुवमा भू

१॥ मुख लांबी दाढी हती ॥ हुताज चीरला दंत ॥ पान तणो ए भोगीयो ॥ जोगी सुणो ट्टत्तंत ॥२॥ किम जाण्यो माइ तुह्मो॥ ए कला जे बोल॥नारि कहेरे जोगिया ॥ सांभळ वयण अमोल ॥३॥ पुठे आकार वणि तणो ॥ खाधे कुंमळ तास ॥ गौर रिज्य बीजी कहे ॥ दाढी मोटी तास ॥४॥ दिरघ नख टिंची आगुळी ॥ जाणु चिरला दंत ॥ अगूठो चूने भर्यो ॥ भक्षण पान करत ॥५॥ तेहना उतर सांभळी॥ हरख्यो मनमा भूप ॥ चतुर विचक्षण कामिनी ॥ ए गामनी अनूप ॥६॥

ढाळ ॥ घमले भार मराळां राज वातां केम करोछो ॥ए देशी॥ तिहांथी आवी सरवर पाळे ॥ देव भूवन आलोकरे ॥ माहि थाये मस्तक पूजा ॥ नर नारी सहु थोके ॥१॥ मनमा एम विचारे राय ॥ ए शो अचरिज दीसे ॥ पूजाराने पुछे योगी ॥ मस्तक केम पूजायरे ॥ पूजारो कहे साभळ आइश ॥ सुणता अचरिज थाय ॥म०२॥ आगे थयो मकरध्वज राजा ॥ सरवर एह खणाव्योरे ॥ पाणी अमृत अमृत सागर ॥ नाम कही बोलाव्यो ॥म०३॥ सरवर पाणी

र्यां अनोरम ॥ विचे कमळ एक, होयरे,॥ तेमां म
स्तक बोले एके ॥ बूझे छे सहु कोय ॥म०४॥ वच
न सुणी मकरध्वज राजा ॥ पंमित सहु तेडाव्यारे ॥
कहो ए मस्तक शुं बोले छे ॥ अरथ कहो मन भा
व्या ॥म०५॥ पंमित सहु विमासण पडिया ॥ उत्तर
नवि देयरायरे ॥ मूढ थया समकाळे सघळा ॥ बो
ल्यो पण नवि जाय ॥म०६॥ अवसर विद्या काम न
आवी ॥ ते विद्या सें काजेरे ॥ अवसर जो जळधर
नवी वरसे ॥ तो फोकट शुं गाजे ॥म०७॥ आप आ
पणे ठामे सहुको ॥ पंमित नाम धरावेरे ॥ पण पुछ्या
नो उत्तर आपे ॥ पंडित ते वस्र दावे ॥म०८॥ नृप
पूछ्यानो उत्तर न थयो ॥ पडित सहु विलखाणारे॥
साते बोल भाहे हियमामां ॥ खटके साल समाणा ॥
म०९॥ पूछ्या उत्तर नवी देवराणो ॥ वेळा भूल्यो
जायेरे ॥ वाद वेळाये गाथा नावे ॥ गाता कंठ बंधा
ये ॥म०१०॥ व्याख्याने व्याघात करीजे ॥ शास्त्र
अरथ शुद्ध मरडीरे ॥ सभा मांही तुंकार बोलावे ॥ ए
साते उझरमी ॥म०११॥ उत्तर पडित देइ न शक्या ॥
मनमा खरा लजाणारे ॥ अवधि लेइ खट मास तणी

॥ परदेशो ते उजाणा ॥म०१२॥ आव्या नव कोटी म रु मंगळ ॥ पंमित एक निहाळेरे ॥ सुंदर रुप अनोप म दाढी ॥ दाढी दूखण टाळे ॥म०१३॥ नागरवल्ली पान सरिखी ॥ दाढी जेहनी सोहेरे ॥ वचन द्रोहने माया मच्छर ॥ ज्ञानवंत जग मोहे ॥म०१४॥ नारी विकथा करे कतुहळ ॥ भांम वचेन मुख बोलेरे ॥हा श्यविनोद करे ते दाढी ॥ कहुं पीजणी तोले ॥म० १५॥ खावानो संवर नहीं जेहने ॥ पर स्त्री इच्छा गा ढीरे ॥ क्रोध लोभ कामारस तेहने ॥ झांखर कहीये दाढी ॥म०१६॥ पुण्य पापनो वात न जाणे ॥ न करे धरम परीखरे ॥ वरत न पाळे तेहन दाढी ॥ जाणे छा ज सरीख ॥म०१७॥ कंचण वरण सरुप सकोमळ ॥ दीठो पंडित बारुरे ॥ मुख दाढी सोहे अति सुंदर ॥ आव्या पूछण सारु ॥म०१८॥ तेह अरथ पूछीजे ए हने ॥ ए कहेशे ततकाळरे ॥ कहे जिनहर्ष पंडित ते थोडा ॥ बेताळीशमी ढाळे॥म०१९॥सर्व गाथा ८१२.

ढाळ ४३ मी.

दुहा ॥ पंमित गुण मंडित पवर ॥ जाणी तेहनी पास ॥ आव्या ते च्यारे जणा ॥ कीध जुहार सु ता

स ॥१॥ एके बुढो जग सहु ॥ एहनो कहो विचार ॥ तमने पुछेवा भणी ॥ आव्या छुं इण वार ॥२॥ ते कहे हुं जाणुं नहि ॥ कहेशे म्हारो बाप ॥ बाप कने ते आवीया ॥ पूछे तास जबाप ॥३॥ तिणे देखा ड्यो निज पिता ॥ तिहां पहुता ततकाळ ॥ ते कहे मुज कहेशे पिता ॥ तिहां गया ते बाळ ॥४॥ गरढो तात देखाडीयो ॥ लोभी गया संताप ॥ ते कहे कहेशे अरथ ॥ ओ बेठो सहुनो बाप ॥५॥ ते पासे च्यारे गया ॥ पूछे तास विचार ॥ ते पंडित बोल्यो इश्युं ॥ विद्यानो भंडार ॥६॥

ढाळ ॥ मुज सुधो धरम न रमीयोरे ॥ लही समकित आले गमीयो ॥ए देशी॥ मरु पंडित कहे नहीं दोहालोरे ॥ एहनो छे अरथ तो सोहीलो ॥ तुमने नुकीश समझावीरे ॥ एहवी तिणे वात बनावी ॥१॥ तुम्हे छो ब्राह्मण परदेशीरे ॥ इहां अन्न न कोइ देशी ॥ धन पाखे दूखीया थाओरे ॥ तुमने एक बुद्धि शिखाउं ॥२॥ च्यार स्नान लेइ तमे पाळोरे ॥ चहुटे जइ तेह दीखालो ॥ तेहनो धन परिघल आस्येरे ॥ तुम दाळीद्र दूरे जाशे ॥३॥ लोभी ब्राह्मण धन

रे ॥ च्यारे स्नान च्यारे जण लीधा॥पाळीने मोटा की
धारे ॥ कमे लेइ आव्या सीधा ॥४॥ पूछे कहो अरथ
विच्यारोरे ॥ पंमित बोल्या तिणवारो ॥ बुद्धिहिण छो
च्वारेइरे ॥ समज्या नहीं अरथ अजेइ ॥५॥ शास्त्र क-
ह्यो अरथ सभाळोरे ॥ गरभ रजस्वळा चंमाळो ॥
मद्यपात्र देश गृह स्नानोरे॥फरसंता उपजे स्नानो ॥६॥
उत्तम ब्राह्मण महाराजोरे ॥ एके वुमा तुम्हे आजो ॥
मस्तक ए अरथ प्रकाशरे ॥ सहु जगने लोभ विणा-
सी ॥७॥ लोभे करे नीच कमाइरे ॥ भाईने मारे भा
ई ॥ लोभे पुत बापने वंचेरे ॥ लोभे बहु पातिक संचे
॥८॥ समज्या सुणी अरथ विचारोरे ॥ आव्या निज
ठामे तिवारो ॥ राजाने दीध आशीसोरे ॥ संभळाव्यो
अरथ जगीसो ॥९॥ राय खरो विचारी जोयोरे ॥
एके लोभी जगत विगोयो ॥ राये ए भुवन कराव्योरे
॥ पाहण मस्तक मंमाव्यो ॥१०॥ वात सांभळी कुम
र नरिंदोरे ॥ मन मांहीं थयो आणंदो ॥ पापी ए लो
भ विगोवेरे ॥ कीरती कमळा सहु खोवे ॥११॥ जे
लोभ तजे नर नारीरे ॥ तेहने जाऊं बलीहारी ॥ चा
एम्वं चींतवतोरे ॥ म... ... ...

१२॥ तिहां कुलंव पाटण भूमिशोरे ॥ तेहने कर्यो इ-
श्यो ॥ काल्हे तुज पाटण आस्यरे ॥ गुज्जर देशाधि-
प थाश्ये ॥१३॥ करजे शेवा सुखदायारे॥ चिहुं दिशे
चरराय पठाया ॥ सुभ लक्षण कुमर निहाळरे ॥ ते
ण्हि लाव्या ततकाळ ॥१४॥ नृप उठी आदर कीधो
रे ॥ अरधासण वेसंण दीधो ॥ ए राज्य तुझे प्रभु ली
जेरे ॥ ताहरी शेवा अह्मे कीजे ॥१५॥ कहे कुमर न
ल्युं हो राजारे ॥ तो पण कहो कोइक काजो ॥ मु-
जने आव्यो इहां जाणेरे ॥ ते करे राजन इण ठाणे
॥१६॥ नामे प्रासाद कराव्यो ॥ नाणो कुमरांक भरा
व्यो ॥ वहु भक्ति करी दीपाव्योरे ॥ केटला दिन तिहां
रहाव्यो ॥१७॥ राय कुमारपाळ इम भाखेरे ॥ परदेशी
ने कुण राखे ॥ उत्तम तुम सरीखा होइरे ॥ आदर
आपे ते जोइ ॥१८॥ धन्य तुं जग मांही कहीयेरे ॥
तुज समवड को नवी लहीये ॥ चेंताळीशमी इण ढा
ळेरे॥ जिनहर्ष कह्यो भूपाळे ॥१९॥सर्व गाथा ८६३.

ढाळ ४४-मी

दुहा ॥ राय तणा गुण वर्णवी ॥ चाल्यो कुमर
नरिंद ॥ आयो उजेणीपुरी ॥ धरतो मन आणंद ॥ १

॥ महाकालनो देहरो ॥ जोवे फरि फरि भूप ॥ लि
खी दिठी प्रासादमां ॥ वांचे तेह स्वरुप ॥२॥ एकादश
नवाणुए ॥ होस्ये कुमर नरिंद ॥ विक्रम राजा सारिखो
॥ प्रजा लोक आणंद ॥३॥ वांची अक्षर आवीयो ॥
नयर उजेणी मांह ॥ विप्र मिल्यो तिहां वांसिरि ॥ मि
ल्यो कुटंब उच्छांह ॥४॥ तिहां मिली त्यांथी चल्यो
॥ गयो दसपुर भूपाळ ॥ प्रसमामृत जोगी मिल्यो ॥
चरण नम्या ततकाळ ॥५॥

ढाळ ॥ अलवेलो हाली हळ खेमेहो ॥ म्हारी
सदारे सुरंगी खावे भात ॥ ए देशी ॥ जोगीने नृप पूछी
याहो ॥ च्यार प्रश्न तिणवार ॥ स्नान दान वळी ज्ञान
नो ॥ ध्याननो वळीहो कहो मुजनें एह विचार ॥१॥
जोगीने राजा इम कहेहो ॥ तुम्हे चतुर विचक्षण जो
गाधार ॥ जो० स्नान संयम जळ कीजीयेहो ॥ दा
न अभय शिरदार ॥ ज्ञान तेह निर्लोभता ॥ ध्यान
कीजेहो विखयारसनो परिहार ॥जो०२॥ च्यारे अ
रथ राजा सुणीहो ॥ हरख्यो चित्त मझार ॥ बोल भ
ला च्यारे कह्या ॥ धन धन नरहो जे पाळे ए ह्रथी
च्यार ॥ जो०३॥ जोगी चरण नमी करीहो ॥ आव्यो

शद नीत्रोम ॥ शांति जिनालय जइ नम्यो ॥ राम मु
नितेहो जइ वाद्या बे कर जोम ॥जो० ४॥ कुमर नरे
श्वर पूछीयोहो ॥ कहो नगरीनी आद ॥ सांभळ नृप
मुनीवर कहे ॥ मध्यमापुरीहो इहांथी त्रण गाउ मर्याद
॥जो० ५॥ आगे रघुवंशे थयोहो ॥ चित्रांगद नृप पर
स ॥ एक जोगी तिहां आवीयो ॥ सिंह साथेहो अमृ
त फळ थे खट मास ॥जो० ६॥ नृप रज्यो जोगी भ
तेहो ॥ इणीपरे कहे सुण नाथ ॥ कहे ताहरे शु चा
हीये ॥ जे मागेहो ते आपुं तुजने आथ ॥जो० ७॥
जोगी कहे सुण नरपतिहो ॥ विद्या अघुरी एक ॥ तेह
सधाये तुज थकी ॥ जो थायेहो महाराजा ताहरी टे
क ॥जो० ८॥ रुप गुणे रळीयामणोहो॥ बत्रीश लक्षण
वंत ॥ सूरवीर नर साहसी ॥ थाये तेहथीहो विद्यानो
साधन तंत ॥जो० ९॥ सामुद्रिक शास्त्रे कह्याहो ॥ न
र लक्षण बत्रीश ॥ ते तुज माहीं छे सहु ॥ मुज की
जेहो उपगार निसुण अवनीश ॥जो० १०॥यदु० क्तं०
॥ सामुद्रके ॥ पंच दीर्घचतुः ह्रस्वं ॥ चतुः सूक्ष्मंषट्

र तरंचैव ॥ पंचदीर्घं प्रशस्यते ॥२॥ ग्रीवा प्रजननं प्र
ष्टि ॥ हस्वेंजंघेच पूज्यते ॥ हस्वा निज - स्यचत्वारि
॥ पूजा माप्नोति मानवः ॥३॥ सूक्ष्माएयं गुलपर्वाणि ॥
केशास्थि दशनातथा ॥ चतुः सूक्ष्माणियेपांस्यु ॥ स्ते
नरा दीर्घजीविनः ॥४॥ कक्षाकुक्षिश्चघ्राण स्कंधललना
टिका ॥ सर्व भूतेपुर्दिष्टं ॥ पडुन्नतं प्रशस्यते ॥५॥ पा
णीपातलौ रक्तौ॥नेत्रांतानि नखास्तथा ॥ तालु जिव्हा
धरौष्टौच ॥ सप्तरक्तोर्घशान् भवेत् ॥६॥ उरःशिरोल ला
टंच॥त्रिविस्तीर्णं प्रशस्यते॥ स्वरं सत्वंचनाभिश्च ॥ त्रिगं
जीरं प्रशस्यते ॥७॥ इति द्वात्रिंशल्लक्षणानी ॥ ढाळ पु
र्वनी॥पर उपगारी नृप सुणीहो ॥ उठी चल्यो तिण सा
थ ॥ डुंगर उपर वे चडया ॥ पावकनोहो कुंड को
धो जोगी हाथ ॥जो० ११॥ राजा सहु विधी कीधी
जोगनेहो ॥ नृपने कहे तिणवार॥अगनी कुंम पाखळे
फिरो ॥ जिम थायेहो विद्या सिद्धि लग आधार॥रा०
१२॥ राय उपाय विचारीयोहो॥ जोगीने धन पास ॥
तास वेसास नाकीजीयेहो ॥ पर घरनोहो मागी खाये
जे मास ॥रा० १३॥ सोना पुरिसो ए करेहो ॥ कुंम
दहे मुज देह ॥ ढाळ थइ चौमालीशमी ॥ इम चिंते

हो जिनहरर्ष नरेशर तेह ॥रा० १४॥सर्व गाथा ८८२.

ढाळ ४५ मी.

दुहा ॥ हुं बाळुं जो ए भणी,॥ सोना पुरिसो हो य ॥ म्हारे धननो काम छे ॥ एहने,काम न कोय ॥ १॥ योगीने इणीपरे कहे ॥ आगळ कारज तुज ॥ तुम पाखे हु किम फिरुं ॥ समज पडे नही मुज ॥ २॥ जोगी तव आगळ फिरे ॥ केडे राय फिरत ॥ फिरता नृप जोगी भणी ॥ नाख्यो माहि , तुरत ॥ ३॥ जोगी फिटि पुरिसो थयो ॥ राजा लीधो ताम ॥ धन कारण अनरथ करे॥ करे,सु,न करे काम ॥ ४॥ ख्वार करे धन नर भते ॥ फेरे देश विदेश॥सीश कपावे,नर तणो ॥ बाधे कोडि किलेश ॥ ५॥ घर फामी चोरी करे ॥ नरने,मेले धूल॥ मति,उपजावे॥ पांदुइ॥ धन अनरथनो मूळ ॥ ६॥ लखमी घर आव्या पछी ॥ आवे तन अहकार ॥ लेखे न गणे केहने॥मोटासु विवहार ॥ ७॥ स्त्री घर भैनी सेजडी ॥ वस्त्र पान अहार॥ नरने धन आव्या पछी ॥ साता उपरे खार ॥ ८॥

ढाळ ॥ नान्हो नाहलोरे ॥ ए देशी॥ रामचन्द मुनीवर कहेरे॥धननो एह सरुप ॥ राजा सांभळोरे ॥

आगल शुं थयुं ते कहोरे ॥ पूछे इणीपरें भूप ॥रा० १
॥ ते पुरिसो लेइ करीरे ॥ नृप आव्यो निज गाम ॥
रा० ॥ गढ मांड्यो गिरी उपररे ॥ सुंदर विषमी ठाम॥
रा० २॥ दिवश चिणे गढ जेटलोरे ॥ राते ते पडि
जाय ॥रा०॥ मास थया खट इणीपरेरे ॥ कारज सि
द्धि न थाय ॥रा० ३॥ प्रगट थयो सुर कूटनोरे॥ राय
भणी कहे ताम ॥रा०॥ इहां गढ करवा तो दीउंरे ॥
जो राखे मुज नाम ॥रा० ४॥ बोल देई गढ ए कर्यो
रे ॥ अति ऊंचो अभिराम ॥रा०॥ चित्रांगदराये थ
योरे ॥ चित्रकूट गढ नाम ॥रा० ५॥ कोमीधज विव
हारीयारे॥ गढमां चउद हजार ॥रा०॥ वसे कोटनी त
लहटीरे ॥ लखपतिनो नहीं पार ॥रा० ६॥ चित्रकूट
रळीयामणोरे ॥ पृथ्वी लोचन एक ॥रा०॥ अन्य लो
चनने पामवारे॥ तप तपे धरिय विवेक ॥रा० ७॥ उं
चो गढ चित्रोडनोरे ॥रा०॥ चित्रांगद भूपाळ ॥ एह क
था श्रवणे सुणीरे ॥ हरख्यो कुमरपाळ ॥रा० ८॥ गढ
उपरे चढी जोइयारे ॥ नवनवां अहीठाण ॥रा०॥ सको
सला वाघणी तणोरे ॥ जिणे ठामे निरवाण ॥रा० ९॥
श्री जिन भूवन जुहारियारे ॥ चाल्यो कुमर नरेश ॥

रा०॥ पवन तणी परे हींमतोरे ॥ आव्यो कुंवज जि
हां देश ॥रा०१०॥ नगर नीवेश जोइ करीरे ॥ तिहां
थी चल्यो नरिंद ॥रा०॥ आव्यो काशी वणारशीरे ॥
देखी थयो आणंद ॥रा०११॥ बोलाव्यो एक वाणीयें
रे ॥ आदर करी अपार ॥रा०॥ निज मंदिर लेइ ग
योरे ॥ भोजन करांव्यां सार ॥रा०१२॥ गुण ग्रही
राजा तेहनोरे ॥ फिरी नगर जोवंत ॥रा०॥ तिणे अ
वसर मरणे गयोरे ॥ मदन शेठ धनवंत ॥ रा०१३ ॥
धन तेहनो राजा ग्रह्योरे ॥ सज्जन करे आक्रंद ॥रा०
॥ फिरतो फिरतो आवीयोरे ॥ पुछे कुमर नरिंद ॥रा०
१४॥ कां रोवे ए सजन मिलीरे ॥ कह्यो सयल विर
तंत ॥रा०॥ सांभळी करुणा ध्वनीरे ॥ दुख हियमों
विहसंत ॥रा०१५॥ धिग धिग ए राजा भणीरे ॥ धिग
धिग ए राय जन्म ॥रा०॥ जेहने सुत नहीं पाछळेरे॥
तेहनो लीजे धन्न ॥रा०१५॥ लोक मांही कहीये इश्यो
रे॥ लोकपाळ भूपाळ ॥रा०॥ कही जिनहर्ष पुरी थइरे
॥पीस्ताळीशमी ढाळ ॥रा०१६॥ सर्व गाथा ९०६ ॥

ढाळ ४६ मी

दुहा ॥ मन मेलो वैदह तणो ॥ वांछे ५०४

ग ॥ वांछे मृत मशाणीयो ॥ नारद वेढी संयोग ॥ १॥ छळवा वांछे शाकिनी ॥ कणपति काळ विचार ॥ दो षी वांछे छीद्रने ॥ असती वध भरतार ॥२॥ तिम मृ त नर वांछे नृपति ॥ अधम नरपति अवतार ॥ मृतक तणो धन संग्रहे ॥ न हुवे छुटकवार ॥३॥ पाप करे दश खाटकी ॥ तेटलो एक कुंभार ॥ भालण दश कुं भार सम ॥ दश द्विज वेश्या नार॥४॥ दश वेस्या सम राजवी ॥ पातक तणो निधान ॥ नरक तणो अधिका रियो ॥ हिये वसे दुर ध्यान ॥५॥

ढाळ ॥ दूणा दरे ॥ ए देशी ॥ पुन्य संजोगे जो लहुं ॥ गुजर देशनो राजरे ॥ सुत न होवे जेहने पा छळे ॥ ते धन शुं नहीं काजरे ॥१॥ धन न लीयुंरे हुं धन न लीयुं ॥ धन न लीयुं हुंतो एहवुं ॥ अगम करी में आजरे॥ध०२॥ पण करी तिहांथी चालीयो ॥ पामलीपुरे पहुतरे ॥ नव सोवननी डुंगरी ॥ दीठी नृप अद्भुतरे ॥ध०३॥ भेळो करी मुंकी गया ॥ जोवा लोभ सरुपरे ॥ दान भोग मुज धन हुस्ये ॥ चितवी चाल्यो भूपरे ॥ध०४॥ राजग्रही नगरी गयो ॥ सालि भद्र गृह ठामरे ॥ निरमाइल धन कूपिका ॥ सहु जो

या फिरी तामरे ॥ध० ४॥ गिरी वैभार चमी करी ॥ धन्ना शालीभद्र ठामरे ॥ सिद्धा जिहां अणसण कर्यो ॥ जोइ कीध प्रणामरे ॥ध० ५॥ चतुर तिहांथी चालीयो ॥ गयो नवद्वीपक देशरे ॥ जयपुर पुरवर वाहिरे ॥ पुष्फीत फळीत विशेशरे ॥ध० ७॥ मनोरम उद्यानमां ॥ तीरथ शक्रावतारे ॥ तिहां जइ पुर पुरुषने ॥ पुछ्यो तास विचाररे ॥ध० ८॥ तिणे कह्यो श्री रुपत्तना ॥ सो सुतमां जय नामरे ॥ तिणे ए नगर वसावीयो ॥ जयपुर सुखनो ठामरे ॥ध० ९॥ जिन पूजाने कारणे ॥ एह कीयो उद्यानरे ॥ सांभळी नृप चित चिंतवे ॥ अहो धरम महिमानरे ॥ध० १०॥ आदि देव प्रणमी करी ॥ आव्यो कामरु देशरे ॥ कामाक्षा देवी तिहां ॥ पूजि सी सजी वेशरे ॥ध० ११॥ तिहांथी नागेंद्रपाटणे ॥ आव्यो कुमर नरिंदरे ॥ नागराज राजा तिहां ॥ राज्य करे नरदंदरे ॥ध० १२॥ वृद्ध पुरुषने पूछीयो ॥ नाग नृपति विरतंतरे ॥ पंथी सांभळ तुज कहु ॥ एह तणो सहु तंतरे ॥ध० १३॥ नागकुमारे वासीयो ॥ नागेंद्रपाटण एहरे ॥ श्रीकांत ॥ थयो सकळ गुण गेहरे ॥ध० १४॥

गुण तेहमां ॥ क्रोध प्रबळ निश दिशरे ॥ एक दिन घर अंधारमां ॥ थांभे फुटयो सीशरे॥ध० १५॥ मूयो तेह अपुत्रीयो ॥ क्रोध वशे थयो नागरे ॥ सत फणा वळी शोभतो ॥ न करे करनो त्यागरे ॥ध०१६॥ वार वार झाली करी ॥ मुंकी आवी रानरे ॥ फिरी फिरी आवे वळी ॥ छांडे नहीं निदानरे ॥ध०१७॥ सून्य राज्य जाणी करी ॥ वैरी वींटयो त्यांररे ॥ लोक सहु संकट पम्या ॥ समर्यो नागकुमाररे ॥ध०१८॥आवी ज्ञाने जोइयो ॥ माहरे कुळ उपन्नरे ॥ ए पाटणनो राजीयो ॥ नाग थयो आसन्नरे ॥ध०१९॥ एपाटणनो ते धणी ॥ थाप्यो करी अभिषेकरे ॥ राज्य करे निर्भयपणे ॥ देव गयो सुविवेकरे ॥ध०२०॥ नागराय साम्राज्य ए ॥ कहि जिनहर्ष विशाळरे ॥ लोक सुखी भय को नहीं ॥ छेंताळीसमी ढाळरे ॥ध०२१॥ सर्व गाथा ९३२ ॥

ढाळ ४७ मी.

दुहा ॥ पाटण मांही आवीयो ॥ ज्यां बाळचंद्र चमार ॥ पाणही कारण तेहने ॥ हाटे गयो कुमार ॥ १॥ त्यो स्वामी ए पाणही ॥ पहिरो न लीऊं मुल ॥

तुम्ह पण ज्ञायक एअछे ॥ दीसो तुम्हे अमुल ॥ २ ॥ मीठां वचन चमारनां ॥ सांभळी थयो खुस्याल ॥ नि च जाती पण जीभमां ॥ अमृत झरे रसाळ ॥ ३ ॥ त पीयोने उपसम धरे ॥ निर्धन सुद्ध विवहार ॥ ए जग मांही थोडला ॥ मधुर वचन दातार ॥ ४ ॥ गुण लेइनु प चालीयो ॥ दीठो वन सहकार ॥ लुंब लेइ खावा भणी ॥ बेठो तिहां कुमार ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ माया मोह दखीणीआणी मिलाइ ॥ ए देशी ॥ तिण वन कुमर नरेशरुरे ॥ पाका आंबा खा य ॥ मधुराने रळीयामणांहोजी ॥ मुखथी तज्या न जा य ॥ १ ॥ सुधारस आंबा तुं सिरदार ॥ तुज गुण केत्ता वर्णवुंहोजी ॥ तुं सुरतरु अवतार ॥ सु० २ ॥ भार अढा र वनस्पतीरे लाल ॥ ते मांही तुज अधिकार ॥ निज काजे निपावीयोहोजी ॥ आंबो सरजणहार ॥ सु० ॥ फळ बीजा तरुअर घणारे ॥ आ छे मधुर सवाद ॥ पण एहवो कोइ नहिहोजी ॥ करे आंबाशुं वाद ॥ सु० ३ ॥ आंबा रस पुन्ये मिलेरे लाल ॥ मांहे घृत भरपुर ॥ पा से पोळी पातळीहोजी ॥ जिमतां वाधे नूर ॥ सु० ४ ॥ दीसंता अतिरु रुअडांरे लाल ॥ रस पण

॥ आंबा तुज फळ पामीयेहोजी ॥ जो तुसे किरतार ॥सु०५॥ आंबा खाये गुण यहेरे लाल ॥ कुमारपाळ भूपाळ ॥ आव्यो तिण वन एटलेहोजी ॥ आंबानो र खवाळ ॥सु०६॥ गाळ देइने इम कहेरे लाल ॥ कोरे मूढ गमार ॥ आंबा खाये रावळोहोजी ॥ पामीश मु हुकम मार ॥सु०७॥ अणसमज्यो बोल्यो घणुरे ला ल ॥ आवी नृपने रीश ॥ झालीं तेहने बांधीयोहोजी ॥ बांधी चल्यो अधीश ॥सु०८॥ एक नर मिलीयो आगळरे लाल ॥ नारी तणे वियोग ॥ विरह वियो गी तेहनोहोजी ॥ तिणे दुखे लीधो जोग ॥सु०९॥ कु मर नरेशर पुछीयोरे लाल ॥ कोम ते लीधो जोग ॥ सपुरिस सुणि ते नर कहेहोजी ॥ करम तणे मुज भो ग ॥सु०१०॥ मुज घर नारी पदमणीरे लाल ॥ पुरपति लीधी तेह ॥ ते मुजने नवी वीसरेहोजी ॥ तिणे दुखें दाधो देह ॥सु०११॥ मन गमती रमती हीयेरे लाल ॥ विनयवति सुसनेह ॥ तिण दुखे हुं जोगी थयोहोजी ॥ दुखनो कारण एह ॥सु०१२॥ आभा मंमण वीजळी रे लाल ॥ कारड मंडण चोळ ॥ घर मंमण चुडाली यांहोजी ॥ मुख मंडण तंबोळ ॥सु०१३॥ राम रड्यो

सीता भतेरे लाल ॥ ढोलो माहणी काज ॥ तिम हुं झुरं ते शीनाहोजी ॥ अन्न पान कीयो ताज्य ॥सु० १४ ॥मुजने वहाली पदमणीरे लाल ॥ चडी पियारे हाथ ॥ हवे हुं एकलमो थयोहोजी ॥ नारी विना अनाथ ॥सु० १५॥ पर दुख भंजण को नहीरे लाल ॥ में जाण्युं निश्चेत॥ कुमरपाळ राजा हुस्येहोजी ॥ मुज दुख करशे अंत ॥सु० १६॥ वात सुणी राजा कहेरे लाल॥ सांभळ तुं जोगिंद ॥ तुं जेहनी आरया करेहोजी ॥ ते हुं कुमर नरिंद ॥सु० १७॥ दुखीया आगळे दूख कह्योरे लाल ॥ जोणे रोयो रान ॥ ढाळ थइ समता ळीशमीहोजी ॥ कहे जिनहर्ष सुग्यान ॥सु० १८॥ सर्व गाथा ८५५

ढाळ ४० मी.

दुहा ॥ सपुरस जाणीने कह्यो ॥ ते मुज आगळ दुख ॥ ते दुख भागी नवी शक्यो ॥ अधम मांहि हु मुख्य ॥१॥ आवे जे आरया करी ॥ जाये थइ निराश ॥ तेहनो कांइ नवि रह्यो ॥ धिग जमारो तास ॥२॥ तरस्यो नर सरवर गयो ॥ नीर न पाम्यो मांह ॥ ततो लज्या सरवरा ॥ नरने लाज न कांय ॥

॥ दल फळ्यो देखी करी ॥ अरथी, खावा जाय ॥ दाढ गळावे घे नहीं ॥ ते तरु लघुता थाय ॥४॥ तें दु ख मुज आगळ कह्यो ॥ जाणीने सिरदार ॥ हुं दुख भागी नवि शक्यो ॥ मुजने, पंमत्यो धिक्कार ॥५॥ कि णही आगळ आपणो ॥ दुख न कहीये राय॥सगति भरम गमाइये ॥ वाहो न लीये कोय ॥६॥ कीयो हु श्ये गरवंतनो ॥ पामीश जो हुं राज ॥ तो दुख तहा रो भाजसु ॥ ए मुजने छे लाज ॥७॥

ढाळ ॥ तुंतो बीछामारा वावलीया. वढाइरे रतना वहीला घमावे लुजा वाजिणी ॥ ए देशी ॥ एम कही चाल्यो, भूपरे राजिंदा ॥ शेव सुरहीयो साहमों मिल्योरे लाल॥ तिण दीठो कुमर नरिंदरे ॥रा०॥ पद्मअहीना णे अटकळ्योरे लाल ॥१॥ ते भाखे दहीयळी मांहीं रे ॥रा०॥ पदम कुमार पाए हतोरे लाल॥बीजो नहीं किणहीनो पायरे॥रा०॥वहु दीवशे थयो तु छतोरे ला ल ॥२॥ तुज थाशे वहिलो राज्यरे ॥रा०॥ जोतिषी मुख में सांभळ्योरे लाल ॥ आण फरशे देश अढार रे ॥रा०॥ किणही न जाये तुं कळ्योरे लाल ॥३॥ तुंतो तदि करजे मुज साररे ॥रा०॥ फिरतां जनम ग

थो वहुरे लाल ॥ मैंतो सुख न लह्यो संसाररे ॥रा०
मुजने लोक हसे सहुरे,लाल ॥४॥ हुंतो खांधे कोथ
ळो करेहरे ॥रा०॥उठी सवेरे सांचहरे लाल ॥ मुज प
हिरण खासर पोतरे ॥रा०॥ उदर पूरण दोहिली, करुं
रे लाल ॥५॥ निज दोहिलम दाखे शेवरे ॥रा०॥ दि
न वचन मुख दाखवेरे लाल ॥ करे कुमर नरिंद वि
चाररे ॥रा० विनय करी मधुरो चवेरे लाल ॥६॥ सु
र विनय थकी वश थायरे ॥रा०॥ विनयथी गुरु वि
द्या दीयेरे लाल ॥ वळी नाग तजे निज रीशरे ॥रा०
॥ विनयथी अरीयण,नामीयेरे लाल ॥७॥ इम रीझ
व्यो कुमर नरेशरे ॥रा०॥ विनय करी तिण वाणीयेरे
लाल ॥ तव बोल्यो इणीपेरे रायरें ॥रा०॥ चिंतारे म
नमां नाणीयेरे लाल ॥८॥ जदी पामीश गुज्जर राज
रे ॥रा०॥ नगरशेठ तुजने करुंरे लाल ॥ तुज गमशुं
भूख ने दूखरे रा०॥ वचन खरुं मान माहरुंरे लाल॥
९॥ तिहांथी चाल्यो गुणवंतरे ॥रा०॥ भूख लागीरें
धूजे देहमीरे लाल ॥ तिण दिन पाम्या थया अन्नरें

लाल ॥ साम्ही मिली कळवण नाररे ॥रा०॥ 'माग्यो
रे ते कन्ह सोगरोरे लाल ॥ ११॥ तव बोली नारी कुडा
मीरे ॥रा०॥ रोटीरे भावे तुजने माहरीरे लाल ॥ को
इ दीसे छे दाळाद्र डंगरे ॥रा०॥ अक्कल गइरे कां ता
हरीरे लाल ॥१२। किम दिवराये ए भातरे ॥रा०॥
जाउंछुंरे पुत्र जिमाइवारे लाल ॥ मुख बोले गाळ अ
पाररे ॥रा०॥ वाघणी थइ जाणे खाइवारे लाल ॥१३
॥ शु आपे दळिद्रि लोकरे ॥रा०॥ जमवारे दीधां नहीं
रे लाल ॥ जिणे दीधां हुए ये तेहरे ॥रा०॥ दइणेरे
दोहिलो छे सहीरे लाल ॥१४॥ निज हिये विचारओ
भूपरे ॥रा०॥ काळ भाव आज छे एहवुंरे लाल ॥
रोटी लीधी नृप सुंदरिरे ॥रा०॥ वेळा दीठी कीधुं तेहवुं
रे लाल ॥१५॥ धिग धिग ए पापिणी भूखरे ॥रा०॥
छाप उठावे मोटा धणीरे लाल॥अनताळीशमी थइ ढा
ळरे ॥रा०॥ सुणो जिनहर्ष महामणीरे ॥१६॥

माग्या मन माठुं नहि ॥ माग्या न रहे मान ॥ लोक माहि महिमा घटे ॥ कोइ न घे सनमान ॥ २॥ तात दीया पंडित गुणी ॥ धरमी लज्यावंत ॥ रुप रंग चित चातुरी ॥ माग्या सहु गळत ॥ ३॥ वीश विश्वानो आदमी ॥ माग्या न रहे एक ॥ कुळ खांपण ते जाणी ये ॥ मागिजे अविवेक ॥ ४॥ माग्याथी मरणो भलो ॥ पण मागीजे नहि जाय ॥ इंद्र चंद्र नर राजवी ॥ माग्या लघुता थाय ॥ ५॥ रहीये नगन दिगंबरा ॥ वशी ये वगडे वास ॥ पण करोमी जे नही ॥ सज्जण किणही पास ६ साळी दाळि पकवानथी ॥ कोद्रो धान पण खास ॥ चीर थकी खासर भलो ॥ म करीश परनी आश ॥ ७॥ जब मागे पर घर जइ ॥ पाचेइ दैवत ॥ नाशी ततखिण देहथी ॥ श्री रिद्धि घृति किन ॥ ८॥ संत धारी सहु आपता॥मागे नही महत ॥ पण भूख्या मागे नहि ॥ साचा ते सतवत ॥ ९॥

ढ ळ ॥ उमादे भटीयाणीना गीतनी ॥ ए देशी ॥ इश्यो विमाशी राय चाल्यो ॥ आगे दीठीहो साभळ ज्यो जान सोहामणी ॥ हरख्यो चित्त नरिंद ॥ शेठ भणी शिर नाम्योहो सांभळज्यो जइने तिहां कणी ॥ १॥

जिहां जइ उतरी जान ॥ काम वतुं कमी बांधीहो ॥सा. जान तणुं करे ॥ उगटणुं अंघोल राय करावे सहुनेहो पाय धोवे अधिके आदरे ॥ २॥ दुहा ॥कबही माणस लख लहि॥ कवही लख सवाय ॥ कबही कोमी न ल हि॥ वाजि वाय कुवाय ॥ १॥ दैव नचावे जिणी परा॥ तिम नच्चे रंक राय ॥ कुमारपाळ नर सारिखा ॥ धो वे परना पाय ॥ २॥ ढाळ ॥ पाय पखाळी राय मनमां आस्या जेणेहो ॥सा०. भोजननी धरी ॥ भोजन थयो तिणीवार ॥ जाणी सहु जिमेवाहो ॥ सा० बेठा जइक री ॥ ३॥ पाणी भरे नरेश ॥ जिमी उवट्या सहुकोहो जानी गहगही ॥ धोयां थाळ कचोळ ॥ तोही पण भूल्यानीहो ॥ सां० खबर यही नहीं ॥ ४॥ मूढमति नर नार ॥ भुल्यो राख्यो राजाहो ॥ सां० सहूनी म ति गइ ॥ नहीं किण मांही विवेक ॥ कुमर नरेशर खी ज्योहो ॥ सां० क्रोध वशे थइ ॥ ५ इण मुज खबर न लीध ॥ मति छति बुद्धि गुणहिणाहो ॥ सां० ए सहु वाणीया ॥ राये पूछी जात ॥ जान सहु पाटणनीहो ॥ सां० लाड पिछाणीया ॥ ६॥ कुमरपाळ तिणवार॥ एहवुं मन धार्युंहो ॥ सां० राज्य हुस्ये यदा ॥ वाळीश

ए सहु वैर ॥ इण कीधो तिम करस्युंहो ॥ सां० सुख होशे तदा ॥७॥ भूखे पीडयो अंग ॥ चाली न शके पग भरीहो ॥ सां० तिहां उभो रह्यो ॥ घृत कुमलीयो एक ॥ आवीने उतरीयोहो ॥ सां० नृप मन गहगह्यो ॥८॥ तेणे नर तिहां आइ ॥ जिमण करवा मांडयोहो ॥ नृप अंधण पाणी आणीयो ॥ थइ रसोइ ताम ॥ भूख्यो जाणी पहीलोंहो ॥ राय कुमर भणी वइसाणीयो ॥९ ॥ जिमाडयो भरपूर ॥ कुमलीयो दानेशरहो सेजे दाता गुण जेहमां ॥ परउपगारी जेह ॥ गुणधारी सुविचारीहो ॥ उत्तम गुण लहीये देहमां ॥१०॥ सहेजे गुण सुविनीत ॥ अलप कषाइ सहेजेहो ॥ दाक्षिण दया उपसम धरे ॥ सहेजे मधुरी भास ॥ धर्म तणी मति सहेजेहो ॥ मूख कुम वचन नवि उचरे ॥११॥ धन धन तुं जग मांही ॥ सहेज गुणाव तुम्हीनोहो ॥ कुमलीया दान तणो सही ॥ हुं थाऊं भूपाळ ॥ त्यारे आवे वहेलो हो हुं भगति करीश तुज उमही ॥१२॥ इम कही चाल्यो भूर ॥ इण अवसर जेशंगदेहो ॥ राय केरो मरण समय थयो ॥ तेडया मंत्री च्यार ॥ कृष्णदेव कान्ह डदेनेहो ॥ सामा साजणने इम कह्यो ॥१३ करवाहो

नुज्ञ कीट ॥ म्हारा वाल्हा जो छोहो तोराज कुमरने मत दीयो ॥ कीधो वचन प्रमाण ॥ कंठ हाथ लगाय्योहो जेसगदनो मन राखीयो ॥१४॥ मरण लह्यो जेसग, ॥ करणी कीधी जेहवीहो ॥ तेहवी गती मा हे संचर्यो ॥ ढाळ, उगणपचास ॥ पूरी इण अधिकारे हो॥जिनहर्ष यश विस्तर्यो ॥१५॥सर्व गाथा १००२.

ढाळ ५० मी.

दुहा ॥ सज्जन सगा मलि मिली ॥ लेइ गया मशाण ॥ चंदण अगर कपुरश्यु ॥ चहे बाळी तिण ठाण ॥१॥ सोनावरणी चेह बळे ॥ जोवे नर सहु कोय ॥ कंकुवरणी देहमें ॥ अगनि प्रजालि जोय ॥२॥ जे शिर चीरा बांधता ॥ साळू कसबी पाग॥ तास तणि शिर तुटली ॥ चाच समारे काग॥३॥ जे नर म्होलें पोढता ॥ करता हास्य विलास॥ ते नर मल माटी हुआ ॥ उपर उग्या घास ॥४॥ चोवा चदन चरचता ॥ वावरता मुख पान॥ ते नर पोढ्या अग्निमां ॥ काया काजळवान॥५॥ चिर पितांबर पहेरता॥ कन्ने मुगताहार ॥ ते नर नागा परजळे ॥ जोवे सहु संसार॥ ६॥ जे शिर छत्र धरावता ॥ चढता गइवर खंध ॥ ते

हने अते लेइ गया ॥ देह देई बंध ॥७॥ दिवा केरि करि पोढता ॥ कामिनी कंठ लगाय ॥ ते नर पोढ्यां पाधरे ॥ जंबु कपाये जाय ॥८॥ चंपकवरणी देहडी ॥ कोमळ कदली जंघ ॥ ते नर सुना काटिमें ॥ प में भडोभड मंग ॥९॥ देह विटंबण नर मुवी ॥ न करीश तृष्णा लाख ॥ जेसंग रसिया मानवी ॥ दाझी कीधा राख ॥१०॥

कुमर नरेशने ॥रा० शकुन अनोपम थायरे ॥रा०कु०
५॥ कंन्या गायसवाछडी ॥रा० दधि फळ भरी शंख
रे ॥रा० शिणगार्यो गज सामहो ॥रा० आपे लाग
असंख्यरे ॥रा०कु०६॥ वेश्या वहेल वे माछिलां ॥
रा० मदिरा माटी अन्नरे ॥रा० ए खट जो साहमा
मिले ॥ रा० तो पामे बहु धन्नरे ॥रा०कु०७॥ कुंभ
करेवो चोवरी ॥रा० हनुमंतने हरणां जेहरे ॥रा० रा
जा झाझा साथशुं ॥रा० जिमणा लिजे एहरे ॥रा०
कु०८॥सांम सारस ने खर तुरी॥रा० लाली माबा हुंतरे
॥रा० शकुन भला ए जाणीये ॥रा० अफळ्यां वृक्ष
फळंतरे ॥रा०कु०९॥ शुभ शकुने नृप आवीयो ॥रा०
पाटण नयर मझाररे ॥रा० वहनेवी कुश्मदेवने ॥रा०
मिलीयो जइ कुमाररे ॥रा०कु०१०॥ प्रेमल भगिनी
प्रेमशुं ॥रा० भाइने करावे अंघोलरे ॥रा० दूर्गादेवी
तेहमां ॥रा० झोल करे कल्लोलरे ॥रा०कु०११॥ श
कुनपावक एहवुं कहे ॥रा० शकुन तणे परमाणरे ॥
रा० राज्य हुश्ये दीन सातमे ॥रा० शिर धरश्ये सहु
आणरे रा० कु०१२॥ इण अवसरे मंत्रि मिली ॥रा०
सुभट तेमद्या शिरवाजरे ॥रा० करे विचार सहु मि

ली ॥रा० कोने देस्यां राजरे ॥रा०कु०१३॥ क्षत्री चौलक वंशना ॥रा० महीपाळ रत्नपाळरे ॥रा० तेहने राज्य देवा भणी ॥रा० तेडाव्या ततकाळरे ॥रा०कु० १४॥ कुमर भणी पण तेडीयो ॥रा० मिलीया सहु पर धानरे ॥रा० महीपाळ राजा थापीओ ॥रा० मागे ओ देश देइ मानरे ॥रा०कु० १५॥ तास उठामी मुंकीयो ॥रा० वेसार्यो रत्नपाळरे ॥रा० ते पण तिमहीज वोली यो ॥रा० उठाम्यो ततकाळरे ॥रा०कु०१६॥ तेमी कु मर नरेशने,॥रा० वेसार्यो राज काजरे ॥रा० सचि वादिक मणमी कहे ॥रा० किम पाळेस्यो राजरे ॥रा० कु०१७॥ खमग देखाडयो आपणो ॥रा० एहने वळे मुज राजरे ॥रा० एहने वळे सहु साधशुं ॥रा० एहने वळे मुज लाजरे ॥रा०कु०१८॥ यतः ॥ नश्रीः कुल कमायाता ॥ शासने लिखितानतु ॥ खडगेनाक्रम्य भुं जंति ॥ वीर भोज्या वसुंधरा ॥१॥ ढाळ पुर्वनी ॥ सिं हासन वेसारीने ॥रा० कीधो नृप अभिषेकरे ॥रा०

ढाळ ५१ मी

दुहा ॥ सेइ मोती न्युंछणे ॥ करी वधाव्यो राय ॥ कुश्मदेव भट प्रमुख सहु ॥ आवी लाग्या पाय ॥१ ॥ नृप मंगलीके परवर्यो ॥ कुमरपाळ भूपाळ ॥ पट हस्ती खंधे चड्यो ॥ दीपे तेज विशाळ ॥२॥ मेघाडंब र छत्र शिर ॥ बे दिश चामर धार ॥ वींझे चामर नि रमळा ॥ जाणे गंगाधार ॥३॥ लेतो पुरजन आशिषा ॥ घुरते निसाणेह ॥ हय गय रथ पायक सहित ॥ दे तो दान जणेह ॥४॥ राजभुवन राय आवीयो ॥ का नडदे परमुख ॥ चरण कमळ नमीया सहु ॥ मोटा सु भट पुरुष ॥५॥

ढाळ ॥ श्रेणीक मन अचिरज थयो ॥ ए देशी॥ पुण्योदयथी पामीयो ॥ पाटणपुरनो राजोरे ॥ पुण्ये दु समण दहवटे ॥ पुण्ये सिधां काजोरे ॥पु०१॥ अग्या र नव्वाणुंए ॥रुडो मगशिर मासरे ॥ काळीचौदशने दि ने॥बेठो राज उल्लासरे ॥पु०२॥ गरढा परधानो भणी॥ न गमे कुमर नरिंदोरे ॥ दाव विचार्यो मारवा॥ सहु मिली रचीयो फंदोरे ॥पु०३॥ बहु अंधारी निशी स मे॥ गोपुर घातक राख्यारे ॥ पुण्य सखाइ रायने ॥

किणहीक भेदू दाख्यारे ॥पु०५॥ मुंकी तें पुर पोळने ॥ वारीमां थइ पेठोर ॥ कुशळखेमे आवीयो ॥ निज सिंहासन बेठोरे ॥पु०५॥ ते परधान तेमावीया ॥ यम पुर दिसे चलाव्यारे ॥ तेज देखी राजा तणो ॥ सहु चरणे चली आव्यारे ॥पु०६॥ कृश्नदेव किणि अवसरे ॥ पूरव मर्म प्रकासेरे ॥ सभा समक्षे एहवुं ॥ राय कहे मत भासेरे ॥पु०७॥ जिम जाणे तिम बोलिजें ॥ एकांते नहीं तावोरे ॥ वार्यो तोही नवी रहे॥न मिटे मूळ सभावोरे ॥पु०८॥ रीस गुपत राजा तणी ॥ रिदय भर्यो भरपूरोरे ॥ मल्ल संकेत कृश्नना ॥ अंग कीया चकचूरोरे ॥पु०९॥ नयन जुगल काढी करी ॥ थाप्यो लेइ आवासोरे॥राजा मीत्र केहनां नहीं ॥ एहवुं जग प्रति भासेरे पु०१०॥ यत: ॥काकेशौचं द्यूत कारेषु सत्यं ॥ सर्पेक्षांतिः स्त्रीषु कामोप शांतिः॥ क्लीबधैर्यं मद्यपे तत्वचिंता ॥ राजा मीत्रं केनदृष्टं श्रुतंवा ॥ १ ॥ ढाळ पुर्वनी ॥ निती वयण संभारीने ॥ उदयन निज उपगारीरे ॥ तस सुत वाहडदे कीयो ॥ महामात्य सुविचारीरे ॥पु०११॥ महा प्रधान पद आपीयो ॥ उदयनने अभीरामोरे ॥ आलिग नाम कुलालने ॥ दी

धा सातसें गामोरे ॥पु०१२॥ झांझर ढांकी राखीयो॥ ढालो भीम बोलाव्योरे ॥ पोता पासे राखीयो ॥ अंग रक्षक करी ठायोरे पु०१३॥ दीध करंबो कामिनी ॥ तेहने धोळकुं दीधुंरे ॥ साजणने संतोखीयो ॥ धणी चीत्रोडनो कीधोरे ॥पु०१४॥ लाटदेश भट बोसिरि ॥ कुलंब पाटणनो रायोरे ॥ तेहने घणुं वधारयो ॥ ओसिंकल इम थायोरे ॥पु०१५॥ काशीदेशनो वाणीयो॥ राख्यो जिणे वर मांहेरे ॥ सोळ गाम तेहने दीयां ॥ मिलीयो घणे उमाहेरे ॥पु०१६॥ तमी सामंत थापीयो ॥ बाळचंद्र चमारोरे ॥ तेहना गुण संभारीने ॥ गाम दीआं तसु बारोरे ॥पु०१७॥ ढाळ थइ एकावनमी॥ कहे जिनहर्ष विचारोरे ॥ वळी उपगारी जेअ छे ॥ सुणज्यो तस अधिकारोरे ॥ पु०१८ ॥ सर्व गाथा १०५४ ॥

ढाळ ५२ मी.

दुहा ॥ आंवा वन रक्षक पुरुष ॥ जाग्यो तेहनो भाग ॥ तेमी तास भळावीयो ॥ वर पोतानो बाग ॥ १॥ जे नर नारी विजोगियो ॥ देवरावी तस नार ॥ दुख भागो तेहनो सहु ॥ धन पण दीध अपार ॥ २॥

शेठ सुरहीयो थापीयो ॥ नारी कळवण जास ॥ झमपी लीधी राटली ॥ वीस गाम दीयां तास ॥३॥ घृत कु मलीयो तेहने ॥ दीधो सोरठ देश ॥ शुकनपाठकने आ पीया ॥ सात गाम सुविशेश ॥४॥ मरण लह्यो ऊंदर जिहां ॥ भुवन कराव्यो सार ॥ श्री जिननो रळीयाम णो ॥ नामे ऊंदर विहार ॥५॥ शिर विण पुरुष कथा कही॥तेही पंचे नार ॥ अकेकुं गाम तेहने ॥ दीधी वा त संभार ॥६॥ मस्तक वात कही जिणे ॥ तेडाव्यो नृप तास ॥ सहेस सोवन तेहने दीया ॥ मुहूत वधार्यो खास ॥७॥ जिणे कर्यो गुण जेटलो ॥ राय संभार्यो तेह ॥ सहुनी आश्या पूरवे ॥ मोटा नरने नेह ॥८॥

ढाळ ॥ सीता रामनी चोपाइ ॥ ए देशी ॥ हेमा चारज विसर्या॥किणही परे चित नाव्यारे॥उदयन मंत्री अन्यदा ॥ हेमसूरी भणी बोलाव्यारे ॥हे०१॥ आव्या अधिक महोछवे ॥ मंत्रीशरने इम भासेरे ॥ आज न वे राणी घरे ॥ उपसर्ग निशा मध्य थास्येरे ॥हे०२॥ तेह भणी तिहां मत पोढज्यो ॥ इम कही राजाने वारे रे ॥ पूछे जो आदर करी॥ तो नाम अमारुं सारेरे ॥हे०३॥ मुहुते राजा वारीयो ॥ निशी विज थयो उ

संघातरे ॥ राणी मंदीरमां दली ॥ नृप चिंते टली मुज घातोरे ॥हे०४॥ राये पुछ्यो सादरे ॥ कहनो अनाग त ज्ञानोरे ॥ उपगारी कुण एहवो ॥ मुजने दीधो जी वीत दानोरे ॥हे०५॥ मंत्री कहे राजन सुणो ॥ इहां हेमसुरीस पधारयारे ॥ तिणे ज्ञान मुजने कह्यो ॥ तु मने में ते भणी वारयारे ॥हे०६॥ राय सुणी प्रमुदि त थयो ॥ बोलाव्या हेमसुरिंदोरे ॥ राज सभाए आ वीया ॥ वंदे गुरु चरण नरिंदोरे ॥हे०७॥ कर जोडी राजा कहे ॥ भगवंत किम मुख देखालुंरे ॥ तुमने ओ सीकल न हुवो॥ जो अमृत पाय पखालुंरे ॥हे०८॥ थंभ तीरथमां राखीयो ॥ चोठी मुज लिखी दीधीरे ॥ तोही संभारया नहीं ॥ तुमने में माठी कीधीरे ॥हे०९ ॥ तुमे मुजने पहिलो कियो ॥ निःकारण प्रभु उपगा रोरे ॥ मुज माथाथी तुम तणो ॥ उतरशे रण किण वारोरे ॥हे०१०॥ सुरी कहे राजन सुणो ॥ मन माही दिलगीर न थइयेरे ॥ जे उत्तम नरने कर्यो ॥ उपगा र न लोपी कहीयेरे ॥हे०११॥ श्री जिन धर्म समाच रो ॥ अमने एहीज उपगारोरे ॥ राय वचन अंगी क र्यो ॥ एतो मुजने हितकारोरे ॥हे०१२॥ कृपा करी इ

ड़ां आव्यो ॥ आचारजने इम भाखेरे ॥ गुरु संग मि
थ्या तजी ॥ जिन धर्म रसायण चाखेरे ॥हे०१३॥
हवे श्री कुमर नरेशरु ॥ चतुरंग सेनाश्युं चालेरे॥ध्या
रे दिश साधन भणी ॥ अरीयणना दळ बल पालेरे॥हे०
१४॥ प्रथम दक्षिण दिशे संचर्या ॥ कर्णाट तिलंग ला
ट देशोरे ॥ विंध्याचळ साधी आवीया ॥ फेरी निज
आण विशेशोरे ॥हे०१५॥ सेतुबंध जोइ करी ॥ वळी
फरस रामाश्रम जोइरे ॥ तिहांथी पश्चिम आविया ॥
माने आण सहु कोइरे ॥हे०१६॥ सोरठ सोवीर पंच नद
सिंधू ॥ ब्राह्मण वाहक सहु देशोरे॥ साधी सहु पोताना
कीया ॥ विधी विधीनी आण पेसोरे ॥हे०१७ सिंधु प
श्चिम तट पद्मपुरे ॥ राय पद्म पुत्री गुणवंतीरे ॥ जाते
ते छे पदमणी ॥ पद्मावती नाम लहंतीरे ॥हे०१८॥
खोमस निज सरिसव रागना ॥ परणी तिहां कुमर न
गीनेरे ॥ सात कोमी द्रव्य सातसें ॥ दीधा हयवर वृ
दोरे ॥हे०१९॥ तिहांथी उत्तर आवीया ॥ कास्मिर
उमीयाने हिमालोरे ॥ सवा लक्ष पर्वत वळी ॥ जालंध
र खस सुविशालोरे ॥हे०२०॥ एम साधी च्यारे दिशा
॥ वरताबी आण अखंडोरे ॥ ढाळ थइ बावन भणी ॥

जिनहर्ष सुजस नव संभोरे ॥ हे० २१ ॥ सर्व गाथा १०८३ ॥

ढाळ ५३ मी.

दुहा ॥ राजा अचरिज जोवतो ॥ पूरव दिशे पहुत ॥ कुशावर्त सुरसेन कुरु ॥ विदह दशार्ण . सहित ॥१॥ वळी साध्या निज भुज-वळे ॥ मागधने पंचाल ॥ देश देशचा देशपति ॥ आइ नम्या ततकाळ ॥२॥ हय गय रथ पायक प्रबल ॥ निशाण शिर घाव ॥ जलत पताका पामीने ॥ आव्यो पाटण राय ॥३॥ भोपलदे पटराणी ॥ आठां शुं रंगरोळ ॥ पंच विषय सुख भोगवे ॥ अहनिशी करे कलोल ॥४॥ देश अढार तणो धणी ॥ हस्ति सहेस अग्यार ॥ वाजी लाख अग्यार वळी ॥ रथ पंचसे हजार ॥५॥ बहुत्तर वळ आगळा ॥ जेहने सूर सामंत ॥ अढार लाख पायक मिले ॥ रिद्धि न लाभे अंत ॥६॥

ढाळ ॥ प्रभु प्रणमुंरे पास जिणेशर थंभणो ॥ ए देशी ॥ न्याइ रायेरे अन्याय कोइ करे नहीं ॥ अकराके रे न करे डंग न ल्ये सही ॥ दंग देवळरे वंधण कोइ न वांधीये ॥ बंधायेंरे भूपण अंगे सांधीये ॥ सांधीये

नारी कंचुः बध ॥ बंध मस्तक वेणीय ॥ बंध घाटक पेट ने वळी ॥ बंध सुमनस श्रेणीये ॥ वंक नही कोइ लोकमां जिहां ॥ वंक स्यदन चक्रमा ॥ वळी वांक क माण मांही॥अवर तेह नही वक्रमा॥ १॥ जिण नयरेरे चो र कोइ दीसे नही ॥ निज गुण कोरे परम न चोरे छ मही ॥ मार एहवोरे शब्द कोइ न उचरे ॥ ते भापारे मारन लोढार मुखे धरे॥मुखे धारी मारी रणमां 'मारी भाषा नीगमे ॥ पर तणा अवगुण लीयण मुंगा दोष टलण संयमी ॥ छीद्र नहीं कोइ लोक मांहि छिद्र मा णक मोतीए ॥ दमन नही जिण नगर माहीं ॥ दमन अरि गज होतीए ॥ २॥ नवि दीसेरे माणस कोइ ग्रह्यो किही ॥ रवी सशीनेरे राहु ग्रहे अवसर लही ॥ अथ वा वळीरे कंन्यानो कर वर ग्रही ॥ एहवुं पुररे लोक स दा सुखीयां रहे ॥ रहे एहवा लोक सुखीया हहा वा वन जिहां मळे ॥ हेम आचारज मुनीसर हेम व्याक रण झळहळे ॥ हेम बीव हरी तणी ॥ मूरति दान देवा हिरा कही ॥ हीये बुद्धि अने हसावे हसे नहीं पोते स ही ॥ ३॥ हरीयाळीरे चतुर कहे हरीया घणा ॥ नरहा क्यारे तुरत वढे नही कामणा ॥ हय हाथीरे हथिणी

हथीयार हए घणी ॥ हेम हीरारे हीर जाति दिसे घणी ॥ घणा दीसे नहीं हिंसाहट्ट श्रेणि सोभए ॥ हाथ दांता दो लती सहु हुसीयां मन मोहए ॥ हरी सरीखा लोक सु खीया जिहां हांसल अति घणो ॥ हेमाचळनी वस्तु आवे हरी मति नर बोलणो ॥ ४ ॥ नर भोगीरे रति हेम तणा सहु ॥ हेसमीनारे गंज तिहां दिसे वहु ॥ हितुयां न रहे हालाहल हाला जिहां ॥ हरिचंसीरे हरियम दहुत वसे तिहां ॥ तिहां वसे हींदूयान हरिहरादिक देहरा ॥ हरिणाक्षी हरीलंका नारी हंसगमण मनहरा ॥ होला होलो सवरणा हरी हंस होलाइया ॥ हरिण वनमां रहे सुखीया हींडोला मन भाइया ॥ ५ ॥ वळी हय गतीरे हसीत वदनने हस्तिनी ॥ हांस हियेरे हलुए चाले कामिनी ॥ ए वावनरे पुर मांही लागे हया ॥ वळी वावनरे ववा ते दूरे गया ॥ दूरे गया ते विकल विटनर विसन वांको नहीं जिहां ॥ विपरीत भांखे नर विरोधी वक्र विघन नहीं तिहां ॥ वात विरुद्र नहीं वंचक वाट पामा पण नहीं ॥ विश्वासघाती वधक नहीं जिहां वयर वाद नहीं सही ॥ ६ ॥ वासी भोजनरे नरनारी खाये नहीं ॥ वेठ न कररे कोइ किणहीसुं सही ॥ विद्या विरुद्र

रे तेह न कोइ फोरवें ॥ वाणी कडुइरे मुखा वचन को नवी लवे ॥ लवे नही कोइ वाद न करे ॥ वासना भु मी तजे ॥ वात निंदा तणी न करे ॥ वेठां नर नवी सपजे ॥ सोळवती वसे वनीता ॥ नहीं जिहां विभचा रीया ॥ वर वर्गथी नवी टळे कोइ वागरी पुर वांरी या ॥७॥ भजवे नहीरे केहने वितर विंतरी ॥ विछी विषधररे सरीखा नर पुर परीहरी ॥ वारुणीनारे पांन करे नर तेहने ॥ वारु वातनारे भजणहारा एहने ॥ ए हने काढ्या नगर वाहिर वणीज कुवणीज नवी करे ॥ रीस माये विष न खाये विलगणा नर नही पुरे ॥ व चन गुरु जणनो न माने वधी वोले जे घणो ॥ वारीया न रहे नगर वाहिर वंस काढ्यो तेह तणो ॥८॥ वळी नही कोइरे वेरी वराम जिणे पुरे ॥ माये थोडीरे विधं वा नारी घरघरे ॥ विस वाणीजरे उत्तम कोइ करे न हीं ॥ वेंगणनारे भक्ष करे नहीं नर लही ॥ नर लही न करे भक्ष वेंगण विगय पाचे परिहरे ॥ ए वधा वाम्र न कुमर नरपति काढीया पुर वाहिरे ॥ लाड जाती ज्ञाणीया ते कुटी वाहिर काढीयां ॥ रीश वाळी जान वाळो वळी आमी चाढीया ॥९॥ चोर पाळेरे ला

मं रह्या ते जइ करी ॥ जीवंतारे नृप मुंक्या करुणा धरी ॥ उत्तम नररे मूल थकी मारे नहीं ॥ वाहुवळरे भरत भणी न हण्यो सही ॥ सही न हण्यो राय उदाइ चंम प्रद्योत धारीयो ॥ मांग देइ मुंकीयो पण जीव थी नवि मारीयो ॥ तिम रांक उपरे रीश केही जाणी राजा परीहरे ॥ ए ढाळ त्रेपनमी कही जिनहरष इणी परे ॥१०॥ सर्व गाथा १०७७.

ढाळ ५४ मी

दुहा ॥ तिण अवसर एक आवीयो ॥ रागांगी गंधर्व ॥ भाव भेद सहु रागना ॥ गाइ जाणे सर्व ॥ १॥ तिण गंधर्वे आलापीयो॥ दीठो मेघ मल्हार ॥ त तखिण चमकी वीजळी ॥ मेह वूठ्यो तिणवार ॥२॥ हेमाचारज आवीया ॥ राग आलाप्यो ताम ॥ सूको ठुंठो पालव्यो ॥ नृप हरख्यो तिण ठाम ॥३॥ एक पुरुष आव्यो तिसे॥नाम्यो नृपने सीश॥ कर जोडीने इम कहे ॥ सांभळ श्री जगदीश ॥४॥ देवकइ पाटण देहरो ॥ सोमेश्वर महादेव ॥ तेह पड्यो छे ते हनी ॥ सार करावो हेव ॥५॥ एहवी कीधी आखडी ॥ जां देवळ नवि थाय ॥ मांस भखु नहीं तिहां ल

गे ॥ अगम्न करी इम राय ॥६॥

ढाळ ॥ वइरागी थयो ॥ ए देशी ॥ नृप देवळ ते उधरावोरे ॥ खावा लाग्यो मांस ॥ हेमसुरीशर एम कहेरे ॥ सांभळ राय सुवसोरे ॥१॥ राजन सांभळो ॥ मनथी तजी विखवादोरे ॥ तम्हे करावीओ ॥ इश्वरनो प्रासादोरे ॥रा०२॥ आपण चालो जोइएरे ॥ श्री सोमेश्वर इश ॥ मांस तणी ल्यो आखमीरे ॥ त्यां सुधी अवनीश ॥रा०३॥ सांभळी नृप मन हरखीयोरे ॥ लेइ नरवर वृंद ॥ चाल्यो कुमर नरेशरुरे ॥ साथे हेमसुरिदोरे ॥रा०४॥ राय कहे ल्यो पालखीरे ॥ बेसो श्री गुरुराय ॥ हेम कहे मुनीवर हुवेरे ॥ ते चाले निज पायोरे ॥रा०५॥ चालो आगळथी तुह्मेरे ॥ शत्रुंजय गिरनार ॥ अले जुहारी आवशुंरे ॥ इश्वरने दरबारोरे ॥रा०६॥ नृप देवकीपाटण चल्योरे ॥ गया शत्रुंजय हेम ॥ आगळथी आवी करीरे ॥ देहरे बेठा खेमोरे ॥रा०७॥ ब्राह्मण द्वेषी रायनेरे ॥ कहे सांभळ पुहवीश ॥ सहुको माने इशनेरे ॥ हेम न नामे सीशोरे ॥रा०८॥ हेम भणी राजा कहेरे ॥ तम्हे

नामो सीशोरे ॥रा०९॥ हेम कहे नरपति सुणोरे ॥ हरी ब्रह्मा जिन इश ॥ मोक्ष तणुं सुख जे दीयेरे ॥ तेहने नामुं सीशोरे ॥रा०१०॥ राय खुशी थइ इम कहेरे ॥ खट दरीशण मुनीराय ॥ सहूनी जुदी परुपणारे॥ धर्म न मालम थायोरे ॥रा०११॥ केइ काया मल धरेरे ॥ केइ पखाळे देह ॥ केइ नगन रहे सदारे ॥ केइ तन खावे खेहरे ॥रा०१२॥ केइ शिर लुंचन करेरे ॥ केइ वधारे केश ॥ धर्म कहो केहमां खरोरे ॥ ते कहीये सुविसेशोरे ॥रा०१३॥ खोटो परिहरीयें पररे ॥ जोइ करीये सार ॥ ढाळ चोपनमी ए थइरे ॥ कहि जिन हर्ष विचारोरे ॥ रा०१४॥ सर्व गाथा १११९॥

ढाळ ५५ मी.

दुहा ॥ हेम कहे राजन करो ॥ इश कहे जे धर्म ॥ इश्वर खोटो नवी कहे ॥श्युं राखो मन भर्म ॥ १॥ पूछे सोमेश्वर भणी ॥ राजा धरी जगीश ॥ खरो धर्म कहो केहनो ॥ पूछुं तुज जगदीश ॥२॥ शंकर बोल्यो निज मुखे ॥ सुण राजा मुज वाच ॥ धरिजे मनमां धर्म तुं ॥ हेम कहे ते साच ॥३॥ जग मांही जोगी खरो ॥ निरमळ एहनो शीळ ॥ इश्वर क

हे ए शेव तुं ॥ जिम पामे सुखलील ॥४॥ पहिली तु मतिरे कह्यो ॥ परदारानो निम ॥ अगढ करावो मां सनी ॥ जां जावुं त्यां सीम ॥५॥

ढाळ ॥ प्रणमुं श्री गुरु पाय ॥ ए देशी ॥ अगड करी नरनाह ॥ श्री गुरु पासे उछांह ॥ पाटण आवी याए ॥ सहू मन भावीयाए ॥१॥ खट दरषण अवनि श ॥ तेमव्या धरीय जगीश ॥ कुण देव धारीयेए ॥ काशी झुहारीयेए ॥२॥ नारायण कहे एक ॥ पुरुषोत म सुविवेक ॥ इश्वर कोइ कहेए ॥ आदि न को लहेए ॥३॥ ब्रह्मा कहे एक कोइ ॥ जेहथी ए जग होइ ॥ सुरिज तम हरेए ॥ देव सहू सीरेए ॥४॥ केइ कहे आ दि मात ॥ आदि न कोइ लहात ॥ भक्ति मुक्ति दीये ए ॥ शुद्ध शेवा कीयेए ॥५॥ हेम भणी कहे राय ॥ तु मचो देव बताय ॥ नृप तमे सांभळोए ॥ मुकी आम ळोए ॥६॥ दोष अढार रहित्त ॥ तेहिज देव तहत्त ॥ क्रोध मान गंजीयाए ॥ माया लोभ भजीयाए ॥७॥ रति ने अरति अग्यान ॥ मद मच्छर भय आंन ॥ प्रे म निद्रा नहीए ॥ सोक चोरी दहीए ॥८॥ जूठ वंचन जीव घात ॥ हास्य विनोद विलास ॥ नही दोश एट

लाए ॥ देव तेहोज मलाए ॥९॥ जेहना सुदर अंग ॥
नारी तणो नही संग ॥ तेह आराधीयेए॥शिव पद सा
धीयेए ॥१०॥ गुरु मुनीवर नीग्रथ ॥ चाले सुद्धे पथ
॥ आरंभ नवी करेए ॥ निज किरिया धरेए ॥११ ॥
ल्यो आहार नीहाळी ॥ दोष बेताळीश टाळी ॥ ते गुरु
वंदीयेए ॥ पाप निकदीयेए ॥१२॥ केवळी भापीत धर्म
नही जेहमां कोइ भर्म ॥ जीव दयां घणीए ॥ ते शिव
सुख भणीए ॥१३ आराधो ए धर्म ॥ जेहथी त्रुटे क
र्म ॥ सका तजी ग्रहोए ॥ साचो सद्दहोए ॥१४॥ वि
प्र तणो उपदेश ॥ राजा सुणो सुविशेश ॥ हेम वचन
खराए ॥ न धरे आकराए ॥१५॥ राजा मन मममोल
॥ साचा जूठा बोल ॥ निर तिम कापमीए ॥ मच्छ
जिम तडफडेए ॥१६॥ सूरी वचन सुप्रमाए ॥ माने न
ही गुरु आए ॥ राजन सांभळोए ॥ कां तमे खळभळो
ए ॥१७॥ हठ छोंमे नही जेह ॥ सुख नवी पामे तेह
॥ लोह वणिक परेए ॥ पस्तावा करेए ॥१८॥ तेह भणि
तसे नरपत्त ॥ आराधो तिन तत्त ॥ कुमती न आणीये
ए ॥ साच पिछाणीयेए ॥१९॥ पचाननमी ढाळ ॥ कहि
जिन हर्ष विशाळ ॥ हेम समजावीयोए ॥ राय मन भा

वीर्योए ॥२० सर्व गाथा ॥ ११४४॥

ढाळ ५६ मी

दुहा ॥ राय एवो उपदेश सुणि ॥ रिझ्यो चित्त मझार॥पाये लागी हेमने ॥ तार तार कहे तार ॥१॥ गुरु कहे देहराशर करी ॥ पूजो शांती जिणंद ॥ घर देहराशर थापीयो ॥ पूजे नित्य नरिंद ॥२॥ वात सुणी तव बांभणे ॥ हीयमे उठी झाळ ॥ देवबोध ब्राह्मण भणी ॥ तेडाव्या ततकाळ ॥३॥ आडंबरशुं आवीयो ॥ साथ छात्र अनेक ॥ बोलावे विरुदावळी ॥ बारु जास विवेक ॥४॥ केळ पाननी पालखी ॥ कमळनाळनो डंड ॥ बांधी काचे तांतणे ॥ त्रुटे नहीं अखंड ॥५॥ वरस आठना छोकरा ॥ कांधे ले चकचोळ॥ आवी पाटण मांहि ते ॥ होइ रह्यो रमझोळ ॥६॥

ढाळ ॥ धणरी बिंदली मन लागो ॥ ए देशी ॥ रायसभाए आवीयो॥धरतो मन अभिमान॥मोरा लाल ॥ पवन साधन विद्याधरे ॥ गारुड मंत्र विधान ॥मोरा लाल ॥रा०१॥ हांरे लाल ॥ ज्योतिष शास्त्र भण्या घणा ॥ वळी व्याकरण विशेष ॥ मो० तर्क शास्त्र कवि चातुरी ॥ जाणे मंत्र अलेख ॥ मो०रा०२ ॥ हां०

सानिध जेहने देवनी ॥ सिद्ध धरावे नाम ॥ मो० पंच
सयां पोथी भर्यां ॥ पूस्तकशुं अभिराम ॥ मो०रा०३
॥ हां० पेटे पाटो बांधीयो ॥ छात्र करे कुद्दाल ॥मो०
नीसरणी राखे कन्हे ॥ अभिमानी वाचाल ॥मो०रा०
४॥ हां० राजाने एहवुं कहे ॥ तुम्हरा नगर मझार ॥
मो० वाद करे जे मुजस्युं ॥ तेहने तुरत हकार ॥मो०
रा०५॥ हां० हुं हारुं तो माहरा ॥ ए पोथी ल्ये तेह॥
मो० ते हारे तो माहरी ॥ लागे लुली पाएह ॥मो०
रा०६॥ हां० राये तेमल्या हेमने ॥ आया मुनी दरवा
र ॥ मो० कुण वादी नृप तेहस्युं ॥ कीजे शास्त्र विचा
र ॥मो०रा०७॥ हां० राय कहे तुले एकला ॥ एहने
वहु परीवार ॥ मो० किम जिपेश्यो एहने ॥ पूछुं तेह
विचार ॥मो०रा०८॥ हां० सूरी कहे राजा सुणो ॥ ए
क रहे वन सिंह ॥ मो० वनचर वनमां तेहनो ॥ राखे
सहूको वीह ॥मो०रा०९॥ हां० रवि गयणे गण एक
लो ॥ करे अंधारो दूर ॥ मो० एक वज्र परवत पणे॥
भांजि करे चकचूर ॥मो०रा०१०॥ हां० मांहे छति
मति जोइये ॥ लाख मिल्या तो काख ॥मो० सूर ए
क कायर घणा ॥ उमाम्हे जिम राख ॥मो०रा०११॥

हां० हेम वचन सणी गहगसो ॥ धन धन हेम मुणिंद ॥ मो० हेम भणी कुण आगमे ॥ एम कहे कुमर नरिंद ॥मो०रा०१२॥ हां० राय हुकम बोल्या बंने ॥ संस्कृत भाषा सार ॥ मो० तर्क काव्य बोले विचे ॥ वैयाकरण विचार ॥मो०रा०१३॥ हां० संन्यासी समश्या कहे ॥ पूरे हेमसूरिंद ॥ मो० गाजी सिंह तणी परे ॥ जोवे नृप नरचंद ॥मो०रा०१४॥ हां० जीपी न शके हेमने ॥ गारुम विद्या ताम ॥ मो० कीधी तिण संन्यासीए ॥ हेम जीपेवा काम ॥मो०रा०१५॥ हां० ऊंदर आव्या धसमशी ॥ साप रच्या गुरु त्यार ॥मो० जोगी तेमद्या नोळीया ॥ गुरु तेडव्या माजार ॥मो०रा०१६॥ हां० जोगी मुख झांखो थयो ॥ फोकट जाशे मान ॥ मो० व्यग्र चित्त पंमित थयो ॥ मवळ यतिनो ज्ञान ॥मो०रा०१७॥ हां० एतो परतक्ष सरस्वती ॥ ए आगळे कुण जाण ॥ मो० ढाळ थइ ए छपनमी ॥ कहि जिनहर्ष सुजाण ॥ मो०रा०१८ ॥ हां० सर्व गाथा ११८६.

ढाळ ५७ मी.

दुहा ॥ देवबोधेन नृप कहे ॥ वळी आव्यो

मात ॥ तुम संघाते धर्मनो॥करवी छे घे वात ॥१॥ निज थानक जोगी गयो ॥ हेम गया पोशाळ ॥ संन्याशी व्याह्मणे थयो ॥ आव्यो वळी ततकाळ ॥२॥ नृप आगळ निज धर्मनी ॥ कथा कहे सुविशेश ॥ आदि धर्म छे शीवनो ॥ मोटो देव महेश ॥३॥ ब्राह्मण गुरु भगवानए ॥ तिरथ निरमळ गंग ॥ ए च्यारे आराधतां॥ पाप रहित हुवे अंग ॥४॥ संन्याशी राजा भणी ॥ परम कसो चित्त लाग्य ॥ पूजानी वेळा थइ ॥ सज्जा विसर्जे राय ॥५॥

ढाळ ॥ मन मधुकर मोही रह्यो ॥ ए देशी ॥ दव्रबोध राजा विन्हे ॥ करता वात विनोदरे ॥ देहरासरमां आवीया ॥ धरता परम प्रमोदरे ॥दे० १॥स्नान करे नृप शुची जळे ॥ पूज्या पहिलो इशरे ॥ पासे प्रतिमा जिन्न तणी ॥ पूंजी नाम्युं सीशरे ॥दे० २॥ खीजी राजा उत्तरे ॥ योगी बोल्यो तामरे ॥ इशर पासे ए ठवी ॥ जिन्न प्रतिमाश्युं श्युं कामरे ॥दे० ३॥ चंपा वनमां आंकुमो ॥ गज्ज पासे खर जेमरे ॥ जिन प्रतिमा शिव पासती ॥ शोभ न पामे तेमरे ॥दे० ४॥ गंगाजळ कुण छांडीने ॥ पीवे थीळें नीररे ॥ कोही कुण पीए रावमी

॥ छांडी अमृत, खीररे ॥दे०५॥ आंबो छांडी आक
नां॥ कुण मूरख फळ खायरे ॥ सीलवंती तजी कामि
नी ॥ कुण वेश्या घर जायरे ॥दे०६॥ आदि धरम शि
व ताहरो ॥ शिवशंकर तुज देवरे ॥ ते छांडी मांडी व
ळी ॥ जिनप्रतिमानी शेवरे ॥दे०७॥ जिनप्रतिमा जिन
धर्मने ॥ दूरे तजो महाराजरे ॥ सैव धर्म हरजा न्हवी
॥ए भव जळनिधी पाजरे॥दे०८॥ घणो कह्यो पण रा
जवी ॥ कह्यो न माने तासरे ॥ हरीहर ब्रह्मा आवीने॥
वाल्या राजा पासरे ॥दे०९॥ सांभळ कुमर नरिंद तुं ॥
पूरव धरम म छंडेरे ॥ हरिहर ब्रह्मा देव ए ॥ एहशुं मा
या मंडेरे ॥दे०१०॥ प्रतिबोधे इम देवता ॥ साते परि
या आइरे ॥ राजा आगळ इम कहे ॥ एह थयो आ
यो दाइरे ॥दे०११॥ जैन धरमने आदर्यो ॥ अम्हे थ
यो दूरगति पातरे ॥ ते माटे ए मुंकी द्यो ॥ जो अम्ह
चाहे सातरे ॥दे०१२॥ इश्युं कहीने रोवता ॥ करता
रोघ विलापरे ॥ हाहा अम्हे दूखीया थया ॥ पाम्या
तुजथी संतापरे ॥दे०१३॥ मुंकी धरम कही उतपत्या
॥ देव संघाते सातरे ॥ राजा मन विभ्रम थयो ॥ मन न
समाये वातरे ॥दे०१४॥ तेमत्यो उदयन मंत्रवी ॥ का

था सुणावी तासरे ॥ चिंता म करो चित्तमां ॥ हेमसु
री छे पासरे ॥दे०१५॥ उदयन जइ जणावीयो ॥ श्री
गुरुने अवदातरे ॥ इहां राय तेमी लावज्यो ॥ जव था
ये परभातरे ॥दे०१६॥ प्रात थयो रवीउगीयो ॥ आ
व्या सद्गुरु पासेरे ॥ सात बाजोठ ठवी करी ॥ बेठा
हेम मुनीशरे ॥दे०१७॥ रीझववा चित्त रायनो ॥ की
धो आसण दूरेरे ॥ अंतरीक्ष श्री गुरु रह्या ॥ बेठा आ
सण पूरीरे ॥दे०१८॥ मधुर स्वरे घे देशणा ॥ भाखे ध
र्म रसाळरे ॥ थइ जिनहरख प्रमोदशुं ॥ सत्तावनमी ढा
ळरें ॥दे०१९॥ सर्व गाथा ११०२.

ढाळ ५८ मी.

दुहा ॥ दया करो पर जीवनी ॥ दया धरमनो
मूळ ॥ दान दया इंद्रीय दमन ॥ ए शिव सुख अनुकु
ळ ॥१॥ जेणे शीव पदवी लही ॥ करे इंद्र पाय शेव
॥ दूषण अढारे रहीत ॥ कर्म रहित ते देव ॥२॥ शुद्ध
मारग जे उपदीशे ॥ जेणे तज्या कषाय ॥ ल्ये भीक्षा
जे सुझती ॥ सुगुरु ते कहेवाय ॥३॥ आदरस्युं ए आ
दरो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म ॥ एहनी संगत परीहरो ॥
जिम भाजे भव भर्म ॥४॥ सद्दहिणा धरिये खरी ॥

जीवादिक लही भाव ॥ ए समकित शुध राखीये ॥ भ वसायरनी नाव ॥५॥

दाळ ॥ भावन भावो भावीया ॥ ए देशी ॥ खो टो ते धर्म न कीजीये ॥ थाये भव भव हाणोरे ॥ वि ना द्रव्य जिम जळहळे ॥ न चले खोटो नाणोरे ॥१ ॥ सुण सुण कुमर नरेशरु ॥ भाखे हेम सुरीशोरे ॥ दु रगती पडतां जीवने ॥ धारे धर्म जगीसोरे ॥सु०२॥ ज्ञान नजरे करी जोइये ॥ तजीये कदाग्रह दंभोरे ॥ देव गुरु धर्म ते खरा ॥ जिहां नहीं कोइ आरंभोरे ॥ सु०३॥ आरंभ धर्म समाचरे ॥ गुरु पण आरंभ धा रोरे ॥ देव कषाइ विषय भर्या ॥ किम ते तारे संसा रोरे ॥सु०४॥ कवीत्व ॥ दीठा देव अनेक ॥ सोय प ण लंपट लोभी ॥ हाथे लीये हथीयार ॥ दैत्यने हणे सथोभी ॥ रगत मांस आहार ॥ भोग भेंसानो मांगे ॥ देखीने कुए पमे ॥ पुरुष जे पाये लागे ॥ तत्व वात बुझे नहीं ॥ देव देव सहुको कहे ॥ श्री हेम कहे मूर ख घणा ॥ देव न साचो को लहे ॥१॥ आक धंतुरा फुल ॥ पूज पातरी चडावे ॥ रुंडमाल गळ मांही ॥ इ

ल एक खांडो वांडो ॥ घर घर मांगे भीख ॥ कहूं दे
व के गांमो ॥ वाह वाह सहुको कहे ॥ भलो ते सा
चे सही ॥ श्री हेम कहे नही देव गुण ॥ देव सगती कि
णी परें लही ॥२॥ वाघ चरम पाथरे ॥ हाथ डमरु
वजावे ॥ आगे रुप अपार ॥ और विभूति लगावे ॥
पूरे सींगी नाद ॥ सीश वहु झटा वधारे ॥ मांथे राखे
गंग ॥ ध्यान चित्तशुं न लावे ॥ वळी नाम धरावे इश
वर ॥ करणी तो एहवी करे ॥ श्री हेम कहे ए देवनें ॥
पूजे ते कहो किम तरे ॥३॥ ढाळ पुर्वनी ॥ तारे नहीं
निज आतमा ॥ परने ते किम तारेरे ॥ लोह सीला
सरीखा कह्या ॥ कुगुरु कुदेव विचारेरे ॥सु०५॥ देव
गुरु धर्म शुद्ध विना ॥ कोइ न पामें पारोरे ॥ पण मूर
ख दढरागीया ॥ समजे नहींये लगारेरे ॥सु०६॥ हे
म वचन नृप सांभळ्यां ॥ रंज्यो चित्त मझारोरे ॥ गु
रु उपदेश पूरो करी ॥ तेडयो राय ते वारोरे ॥सु०७
॥ वेगा ध्यान मुनीशरु ॥ देखे जिन चोवीसोरे ॥ कं
चन वरण नरेशरु ॥ वळी निज कुळ एकवीसोरे ॥सु.
८॥ आव्या जिनवर पुजवा ॥ मन धरता आणंदोरे ॥
केसर चंदन लेइ करी ॥ भगते अरचे जिणंदोरे ॥सु०

९॥ श्री जिननाथ नमी करी॥ये एहवी आसीशोरे ॥
जीवे तुं कुमर नरेशरु ॥ कोमाकोमी वरीसोरे ॥सु०
१०॥ सुते जिन धर्म समाचर्यो ॥ तास पसाये गहग
हतारे ॥ नरक थकी अह्मे निकळया ॥ सुरभुवने अ
ह्मे पुहतारे सु०,११॥ धरम खरो हवे तें लह्यो ॥ न प
डीश बीजी भामेरे ॥ श्री जिन भाषित धरमथी ॥ तुज
पूरवज सुख पामेरे सु०१२॥ चोवीस,जिनवर मूरति॥
मुखे बोली तिए वारोरे ॥ धर्म न म्हेलीश नरपति॥ए
शिव सुखनो दातारोरे ॥सु०१३॥ धरम धरम सहुको
कहे ॥ धरम न जाणे मरमोरे ॥ एक धरमथी सुख व
धे ॥ एक धरमथी कर्मोरे ॥सु०१४० जिनवर धरम भ
णी तजे ॥ ते दुख पामे प्राणीरे,॥ नरग निगोद भमे
घणुं ॥ राय,शुणी एहवी वाणीरे ॥सु०१५॥ इम कही
मूरति उतपती ॥ पूरवज पण नवी देखेरे॥ धरम विषय
दृढ चित्त थयो ॥ धरम कहे सुविशेषेरे ॥सु०१६॥ हे
मसूरीशर पाय नमी ॥ राजा वे करजोमीरे ॥ आज

सु॰१,८॥ सर्व गाथा ११११५.

ढाल ५१ मी.

दुहा ॥ किणहीक दीवशें देशना ॥ देतां चल्यो विचार ॥ श्रावक कहीये तेहने ॥ जे धारे व्रत वार ॥ १॥ व्रत पाखे नर तेहने ॥ लागे अविरत वार ॥ ते माटे व्रत आदरो ॥ जिम पामो भव पार ॥२॥ श्रावकनां व्रत सोहिलां ॥ पाळे धरीय विवेक ॥ ते प्राणी निश्चे करी ॥ सुर सुख लहे अनेक ॥३॥

ढाळ ॥ रिषो तुं वेयावेच करे ॥ ए देशी ॥ हेम शुरीसर इम कहेए ॥ सांभळो कुमर नरींद ॥ व्रत विण पशु सारीखोए ॥ व्रत विना मूरख मंद ॥१॥ पाळो व्रत उजळाए ॥ पामो अधिक आणंद ॥ राय कहे कर जोडीनेए ॥ कहेवां ते व्रत वार ॥ किम पालीये ते हनाए ॥ दाखवो सयळ विचार ॥पा॰२॥ प्रथम सुव्रत पाळीयेए ॥ तजीये त्रस जीवनी घात ॥ आरंभे जयणा कहीए ॥ श्री जिनवरनी ए वात ॥पा॰३॥ किरमवाळादीक कीमलाए ॥ देहना जीव अनेक ॥ करुणा करी काढतांए ॥ दोष नहीं धरीय विवेक ॥पा॰४ ॥ जीव दया थकी हाथीयोए॥ मरी थयो मेघकुमार

॥ अकाइ जीव मारतोए ॥ सातमी गयो विचार॥पा०
॥५ व्रत हवे बीजो सांभळीएए॥पंच अलक परीहार॥
जयणाअ छे अवरनीए॥ बोलीये करी विचार॥पा०६
॥नारद सुगती गयो साचथीए॥परवत नृप वसु जाणी॥
दुख पामीयां नरकनांए॥ साख भरी खोटी ताणि ॥पा०
७॥ तीसरो व्रत हवे सांभळोए ॥ लीजे नहीं परधन ॥
जिम लोह पुरो चोरटोए ॥ जीवथी थयो विपन्न ॥
पा०८॥ चोथो व्रत शुद्ध पाळीयेए ॥ परिहरीये परदा
र ॥ संतोष निज नारीनोए ॥ जश थाये त्रिजग अ
पार ॥पा०९॥ सीलथी लील लहीजीयेए ॥ थाये सु
रनर अनुकुळ ॥ राणी तजी रायनीए ॥ पाल्यो शी
ळ जिम वकचूल॥पा०१०॥ शेठ सुदरसण पाळीयोए॥
सुळी सींधासण थाय ॥ कलंक शिर उतारीयोए॥ की
ध महीमा सुर आय॥पा०११॥ विषयथी रावण खो
इयाए ॥ सबळ बळवंत भुज वीस ॥ दस सीश छेदावी
याए ॥ जे हुतो लंकनो इश ॥पा०१२॥ पांचमो व्रत
परीग्रह तणोए ॥ कीजीये तास परीमाण ॥ अती लो
भथी दुख हुवेए ॥ जाये जाये लोभथी माण ॥पा०
१३॥ मुम्मण नंद सागर तणाए ॥ सांभळी एह दृष्टांत

॥ मन लोभथी वाळीयेए ॥ पामीए सुख अनंत ॥पा० १४॥ व्रत छठो हवे तुम्हे सांभळोए ॥ कीजीये दिसी परिमाण॥ नृप काकजंघ पाळीयोए ॥भागी नहीं जिन आण पा०१५॥ सातमो व्रत धरो निरमळोए ॥ भोग उपभोग परिमाए ॥ अनरथ दंड टाळीयेए ॥ बोलीये कठिन नहीं वाण ॥पा०१६॥ महसेन सुरसेनना सुणो ए ॥ रसए वयण अप्रयोग ॥ कविए वयण मुखे बोल तांए ॥ महसेन जीभ थयो रोग ॥पा०१७॥ सुरसेन म धुर मुखे उचरेए ॥ रंजित थाय सहु लोग ॥ ते गुण थकी पामीयाए ॥ मनुष्य तणां शुभ भोग ॥पा०१८॥ आठमो व्रत इम पाळीयेए ॥ पामीये सुख सुविशाळ ॥ जिनहर्ष पुरी करीए ॥ ओगणसाठमी ढाळ ॥पा०१९ ॥ सर्व गाथा १२३७॥

ढाळ ६० मी.

दुहा॥ नवमो व्रत चित्तमां धरो ॥ सामाइक व्रत सार ॥ चंदवतंसक नृप परे ॥ शुभ सुख लहे अपार ॥१॥ देसावकासिक व्रत भलो ॥ दशमो पाळो एह॥ चवद नियम नित साचवो ॥ दिव्य विवेक धरेय॥२॥ मित्र भणी व्रत ए फल्यो ॥ रह्यो जीवतो तास ॥ दा

मे प्रतिहारी मुओ ॥ व्रत पच्चखाणेन जास ॥ श्री पो
ढ्य व्रत इग्यारमो ॥ पालजो सागरचंद ॥ अगनिसीश
चेदन सही ॥ श्री नभसेन मुणंद ॥ ४॥ वीर श्रावक चुल
णी पियात ॥ पोसधव्रत सुविचार ॥ मिथ्यामती सुरनी क
रीत ॥ वेदन सही अपार ॥ ५॥ साचवो बे व्रत बारमो ॥ अ
तिथी संविभाग उदार ॥ साधु जणी देइ प्रछे ॥ पोते
करे आहार ॥ ६॥ धन्नशेठे शिवपद लह्यो ॥ वली संगम
गोवालन ॥ मुनीवर दान थकी थयो ॥ सालिभद्र सुक
मालं ॥ ७॥ श्री जीव नियसारजावे ॥ दीधुं उत्तम दान
॥ तेणे भव सत्तावीसमे ॥ थया वीर भगवान ॥ ८॥ आ
व्वे घृत वहोरावीयाथा ॥ अंगे धरी आणंद ॥ जीवने तेह
धनसारनो ॥ थयो प्रथम जिनचंद ॥ ९॥

॥ ढाल ॥ उत्सर्पिणी अवसर्पिणी आरे ॥ ए देशी
॥ इम जाणी संचो नवी करीये ॥ जिनवाणी दिल वाव
रीये जी ॥ हरिवंश दीवे जे निज हाथे ॥ तेहीज आवे
साथे जी ॥ १॥ दीधा विण नवी पामे कोइ ॥ दीधा
नां फल जोइजी ॥ एक पालखीए बेठा जाइ ॥ एक
उपाने धाइजी ॥ २॥ एक चढे घोडे रायजादा ॥
एक पुळे थइ प्यादाजी ॥ एक तणे घर मंदिर ताजा

॥एकने छापर नहीं साजाजी ॥२०३॥ एकने पोढण पलंग सजाइ ॥ सीर पसोमी तळाइजी ॥ एकने त्रुटि खाट मिले नहीं ॥ गोदमी फाटी साइजी ॥२०४॥ ए कने पहिरण वारु वागा ॥ एक फिरे नर नागाजी ॥ एक नारी सोवन शिणगारी ॥ एकने चीन नहीं सारी जी ॥२०५॥ लाख टबी नर एकण कोडो ॥ एक दुखे दिन गेडजी ॥ एक राजा एक रंक कहावे ॥ दीधा वी ण कीम पावेजी ॥२०६॥ तिण कारण जिखमी खरची ने ॥ दान सुपात्रे दीजेजी॥कीरपी थइने वेंशी रहे जो॥ आगळ शु पाइजेजी॥२०७॥ किरपी खावे नहीं धन संचे ॥ धन कारण पर वंचेजी ॥ याचक आव्ये मुहु क री काळो ॥ जाणे पश्यो लोहाळोजी ॥२०८॥ किरपी दान दाये नहीं केहने ॥ भलो कहे कुण तेहनेजी ॥की डी संचे तितर खाये ॥ किरपीनो धन जायेजी ॥२० ए॥ साहमि साधने घर न दिखावे ॥ देवळ कोइ न क रावेजी ॥ सत्रुकार न संघ चलावे ॥ कारण किणही न आवेजी॥२१०॥यतः॥ रत्नतलाइ वेमी वड॥कायर हाथ खडग्ग ॥ गहली जोवन कृपण धन ॥ कारण किणही न लग्ग ॥१॥ ढाळ पुर्वनी ॥ हेम कहे राजा

सुण वाणी ॥ दीजे उलट आणीजी ॥ ए माया जिणे
स्वाइ न जाणी ॥ ते बुडश्या भव पाणीजी ॥३०११॥
लिखमीनो फळ दान कहावे ॥ दान सुजस बोलावे
जी ॥ दाने देव तणां मन रंजे ॥ दाने अरिहल गंजेजी
॥३०१२॥ दान थकी सनमान लहीजे ॥ दाता विरुद
घहीजेजी ॥ दाने आदर आपे राजा ॥ दाने वाजे
वाजांजी ॥३०१३॥ दाने नितप्रते हालकलोला ॥ विं
टया रहे नर होलाजी ॥ दान सहुने लागे मीठो ॥ प
रतक्ष नयणे दीठोजी ॥३०१४॥ दाने भूत भयंकर ना
से ॥ दाने दूरित विनासेजी ॥ दाने ग्रह पण न करे
पीडा ॥ दाने वाधे व्रीडाजी ॥३०१५॥ पोते न दीये
दान के वारे ॥ परने देतां वारेजी ॥ ते पग्रश्ये घण
घोर अंधारे ॥ उपरे देव पचारेजी ॥३०१६॥ अभय
सुपात्र सुगति सुख संपा ॥ ऊचीत किरती अनुकंपाजी
॥ भोगवीये सुख ए संसारे ॥ दान दीये वित सारेजी
॥३०१७॥ अनंत जिणेशर थया वळी थाश्ये ॥ ते स
हु दान प्रकासेजी ॥ पहिली दान तिर्थंकर आपे ॥
दालिद्र सहुनां कापेजी ॥३०१८॥ इम जाणीने दान
समापो ॥ महीयले किरती थापोजी ॥ साळमी सुल

लीन ढाळसुहाणी ॥ इम भजन म्हारे पर्व खाणीजी ॥ इं० ॥९९॥ सर्व गाथा ॥ २९५॥ ढाळ ॥ दूहा ॥ दान देइ वहुमानस्यु ॥ छेहलुं व्रत अजुआळे ॥ तुज आगळ एम्में करो ॥ निरमळ चित्ते पाळे ॥१॥ गुरु वचणे नू दूरवीयो ॥ अग स्यौं व्रते वार ॥ आराधे समकित सहित ॥ चुके नहीं लगार ॥२॥ हेमसुरीसर मुखे ॥ राय कीयो पच्चखाण ॥ टीप प्रमाणे ते लिख्यो ॥ माहरे तेह प्रमाण ॥३॥ देव धर्म गुरु तत्व ए ॥ मानुं अवर न धर्म ॥ अरिहंत देव सुसाधु गुरु ॥ केवळीभाषित धर्म ॥४॥ च्यार निपेपा जिन तणा ॥ आराधु मन शुद्ध ॥ नाम भाव जिन द्रव्य जिने ॥ थवणा जिन अविरुध ॥५॥ आज पछी मानुं नहीं ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म ॥ धर्म हेतु ए परीहरुं ॥ मानुं कारण कर्म ॥६॥

ढाळ ॥ के वे मुनीवर वहिरण पांगरयारे ॥ ए देशी ॥ राय फिरि गुरु मुखे व्रत उचरिरे ॥ परिहरे च्यार प्रकार मिथ्यातरे ॥ लौकीक लोकोत्तर गुरु देवतारे ॥ पर इह लोके न मानुं वातरे ॥रा० १॥ पहिलो व्रत तेम मा

णातिपातनोरे॥न करुं त्रस प्राणी संहाररे ॥ जयणा पर उपगार आरंभनीरे ॥ एहनां पांच तजुं अतिचाररे ॥ रा०२॥रीस माहुं गाढि बंधणे बाधुंरे॥पुंठे गरु बहु भार रे ॥ छविछेदुं राखुं भूख्यो प्रश्योरे ॥ दुख पामे ते जी व अपाररे ॥रा०३॥ पहिला व्रत उपरे सुणज्यो कथा रे ॥ अमरपुरी सुमित्र नरिंदरे ॥ विमळा राणी कुखे उ पनोरे ॥ अमरसिंघ जाणे कुळ चंदरे ॥रा०४॥ एक दि न कुमर रेवाडी संचर्योरे ॥ बांभण हाथे दीवो छागरे॥ कुमरे पुछ्यो ते ब्राह्मण भणीरे ॥ केही अरथे ए महा भागरे ॥रा०५॥ तब बोल्यो ब्राह्मण सुण राजवीरे ॥ मे आरंभ्योछे एक ज्यागरे ॥ मांही होमीश पुन्य होशे घणोरे ॥ अमरपुरे पोंहोंचशे छागरे ॥रा०६॥कुमर क हे सुण ब्राह्मण वातमीरे ॥ जीव हण्यां किम थाये पु न्य रे॥ लोही खरड्यो लोही धोइयेरे ॥ निरमळ न हु वे हिया शुन्यरे॥रा०७॥ पाप करीने कहो किणीपरे त रेरे ॥ जीव हणीने जाणे धर्मरे ॥ है है देखो मूरख मा नवीरे ॥ भ्रम भूला किम करे कुकर्मरे ॥रा०८॥ जी व हणीने जो सुखीया हुवेरे ॥ तो दुखीया नवी थाये कोयरे ॥ इम उपदेश अमर कुमरे दीयोरे ॥ तेटले ए

क मुनी परगट होयरे ॥रा० ९॥ ते सांभळतां राये पु
छीयोरे ॥ कहो रीपि जीव हण्यां सुख होयरे ॥ साधु
कहे विप भक्षण जो करेरे ॥ मरण लहे के जीवे सो
यरे ॥रा० १०॥ पावक मांही पेठो नवी कळेरे ॥ न व
ळे पावक केरे कुंमरे ॥ झीली नील गळीना कुंभमारे
॥ जो नवी थयो काळो कुंमरे ॥रा० ११॥ तो हिंसा
थी पाप हुवे नहींरे ॥ न हणीश ब्राह्मण न करीश पा
परे ॥ एणे पहिली याग करयां घणारे ॥ ए तुज पुरव
भवनो बापरे ॥रा० १२॥ ते सांभळ तुज आगळे हुं क
हुंरे ॥ कुम्भ खणाव्यो ताहरे तातरे ॥ रोप्या वृक्ष घणा
ते पाखतारे ॥ होमे छाग तणा तिहां ब्रातरे ॥रा० १३
॥ ते पापे ए छाग थयो इहांरे ॥ तें झाली आण्यो पशु
एहरे ॥ एह कथा सुणी पाम्यो बोकडोरे ॥ जातीसमरण
ज्ञान सदेहरे ॥रा० १४॥ वात न माने जो तुं माहरीरे
॥ तो तुजने दाखुं अहीनाणरे ॥ तुज घर दाट्यो धन
ताहरे पितारे ॥ जा देखामे छाग सुजाणरे ॥रा० १५
॥ लोभी ब्राह्मण अज घरे ले गयोरे ॥ धन देखाल्यो
मानी वातरे ॥ ब्राह्मणना मननो सांसो टालीयोरे ॥
ए माहरो सही पुर्वज तातरे ॥रा० १६॥ दीक्षा लेइ

द्विज मुगतें गयोरे॥ अणसण करी अज हुवो देवरे॥ एकसठमी इम ढाळ पुरी थइरे॥ए जिनहरष कही संषेव रे ॥रा०१७॥ सर्व गाथा १२८८.

ढाळ ६२ मी.

दुहा ॥ अमरसिंघ उपगार करी ॥ परिचल पुण्यो पाय ॥ तिहांथी परदेशे चल्यो ॥ सिद्धनाथ मिल्यो आय ॥१॥ कुमर तणो कर झालीयो ॥ मारेवा तरवार ॥ काढी तेण जोगी तिहां ॥ कीधी अज सुर सार ॥२॥ योगीनें समजावीयो ॥ कुमर उगार्यो तेण ॥ अनुक्रमे पाम्यो राज पुण ॥ जीव दया पुण जेण॥३॥ दया सरीखो धर्म नहीं ॥ हिंसा समो न पाप ॥ तिण कारण न उपजाविये ॥ पर प्राणीने ताप ॥४॥ कुमरपाळ राजा थयो ॥ दया तणो प्रतीपाळ ॥ पडह फिरे नित देशमां ॥ पाळो दया दयाळ ॥५॥ एक सहस गज एकसो ॥ हयवर लाख इग्यार ॥ असी सहेंस गो भेंस सब ॥ गळ्यां पीळे ते वार ॥६॥

ढाळ ॥ मारा मन मान्यारे वसतीया ॥ ए देशी ॥ वरतावी नृप इणी परे दया ॥ मारे नहीं कोइ जीवरे ॥ इण अवसर देश मेवाडमां ॥ एक नगरअ छे सुख दी

घरे ॥व०१॥ तिण नगरे एक विवहारीयो ॥ निज ना
री जोवे सीशरे ॥ जू मारी नाखी ते काढीने ॥ सांभळी
ते पाटण इशरे ॥व०२॥ कोप आणी राजा धमहड्यो
॥ जाणे घृत पड्यो अग्नि मझाररे॥जू मारे कुण पा
पी इस्यो ॥ बांधी लावो इण वाररे ॥व०३॥ राय
मोकलीया निज आदमी ॥ बांधीने लाव्या तासरे ॥
राजा धिग धिग तेहने कर्यो ॥ उपजावी अधिकी त्रा
सरे ॥व०४॥ तुं पाहणीयो के बाहणीयो ॥ गेयो नद
याजळ मांहींर ॥ ते मूरख बोल्यो इणी परे ॥ सांभळ
तुं श्री महारायरे॥व०५॥करमी खाये तेहने हणुं ॥ फो
कट राय म करो रीशरे ॥ राय कहे तो हुं तुजने ह
णुं ॥ मुज सुद्धि आण न धारी सीशरे ॥व०६॥ ते दो
ष नहीं मुज मारतां ॥ तेम्राव्या तुरत तलाररे ॥ एव
लि भणी वहीला हणो ॥ मार पाखे न लहे साररे ॥
व०७॥ शेठने लेइ चाल्या मारवा ॥ मंत्री नृपने क
हे तामरे ॥ कीमी कंथूआने नवी हणे ॥ किम माण
स मारे आमरे॥व०८॥भूंइ पड्यो धन जे नवी लीये॥
पर चोरी न करे तेमरे ॥ नवयोवन परणी परिहरे॥पर
रमणी फरसे केमरे ॥व०९॥ एकेंद्रीने दुहवे नहीं ॥ पं

चंद्री मारी घायरे ॥ ए वात विचारण सारिखी ॥ ऊ
गारो ए महारायरे ॥व०१०॥ मूंकल्यो जीवंता ते वा
णीयो ॥ जिनभुवन कराव्यो साररे ॥ दमडा लाग्या
तिहां शेवना॥नाम दीयो यूकाविहाररे ॥व०११॥ को
इ पाप करे नहीं वीहतो ॥ राजानी आण प्रचंमरे ॥
नवराती पातिक दिन आवीया ॥ थाये जीव तणा खं
ड खंडरे ॥व०१२॥ देवी पूजारा आवीया ॥ कर जो
डी कहे सुण रायरे ॥ भोग मांगे देवी कंटसरी ॥ भैंसा
बाकर दीवरायरे ॥व०१३॥ सातमि दिन जोइये सात
सें ॥ आठसें आठमने दिवशरे ॥ नवसें नवमि दिन मा
रवा॥तुज राज्य अखंम अधीशरे ॥व०१४॥ राजा म
न मांहीं विचारीयो ॥ मुज छाजे नहीं ए पापरे ॥ दे
वीने बळ देइ बोकमा ॥ उपजाऊं किम संतापरे॥व०
१५॥ पूजाराने नृप इम कहे ॥ मारुं नहीं कीमी मात
रे ॥ मारुं किम भैंसा बोकडा ॥ मुज एह म कहेश्यो
वातरे ॥व०१६॥ समजावो तुम्ह देवी भणी ॥ में पाम्ये
श्रावक धर्मरे ॥ तुज देवळमां धरुं जीवता ॥ पण न क
रुं एह कुकर्मरे ॥व०१७॥ ते माटे में करवो नथी ॥ ए
पातक विसवाविसोरे॥ जिनहरष बासठमी जाणज्यो॥

ए ढाळ रसाळ जगीसरे॥व०१८॥सर्व गाथा १३१२.

ढाळ ६३ मी

दुहा ॥ महिष न आपे नरपती ॥ देवी खीजी ता
म ॥ आवी अति उतावळी ॥ नृप सुतो जिण ठाम ॥
१॥ आवी देवी इम कहे ॥ सांभळ वात नरेश ॥ महिष
न आपे मुज भणी ॥ ते हुं किम मुकेश ॥२॥ आगळ
वहु राजा थया ॥ किणही न लोपी नीति ॥ तुं तेहथी
अधिको थयो ॥ भागे पूरव रीति ॥३॥ विनय करी रा
जा कहे ॥ तुं सहुनी रखवाळ ॥ जीव मरावे एटला॥
मोटो ए जंजाळ ॥४॥ भोजन भगति करुं घणो ॥ खी
र खांड पकवान ॥ लाडू सेव सुंहाळियां ॥ रुमां रुमे
वान ॥५॥ कहे ताम कंटेसरी ॥ अमचो भोजन मां
स ॥ सींह करे सो लंघणा ॥ तोही न भखे घास ॥६॥
राय कहे मुज नेम छे ॥ हणवा परना पाण ॥ नीम
न भागुं माहरो ॥ म करीश खाचरं ताण ॥७॥

ढाळ ॥ सांती सुधारस कुंभमां॥ झीले रातने दीह
रे ॥ ए देशी ॥ कोपी देवी रायशुं ॥ परिसह प्रतिकुळों
रे ॥ कीधो तेहवो आकरो ॥ सिशे धर्यो त्रिसूळोरे ॥
को० १॥ ततखिण राय कोढी थयो ॥ अंगे वेदन वा.

धारे ॥ रुप कुरुप काया थइ॥ जाणे दवनी दाधीरे॥ को०२॥ राधि परु लोही वहे ॥ दीसे अति विकरालो रे ॥ देखी सरुप काया तणो ॥ झांखो थयो भूपालोरे ॥को०३॥ चिंता नहीं मुज देहनी ॥ जिन धरम निंदा थ्येरे ॥ जिनशासननो लोकमां ॥ अपयश वहु थाश्ये र ॥को०४॥ मंत्री उदयन तेमीयो ॥ भूप कहे शुण भाइरे ॥ वेदन थइ मुज कोढनी ॥ तेहनी चिंता न कांइ रे ॥को०५॥ हीला थाश्ये धर्मनी ॥ लोकमां अपवादो रे ॥ धर्म तज्यों निज कुळ तणो ॥ पाम्या एह सवादो रे ॥को०६॥ उदयन गुरु पासे गयो ॥ कह्यो सकळ वृत्तांतोरे ॥ हेमसुरीशर वोलीया ॥ न करो मन चिंतो रे ॥को०७॥ जळ मंत्री मंत्री भणी ॥ आप्यो मुखमां म्हेलोरे ॥ अंग सयळ वळी छांटज्यो ॥ थाश्ये रोग उवेलोरे ॥को०८॥ जळ आणी नृप छांटीयो ॥ रोग गयो ततकाळोरे ॥ कनक वरण काया थइ ॥ मन हरख्यो भूपालोरे ॥को०९॥ सैन्य लेइ गुरु वांदवा ॥ आव्यो नृप सुविचारीरे ॥ वंदी वेगो एटले ॥ रोती सुणी एक नारीरे ॥को०१०॥करुणा स्वरे ए कुण रमे॥ पुछे कोमळ वाणीरे ॥ ए ताहरी कुळ देवता ॥ इहां

बांधी आणीरे ॥को०११॥ तुजने वेदन जिणे करी ॥ मुंकीयो मस्तक थायोरे ॥ पाप तणां फळ भोगवे ॥ कीधां जे निज कायोरे ॥को०१२॥ नृप कहे श्रीगुरु सांभळो ॥ एह अबळा नाररे ॥ कीडी उपरे कोपश्यो ॥ तुम्हे परउपगारीरे ॥को०१३॥ करुणा करी ए मुंकीये ॥ कहे नृप अवतंसोरे ॥ हेम कहे छोडुं एहने ॥ जो महेले ए मांसोरे ॥को०१४॥ हठ न करे तुजशुं वळी ॥ फिरे देश अढारोरे॥ कोइ हणे छानो जीवने॥ तेहनी कहे सारोरे ॥को०१५॥ कुमर नरेशर उठीयो ॥ पुहता देवीनी पासोरे ॥ गुरु कहे तिम जो तुं करे ॥ छुटे तो तुज पासोरे ॥को०१६॥ देवी कहे नृप सांभळो ॥ हवे जीव न मांगुंरे ॥ जीव हणे तुज देशमां ॥ तेहने मरमी भागुंरे ॥को०१७॥ देवीपणे दयावंत थइ ॥ न करे जीव आहारोरे ॥हेम सुगुरु सुपसाउलो॥ वरत्या जय जयकारोरे ॥को०१८॥ हेम कुमर नृप सारीखा ॥ नहीं कोइ दयाळोरे ॥ त्रेसठमी पुरी थइ ॥ जिनहरष ए ढाळोरे ॥को०१९॥ सर्व गाथा १२३८॥

ढाळ ६४ मी.

दुहा ॥ तीन लोक जो सोझीये ॥ स्वर्ग मृत्यु

पायाल ॥ हेमसुरी सरिखा यति ॥ हूत्रला दुषमकाल ॥१॥ कलिकाले ए वे हुवा ॥ कुमरपाळ नृप हेम ॥ ओ श्रावक ने ओ सुगुरु ॥ अविचळ जेनो प्रेम ॥२॥ वनचर वस्तीमां फिरे ॥ कोइ न करे आळ ॥ जिम राजा परजा तिसि॥जीव तणा प्रतिपाळ ॥३॥ हेमसुरी ने जीव सहु ॥ दे एहवी आसीष ॥ मरण थकी उगारीया॥चीरंजीव निश दिश॥४॥ जग मांहीं हुवा घणा ॥ अभयदान दातार ॥ पण इण कुमर नरेश सम॥कोइ नहीं संसार ॥५॥

ढाळ ॥ तप सरिखो जग को नहीं ॥ ए देशी ॥ दयासु धरम दीपावीयो ॥ जीव दान दातारहो॥ राजन ॥ धरमी लोक कीया सहु ॥ वासी देश अढारहो ॥रा०द०१॥ गुज्जर सोरठ माळवो ॥ कर्णाटक मरु देशहो ॥रा०॥ सिधु भंभेर कुंकण करी ॥ जालंधर सुविसेशहो ॥रा०द०२॥ लाट कच्छ राष्टर वळी ॥ सवा लाख परवत राजहो ॥रा० दीपक नीर आभीरशुं ॥ वळी मेवाम मुराजहो ॥रा०द०३॥ए सहु देश पोता तणा ॥ ए मांहीं न मरे जीवहो ॥रा० सहु नरपति शिर सेहरो ॥ क्षत्री वंशे दीवहो ॥रा०द०४॥ काशी देश व

णारशी ॥ दलपंगुल जयचंदहो ॥रा० करि मिनाइ मैं
ठणो ॥ देइ कुमर नरिंदहो ॥रा०द०५॥ सरग नरग
चित्र पट करी ॥ समजाव्यो जयचंदहो ॥रा० दया
पळावी ते कन्हे॥धन धन कुमर नरिंदहो ॥रा०द०६॥
एक दिन नृप काउसग रह्यो ॥ मंकोमो एक आइहो
॥रा० पाये ते विळगी रह्यो ॥ उखेमद्यो नवि जायहो
॥रा०द०७॥ करुणा नृप आणी करी ॥ चिंते मनमां ए
महो ॥रा० रखे दुख पामे पाणीयो ॥ करुण उपरे मे
महो रा०द०८॥ काया एह असासती॥ पंथीनो विश्रा
महो ॥रा० आवे सुकीयारथी ॥ मंकोमाने कामहो ॥
रा०द०९॥ दया विचारी एहवी ॥ शस्त्रे छेद्युं मांसहो॥
रा० लेइ अळगो मुकीयो॥तिणे न छोड्यो डंसहो॥रा०
द०१०॥ पहिलो व्रत इम पाळीयो॥कुमरपाळ भूपाळ
हो ॥रा० राजवीयामां एहवो ॥ न हुओ कोइ दया
ळहो ॥रा०द०११॥ बीजो व्रत हवे उचरे ॥ मृषा त
णो परिहारहो ॥रा० पंचे कूड दूरे तजुं ॥ पाप तणा
भमारहो॥रा०द०१२॥कन्याली गाय भूमिनो॥साख
कूटीनो भाखहो ॥रा० थापण मोसो पांचमो ॥ टाळुं
गुरुनी साखहो ॥रा०द०१३॥ तजीये राजन वेगळा॥

एहना पंच अतिचारहो ॥रा० कुडो आळ न दीजीये ॥ परना मर्म न विच्चारहो ॥रा०द०१४॥ त्रीजो वळी नवी कीजीये ॥ स्वदारा मंत्र भेदहो ॥रा० मृखोपदेश न दीजीये ॥ कुम्ना लेखो छेदहो ॥रा०द०१५॥ अतीचार परपंच टाळवा ॥ बीजो व्रत राजानहो ॥रा० त्रीजो व्रत हिव हुं धरुं ॥ थूळ अदत्तादानहो ॥रा० द०१६॥ खातर पाडी नवि लीऊं ॥ गांठ छोडी न ल्युं कासहो ॥रा० भूमि निधान पडयो लहुं ॥ धर्म थान कर करुं तासहो ॥रा०द०१७॥ पांच अतिचार संभाळो ॥ चोरी वस्तुनो ताजहो ॥रा० भेळ करे नही वस्तुमां ॥ न दीयें चोर सहाज्यहो ॥रा०द०१८॥ विरुध गमण पण नवि करे ॥ कुडा तोला मापहो ॥रा० एहिज पांचे टाळीये ॥ एहथी लागे पापहो ॥रा०द०१९॥ इम सुद्ध व्रत नृप पाळतो ॥ न लीये परनो धनहो ॥ रा० राख्यो कारण उपने ॥ थिर पोतानो मनहो ॥ रा०द०२०॥ पुरुष रयण ए मोटको ॥ कुमरपाळ भूपाळहो ॥रा० कहे जिनहरख विचारीये ॥ चोसठमी ए ढाळहो ॥रा०द०२१॥ सर्व गाथा १३६४.

ढाळ ६५ मी.

दुहा ॥ धन देखी मन नवि रहे ॥ मोहणगारो धन ॥ जे धन देखी नवी चळे ॥ ते जगमां धन धन ॥१॥ जिण दीठे मन विचले ॥ तरुणी पसारे हाथ ॥ वाळ वृद्ध जुना पुरुष॥मोटा सहु गरत्थ ॥२॥ घर फाडे चोरी करे ॥ मारे ध्वननी आस ॥ एकण कोडी कारणे ॥ वीस करे वेपास ॥३॥ पांचसें वाहन धन भर्यां ॥ मुंकव्यां कुमर नरेश ॥ सावधान थइ सांभळो ॥ तास कथा सुविसेश ॥४॥

ढाळ ॥ मधुकर आज रहोरे जिन चलो ॥ए देशी ॥ वारह व्रतधारी वसे ॥ पाटणमां एक शेठ ॥ सुणज्यो कुवेरदत्त नामे भलो ॥ धनवंत जेहने हेठ ॥ सु०वा०१॥ चवद कोडी धन लेइ करी ॥ पांचसे वाहण मांहे ॥सु. रतनद्वीप भणी चल्यो ॥ धरतो मन उछांह ॥सु०वा०२॥ सायर विचे डूंगरो ॥ ते विचे मारग दीठ ॥सु० वाय कुवाय तणे वशे ॥ ते विचे पोत पइठ ॥सु०वा०३॥ आगळ वाट दीसे नहीं ॥ मालम थया सचिंत ॥सु० चाल्या वाहण नवी चले ॥ कीया उपाय अनंत ॥सु०वा०४॥ इण अवसर एक'

होमीये ॥ आव्यो वेशी पुरुष ॥सु. कीयो जुहार तिण शेठनें ॥ वयण पयंपी मुख ॥सु०वा०५॥ पंचश्रृंग नामे द्वीपण॥तिहां सुतसागर राय ॥सु० तिणे सगर्भा हिरणली ॥ मारी कीध अन्याय ॥सु०वा०६॥ एहवुं देखी रायने ॥ दया उपनी ताम ॥सु० राजा मनमां चिंतवे ॥ नरग तणी मुज ठाम ॥सु०वा०७॥ एक जीवने कारणे ॥ मारुं जीव अनेक ॥सु० जीभ तणो हुं स्वादीयो ॥ मुज मांहिं नहीं विवेक ॥सु०वा०८॥ पर भवथी नृप बीहतो ॥ आज पछे मुज नीम ॥सु० जीव न मारुं जाणीने॥ज्यां जीवुं त्यां सीम ॥सु०वा०९॥ वाहण मोम्यां तुम तणां ॥ राये जाण्यां तेह ॥सु० तुरत मोकल्यो मुज भणी॥ इहां हुं आव्योएह॥सु०वा० १०॥ वाहण आव्यां पांचसें ॥ तुम पहिली इण ठाम॥ सु० सहस वाहण भेळां थयां ॥ चली शके नहीं जाम ॥सु०वा०११॥ तेह पुरुष कहे सांभळो ॥ आ डुंगरने श्रृंग ॥सु० देव भवन छे तेहमां ॥ जोडी नगारां चंग ॥सु०वा०१२॥ तिहां वजावी जइ करी ॥ निशुणी तास अवाज ॥सु० उडे भारंम पंखीया ॥ वाये चले जहाज ॥सु०वा०१३॥ जे जाये ते तिहां रहे ॥

ए मोटो संताप ॥सु० एहवो कुण जाये तिहां ॥ मरण आगमी आप ॥सु०वा०१४॥ नामे व्रत वार उचर्या॥ भाखे शेठ विसेश सु० किणहीने मुख माहरे ॥ न दी ऊ ए आदेश ॥सु०वा०१५॥ शेठ वारतां उठीयो ॥ हुं जाइश इण काम ॥सु० मुजथी ए सहु उगरे ॥ पहु तो तिणे ठाम ॥सु०वा०१६॥ जिन प्रतिमा पणमी क री ॥ च्यारे सरणां कीध ॥सु० सागारी अणसण करी ॥ पाव नगारे दीध ॥सु०वा०१७॥ सारो परवत गु जीयो ॥ पंखी पमर्या भगांण ॥सु० पंख वाये वाहण चल्यां ॥ जाणे देव विमान ॥सु०वा०१८॥ पुहोत्या ते पाटण भणी॥आव्या मरुअच ठाण सु० मुंकी नाल भ री करी ॥ लोक मांही थइ जाण सु०वा०१९॥ व्या पारी आव्या मिली ॥ शेठ न देखे जाम ॥सु० मुहुताने पूछे सहु ॥ शेठ किहां किण ठाम सु०वा०२०॥ पाछ ल आगल विचे कहे ॥ आवे छे अम शेठ ॥सु० वा त मिले नही केहनी ॥ खोटी न चले नेट ॥सु०वा० २१॥ इम उत्तर आले सहु ॥ सहु बोले मुखे आळ ॥शु० कहे जिनहरख पूरी थइ ॥ पांसठमी ए ढाळ ॥ शु०वा०२२॥ सर्व गाथा १३९०.

ढाळ ६६ मी

दुहा॥ वामदेव मंत्री कहे ॥ शुणज्यो साची वात ॥ वात विषम छे शेठनी ॥ कहेता हीयो जरात ॥ १॥ शेठ अमंगळ वारता ॥ पोहती पाटण माह ॥ चिंतातुर सहुको थया ॥ मनमां वाध्यो दाह ॥ २ ॥ राय पुरुष सहु मिली करी ॥ विनवीयो भूपाळ ॥ कूबेरदत्तना धन तणी ॥ स्वामी करो संभाळ ॥ ३॥ मूओ तेह अपूतीयो ॥ सांभळीओ छे आज ॥ धन आणीजे तेहनो ॥ ढील न कीजे राज ॥ ४॥ एह वचन राजा शुणी ॥ वचन पयंपे एम ॥ ए धन मुज कलपे नही ॥ म्हारे एहनो नेम ॥ ५॥ जे धन खास्ये एहनो ॥ धास्ये जे सुत बाप ॥ धन लेइ पर मनुष्यनो ॥ किम उपजाउ ताप ॥ ६॥

ढाळ ॥ लाल माहारो इन्दर ओलगि ॥ ए देशी॥ दुरजन नर बोल्या वळी ॥ साभळ श्री महारायरे ॥ वीस कोडी सोवन तणी ॥ लेतां किस्यो अन्यायरे ॥ दु० १॥ जेहने सुत पाछळ नही ॥ तेहनो धन ल्ये रायरे ॥ आगळ जेसग नृप थयो ॥ ते पण लेतो आयरे ॥ दु० २॥ कुमरपाळ बोल्यो इसी ॥ मूरख का म

तिं नीर्वरें ॥ मुजने इण परे शिखवो ॥ मध्यम करणी माठीरे ॥दु० ३॥ बाप थयो देवाळीयो ॥ तो श्युं शुत पण थायेरे ॥बाप हत्यारो जे हुवे ॥शुत तिण पंथें जायेरे ॥दु० ४॥ कालक शूरियो पातकी ॥ तेहनो सुत थयो धर्मीरे ॥ लोहपुरो तस्कर शिरे ॥ रोहीणीयो थयो शर्मीरे ॥दु० ५॥ तीर्थंकर सहु परणीया ॥ नेमी नारी छांमीरे ॥ कीरती बाधी के घटी ॥ जोवो हियो उघाडीरे ॥दु० ६॥ आदरीये करणी भली॥ तजीये माठी दूररे ॥ राय थइ पर धन लीये ॥ नीति मारग ते चूररे ॥दु० ७॥ प्राण अभ्यंतर जे हणे ॥ तेहने कहीये पापीरे ॥ तेहथी भारी.जे हणे ॥ बाह्य प्राण संतापीरे॥ दु० ८॥तेह कारण धन नवि लीउं॥त्रीजुं व्रत किम खंडुंरे ॥जे व्रत गुरु मुखे आदर्यो॥ धन कारण किम छंडुंरे॥ दु०९॥ वळी बोल्या मंत्री तिसे ॥ स्वामी धन म लेश्योरे ॥ पण पाउधारो तस घरे॥देहरासर निरखेश्योरे ॥दु० १०॥ इण वचने नृप हरखीयो ॥ चाल्यो धरीय उमाहोरे ॥ आव्यो विवहारी घरे ॥ जिन वंदन उछांहेरे ॥दु० ११॥ गुणश्री नृप देखी करी ॥ कांइक ल्यो पग आडोरे ॥ काम नहीं मुज एहशुं ॥ देहरासर देखा

टोरे ॥दु०१२॥ गुणश्री आगळ थइ करी ॥ देहरासर देखामघ्योरे ॥ देखी हरखीत चिंतवे॥इंद्र भुवन निरधाड्योरे ॥दु०१३॥ रतन जडित सोवन तणां ॥ सुंदर थंभ विराजेरे ॥ मणीमय मूरति जिन तणी॥ ज्योति झगमग छाजेरे ॥दु०१४॥ चैत्यवंदन विधिशु कर्यो ॥ भावना भावी सारीरे ॥ धन खरच्युं देहरासरे ॥ धन धन ए विवहारीरे॥दु०१५॥आज कृतारथ हुं थयो॥ कीधो जात्र प्रमाणोरे ॥ वसे इश्या विवहारीया ॥ धन्य नगर गुण खाणोरे ॥दु०१६॥ दीप लिखी दीठी नृपे ॥ वांची ताम कुमारोरे ॥ परिग्रहनो परमित्त कियो ॥ तेहनो लिख्यो विचारोरे ॥दु०१७॥ खट कोमी कनक निधानमें ॥ रुपैया अठ कोमोरे ॥ जास्य रतन मणी सुंदर ॥ सहेम पंच दुजोमोरे ॥दु०१८॥ दोय सहस घृम घृत तणा ॥ कुंभ चोसठ मण मानोरे ॥ एक खाटी सोले कुंभे ॥ बे सहेंस खांमी धानोरे ॥दु०१९॥ हस्ती एक सहेंस भला ॥ वाजी सहेंस पंचासोरे ॥ आठ गोकुळ शुरभी तणां॥ पांच सय घर सुभकासोरे॥दु०२०॥पंच सय हळ मुज मोकलां॥ वळी पंचसय मुज हाटोरे ॥ मोटां वाहण वळी पांचसें ॥

हे जळ थाटोरे ॥दु०२१॥ सकट पंचसें नित वंदे ॥ ए धन मुज परमाणोरे ॥ ढाळ छासठमी पूरी थइ ॥ कही जिनहरप सुजाणोरे दु०२२॥ सर्व गाथा १२८९.

ढाल ६७ मी।

दुहा ॥ वांची टीप उठे जिसे ॥ गुणश्री रोती दी ठ ॥ पुत्र विरह दुख उलट्यो ॥ हैया मांहि अंगिठ ॥ १॥ किण कारण तुं दुख धरे ॥ राय कहे शुण माय ॥ स्वामि सुत गति ए थइ ॥ ते दुख पाम्यो न जाय ॥ २॥ अन्न पान मुज नवि रुचे ॥ हवे वारशुं अपघात॥ जगमां को न सही शके ॥ मोटां दुख ए सात ॥ ३॥ उ पजतां चाल्यो पिता ॥ जणतां मुइ माय ॥ त्रीजो दुख निरधनपणो ॥ चोथो परवश थाय ॥ ४॥ पांचमो दुख बेटी घणी॥ घरमां भूख अचाल ॥ छठु दुख अ ती दोहिलुं ॥ घर मांजे अधकाळ ॥ ५॥ गरढपणे बे टो मरे ॥ दुख सातमो कहाय ॥ ए दुख इण संसारमां ॥ खिण खिण साले राय ॥ ६॥ गुणश्री कहे में पुत्रनी॥ वात शुणो महाराय ॥ प्राण हुस्ये हवे प्राहुणा ॥ हियमें दुख न समाय ॥ ७॥

ढाळ ॥ तुंगियागिरी शिखर सोहे ॥ ए देशी ॥का

रण विण काइ माइ रोवे ॥ तेह दाखवे वातरे ॥ गुण
सीरी कहे राय सांभळो ॥ पुत्रनी शुणी घातरे ॥का०१
॥ किणे ए तुज वात दाखी ॥ ते इहां तेडावरे॥ तास
पुछी निरती कीजे ॥ खरी खोटी थायरे ॥का०२॥
वामदेव तेणे पुछीयो नृप ॥ कह्यो सयळ विचाररे ॥
शेठ डुंगर रह्यो उपरे ॥ नहीं संबळ लाररे ॥का०३॥
जीवतो तिहां किम रहेश्ये ॥ इहा आवे केमरे ॥ वा
त एहवी शुणी राजा ॥ गहगह्यो कहे एमरे ॥का०४
॥ जास पुण्ये भर्या वाहण ॥ कीधो बहु उपगाररे ॥
तेहनी कांइ चित म करो ॥ कुशळ छे निरधाररे ॥
का०५॥ तेह मिलशे माय तुजने ॥ मानजे मुज वात
रे ॥ माये न हुवे वचन खोटे ॥ सातनो सुविख्यातरे
॥का०६॥ राय तपशी देव बाळक ॥ सगुरु अतिशयवं
तरे ॥ साधु सज्जन सातनो इम ॥ वचन तुरत फळंत
रे ॥का०७॥ एटले आकाश मारग॥ आव्यो एक वि
मानरे ॥ कुंवरदत्त स्त्री-साथे मांहीं ॥ भर्यो बहुत नि
धानरे ॥का०८॥ राय पाये आइ लाग्यो ॥ मिल्यो
नाने धायरे ॥ नारि कमळा सहु सज्जन ॥ थणु हरखि
त थायरे ॥का०९॥ रिद्धि देखी राय हरख्यो ॥ क

हो पामी केमरे ॥ शेठ कहे महाराज निशुणो ॥ कहुं कथा धइ जेमरे ॥का० १०॥ रिदय अरिहंत ध्यान धरतो ॥ पूजतो जिनरायरे ॥ जोयतो वन फिरु डुंगर ॥ एटले तिणे वायरे ॥का० ११॥ जळ भर्यो एक कुप दीठो ॥ उतरीयो ते माहीरे ॥ एक दीठी तिहां बारी ॥ चल्यो चित उछांहरे ॥का० १२॥ नगर दीठो एक आगे ॥ मांही नहीं नर नारीरे ॥ राजगृही सातमी भूमे ॥ दीठी एक कुमारीरे ॥का० १३॥ बोलावी ते बाळीकाने ॥ पुछयो सयळ सरुपरे ॥ ते कहे सुण पुरुष उत्तम ॥ कहुं वात अनूपरे ॥का० १४॥ एह तिलकापुरी नगरी ॥ पाताळकेत अधीशरे ॥ कर्म योगे सुमति नामे ॥ मंसासी निसी दीशरे ॥का० १५॥ एक दिन एक जीव आण्यो ॥ रांधणीयाने देयरे॥तेह मारी मंस पचवीयो ॥ मांजारी गइ लेयरे ॥का० १६॥ सोझोयो पण किहां न मिल्यो ॥ राय भय मन चितरे॥ मूओ बाळक लेइ आव्यो ॥ अगनी मांहीं पचतरे ॥ का० १७॥विविध योगे ते निपाव्यो ॥ राय भोजन काजरे ॥ आवी बेठो थाळ माहे ॥ तेह मुंकीयो साजरे ॥का० १८॥ मांस खातां स्वाद लाग्यो ॥ भूपने तिणी

वाररे ॥ आज किम थयो अधिक सुंदर ॥ कहे ताम सूआररे ॥का०१९॥ वात सांभळी स्वाद लंपट ॥ थयो ताम भूपाळरे ॥ लेइ आवो नगरमांथी ॥ एके को नीतुं बाळरे ॥का०२०॥ जीभ लंपट थयो जे नर ॥ तेह दुरगति पातरे ॥ ढाळ थइ जिनहरष पुरी ॥ साठ उपरे सातरे ॥का०२१॥ सर्व गाथा १४१७ ॥

ढाळ ६८ मी

दुहा॥ बाळक खाये नित प्रते ॥ लोक गया सहु नास ॥ नगर एम सुनो थयो ॥ हुं पुत्री छुं तास ॥१॥ हिवणां ते इहां आवशे ॥ देखी हणशे तुज ॥ राखुं हुं सही जीवतो ॥ जो तुं परणे मुज ॥२॥ में तेहनो मान्यो कथन॥ फूल तणा ढग मांय ॥ संतामी मुज राखीयो ॥ आव्यो राक्षस राय ॥३॥ तिणे पुत्रीने पुछीयो ॥ इहां कोइ नर गंधाय ॥ तुज आगळ नर कुण रहे॥ नासी दूरे जाय ॥४॥ मुज वरवा वर नवि मळे॥ इहां न आवे कोय ॥ मुज कुमारी राखशो ॥ इणी परे भाखे सोय ॥५॥

ढाळ॥ मुनरो देइने जालम जाटणी ॥ए देशी॥ मुख करमाणो कमळ तणी परे ॥ रातां नयण कीयां

सोइरे ॥ वर परणावोहो मुजने बापजी ॥ ए आंकणी ॥ एक सुता हुं तुमने वालही ॥ ते पण पिउ विण दुखणी होय ॥व०१॥ श्यां सुख पितम विण संसारनां॥ प्रिउ विण कुण नारी आधार ॥व० मात पीता बांधव साजन सगां ॥ पितम विण कोइ न करे सार ॥व०२ ॥ वर पाखे नारी शोभे नहीं ॥ नर विण म लहे आदरमान ॥व० मननां दुख नर विण किणने कहे ॥ नर पाखे मदिर समशान ॥व०३॥ तिण कारण तुमने कहुं लाजती ॥ कहेवानो नहीं छे व्यवहार ॥व० पण सोया विण धवरावे नहीं ॥ बाळकने सुविचखण नार ॥व०४॥ राय कहे बेटी तुज सारीखो ॥ जोयो पण न मिले वरराज ॥व० कुमरी कहे तुमने वर कुण मिले ॥ मिले तो भक्षणनो तुम काज ॥व०५॥ तुज वरने हुं भक्षण नवि करुं ॥ जो कोइ होय तो मुज देखाल ॥व० सम कीधा तिण राये आकरा ॥ प्रगट कीधो मुजने ततकाळ ॥व०६॥ पुत्री परणावी नृप मुज भणी॥वर कंन्या मिलाव्या हाथ ॥व० कंन्यानो तो मुकुं सही ॥ मंस तजो तुम्हे नर नाथ ॥व०७॥ कुमरी कहे सांभळ मुज तातजी॥खाधे जीवन निपतो था

य ॥व० खातां खातां जनमारो गयो ॥ भूख्यों एक दिन जो नवि खाय ॥व०८॥ चउ गतिमा जीव ग्रर्भ तमे॥ भोजन कीधा अनंत अपार ॥व० तोही भुख्यो पापी प्राणीयो ॥ एहने समता नही लगार ॥व०९॥ कहोये ए इंद्री धापि नहीं ॥ जो पोषीजे दिन ने रात ॥ व० थोडा दिनना सहुको प्राहुणा ॥ जीव तणी किम कीजें घात ॥व०१० आगे पाप तुमे कीधां घणां ॥ करो अगड वर छोमें हाथ ॥व० पुत्री वयणे ततखीण वळ्यो ॥ मास भक्षण छोमव्यो नरनाथ ॥व०११ ॥ पुर जन लोक वळी आवी वश्या ॥ राजा राज करे सुखदाय ॥व० रिद्धि समृधि विमान भरी करी ॥ दीधो प्रेम परी तिण राय ॥व०१२॥ तिणे विमाने हुं वैशी करी ॥ आव्यो पुण्य तणे सुपसाय ॥व० तुं सोभागी भाग्य तणो धणी॥तुजथी आपद सहु टळी जाय ॥व०१३॥ ए धन ए महिला पुण्ये मिली ॥ पुण्य तणो तुं छे भंमार ॥व० तुज आव्यां सहुने आणंद थयो ॥ करो कुटंब तणी हवे सार ॥व०१४॥ हु क्लि

थो मतिवंत॥१५॥ चोथो व्रत हवे राजा उचरे ॥ टा ळि सील महाव्रत दोष ॥व० विधवा नारी तेह न भो गवुं ॥ परदारानो कियो संतोष ॥व०१६॥ तिर्यंच नारी कुमारि कन्यका ॥ वांछुं नहीं एहनो संभोग ॥व० व निता मुजने आवज मोकळी ॥ अवर तणो न करुं संयोग ॥व०१७॥ च्यार महीना चोमासा तणा ॥ पाळे वो में निमरळ सीळ ॥व० पांच अतिचार टाळुं एहनां ॥जिम पामु अविचळ सुखलील ॥व०१८॥ हास्य वि नोद क्रिडा ते नवि करे ॥ पोषे नहीं वाते सिणगार ॥ न करे ते कुचेष्टा केहश्युं ॥ पाळे इम व्रत सुविचार॥ व०१९॥ पटराणी आठे राजा तणी ॥ कर्म योगे ते म रण लहाय ॥व० राय भणी कहे सहु मंत्री मिली ॥ प रणो नारी तुले महाराय ॥व०२०॥ स्त्री विण राज नो हें शास्त्रे कह्यो ॥ परणो ते माटे भूपाळ ॥व० कहे जि नहर्ष हवे सहु सांभळो ॥ अडसठमी पुरी थइ ढाळ ॥ व०२१॥ सर्व गाथा १४७३.

ढाळ ६९ मी.

दुहा॥ कुमारपाळ कहे सांभळो ॥ वर परहरियें प्राण ॥ प्राण गयो तो जाणदे ॥ व्रत किम तजि

ये जाण ॥१॥ जे व्रत गुरु मुख आदस्या॥ छांमीजे कि
म तेह ॥ सपुरिष वयण न उचरे ॥ उच्चरे ते करेह ॥
२॥ जेहने नहि कांइ आखमि ॥ ते पापी कहेवाय ॥
लेइ भाजे जे आखमी॥ ते महापापी थाय ॥ ३॥ का
ढ्या वयणज मुख थकी ॥ निरवा हये सनूर ॥ काम
पड्या साहस धर्या ॥ तेहीज कहिये सूर ॥ ४॥ साधु
सती अरु सुरीमा ॥ ज्ञानी नर गज दंत ॥ उलट अ
पुग न मिटे॥ जो जग जाय अनत ॥ ५॥ भात पटो
ळे जे पडी॥ लोहने पमी जे लीह॥ न मिटे तिम उत्त
म पुरिष ॥ वयण कह्यां जे जीह ॥ ६॥

ढाळ॥ म्हाका माहिवारे जीती जूआ म्हारी॥ ए दे
शी ॥ राग मारु ॥ राय कहे मत्री सुणोरे ॥ म कहो
आळपंपाळ ॥ कायर सूर हुवे नही ॥ सीह हुवे न सी
आळ ॥ १॥ पाटण राजवीगे॥व्रत पाळे निरदोष ॥ नारी
तणी ममता नही ॥ समता चित्त सतोष ॥पा० २॥ चि
त्त चूके नही रायनोरे ॥ सीळ धर्यो अभिराम ॥ करी
सोवननी पूतळी ॥ पटराणी तस नीम ॥पा० ३॥ हिये
धरे व्रत पाचमोरे ॥ परिग्रहनो परिमाण ॥ राये कीधों
गुरु मुखे ॥ सुणज्यो तेह सुजाण ॥पा० ४॥ छ कोडि

कनक निधानमेरे ॥ रुंपैया अठ कोड ॥ दस सहेंस तो
ला मणी ॥ रिद्धि सहुनी जोम ॥पा०५॥ पाच लाख
तेजी तुरारे ॥ एक सहेंम गजराज ॥ सोळ सहेंस रथ
रुअग्ग ॥ ऊट सहेंस इक साज ॥पा०६॥ वे सहेस कुं
भ घृत तेलनारे ॥ वे सहेंस खांगी धान ॥ हल हजार
संख्या करी ॥ पांचसें हाट मधान ॥पा०७॥ सुंदर म
दिर पांचसेरे ॥ शकट पंचसय मान ॥ वाहण वळी स
वापांचमे ॥ लावे जळधि निधान ॥पा०८॥ असी सहें
स गाय दुझतीरे ॥ पोता तणे आयत्त ॥ सकळ सैन्य
संख्या कहुं ॥ सांभळज्यो सहु सत्य ॥पा०९॥ इग्यार
सहेंस गज गाजतारे ॥ लाख तुरग इग्यार ॥ सहेंस पं
चास रथ रुअडा ॥ पायक लाख अटार ॥पा०१०
इम धननी संख्या कहीरे ॥ अविरती टाळी राय ॥
लोभ तजी समता भजी ॥ व्रत पाळे चित्त लाय ॥पा०
११॥ अल्प संसारी जे हुवेरे ॥ अल्प लोभ हुवे ता
स ॥ वहु लोभे वहु दुख लहे ॥ गुरु कहे कथा विला
स ॥पा०१२॥ च्यार पुरुष धन कारणेरे ॥ चाल्या
मिली परदेश ॥ वाट ते तरश्या थया ॥ जोवे नीर
निवेश ॥पा०१३॥ दीठी वत्समी वन विचेरे ॥ तेहनां

शिखर चीत्यार ॥ जाण्युं इहां पाणी सही॥हुय्ये कीध विचार ॥पा०१४॥ शिखर एक भाग्यो जिशेरे ॥ प्रग टव्यो अमृत साव ॥ पीधो ठाम भरी लीयां ॥ बीजा उपरे दाव ॥पा०१५॥ बीजो शिखर विदारीयोरे ॥ प्र गटव्यो कनक निधान ॥ वाध्यो लोभ घणुं घणो ॥ त्रीजो भाग्यो निधान ॥पा०१६॥ रत्नराशि मांहीं निस रीरे ॥ लाभथी लोभ अत्यंत ॥ चोथो शिखर विदा रीये ॥ लहीये रिद्धि महंत ॥पा०१७॥ एक पुरुष कहे सांभळोरे ॥ कीजे नहीं अती लोभ ॥ रिद्धि घणी पु न्ये मिली ॥ हवे मन राखो थोभ॥पा०१८॥ त्रिण्ह पु रुष तेहने कहेरे ॥ रहे रहे करतो रुढ ॥ जो बीहतो इहां थकी ॥ जा परहो तुं मूढ ॥पा०१९॥ रतन अमू लिक संग्रहीरे ॥ तिहांथी चाल्यो तेह ॥ कुशळे निज घर आवीयो ॥ वाध्यो कुटंब सनेह ॥पा०२०॥ त्रिणे पुरुष मिली करीरे ॥ भाग्यो चोथो पुंज ॥ दृष्टी विष मांही निसर्यो ॥ विष पावकनो गंज ॥पा०२१॥ बाळी भस्म त्रिण्हे कीयारे ॥ अति लोभी नर तेह ॥ समता लोभी जे हुतो ॥ बे भव सुख लहेह॥पा०२२॥ तुं प ण तिण नर सारीखोरे ॥ अल्प लोभ विस्तार ॥ सद

ज्ञति तणो विभागीयो ॥ छे तुज अल्प संसार ॥पा०
२३॥ वचन सुणी सदगुरु तणारे ॥ बहु तज्यो परिग्रह
भूर ॥ ढाळ थइ जिनहरष ए ॥ अगनोतरमी अनूप
॥पा०२४॥ सर्व गाथा १५०२.

ढाळ ७० मी.

दुहा ॥ परिग्रह बहु मुकयो नृपति ॥ अल्प परि
ग्रह धार ॥ व्रत पाळे टाळी वळी ॥ पांच तास अतिचा
र ॥१॥ हवे छठो व्रत आदरे ॥ चिहुंदिशीनो परिमा
ण ॥ उंची नीची भूमीका ॥ जोयण कोस सुजाण ॥
२॥ सातमुं व्रत वळी उचरे ॥ भोग अने उपभोग ॥च
उद निअम नित साचवे ॥ छतिं देह निरोग ॥३॥ स
च्चित एक वस्तु परण ॥ आठ वीमानो नेक ॥ आठ
द्रव्य लेवा सदा ॥ विगय चोमासे एक ॥४॥ सदा क
रे एकासणो ॥ निसा करे चउविहार ॥ पान न ल्ये
चउमासमां ॥ तजी अभक्ष अहार ॥५॥

ढाळ ॥ मागशर शुद अग्यारस वनी ॥ ए देशी॥
राग मल्हार ॥ एक दिवश नृप करे आहार ॥ घेवर नी
गां अति श्रीकार ॥ घी भीनां सीनां करकरां ॥ मांस
संभार्यों तिण अवसरां॥१॥हाहा वळी करे पश्चाताप॥

फोकट ए किम बांध्यो पाप ॥ पाडु परहा दंत बत्रीस ॥ राय भणी एम आवी रीश ॥२॥ उठी आव्यो गुरुनी पास ॥ वात कही सहु चित्त उदास ॥ गुरु ये राय प्रते प्रतिबोध ॥ दंत उपर कांइ करो करोध ॥३॥ तुज मुखमां छे दंत बत्रीश ॥ बत्रीश घडा बंध त्रिभुवन इश ॥ तास करावो अचळ प्रासाद ॥ दंम कळस धज घटा नाद ॥४॥ वरण वरणना जिन चोवीस॥ थापो माहि धरीय जगीस ॥ हेमाचारज लहि उपदेश॥ बीब भराव्या तुरत नरेश ॥५॥ पाप भीरु एहवो अधीश ॥ अनंतकाय मुंक्यां बत्रीश ॥ वस्तु अनेरी दोष सहित्त ॥ ते पण मुकी आतम हित्त ॥६॥ पांच अतिचार तेहना तजे ॥ अचित ठाम सचित शुं भजे ॥ अचित वस्तु सचित प्रतिबद्ध ॥ अपक्क दुपक्क आहार निषिद्ध ॥७॥ तुच्छ ओखधी तणो आहार ॥ धरमी न करे किणही वार ॥ ओळा कवी पुंख न खाय ॥ पापनी प्रमुख न आवे दाय ॥८॥ इणी परे पाळे व्रत राजान ॥ टाळी पनरह कर्मादान ॥ इट लिहाळा पचवे बाळ ॥ ते कहीजे कर्म इगाल ॥९॥ वन छेदी छेदावे वृक्ष ॥ ते वन कर्म कहे परतक्ष ॥ घरे

लां हल व्यापार ॥ तेह करम सामी निरधार ॥१०॥
भामे करम बळदने उंट ॥ वहेल गाडलां आपे खुंट॥
सरवर कुप खणावे खाण ॥ फोडि करम तेहनुं जाण
॥११॥ दंत वाणीजनो शुणो विचार ॥ दंत चरमने न
खला सार ॥ कस्तुरी आदीक ए कह्यां ॥ लाख साजी
साबू सर दह्या ॥१२॥ मीठुं तेल अरणेटो वळी ॥ ला
ख वाणिज ए सहु अटकली ॥ रस वाणिज मांखण
घृत तेल ॥ मधु मदिरादिक पातिक खेल ॥१३॥ द्वि
पद चतुपद तणो व्यापार ॥ केंश वाणिज ए न करे
क्यार ॥ सोमलखार अमल वछनाग ॥ शस्त्रादिक वि
स वाणिज त्याग ॥१४॥ यंत्री पीलण मूसळ उखली
॥ घाणी कोल्हु घरटी वळी ॥ पशुआं केरा कापे का
न ॥ फाडी नाक समारे वान ॥१५॥ न करे एह नी
लछण कर्म ॥ जिणे जाण्यो हुवे श्रावक धर्म ॥ पुत्र
काज वन दव नवि दीये ॥ दया धरम जाण्यो छे जि
ये ॥१६॥ कूप वाव द्रह सजळ तळाव ॥ ते सोपे न
ही किणे प्रस्ताव ॥ वळी ते न करे असती पोष ॥ पो
पट स्वान माजार सदोष ॥१७॥ ए परनह कह्या कर्मा
दान ॥ पाप तणा ए ठाण सुजाण ॥ सितेरमी पुरी थ

३ ढाळ ॥ ए जिनहर्ष तव्यां भूपाळ ॥ १८॥ सर्व गा था १५३६ ॥

ढाळ ७१ मी

दुहा॥ पाप कर्म नृप परिहरे ॥ करी सुदृढ जिन धर्म ॥ भरे पुन्य भंमार निज॥ डरे पूरव कृत कर्म॥ १॥ हिवे अष्टम व्रत आदरे ॥ टाळे अनरथ दंम॥ खेळा नाटक पेखणुं ॥ नवि जोवे पाखंड ॥२॥ सेत्रुंज वा जी सोगठां ॥ खेले नहीं नरेश ॥ च्यारे विकथा परिहरे ॥ तिव्र राग न धरेस ॥३॥ हिंचोळे हिंचे नहीं ॥ नवि झीले जळ ठाण ॥ भेंसा घेटा कूकडा॥ जेठीमल्ल सुजाण ॥४॥ ए वढतां जोवे नहीं ॥ वळी हणतां चोर ॥ सती अग्निमां बाळतां ॥ मन परिणाम कठोर ॥५॥ माटी बीज कपाशीया ॥ नील हरी जळ तेम॥ काज विना चांपे नहीं ॥ पाप लगावे केम ॥६॥ दूध दहीं घृत तेलनां ॥ नीर तक्रनां ठाम ॥ उघामां नवि मूकिये ॥ हिंसा होय अकाम ॥७॥

ढाळ॥ मोमलरो हेमाउ हेमिसरी ठाकुर महेंदरो ॥ए देशी॥ पांच अतिचार टाळी एहनां ॥ कंदर्प राग कुभाव ॥ काय कुचेष्टाहो ॥ पापो पगरण भोगे अभि

लाप॥१॥ इणी परे पाळेहो व्रत निज निरमळा॥ टाळे
व्रत अतिचार॥ दोप लगामेहो नहीं कोइ व्रत भणी॥
धन धन राय कुमार॥इ० २॥ए व्रत पाळेहो इणी परे आ
वंमु॥ नामुं धारे राय॥ समता मणामेहो सामायक करे॥
दहि करम समुदाय॥इ० ३॥पांच अतिचारहो एहनां प
रिहरे॥ त्रिविधे दुपणी ध्यान॥ अणपडिलेहीहो वेसे आ
सणे॥ उघाडे मुख गान॥इ० ४॥ दूपण टाळीहो सामा
यक तणां॥ जेह कह्यां बत्रीश॥नरपति चूकव्योहो न
वि कारण पमे॥ सांभळज्यो सुजगीस॥इ० ५॥ किण
इक अवसरहो नृप साकंबरी॥ पूरण नाम कहाय॥कु
मर नरेशरहो भगनीनो धणी॥ गज रथ कमी न काय
॥इ० ६॥ ते निज नारीशुंहो सार पासे रमे॥ सारी देतो
दाण॥ मारो मुंमा शिर घाव बळे करी॥ नाखे इम
अयाण॥इ० ७॥ त्रिण वार रायेहो शब्द मुखे कह्यो॥
राणी बोली ताम॥कांइण म बोलोहो भीतम वालमा॥
फोकट एहवे काम॥इ० ८॥ आज न राखोहो जो त
म्हे माहरी॥ साळा सांमु जोइ॥ मार निवार्योहो शब्द
नृपति जिणे॥ मुनी शिर घाव म होइ॥इ० ९॥ कहे
तुं जे थायेहो ते मुजने कहो॥ पण मुनी न दीयो गा

ळ॥ मुनी अवहीलाहो करतां पामीये॥दुरगतिनां दुख आळ ॥३०१०॥ नारीने वचनेहो खीज्यो महीपति ॥ पाटू दीध प्रहार ॥ हूंस म राखेरे मूरख कामिनी ॥ जा निज वीर पुकार॥३०११॥ वेगे चढावीरे बंधव आव जे ॥ देखाडु मुज हाथ॥ गणी गणी पाडुरे दांत चव का तणा ॥ नारी कहे सुणो नाथ ॥३०१२॥ कीमी पं खाळीहो ते मरवा भणी॥ तिम ताहरो अभिमान ॥ ग रव न कीजेहो कंत शक्ति विनां॥ घर सूरा अभिधान ॥३०१३॥ मारा भाइनेहो बळ आगळे रहे ॥ तेह न दी से कोय ॥ गरव उतारेहो ते वळीया तणा ॥ काढे वां क पलोइ ॥३०१४॥ नारीनां नीशुणीहो वयण क्रोधे भर्यो ॥ एहने मगवो भीख ॥ नारी तो पगनीहो कहीये पाणही ॥ ते मुजनें थे शिख॥३०१५॥यतः ॥ जस घर महिला मंत्रणे ॥ दुज्जन केरी शिख॥ सावणवी तिहळ करी॥ त्रिण्हे मागे भीख ॥१॥ ढाळ पुर्वनी ॥ धिग धि ग नारीहो ताहरा बोलमा ॥ धिग धिग कुमर नरिंद ॥ धिग धिग रहाराहो ए जिन धर्मने ॥ धिग धिग हेमसुरिं द ॥३०१६॥ प्रीतमने वयणेहो अती राणी तपी ॥ पीह र चाली उठ ॥ एह बोल्यानोहो फळ तुजे जोइज्यो ॥

जीभ कढावुं पुंठ ॥२०१७॥ एहवुं कहीनेहो चाली पी हरे ॥ जासी मिलीयो एक ॥ ब्राह्मण जइनेहो पाटण रायने ॥ जाण करे सुविवेक ॥२०१८॥ ब्राह्मण चाल्यो हो लेई आगन्या॥पुहुतो पाटण माहि ॥ ढाळ इक्कोतर मीहो पण ए थइ॥ कहि जिनहरष उछांह ॥२०१९॥ सर्व. गाथा १५५१.

ढाळ ७२ मी.

दुहा ॥ पाटण लोक सोहामणो ॥ देखी हरखीत होय ॥ विप्र तणो रुप वर्णवुं ॥ ते सुणज्यो सहु कोय ॥१॥ दाढी तो गाढी वधी ॥ मुंछ नहीं लवलेश ॥ काळो कामळ सारिखो ॥ खीण शरीर विशेष ॥२॥ मोटो सीश.त्रीपुणीयो ॥ नान्हो जास निलाड ॥ वांको वदन विराजीयो ॥ गाले उंनी खाड ॥३॥ होठ जेहना लम बडे ॥ लाळा मुख झरंत ॥ उंनी आख्यां तगतगे ॥ रासभना जाणे दंत ॥४॥ बेठे नाके चीपडो ॥ बहे लींटनी रेल ॥ कोट टूंकी जांवो नळो ॥ अंगे झाझो मेल ॥५॥ हाथ पाय वांका वळ्या ॥ सकट पीजली जाण ॥ कडि लंक घाणी सारिखो ॥ चूंथो बांध्यो ताण ॥६॥ पहिरयो फाटो धोतियो ॥ तुंबो लीधो हाथ॥

मस्तक फरके चोटलो ॥ जोट पोटलो साथ ॥७॥

ढाळ ॥ करेलनां घनी देरे ॥ ए देशी ॥ रुपहिए नर बामणोरे ॥ दीसंतो विकराळ ॥ अवगुणमां गुण एक छेरे ॥ पंमित चतुर बाचाल ॥१॥ जोसीयमो जोज्योरे ॥ जोज्योरे चतुर छंछाल ॥ जो० ए आंकणी ॥ पोळे जइ उभो रह्योरे ॥ हिये विचारे आम ॥ पूछुं किणहीक नर भणीहो ॥ ब्राह्मण मिलीयो ताम ॥ जो० २॥ मस्तक नामी तेहनेरे ॥ पुछे कहो कृपाळ ॥ किण ठामे मुजने मिलेरे ॥ पाटणनो भूपाळ ॥ जो० ३॥ कुमरपाळशुं विमने ॥ जाग्यो वैर संबंध ॥ तिहुअणपाळ सुत जीवतोरे ॥ मुओ वैरी अंध ॥ जो० ४॥ कठिण वयण तेहनां सुणीरे ॥ दूतें जाण्युं दुख ॥ पूरां सात नोहे कदारें ॥ सुण ब्राह्मण मूरख ॥ जो० ५॥ अगनि विप यम राजवीरे ॥ सागर उदर सुगेह ॥ पूराये नहीं पूरतारे ॥ निशी दिन जो पूरेह ॥ जो० ६॥ इशुं कही आगे चल्योरे ॥ दीठो एक हजमार ॥ ते पासे वांभण जइरे ॥ पूछे नृप समाचार ॥ जो० ७॥ खान जेम थइ आकुळोरे ॥ खीजी बोल्यो ताम ॥ तुं भूंडी वांभणोरे ॥ राजाश्यु श्यो काम ॥ जो० ८॥

परख्यो ततखिणेरे ॥वीवो तेहवी गात ॥ विरियो कां
इ पूछीयेरे ॥ जीम जणावे जात ॥जो०९॥ कण व्या
पार मशाणीयोरे ॥ वळी भुअंग विलाम ॥ वैद्य अने
हडमारीयोरे॥मइला मनना चाम ॥जो०१०॥ जोशी
इम कही चालीयोरे ॥ अर्चक नर एक दीठ ॥ राय
खवर पूछे जिश्योरे ॥ आघो आभडसे धीठ ॥जो०
११॥ दूत कहे खीजी कररिे॥वोलें श्युं पापीट ॥ आ
भमछेटनां तुज कहुंरे ॥ थानक सुण अनिष्ट ॥जो०
१२॥ मोटी कन्या कुमारीकारे ॥ पर नारीशुं रंग ॥दे
व तणो धन विद्रवारे ॥ निति पापी परसंग ॥जो०१३
॥ पेट भरी प्राणी हणारे॥परनिंदा करे जेह ॥ पर भो
जन आश्या कररे॥पविन्न कदे नहीं एह ॥जो०१४॥
इश्युं कही भट चालीयोरे॥ब्राह्मण मीलीयो ताम ॥ पू
छी नृपनी वारतारे ॥ अवहील्यो तिणे ठाम ॥जो०१५
॥ दूत कहे किणे कारणेरे ॥ बोले मोटा बोल ॥ सात
अदेखा ए हुवेरे ॥ सांभळ विप्रनी टोळ ॥जो०१६॥
हाट पमोशी नवि सहेरे ॥ याचक मींढो मल्ल ॥ पंडित
पामो कुतरारे ॥ सात अदेखां सल्ल ॥जो०१७॥ इश्युं
कही आगे चल्योरे ॥ मिल्रीयो सालो वाळ ॥ पूछ्यो

राय मिले किहांरे ॥ बोल्यो आळपंपाळ ॥जो०१८॥ दूत थयो मन दुमणोरे ॥ निरमळ बुद्धि विचार ॥ पर वेदन जाणे किशुंरे ॥ बाळक नर निरधार ॥जो०१९ ॥ विष अग्नि यम पारधीरे ॥ राजा बाळक चोर ॥प र वेदन जाणे नहींरे ॥ साते पडावे सोर ॥जो०२०॥ जोशी इम कही चालीयोरे ॥ सूतो नर एके दीव ॥ज इ जगाडयो तेहनेरे ॥ वचन पयंपे मीव ॥जो०२१॥ पाटण पति मिलश्ये किहांरे ॥ जाति कवाडी न्याय ॥ खेर कुहाडो उठीयोरे ॥ आव देखालुं राय ॥जो०२२ ॥ बांमण बीहतो इम कहेरे ॥ थयो लाग्यो मुज पाप ॥ बोलावतां निसर्योरे ॥ उंदिर बीलथी साप ॥जो० २३॥ तुं मूरख सूतो भलोरे ॥ जाग्यो करे विराम ॥ स्वान सिंघ मूरख नरारे ॥ बाळक जाग्यो किण का म ॥जो०२४॥ मांजारी नर पातकीरे ॥ भुंनी निजरे भुअंग ॥ ए साते सूता भलारे ॥ जाग्यां करे विरंग ॥ जो०२५॥बांमण मनमां चिंतवेरे॥ किम मळशे भूपाळ॥ कहे जिनहरप पूरी थइरे ॥ बहोंतेरमी ए ढाळ ॥जो० २६॥ सर्व गाथा १५८४.




ढाळ ७२ मी

दुहा ॥ इम चींतवी आघो चल्यो ॥ बेठो दीठो एक ॥ जाते शुद्ध विवहारीयो॥ चतुर वणु सुविवेक ॥ १॥ ते पासे जइ पूछीयो ॥ अहो सपुरिष सुण साध ॥ किहां मिलश्ये पाटण धणी ॥ ते मुजने तु दाख ॥ २॥ बोल्यो तव विवहारीयो ॥ राजपंथ सनमुख ॥ इण वाटे तुजने नृपति ॥ मिलश्ये जाशे दुख ॥ ३॥ पण तुज देखी मुज भणी॥ मननां अचरिज थाय॥ चतुरपणे वाचाल तुं॥ रुप कुरुप दिखाय॥ ४ ॥ शेठ वचन ब्राह्मण सुणी ॥ भाखे उत्तर तास ॥ सुण भाइ विवहारीया ॥ तें मुज पुछ्यो खास ॥ ५॥ स्वर मीठो थाए नहीं॥ नीचपणुं नवी जाय॥ रुप रंग कशी चातुरी॥ धन खरच्ये न लहाय॥ ६.

ढाळ ॥ डुंगर भले दीठो सेत्रुंज तणो ॥ ए देशी ॥ एहवुं कहीरे भट चालीयो ॥ आव्यो आव्यो पोळ दुआररे ॥ पोळीया भणीरे पुछ्यो तिणे॥ किहां मिळश्ये भूप कुमाररे ॥ ए १ ॥ पोळीया हशी करी बोलीया॥ नृपशुं किसी करशो वातरे ॥ खीण काया रुपे हीणता ॥ किम मिळशो किसी धातरे॥ ए० २ ॥ मांगण मेळमे लूगडे॥ वेश्या ते जोवण जाणरे ॥ ठाकुर पडगने उतरे ॥ नि

एह ए दीमता दीनरे ॥ए० ३॥ यतः ॥ पहिलु माणस दो
सतु ॥ बीजु माणस गुण ॥ त्रीजुं माणम बोलणुं ॥ चो
थु माणस कुण ॥१॥ चित्त चतुर मन चितवे ॥ अरहुं
पसम जोइ ॥ कर उपर कर जे करे ॥ चोथु माणस
सोइ ॥२॥ ढाळ पुर्वनी ॥ वांभण भाट पंमिततारे ॥ प
रमु पराधान सुक दूतरे ॥ एह तीखा मुखे जो हुवेरे
॥ आदर लहे अदभूतरे ॥ए० ४॥ एहवा वचन भटनां
सुणी ॥ खुशी थया दरबानरे ॥ राय भणी जाशी मे
लव्यो ॥ विनती नीसुणी राजानरे ॥ए० ५॥ पूरण रा
य महारायजी॥देवने गुरु जिनधर्मरे ॥ निंदा करे मुख
गाळ दे ॥ केहनी गणे नही शर्मरे ॥ए० ६॥ वाइ टवळ
देशी रायने ॥ विनय करी वार्यो जामरे ॥ पाटु प्रहा
र कीधा तिहां ॥ मुंइ पडी मुरछीत तामरे ॥ए० ७॥
तह रीसावी आवी इहां ॥ तुम छता करे अन्यायरे ॥
तास शिखामण दीजीये ॥ जेम सकोमळ थायरे ॥ए०
८॥ छतें मृगराज बोले बके ॥ हरिणला सना शीया
ळोरे ॥ तेह मृगराजने लाज छे ॥ उठो तुम्हे कुमर भू
पाळरे ॥ए०९॥ वात भगिनी तणी सांभळी ॥ हय गय
लेइ परीवाररे ॥ राय भेटी जइ बहेनटी ॥ प्रेमशुं सि

ह्या त्रिणीवाररे ॥९०१०॥ प्राटण मांहीं लेइ आवीयो ॥ वहेनने घणे उछांहरे ॥ वीर आगळे दुख रोवती ॥ भाइमा अ॰ल्हव मुज ज्ञाहरे ॥९०११॥ एणेरे मुज नीर उतारीयो ॥ दीधी गुरु भणी गाळरे ॥ पण करी तिहां थी हुं नीसरी॥माहरुं वचन तें पाळरे॥९०१२॥ए ज्ञाली आणे तो जीव्या सही ॥ नहीं तो थास्ये निज हाररे॥ इम सुणी राय खीज्यो घणुं ॥ वहेनडी दुख विसारथ रे ॥९०१३॥ भंभा वजमावी मयाणनी ॥ लेइ दळ ला ख इग्याररे ॥ इग्यार सहेंस गज घुमता ॥ पाळा रथ तणो नहीं पाररे ॥ ९०१४॥ सवळ आरावा आरंभ ॥ नाळि गोळा हथीयाररे ॥ लेइ चल्यो राय झीपण प्र णी ॥ घूरे निशान अपाररे ॥९०१५॥ आवीया नयरी साकंवरी ॥ कटक सुभट तणा घाटरे ॥ जाण नृप कु मर करावीयो ॥ आवीयो जोवतां वाटरे ॥९०१६॥ पूरण नृप लश्कर सज्यो ॥ बांकमा सुभट सधीररे ॥ कुमर दळ जोवा पूरणे ॥मोकल्या दूत वजीररे ॥९० १७॥ कटक निहाळे फिरी फिरी ॥ पुंजणी दीठा प रुहाणरे ॥ ढाळ बेहोंतरमी थइ ॥ कही जिनहरख सु जाणरे ॥९०१८॥ सर्व गाथा १६०८ ॥

ढाळ ७३ मी.

दुहा ॥ दीठी पल्हाणे पुंजणी ॥ पुंजी घरे पलाण ॥ नीर गळी सहु वावरे ॥ हणे नहीं पर प्राण ॥१॥ दूते मस्तक धुणीयो ॥ दीठो कुमर नरेश ॥ तेमा पुछयो तेहने ॥ व्रासा तणो विसेश ॥२॥ दूत कहे कर जोडी ने ॥ सांभळ राय सुजाण ॥ पुंजी पुंजीने हणो ॥ हुंगे यां पुंठ पलाण ॥३॥ पाळो जीवदया हणो ॥ हणशो केम गयंद ॥ युद्ध करेश्यो किणी परं ॥ पुछे कुमर नरिंद ॥४॥

त पामीरे ॥ पाछो आव्यो राय समीरे ॥ दूत कहे सुण स्वामीरे ॥२०४॥ वयरी लश्कर पार न लहीये ॥ वली यो कुमर नरिंदोरे ॥ पूरण राजा मन मांहि चिंते ॥ र चीये कोइक फंदोरे ॥२०५॥ राय सभामां बीडो फेरी यो ॥ जे मारे अरि रायोरे ॥ सवा लाख सोनइया तेहने ॥ आपुं मान सवायोरे ॥२०६॥ इण अवसर नृ प शेवक माळी ॥ कर जोडी इम भाखेरे ॥ स्वामी एह नुं दोहिलुं शुं छे ॥ तुम पुन्ये सहु थास्येरे ॥२०७॥ क री जुहार चल्यो ते मारण ॥ छानी राखी पाळीरे ॥ आव्यो कुमर कटकमां चाली ॥ छळ बळ जोवे माळी रे ॥२०८॥ अगम्म इशी छे कुमर नृपतिने ॥ जो हुं वाटे चालुंरे ॥ विचे ग्रामे जिन गृह पूजिने ॥ मुखमां पाणी घालुंरे ॥२०९॥ वाटे आव्यो देउळ जिननो ॥ चाल्यो पूजण रायोरे ॥ वायक आगळथी जइ बेठो ॥ केडे राजा आयोरे ॥२०१०॥ ताजां फूल लेइ जिन मंदिर ॥ आव्या घरी आणंदोरे ॥ केसर कस्तुरी घनसारें ॥ पूजे कुमर नरिंदोरे ॥२०११॥ ते माळी पाळी ले इने हणवा आतुर थायेरे ॥ करे उपाय रायने हणवा॥ पण न वाल्यो जायेरे ॥२०१२॥ वांभण वांगनी वात

न जाणे ॥ किपण न समझे दाणेरे ॥ गाय गरधनी औं ध न समजे॥माळी घाव न जाणेरे ॥२०९३॥ थाथा मुधा करतो दीठो ॥ उदयन मन्त्री तामोरे ॥ बोलाव्यो माळी तिण ठामे॥ उभो तुं किण कामोरे ॥२०९४॥हा कीयो माळी तव लहवहीयो॥उदयन घाली बाथोरे॥ खोळी तेहने जोयो तेहवे ॥ पाळो दीठी हाथोरे ॥२० ९५॥ यटी मुटी करी मुहकम मार्यो ॥ बांध्यो अवळी बांहेरे ॥ साचू कहे कुण तु मंत्री कहे ॥ हणवा आव्यो काहेरे ॥२०९६॥ म्हारे वैर के किणहे मुकव्यो ॥ बोल म बोलीश आळोरे ॥ कहि जिनहरष पूरी थइ एट ले॥चम्मोतरमी ढाळोरे॥२०९७॥सर्व गाथा १६९९॰

ढाळ ७५ मी.

दुहा ॥ आरामी नामी करी ॥ मस्तक वे कर जोड ॥ कहे स्वामी सुण वीनती ॥ लाभे आणे खोड ॥१॥ पूरण राय मुज्ञ मोकल्यो ॥ कुमर हणवा काज ॥ कुमती एह मुज्ञ उपनी ॥ तिणे हु आव्यो राज

अटने आ हणे ॥ करडे नहीं पाषाण ॥४॥ वारुणामा
गर कुमर नृप ॥ मुकव्यो माळी तेह ॥ देइ दमामा नृप
चडव्यो ॥ साकंदरी वींटेह ॥५॥ दूत मोकली गयने॥
कहेवराव्यो कर युद्ध ॥ जो नहीं करे तो ताहरो ॥
थाश्ये बोल विरुद्ध ॥६॥

ढाळ ॥ चढियो रण झुझेवा चंम प्रद्योत नृप ॥
ए देशी ॥ एहवां वयण सुणी राय साकंबरी ॥ कोपी
यो आपणो सैन्य साजे॥ए किश्यो कुमर मुज आगळे
वापमो ॥ सींह वळवत अणवीह गाजे ॥ए१॥ घूरे द
मामा रणतूर वाजे रुमां ॥ सूरमां उल्लंस सूर अंगें ॥
लटकता कटक भेळा थया वे दीशे ॥ राय पूरण कु
मर निमण जंगें ॥ए०२॥ हाकता ताकता नाखता वा
ण घण ॥ नाचता माचता रण सनूरा॥गुरज गुपती त
णा घाव वाहे घणा ॥ वइरीयां उपरा रोश पूरा ॥ए०
३॥ नाळि गोळा गुमे धडम भूंइ धमदमे॥ जोर छूटे वि
छूटे आरावा ॥ धार तरवार झुझार माथे पमे ॥ विक
ट सुभटां तणा हुइ खरावा ॥ए०४॥ चंद्र वाणा तणी
सोफ वाजे घणी ॥ आपणी आपणी अणी सोहे ॥टो
प वगतर पहेरे जाणे काळा सिहर ॥ कही कही क

रता महिर नहीं मांहि ॥९०५॥ सुहम हाथा तणा घाव लागे घणा ॥ धाव ठाम रुहिर धार छूटे ॥ अमल रा उमना घूमता घाव ले ॥ लुंथता झुंबता पडी खूटे ॥९०६॥ राय कुमरेस पग सेस सिरी रोपीया ॥ भांजीवा नीम मन मांहीं धरीयो ॥ कटक बयरी तणो देखी बीहामणो ॥ राय पूरण सबल कोप भरीयो ॥९०७॥ आफळे फाफळे दळ बिन्हे संमिले ॥ जोध कोधे भर्या जोर झुझे॥ भाट भड उछळे लोह खांडा तणी॥ थयो अंधार रज रवि न सुझे ॥९०८॥ राय पूरण तणो सुभट अरजुन तणो ॥ तीर मूके न चूके किवारे ॥ आण राजा तणी भांजिवा मुज भणी ॥ इम कही घाय अरि सीस मारे॥९०९॥ बढे वीरम गजा शत्रुने घे सजा॥ भीम जाणे भुजा दंभ बळीया॥ बहि तरुआर तिहां धार लोही वहे॥ राय पूरण भना माण मळिया ॥९१०॥ वन वमा वीर रण धीर विजा समा ॥ पाळही छोडे झुझे झके ॥ घाय पनीया लडइ भम लडथमे ॥ कटाकट जोर थइ बिन्हे कटके ॥९११॥ एइसरो आवीयो मांही झंपावीयो ॥ देह लाधी तणो लाग गणतो ॥ शत्रु दळ चूरतो रण अरि उरतो ॥ राय कुमरेसनी

जइत भणा। ॥ए०१२॥ आपजा सामा रइ कामि झुझ सुहम ॥ झुझता केइ रण मांहीं रहीया ॥ सुहम केइ उससे केइ पडिया धसे ॥ जोगिणी पत्र नदी रुहिर व हीया ॥ए०१३॥ क्षत्रिया हास उल्लास अंगे वधे ॥ कायरां वायरां निसंभारी ॥ नासतां त्रासतां भूमि भा रण पडी ॥ हे है जीवश्यें केम नारी ॥ए०१४॥ केइ नासी गया केइ रणमां रह्या ॥ राय पूरण तणो कटक मुझ्यो ॥ राय हलकारीया वीरव पुकारी ॥ वळी पूर ण तणो कटक भिड्यो ॥ए०१५॥ देखी दळ थरहरे चित्त चिंता करे॥ जिपेवा करुंअ उपाय कोइ॥ ढाळ पंचोतरमी थई ए सही ॥ कहे जिनहरष सुणज्यो स कोइ ॥ए०१६॥ सर्व गाथा १६५१.

ढाळ ७६-मी

दुहा ॥ बुद्धि इशी कांइ केळवुं ॥ जिम नृप ना शी जाय ॥ बळथी छळ अधिको कह्यो ॥ छळे सहु सिद्धि थाय ॥१॥ धन सोवन लेइ करी ॥ पूरण कपट धरेह ॥ कुमर तणां सुभटां भणी ॥ छानां आपे तेह ॥ २॥ सुभटे धन लीधुं सहु ॥ न कीयो कोइ विच्यार ॥ धन लेइ वयरी तणो ॥ विद्रविये इणीवार ॥ ३॥ कुमर

नरेशर चिंतवे ॥ ए श्यो थयो विचार ॥ मुजथी सैन्य सहु फिर्यो॥फिकर थइ तिणवार ॥४॥ नृप चिंतातुर देखीनें ॥ कहे सामल माहंत ॥ चिंतातुर कायर हुवे ॥ सूरा कांइ नचिंत ॥५॥

ढाळ ॥ मूंयांरे मसाणा वर्पे ॥ कांइ धडुक्यो मेहोरे ॥ ए देशी ॥ सुभटे बळ बंधावीयो ॥ कहे कहे एहवा बोलोरे ॥ अरि दळ दळश्युं जू जूआ ॥ तुम पुन्ये रंगरोळोरे ॥ सु० १॥ अले थोडा वयरी घणा॥कायर एम चिंतेयोरे ॥ एक सूरज उग्यां थकां ॥ तारा कोण छिपेयोरे ॥सु० २॥ सूर सुभट पांचे भला ॥ कायर सो पंचालोरे ॥ वे पंचाही आगळे ॥ कायर जाइ नासोरे ॥सु० ३॥ यतः ॥ सींह न जोवे चंद्र बळ ॥ नवि जोवे धन रिद्धि॥एकलो सहसां गिमे ॥ जिहां साहस तिहां सिद्धि ॥ १॥ वाजां वाजो जण मिलो ॥ गिलोतो राणो राण ॥ मुज दीठे जो डग भरे ॥ तो जणणी अपमाण ॥ २॥ सींह कहे हुं वन वसुं ॥ मो मुंछा परमाण ॥ अवरा भग्गां हुं धणी ॥ मुज भग्गां नहीं ठाण ॥ ३ ढाळ पुर्वनी ॥ सींह तणा गुण लीजीये ॥ धरीये अंग मझारोरे ॥ सींह सुभट दळ देखीने॥विहे न

हीं लीगारोरे ॥मु०४॥देखी निरमळ चंदने ॥ बांधे सायर नीरोरे ॥ सवळ सैन्य तव देखतां ॥ बळ बांधे वहु वीरोरे ॥मु०५॥ कायर नर ते कनकमे ॥ देखीप मत्ता गज गाहारे ॥ ढोल दमामा वाजतां ॥ सूरा हो इ उछांहोरे ॥मु०६॥ यतः॥ रण वागे सरणाइयां ॥ पा पाखरीया केकांण ॥ सूरा घरे वधामणां ॥ कायर प डे पराण ॥१॥ देखीता डूंगर जिश्या ॥ कामे कायर था य ॥ पग्ने उगमणी बुंबनी ॥ तो आथमणो जाय ॥२॥ मीतम पाणी आपणो ॥ राखी शके तो राख ॥ पेंकिण पाणी उतर्यो ॥ वळतो चडे न लाख ॥३॥ ढाळ पुर्वनी ॥ सामळ कहे सुण राजवी ॥ धरे सास आणंदोरे ॥ ता हरो जश छे उजळो ॥ मकर मकर तुं मंदोरे ॥मु०७ ॥ गाजो सींह तणी परे ॥ हीयो करो निज हाथोरे ॥ आपणने नहीं भांजीयो ॥ राज दीयो जगनाथोरे ॥मु ८॥ यतः॥ कुमारपाळ मम चित कर ॥ चिंत्यु किपी न होय ॥ जेणे राज समप्पीयो ॥ चिंता करशे सोय॥ १॥ ढाळ पुर्वनी ॥ अगनी अने घृतश्युं मिल्यो॥ तिक्ष ण खडग विषधारोरे ॥ कुमर अने वाकारीयो ॥ धा य्यो बळ तिण वारोरे ॥मु०९॥ सुरा तणे अंगे चढयो

॥ पंचाइण आवानोरे ॥ साम अरी सेना दीसे ॥ ध धकार्यो गज राजोरे ॥सु०१०॥ पूरण दीठो आवतो ॥ कुमर नरेशर जामोरे ॥ मरण थकी नृप बीहतो ॥ पाछो खिशीयो तामोरे ॥सु०११॥ जोवे कुमर चिहुं दीशे ॥ दीसे नही अरीरायोरे ॥ संध्याकाळ थयो इशे ॥ पडिकमणुं तिहां थायोरे ॥सु०१२॥ मन वच.का या थीर करी ॥ परिहरी च्यार कखायोरे ॥ पडिकम णु राजा करे ॥ पूरण पाम्यो दायोरे ॥सु०१३॥ कु मर कटक साहमो धश्यो ॥ गांज्यो सबळ संग्रामोरे॥ सोर करे रणमां फीरे ॥ कुमर कटक सुंझ्यो तामोरे ॥ सु०१४॥ दळ सबळ पण श्युं करे ॥ नांहि नही भूपा ळोरे ॥ कहे जिनहर्ष पूरी थइ ॥ छोंतरमी ए ढाळोरे॥ सु०१५॥ सर्व गाथा १६७१ ॥

ढाळ ७७ मी.

दुहा॥ सोरठा ॥ सुभट हराव्या माहरा ॥ कट क कीयो हैरान ॥ थिर रहियो मूरति परे ॥ तोही न मु क्यो ध्यान ॥१॥ नयीग्रे दीप अंधेर ॥ अगनि कन क कमळ किम रहे ॥ पवन झिगे नहीं मरे ॥ कुमर

लीधो व्रत मुंकयो नहीं ॥ पडिक्कमणानो काम ॥ करी उठ्यो जुद्ध कारणे ॥१॥ हुं आव्यो कुमरेश ॥ ताह रो दळ दळवा भणी ॥ करि मेल्हो दरवेश ॥ उगा र हिजे पूरणा ॥४॥ आयो मरण अकाळ ॥ अणीयो कुमर नरेशशुं ॥ भय नाख्यो भूपाळ ॥ सूतो सींह ज गामीयो ॥५॥ पहिलो मुजने घाव ॥ करेरे पूरण उर ण ॥पाछिल माहरो दाव ॥ शिर छेदुं के बांधि ल्युं॥६॥

ढाळ॥ यतिनी सोरठ रागे ॥ बांधु के तुज शिर छेदुं ॥ एकलो तुज सेंना भेदु ॥ माहरे ताहरे छे दावो ॥ तो केम सुभट मरावो ॥१॥ तुज मरण सही हवे आ यो ॥ तो सूतो सींह जगायो ॥ दोठो नृप काळ क्रित त ॥ पूरण जाण्युं करे अंत ॥२॥ सेनानी सबळो सा द ॥ आवी कीधो सींह नाद ॥ ते नाद सुणी राजा ना गो ॥ राय कुमर चिंत थयो माठो ॥३॥ नृप बुद्धि ध री निज हीये ॥ गज कान भर्या उतरीये ॥ वा पूका रीयो थापोटीयो॥दळ भंजण कही कही पोढ्यो ॥४॥ तव हाथी थयो हुंशीयार ॥ मारंतो सुंढि प्रहार ॥ व ळीयो बळीयो गजराज ॥ आव्यो जिहां पूरण राज ॥५॥ भूपति भूपति बे मिलीया ॥ प्राण पूरणना खल

भळीया ॥ गज उदरथी उदकंत ॥ गिरि परे पमियो दुर दंत ॥६॥ पूरण यशो कुमर अबीह ॥ जिम निबळ हरिने सींह ॥ पंजरमां बांधी घाल्यो ॥ पाटण भणी लेइ चाल्यो ॥७॥ तिण लाख हुता अस्वार ॥ पांचसे गयंवर सिरदार ॥ दश लाख पायक वीवाण ॥ ते कुमर कर्यो बंधीवाण ॥८॥ बांध्यो नृप अवळी बांहे ॥ गुज्जर सीमा अवगाहे ॥ वेगे आवी पाटण मांहे ॥ वेठो नृप तखत उछांहे ॥९॥ राय कुमर नरेस पचार ॥ लाव्यो पूरण दरबारे ॥ बहु क्रोध धमीयो मन मांहे ॥ करुं शुं मुज राख्यो सांहे ॥१०॥ क्रोधागनि मांही तपावे ॥ मन मांहीं बहु दुख पावे ॥ पण दाव च ले नहीं कोइ॥झुरे झुरे इम पंजर होइ ॥११॥ परवशे दुख वेठो प्राणी ॥ जाणे नरक तणी नीसाणी ॥ पण न धर्म ते कांइ लेखे ॥ शुर भुवन सुगति नवि पेखे॥ १२॥ परवशे दुख खमे अपार ॥ उट पोठी सहे बहु मार ॥ शीत भूख सहे ताहि ताप ॥ पण खीण न हुवे तस पाप ॥१३॥ परवशे इम माणस पंखी ॥ भोगवे दुख तेह असंखी ॥ मन पाखे कष्ट करीजे ॥ तेहथी शुभ फळ न लहीजे ॥१४॥ परवशे वधबंधन सहीये ॥

परवशे दुख काया दहीये ॥ सह्मसि थामो धर्म ॥ किजेतो छुटे कर्म ॥१५॥ पूरण नृप परवश पडीयो॥ पोताने कर्मे नडीयो ॥ चाले नहीं कोइ प्राण ॥ सहे वचन कुमरना बाण ॥१६॥ बोलाव्यो पण नवी बोले ॥ हीयमानी गांठ न खोले ॥ गति मति बुद्धि पराक्रम गळीया ॥ पंचाइण रण सांकळीया ॥१७॥ अगन्याने कर्म उपाये ॥ तेहनां फळ ततखिण पावे ॥ ढाळ सत्तो त्तरमी गाइ ॥जिनहर्ष इसी वनी आइ ॥१८॥ सर्व गाथा १६९६ ॥

ढाळ ७८ मी.

दुहा॥जीभ पुंठेथी काढवी ॥ ए पापीनी ज्ञात॥ वळी बोले नहि एहवु ॥वहेन कही ए वात ॥१॥ कहे राजा शुण व्हेनमी॥एहवो न कर अन्याय॥ जीभ धणीनी का ढतां ॥ अपजश जगमां थाय ॥२॥ दीरघ रोश नरा खीये ॥ कीजे काम विचार ॥ सुण सकुलणी वहेनडी ॥ भूमोटी गरथार ॥३॥ घणुं अनुलिक जो हुतो ॥ गाये गळ्यो रतन ॥ पेंट विदारे को नहीं ॥ कीजे तास जत न ॥४॥ उत्तम ते उत्तम हुवे॥ मध्यम कदे न होय ॥ अ न्याइ तोही आपणो ॥ निज कुळ सामुं जोय ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ परणी राजकुमारी ॥ सोवन तन शणगारी ॥ ए देशी ॥ इम कही रोश उतार्यो ॥ वीर वचन चित्त धार्यो ॥ उत्तम जे कुळवंत ॥ मुंके रोश तुरंत ॥ १॥ में कह्यो वचन जे भाइ॥ ते किम निष्फळ थाइ॥ कांइक करो सहीनाणी॥ एहनो उतारो पाणी॥२॥ मगला पुंठे आकार॥ जीभ तणो कीधो स्यार ॥ जाणे पती जीभ काढी ॥ हरखी वहेनडी गाढी ॥३॥ पूरणने राज देइ॥ पिती माहो मांही करेइ॥ पाए लागीने चडियो ॥ निज नगरी दोरो समीयो ॥४॥ कुशळे नृप घेर आयो॥ पूर जण मिळी वधायो ॥ राय निवारीयो आप ॥ देश सकळ मांहीं पाप ॥५॥ श्री जिननी वही आण॥ साधु नमी तजी माण ॥ श्री जिन धरम आराधी॥ तिन वरग नित साधी॥६॥ धन धन कुमर नरेश ॥ दया पळावी देश देश ॥ सामायक व्रत पाळ्यो॥ पण ते मांही न चाल्यो ॥७॥ चितरी सामायक चार ॥ समकितने श्रुत सार ॥ देश विरती सर्व विरती ॥ सुग

नकास ॥ गुरु कृत शास्त्र लीखावे ॥ अक्षर कनक दो
पावे ॥१०॥ देश विरती बीजो नाम ॥ सामायक शुभ
काम ॥ बारह व्रत धरे अंगे ॥ आण वहे जिन रंगे ॥
११॥ कारण पमीयां न चूके ॥ रण पडिकमणुं न मूके
॥ निती प्रतिती न समाइ ॥ राजा करे सदाइ ॥१२॥नो
मो व्रत इम पाळे ॥ दसमो हवे ए संभाळे ॥ देशावगामि
क कहीये ॥ जेहथी शुभ फळ लहीये ॥१३॥ पाळे ग
य पवित्र॥पांच अतिचार तत्र ॥निमि भूंइ निज जेह
॥ वस्तु अणावी न तेह ॥१४॥ मोकले न पणि इयां
थी ॥ रुप देखामे न क्यांथी ॥ साद करे नाखी कांक
र ॥ थाये छतो इम जे नर ॥१५॥ ते पमे भव दुख
मांहि ॥ व्रत भंग करे सवाहिं ॥ दशमुं व्रत शुद्ध पाळे ॥
तेहनां दोष सहु टाळे ॥१६॥ कारण पमत्ये नवि चळी
यो ॥ तो दशमो व्रत फळीयो ॥ ते सुणज्यो अधिकार
॥ सफळ हुश्ये अवतार ॥१७॥ अगम इशी गुरु पासे
॥ कीधी अधिक उल्लासे ॥ कटकी न करुं चोमासे ॥
कुमर नृपति इम भासे ॥१८॥ वनपति बहु जीव केरी
॥ वरषा रिते अधिकेरी ॥ अठ्योतेरमी ए ढाळ ॥ क
हि जिनहरष रसाळ ॥१९॥ सर्व गाथा १७२०.

ढाळ ७९ मी

दुहा ॥ चोमासे न करे कटक ॥ कुमरपाळ रा
जान ॥ वात गइ परदेशमें ॥ आव्यो गजनीखांन॥ १
॥सबळ सैन लेइ मुगल ॥ आतमबाजी साथ ॥ आ
व्यो वळी उतावळो ॥ पाटण घाली वाथ ॥ २॥ मु
गल आव्या जाण्या जिसे ॥ राय हुकम ततकाळ ॥
दरवाजा ताजा जम्या ॥ चिंतातुर भूपाळ ॥ ३॥ म
हाजन लोक चिंता करे ॥ करे चिंता सहु लोक॥आ
वी इहां इमही बस्या ॥ पाटण मांहे फोक ॥४॥ एक क
हे पूर छंडीये ॥ कीहां जइए एक ॥ एक कहे राजा
नीसत ॥ मांहे नहीं विवेक ॥५॥ एक कहे मांटी मुग
ला॥लेश्ये जोरे राज ॥ एक कहे नृप नाससे ॥ छानो
छळ करी आज ॥६॥

ढाळ ॥ भरत खेत्र जगे परगमो ॥ जंबु वरहे दी
व मझार ॥ ए देशी ॥ एक कहे क्षत्री भणी ॥ नीसंता
हो नहीं कांइ लाज ॥ आग वासण नृप थयो ॥ रण
मांहींहो ते गयो भाज ॥ए० १॥ पंथी पूछे तेहने ॥ कांइ
रावतहो नाठो जाय ॥ दाढी सरम नहीं रहे ॥ क्षत्रीनो
हो पूण उपाय॥ए० २॥ हवे कितलोइक जा॥५२

खरे तोहो मरवो छे राय ॥ सहो घाये झुझांये ॥ जो मरीयेहो तोहीज जस थाय ॥ ९०३॥वासण क हे सहु सुणज्यो तहे ॥ नासंताहो नहीं कांइ खोड ॥ ना सी प्राण उगारीये ॥ नवी मरीयेहो केहनी कर होम ॥ ९०४॥ दाढी मोटी थइ ॥ काळी टळीहो ए धोळी था य ॥ नर नारी सहु सांभळो ॥ नाटानोहो एह पसाय ॥ ९०५॥ लोक सहु मिली इम कहे ॥ रधण जळहो न मिले पुर मांहि ॥ सोकातुर सहुको थया ॥ वीनवीयो हो राजाने जाय ॥९०६॥ कहे नृप सुणो प्रजा सहु॥ में लीधोहो वदवानो नीम ॥ लीधुं व्रत कीम मुंकीये॥ मत बोलोहो चोमासा सीम ॥९०७॥ इस्यो वचन राजा कह्यो ॥ चिंतातुरहो महाजन थयो ताम ॥ उदयनने जइ वीनवीयो ॥ स्युं करवुंहो आपण हवे काम॥९० ८॥ उदयन कहे निश्चळ रहो ॥ मन मांहीहो कांइ म करो चिंत ॥ राज दीयो पाटण तणो ॥ ते करस्येहो चिंता एकांत ॥९०९॥ एहवुं कही मंत्री चल्यो॥मन मां हीहो धरतो उल्हास ॥ हेमाचारजने जइ ॥ विधि वांदीहो बेठा गुरुने पास ॥९१०॥ करजोडी उदयन कहे ॥ स्वामी हवेहो कांइ करो उपाय ॥ मुगले पाट

ए वींटीयो ॥ चोमासेहो रण न करे राय ॥ए०११॥ लोक थया सहु आकळा ॥ ते माटेहो करो क्रिपा कृपाळ ॥ लाज सहुछे तुम भणी ॥ तुले कीधाहो अेहने भूपाळ ॥ए०१२॥ हाथ ग्रह्यानी लाज छे ॥ मोटानेहो सांभळ मुनीराय ॥ तुम सरीखा गुरु छतां ॥ त्ये पाटणहो नृप हीणे थाय ॥ए०१३॥ हेम सुणी हित आणीयो ॥ राय उपरेहो जेहनो बहु प्रेम ॥ जिनशासन शोभा वधे॥ देवीनेहो आराधी हेम॥ए०१४॥आवी तुरत चक्केसरी ॥ पाय लागीहो कहे तेडी केम ॥ सुगुरु कहे देवी सुणो ॥ पाटणमांहो वरतावो खेम ॥ए०१५॥ जुद्ध अगम छे रायने ॥ गजनीनेहो रजनी नृप पास॥ आणी मुंको एकलो ॥ देवी गइहो निशी मेरे तास ॥ ए०१६॥ निंद्रा मांहीं ढोलीयो ॥ उपाडीहो मुंकयो नृप पास ॥मह उग्ये जरग्यो जिस्ये ॥ नवि देखेहो ढळ दासो दास॥ए०१७॥ मुगल हियामां चिंतवे ॥ हिंदुकाहो योतो परिवार॥ कहे जिनहरष पूरी थइ ॥ ओगणसीहो ए ढाळ विचार ॥ ए०१८ ॥ सर्व गाथा १७४४.

❀❀❀

ढाळ ८० मी.

दुहा ॥ यमा वखतका भूप एह ॥ इनको किसी वात ॥ पीर फीरस्ता कोइ हइ ॥ किसहीं जाण्या न जात ॥ १ ॥ चस्म वात देखी अजब ॥ आया में किस गोर ॥ में चिंत्याया अउर कछु ॥ सांइ चिंत्या अउर ॥ २ ॥ जाण न पाउंगा अबे ॥ हीये दावज कीयाह ॥ मुजकु छोडेगा नहीं ॥ इण मुज पकरी लीयाह ॥ ३ ॥ क्या कहीये कहते कछु ॥ वणत नहीं हइ वात ॥ अब वइरीके वश पर्यो ॥ करे जीवकी घात ॥ ४ ॥ हिंदुपकरुं ल्युं सहेर ॥ चिंतवी आया चल्ल, ॥ मनकी मनहीमें रही ॥ ज्युं गुंगाकी गल्ल ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ परमातमी प्रनरस ॥ ए देशी ॥ खान इस्युं मन चीतवेए ॥ तब कहे राय कुमार ॥ चिंता म करेश मुगल मनए ॥ हीयडुं करे हुंशीयार ॥ १ ॥ ते न हुवे चोलकवंशीए ॥ वांध्या मारे जेह ॥ शस्त्र धरी सामो हुवेए ॥ सुभट हणेवा तेह ॥ २ ॥ विश्वासी जो मारीयेए ॥ तो क्षत्री न कहाय ॥ ते भणी तुजे मारुं नहींए ॥ इण अवसर कहे राय ॥ ३ ॥ इस्यां वचन नरवर तणांए ॥ सांभळीया सुलतान ॥ खुशी हुओ मन मांहीं तवए ॥ मुं

कर्यो आरत ध्यान ॥४॥ हुं आव्यो चढी उपरेए ॥ करवा इणश्युं झुझ ॥ मोटो हिंदु गढनतीए ॥ हरमती राखी मुज ॥ ५ ॥ कुमारपाळ सुए मुगल कहेए ॥ भाइ क हुं के मीत्र ॥ मुंकयो मुजने जीवतोए ॥ हाथे आव्यो शत्र ॥ ६ ॥ माहोमांही मैत्री थइए ॥ गजनीखान नरेश ॥ कटक लेइ पाछो वळ्योए ॥ आव्यो आपण देश ॥ ७ ॥ इम दशमुं व्रत पाळीयुंए ॥ भाग्युं नहींय नरेश ॥ इग्यारमुं व्रत आदरेए ॥ आणी भाव विशेश ॥ ८ ॥ पर्व तिथे पोसह करेए ॥ पचखी च्यार आहार ॥ राइ पडिक णुं करीए ॥ दिन निद्रा परिहार ॥ ९ ॥ मौनमती कार ज पडेए ॥ गुरुश्यु बोले राय ॥ च्यारे विकथा परिहरी ए ॥ पांच प्रकार सझाय ॥ १० ॥ पांच अतिचार परि हरेए ॥ संथाराने ठाम ॥ थंडीलने वळी मातरुंए ॥ क रे शुभ मन विश्राम ॥ ११ ॥ पडिलेही जयणा करीए ॥ विधी परठवे सुजाण ॥ करे अणुजाण हजमुखोए ॥ पाळे जिनवर आण ॥ १२ ॥ निण वार नोसिर कहीए ॥ काळे वांदी देव ॥ संगट न करे सचित्तनोए ॥ पडिक मणानी टेव ॥ १३ ॥ संथारा पोरिसी भणेए ॥ पडिक्कम णुं करे सार ॥ पडिलेही उपगण सहुए ॥ पारे विधि

विवहार ॥ १४॥ घरे साहमीशुं संभरीए ॥ पूजी श्री जिनराय ॥ करे नरेशर पारणोंए॥उतमनो ए न्याय ॥ १५॥ व्रत पाळे इम बारमुंए॥आपे मुनीवर दान ॥पात्र पोखी भोजन करेए ॥ राखे चोखुं ध्यान ॥१६॥ भो जनना द्रव्य जेटलाए ॥ ल्ये मुनीवर निराग॥पोते पण ल्ये तेटलाए ॥ साचवे अतिथी संविभाग ॥१७॥ उ त्तम साधने साधवीए॥श्रावक श्राविका सोय ॥ संघ चतुर्विध पोखतांए॥तिर्थंकर पद होय ॥१८॥ धर्म टा म जोइ करीए॥आवे दान नरिंद ॥ढाळ एशीमी ए थइ ए॥कहि जिनहर्ष मुणिंद ॥१९॥ सर्व गाथा १७६७.

ढाळ ८१ मी.

दुहा ॥ कुमर नरेशर एक दिन॥आव्यो वंदण का ज ॥ दीठो खासर ओढीयो ॥ हेमसूरी गच्छराज ॥१ ॥ विनय सहित बोल्यो नृपति ॥ सांभळ श्री गुरुराय ॥ देखी खासर ओढीयो॥लाजुं छुं मन मांहीं ॥२॥ हे मसुरीसर इम कहे ॥ हुं गोचरीए आज ॥ गयो एक दुर्बळ घरें ॥ वांया धरी बहु लाज ॥३॥ कर जोडी मुजने कहे॥ पूज पधारो आम ॥ वहोरो खासर सु झतो ॥ राखो माहरी माम ॥४ मुनीवरने ममता नथी

॥ श्युं खासर श्युं चीर ॥भावे आपे ते भलो ॥ ग
वे गावसो खीर ॥५॥ तेहनो हरख वधारवा ॥ वद
रयो खासर एह ॥ अछतिही विक्रम नृपति ॥ धन ध
न श्रावक तेह ॥६॥

ढाळ ॥ श्रवणना गीतनी देशी ॥ सुण राजेशर तु
जने कहुं ॥ जे नर पाम्या लिखमी वहु ॥ समज्या
शास्त्र तणा सवी मर्म ॥ जाण्यां जेणे धर्म अधर्म ॥१
॥ तें नर लखमी व्यय नवि करे ॥ धर्म ठाम धन न
वि उपगरे ॥ ते श्युं समज्या श्रावक धर्म ॥ इमही फो
कट पमीया भर्म ॥२॥ आज तमे शासन शिणगार
॥ न करो साहमीनी कांइ सार ॥ खासर देखी लाज्या
आज ॥ तो मुज वचन मानो महाराज ॥३॥ जे
निरधन घर श्रावक तणा॥तेहने घेर थापो धन घणा॥
तुम सरिखा जिन शासन थंभ ॥ साहमी निरधन एह
अचंभ ॥४॥ सांभळी हेम तणो उपदेश ॥ लाज्यो म
नमां कुमर नरेश ॥ चरणे लाग्यो धरी उछांह ॥ चू
क पमी तुज शेवक मांह ॥५॥ इम कही कुमारपाळ
॥ वांदीने उठ्यो ततकाळ ॥ आवी निज घर धन आ
णीया ॥ निरधन श्रावक दूख कापीया ॥६ तमे माह

व साहमी सिरदार ॥ ल्यो लिखमीने करो व्यापार॥
गुरु वचने कीधो उपगार ॥ साहमीने आप्यो आधार
॥७॥ सोवन टका बोहोतेर लाख ॥ श्रावक दंन त
ज्यो गुरु साख ॥ श्री जिन भगति करे बहु परे ॥ सा
हमीवत्छळ नित प्रते करे ॥८॥ साते खेत्रे वित वावरे
॥ इणी परें लिखमी सफळी करे ॥ अतीचार ए व्रतना
पञ्च ॥ टाळो पाळो रुडो मच ॥९॥ अणदेवानी बुद्धि
विचार ॥ असुझतो कीधो आहार ॥ असुझतो हुतो
जे अन्न ॥ कहे सुझतो आपो सुभमन्न ॥१०॥ वस्तु
पोतानी हुती सही ॥ कृपणपणे परनी कही ॥ परनी
फेडी कही आपणी ॥ अपे भाव धमत्सो मुनी जणी॥
११॥ मुनीवर वहेरण वेळा टळी ॥ आपी तेमण ते
अटकळी ॥ एहवा चरित्र करे दातार ॥ तेह भमे संसा
र अपार ॥१२॥ साहमी साधु सीदातो भाळ ॥ न करे
तेहनी सार संभाळ ॥ तेहनी लिखमी कही असार ॥
न करे धर्माधर्म विचार ॥१३॥ दिनोद्धार जिणे नवि
कर्यो ॥ उमा धन धरणीमा धर्यो ॥ ते नर जास्ये दु
गति मझार ॥ भव भव दिन दुखी चित धार ॥१४॥
इणी परे व्रत वारह आदर्यो ॥ अतिचार तेहना परि

हर्या ॥ समकित शुद्ध गुरु मुख उचर्यो॥सफळ कार्य पोताना कर्यां ॥१५॥ आने हेमसुरीशर तणी ॥ कीधी भगति नृप अति घणी ॥ संघ भगति कीधी मन रंग ॥ खरच्या द्रव्य घणे उछरंग ॥१६॥ दिप्यु जिन शासन घणुं ॥ मंद थयुं शिव शासन तणुं ॥ चोलका वंशे कुमर नरिंद ॥ राज रिषि नाम धरावे चंद ॥१७॥ थयो जैन धर्म शिणगार ॥ धर्मी लोक तणो आधार ॥ इक्याशीमी ढाळ सुजाण ॥ कहे जिनहर्ष थया कल्याण ॥१८॥ सर्व गाथा १७९१.

ढाळ ८२ मी।

दुहा ॥ कुंमर नरिंद इस्युं कहे ॥ जैन धर्म जग सार ॥ तेहनी जे निंदा करे ॥ ते तजीये परीवार ॥१॥ तजीये माता जेहने ॥ जैन धर्मशुं वैर ॥ जैन धर्मशुं रुची नही ॥ ते पण तजीये वैर ॥२॥ दूषण बोले धर्मनां ॥ तजीये तात तुरन्त ॥ बंधव तजीये वेगळो ॥ जे जिन धर्म निरन्त ॥३॥ नाथ जाणि तजीये बहेन ॥ जिन गुण न रुचे जास ॥ तजीये सुत पोता तणो ॥ नहि जिन धर्म अभ्यास ॥४॥ श्रावक देखी उल्लसे ॥ श्रावक संगति खास ॥ श्रावकशुं मैत्री

॥ घर श्रावक घर दास ॥५॥ कुमर कीया श्रावक स
हु ॥ श्रावकशुं बहु प्रेम ॥ श्रावक भगति करे घणी ॥
नमे निरंतर हेम ॥६॥

ढाळ ॥ भणे देवकी किण भोळव्यो ॥ ए देशी ॥
सोरठ देश सोहामणो ॥ जिहां तीरथ तीरथ जैन महा
त ॥ राजिंदा ॥ समर नरिंद तिहां भोगीयो ॥ महा ब
ळीयो अति महा दुरदांत॥रा०सो०१॥ समर हण्यो छा
नो वांकमो ॥ मनमां नाण्यो भय जाण्यो मुज नहीं
कोय ॥रा० कंटेश्वरी आवी कह्यो ॥ एहवो छानो रा
ज न मानो अनरथ होय ॥रा०सो०२॥ आण न मा
नी माहरी ॥ बहु खीज्यो घणुं खीज्यो कुमर नरेश ॥
रा० उदयनने तेमी करी ॥ नृप आपे राय राय इम उ
पदेश ॥रा०सो०३॥ सोरठ देश जइ करी ॥ हणवो पा
पी मस्तक कापी समर नरिंद ॥रा० मुजने देइ मूंकिवो
॥ सेना लेइ मंत्री चलेइ जाणी समंद ॥रा०सो०४॥
भंव नगारां गडगडे ॥ मद माता घूमता गज असवार
॥रा० पाळीताणे जइ करी उतरयो ॥ तिहां रह्यो क
टक अपार ॥रा०सो०५॥ उदयन शत्रुंजय चडयो ॥
जिन देखी प्रभु देखी हरख्यो ताम ॥रा० देइ तीन प्र

दक्षण॥भावे बांधाहे जइवांधा निज शिर नांमी॥रा०सो.
६॥ लय लागी प्रभु ध्यानशुं॥ चाल्यो उंदीर हींमत्यो
उंदीर दीवो ताणी॥रा० दीठो पूजारी तिसे॥ मुंकाव्यो
मेलाव्यो मुखथी जाणी॥रा०सो०७॥ मंत्री मनमां चिं
तवी॥ सबळो अनरथ मोटो अनरथ होवत एह॥रा०
देवार्चक जो नावतो॥ तो चूकत तो मूकत ध्यान स
नेह॥रा०सो०८॥ जो हुं ध्यान न चूकतो॥ तो बळ
तो ए बळतो जिन प्रासाद॥रा० तो धिग धिग मुजने
पणे॥ में गमाय्यो नीगमीयो जनम प्रमाद॥रा०सो०
९॥ सी लखमी तेहनी लही॥ जिणे न कर्यो नवि उध
र्यो जिर्णोद्धार॥रा०जीर्णोद्धार करावतां॥ पुण्य थाये
लाभ थाये अष्ट गुणो संसार॥रा०सो०१०॥ च्यार
आगम मंत्री करी॥ व्रत पाळुं सील पाळुं एक आहार
॥रा० सच्चा पान न आदरुं॥ न कराउं समराउ ज्यां
प्रहार॥रा०सो०११॥ नीम कर्यो उदयन इस्युं॥ न
वि कांपे सीस चांपे समरनी जाण॥रा० रण रणतुर वा
जि गला॥ थाइ चंगी हमकी जांगी ढोल नीसाण॥
रा०सो०१२॥ समरशुं समरांग जुडलो॥ वूटी गोळा
ताकि ओला कायर जेह॥रा० घाव वहे तरवारना॥

॥ घर श्रावक घर दास ॥५॥ कुमर कीया श्रावक स
हु ॥ श्रावकशुं बहु प्रेम ॥ श्रावक भगति करे घणी ॥
नमे निरंतर हेम ॥६॥

ढाळ ॥ भणे देवकी क्रिण गोळव्यो ॥ ए देशी ॥
सोरठ देश सोहामणो ॥ जिहां तीरथ वीरथ जैन महां
त ॥ राजिंदा ॥ समर नरिंद तिहां भोगीयो ॥ महा व
ळीयो अति महा दूरदांत॥रा०सो०१॥ समर हण्यो छा
नो वोकमो ॥ मनमां नाण्वो भय जाण्यो मुज नही
कोय ॥रा० कंटेश्वरी आवी कह्यो ॥ एहवो छानो रा
ज न मानो अनरथ होय ॥रा०सो०२॥ आण न मा
नी माहरी ॥ बहु खीज्यो घणुं खीज्यो कुमर नरेश ॥
रा० उदयनने तेम्ही करी ॥ नृप आपे राय राय इम उ
पदेश ॥रा०सो०३॥ सोरठ देश जइ करी ॥ हणवो पा
पी मस्तक कापी समर नरिंद ॥रा० मुजने देइ मूंकिवो
॥ सेना लेइ मंत्री चलेइ जाणी समंद ॥रा०सो०४॥
त्रंब नगारां गडगडे ॥ सद माता घूमता गज असवार
॥रा० पाळीताणे जइ करी उतरयो ॥ तिहां रह्यो क
टक अपार ॥रा०सो०५॥ उदयन शत्रुंजय चडयो ॥
जिन देखी प्रभु देखी हरख्यो ताम ॥रा० देइ तीन प

दक्षण॥जावें वांधाहे जइवांधा निज शिर नांमी॥रा०सो.
६॥ लय लागी प्रभु ध्यानशुं॥ चाल्यो उंदीर हींमळो
उंदीर दीवो ताणी॥रा० दीठो पूजारी तिसे॥ मुंकाव्यो
मेलाव्यो मुखथी जाणी॥रा०सो०७॥ मंत्री मनमां चिं
तवी॥ सबळो अनरथ मोटो अनरथ होवत एह॥रा०
देवार्चक जो नावतो॥ तो चूकत तो मूकत ध्यान स
नेह॥रा०सो०८॥ जो हुं ध्यान न चूकतो॥ तो वळ
तो ए वळतो जिन प्रासाद॥रा० तो धिग धिग मुजने
पणो॥ में गमोयो नीगमीयो जनम प्रमाद॥रा०सो०
९॥ सी लखमी तेहनी लही॥ जिणे न कर्यो नवि उध
र्यो जिर्णोद्धार॥रा०जीर्णोद्धार करावतां॥ पुण्य थाये
लाभ थाये अठ गुणो संसार॥रा०सो०१०॥ च्यार
आगम मंत्री करी॥ ब्रह्म पाळुं सील पाळुं एक आहार
॥रा० सज्या पान न आदरुं॥ न करावुं समरावुं ज्यां
उद्धार॥रा०सो०११॥ नीम कर्या उदयन इश्युं॥ न
वि कांपे सीम चांपे समरनी वाण॥रा० रण रणतुर वा
जि गजा॥ थाइ चगी ढमकी जांगी ढोल नीसाण॥
रा०सो०१२॥ समरशुं समरांग जुडवो॥ वूठी गोळा
वाकि ओळा कायर जेह॥रा० घाव वहे तरवारना॥

सूर फवाणे वाहे ताणे वाण भरेह ॥रा०सो०१३॥ सन मुख झूझे सूरिमा ॥ साम्हा पावां वाजे घावांरा धम साण ॥रा० उदयन मंत्री घाये पड्यो ॥ अरि दळ हा र्यो माझी मार्यो समरो राण ॥रा०सो०१४॥ तेनो वेटो तेहनो ॥ राज्ये थाप्यो टीलो आप्यो आण मनाइ ॥रा० कुमर भणी सिर मोकल्यो ॥ रावत राणा फेरी आणा सोरठ मांहि ॥रा०सो०१५॥ चांस वांधी फेरीयो ॥ सघळे देशे जेह करस्ये छानो पाप ॥रा० ए परे थाश्ये तेहनी ॥सहु नीहाळ्यो राय देखाल्यो परताप ॥रा०सो०१६॥ जयत थइ उदयन तणी ॥ पाछो फिरीयो घाए भरीयो चिंता चित ॥रा० नीसासा मूंके घणा ॥ साथी पूछे तु मने शुं छे दुखनो रीत ॥रा०सो०१७॥ झुझ्या रणमां जश लीयो ॥ म करो चिंता सहु गुणवंता मरण वसेण ॥रा० सहुने मरवुं छे सही ॥ ढाळ व्याशी कही उला सी जिनहरषेण ॥रा०सो०१८॥ सर्व गाथा १८१४.

न ॥ मंननायक अंबन हुवे ॥ मुजने नीझामण काज ॥ २॥ इहां मुनीवर कोइ नहीं ॥ किम मुज दरिशण था य ॥ मुनि आरायन नवि सुणे ॥ तो किम सदगति जा य ॥ ३॥ बाळ मरण संसारनां ॥ कीधां अनंतीवार॥ मुनी दरिशण पाम्यो नहीं ॥ न लह्यो तिण भव पार॥ ४॥ अंत काळ जो पामीये ॥ साधु तणो संयोग ॥ तो भागे भव भव तणां ॥ जनम मरण भय सोग ॥ ५ ॥ तिणे कारण चिंता करुं ॥ झुरुं हियां मझार ॥ इण अवसर मुनीवर नहीं ॥ भमश्युं बहु संसार ॥ ६ ॥

ढाळ॥ भावननी ॥ राग सिंधुआशा ॥ वात इशी उदयन मुखे सांभळीरे ॥ सुभट कहे करजोड ॥ चिं ता मकरोरे मंत्रीशर तुलेरे ॥ सफळ हुश्ये मन कोड॥ वा० १॥ पाज बंधाये श्रीगिरनारनीरे ॥ शत्रुंजय उद्धा र ॥ दंननायक अंबन आदर करीरे ॥ ए त्रिण बोल विचार ॥वा० २॥ बाहडदेने हाथे ए त्रिणेअ छेरे ॥ मु नी चाहो मंत्रीश ॥ जिहां तिहांथी खोळी अले आण शुंरे ॥ जाणो वीसवावीस ॥वा० ३॥ फिरी फिरी जो यो पण मुनी नवि मळ्योरे ॥ लंघ पुरुष एक आण॥ साधु भेस तेहने पहेरावीयोरे ॥ जीर्ण यति थयो जाण

॥वा०४॥ इर्या भाषा समति सूधी धरेरे ॥ आव्यो उदयन पास ॥ मुनी दरिशण दीठु मन गहगह्यांरे ॥ हियडे थयो उल्लास ॥वा०५॥ पाये लाग्यारे बे कर जोडीनेरे ॥ तह्मे भले पधार्यारे साध ॥ पाप संताप गयां सहु माहरांरे ॥ भागी भव आवाध ॥वा०६॥ धर्म कथा उदयन आगळे कहीरे ॥ मंत्री आलोवे पाप ॥ लाख चोराशीरे जीव खमावीयारे ॥ त्रिविध त्रिविध करी आप ॥वा०७॥ चउ गती माहेरे भमतां जीवडेरे ॥ कीधां करम अनेक ॥ जीव मराव्यारे मारव्या हाथे करीरे ॥ मूढपणे अविवेक ॥वा०८॥ पातक केरारे जे थानक कह्यारे ॥ अगट अढारह दाख॥त्रिविध त्रिविध करी वोसरेरे ॥ सिद्ध सुगुरुनी साख ॥वा०९॥ क्रोध न राखुरे हुं किण जीवशुरे ॥ मान माया ने लोभ ॥ च्यारे सरणांरे थो हवे साधुजीरे ॥ पामुं सद्गती सोभ॥वा०१०॥ च्यारे सरणारे साधु करावीयारे ॥ हीयडे समकित धार ॥ काळ करीनेरे सुरगति उपनोरे ॥ पाम्या सुख श्रीकार ॥वा०११॥ लंठ विमाशुरे मन मांही हवेरे ॥ वेषनो महीमा देख ॥ उदयन सरिखारे मुज पाए नम्यारे ॥ तो ए मोटो वेष ॥वा०१२॥ हवे हुं मुंकुरे तो मुज

सारिखोरे ॥ अधम पुरुष नही कोय ॥ राखी न शके रयण चिंतामणीरे ॥ मूरख कहीये सोय ॥वा०१३॥ धन धन जगमांरे वेश यति तणोरे॥माने मोटा लोक॥ ते पामीनेरे जो हवे मुंकीयेरे ॥ तो जमवारो फोक ॥ वा०१४॥ रमत मांहेरे जो आव्यो उदेरे ॥ तो एही आ धार ॥ भाव धरीनेरे हवे आराधशुंरे ॥ लहीशु भवनो पार ॥वा०१५॥ चारित्र राख्युं लंठे दृढ थइरे॥जोवो महिमा वेष ॥ वेष सुरिति राखे इणीपरें धर्मनेरे ॥ उप देशमाळा देख ॥वा०१६॥ यतः ॥ धर्म रखइ वेसो ॥ सकइ वेसेण दिख्योमिअहं ॥ उमग्गेण पडंतं ॥ रखइ राया जण वयत्व ॥१॥ ढाळ पुर्वनी ॥ राजा राखेरे लोक अन्याए चालतारे ॥ तिम ए वेष निहाळ ॥ कहे जिनहरष लजाए वेष न मुंकीयेरे ॥ ब्यासीमी ए ढाळ ॥वा०१७॥ सर्व गाथा १८३७.

ढाळ ८४ मी.

दुहा ॥ वेष लेइ मुनिवर तणो ॥ संके करतो पाप ॥ रखे कोइ भुंडो कहे ॥ वेष तणो ए व्याप ॥१॥ नटुअइ राजाने कहे ॥ आण्यो मुनीवर वेष ॥ वेशे ते हने तारीयो ॥ ऐयो वेष अलेख ॥२॥ इण वेशे आ

गे घणा ॥ तारयां बहु नर नार ॥ परलोकें सुख पा
मीया ॥ संप्रति राय विचार ॥ ३॥

ढाळ ॥ आज हुओं सुविहाए ॥ ए देशी ॥ सुण
ज्यो ते संबंध ॥ भीखारी पूरव भवेए ॥ घर घर मांगे
भीख ॥ तोही तृपतो नवि हुवेए ॥ १॥ इण अवसर दुर
भक्ष ॥ पमीयो कोइ न ऊधरेए ॥ भीखारीने कोण ॥
आपेरी राय करेए ॥ २॥ गळ मही नाखें ठेल ॥ देइ
धक्का काढे पराए ॥ हांकी काढे दूर ॥ जिम हांकीने
कुतराए ॥ ३॥ श्रावक मुनीने तेम ॥ आपे भात पाणी
घणांए ॥ वळी झाझां पकवान ॥ पोंखे पात्र सुहामणां
ए ॥ ४॥ एक दिन मुनी आहार ॥ वहिरिने पाछा वळे
ए ॥ संप्रति नृपनो जीव ॥ रीव करे मुनी आगळेए ॥
॥ ५॥ भूखे भाग्यो अंग ॥ स्वामी हुं न खमी शकुंए ॥
द्यो कटको गुणवंत ॥ प्राण रहे ए तुम थकुंए ॥ ६॥ दु
खीयो देखी दयाळ॥ मुजने आपो कोळीयोए ॥ तुमने
थास्ये धर्म ॥ ऊगो रहेशे खोळीयोए ॥ ७॥ भीखारी सु
ण वात ॥ साधु अखे आपुं नहींए ॥ नहीं अमचो आ
चार ॥ लोक करे होला सही? ॥ ८॥ संग्रह करवु था
य ॥ लेवानी संख्या टळेए ॥ न रहे मुनीवर धर्म ॥

भीक्षाचर बहुला मिलेए ॥९॥ इम्युं कही मुनी जाय ॥ भिक्षारी केमे थयोए ॥ पेठा रिषि पोशाळ ॥ बाहिर ते वेशी रह्योए ॥ १०॥ गोयरीया आलोय॥गुरुने कहे स्वामी सुणोए॥ भिक्षाचर एक वार ॥ अन्न मागे छे आपणोए॥ ११॥ आप्या विण न दिवाय ॥ पण करुणा आवी घणीए॥गुरु कहे तेमी मांह ॥ लावो भिक्षारी भणीए ॥ १२॥ द्रुमक भणी तीहां तेम ॥ गुरु पुछे करुणा करीए॥श्युं मागे छे बाळ॥भूख पीडे प्रभु आकरीए ॥१३॥ अन्न विना रिषिराज ॥ काया धूजे लडथडेए॥ मुख बोल्यो नवी जाय ॥ आंखे अंधारां पडेए॥ १४॥ गुरु कहे सांभळ वात ॥ अम सरीखो जो थीयेए ॥तो तुजने भरपूर ॥ आहार पाणी आपीयेए ॥ १५ ॥ तो करो कवण विचार ॥करवुं होए ते मुज करोए॥ पण ए पापी पेट ॥ एक वार ठांसी भरोए ॥१६॥ मानीश तुम उपगार ॥ दीन दयाळ तुमे देइए ॥ चउराशीमी ढाळ ॥ कहे जिनहर्ष पूरी थइए ॥ १७॥ सर्व गाथा १८५७.

ढाळ ८५ मी

दुहा॥ वेगे तुम सरीखो करो ॥ शिष्यो करो हवे

सोंच ॥ भिक्षाचरने मस्तके ॥ ततखिण कीधो लोच ॥१॥ साळ दाळ पकवान वहु ॥ आपे तास आहार॥ भोजन सरस कीया पछी ॥ वेदन पेट अपार ॥२॥मिल्या जति विवहारीया ॥ ऊखद करे अनेक ॥ गळे ग्रही जे काढता ॥ तेहिज नर सुविवेक ॥३॥ उत्तम तेल लेइ करी ॥ भेळी मांही सुंठ ॥ चोळे पेट भली परे ॥ चोळे वांसो पुंठ ॥४॥ देखी भगति सोहामणी ॥ नव दिख्यत अणगार ॥ चिंते पोते माहरी ॥ पुन्य नही भाजार ॥५॥ साधु धर्म आव्यो उदय ॥ चिंतामणी सारिख ॥ पण हुं पाळी नवि शक्यो ॥ मुगती दायिनी दीख ॥६॥ बाह्य वेष यति तणे ॥ एहवां फळ इह लोक ॥ जीजीकार करे सहु ॥ तारे पण परलोक ॥७॥

ढाळ ॥ स्वामी भुजंग म ताहरो ॥ए देशी॥ पुन्य प्रवळ पोते नहीं ॥ पूरो न लह्यो आव ॥ धर्म आराधी नवि शक्यो ॥ इम करे पश्चाताप ॥पु०१॥ एहवे ध्याने चड्यो ॥ कर्यो तिहांथी काळ ॥ बिंदुसार नामे थयो ॥ नृप जस तात कुणाल ॥पु०२॥ संप्रति नाम बोलावीयो ॥ जात मात्र लह्यो राज ॥ जिनवर बिंब भरावीया ॥ कोडि सवा पुन्य काज ॥पु०३॥ लाख सवा

ढाळ ८७ मी.

दुहा ॥ भीम भणी मंत्री कहे ॥ तुं मुज साहमी सार ॥ आगळ मुंकी तेहने ॥ पंच सयां दीनार ॥१॥ भीम कहे मंत्री सुणो ॥ मुजने लेवा नीम ॥ इम कही त्याथी चल्यो॥आव्यो निज घर भीम ॥२॥ हीयडामां चिंता घणी ॥ नारीअ छे ब्रतार ॥ व्रढे को जीपे नहीं ॥ ते आगळ नर नार ॥३॥ बहु बोली अती आकळी ॥ फेरी दीये जबाप ॥ रहे सदा रीसे भरी ॥ उपजाये संताप ॥४॥ भसी भसे जिम कूतरी॥बोले बणु कुजात ॥ भार्य बहु बोला नही ॥ रुडा जगमां सात ॥५॥ नारी शेवक ठीकरो ॥ मूरख शिष्ण मुनिराय ॥ निरधन माणस सातए ॥ बहु बोला न सुहाय ॥६॥

ढाळ ॥ चतुर सनेही मोहनां ॥ए देशी॥ बहु बोली भीमा तणी ॥ नारी निपट करारीरे ॥ मनमां बीहीत थकी ॥ वढश्ये ते हतीयारीरे ॥व०१॥ पुण्य काज शत्रुंजय जइ ॥ में खरच्या सहु द्रामोरे ॥ तेहने कहीशुं घर जइ ॥ मुज नही राखे मामोरे ॥व०२॥ स्त्रीने कहे ते बीहतो ॥ सुण कुळवंती नारीरे ॥ सेत्रुज सामि जुहारीया ॥ खरच्या द्राम विचारीरे ॥व०३॥ भीम

तणे पुन्ये करी ॥ बोली अमृत वाणीरे ॥ उत्तम लिख
मी तुम तणी ॥ धरम ठाम खरचाणीरे ॥व०४॥ भीमा
नी चिंता टली ॥ नारीनो भय भाग्योरे ॥ नारी कुलं
ठ थइ भली ॥ रंग धरमशुं लाग्योरे ॥व०५॥ एक दि
न खीलो गाधनो ॥ बाहिर निसरी पडीयोरे ॥ भूमी ख
णी वेसारवा ॥ मांहीं थकी धन जडीयोरे ॥व०६॥पां
च हजार सोवन भर्यो॥कळस एक निरखेईरे ॥ ए धन
तुज कलपे नहीं ॥ सत्रुंजय गयो लेईरे ॥व०७॥ वा
हमदे पासे जइ ॥ मुंक्यो कळस विशाळोरे ॥ पुन्य ठा
न ए धन करो ॥ मुंज नहीं काम दयाळोरे ॥व०८॥
वाहम मंत्री चिंतवे ॥ एहने अलप संसारोरे ॥ लाधुं ध
न राखे नहीं ॥ ए उत्तम निरधारोरे ॥व०९॥निरधन न
र धन पामीयुं॥भुख्यो भोजन भाणोरे ॥ कामी पामी
कामिनी ॥ त्यजतां दुःकर जाणोरे ॥व०१०॥ ए नि
रधन धन धन तजी ॥ अवर न को इण तोलेरे ॥ म
धुरे वचने भीमने ॥ बाहमदे मंत्री बोलेरे ॥व०११॥
भीम सुणो मुज वातमी॥ए धन कां नवि राखोरे ॥ तु
ज भाग्ये आवी मिल्यो ॥ दुख पामे धन पाखोरे॥व०
१२॥ खोड नहीं ए धन लेतां ॥ वार वार कहेवायो

॥ इच्छा ए वाहड तणी ॥ जिम तिम सुखीय। थाये ॥व०१३॥ भीमा लव लव छोमी दे ॥ जा घर लेइ निधानोरे ॥ वयण कहे इम दुहवी ॥ हित वांछक प्रधानोरे ॥व०१४॥ वैद्य जेह उपगारीयो ॥ कडुओ ओषध आपरें ॥ रोगीने साता भणी ॥ रोग कायाना कापे ॥व०१५॥ तिम कूडो हित कारणे ॥ बोले पर उपगारीरे ॥ ढाळ सत्याशीमी थइ॥ कहे जिनहरष विचाररे ॥व०१६॥ सर्व गाथा १९७४.

ढाळ ८८ मी.

दुहा ॥ वृक्षमां कडुओ लींबडो॥ पण शीतळ परिणाम ॥ रोग सर्वने अपहरे॥ आवे सघळे काम ॥१॥ लींब सरीखो वाग भट ॥ उपगारी हितकार॥ भीम भणी कहे बहु परे॥ ले धन म कर विचार ॥२॥ भीम न ल्ये बोले नहीं ॥ व्रत उपर निज ध्यान ॥ मुजने तो पचखाण छे॥ लीयण अदत्तादान ॥३॥ व्रत खंडुं नही माहरो॥ ज्यां लग घटमां प्राण॥ नतक्ष थयो सुर तेटले॥ कवड यक्ष कहे वाण ॥४॥ भीमा ए धन ताहरो ॥ लेतां नही व्रत हाण ॥ खाओ खरचो विलसो ॥ म करो ताणां ताण ॥५॥

ढाळ ॥ मुज हीयडुं हेजाळुं ॥ए देशी॥ सुर वच
ने भीमो खुशी ॥ घणुं थयो मन मांहीं ॥ वाहड मंत्री
शुं मिली ॥आव्यो घरे उछांहीं ॥सु० १॥ सुखीयो भी
म थयो घणुं ॥ श्रीजिन धर्म पसाय॥पाळे व्रत चित
उजळे ॥ खरचे द्रव्य सुठाय ॥सु० २॥ भावे सत्रुंजय
चडे ॥ जिनवर पूजे त्रिकाळ ॥ पोखे चोखे चित पा
वनें ॥ जीव दया प्रतिपाळ ॥ सु० ३॥ धन धन ते न
र नारीयां॥धन लहो पोखे सुपात्र॥वळी धन जीव्युं रे
तेहनुं॥जे करे शत्रुंजय जात्र ॥सु० ४॥ श्री मुख जिन
वर इम कहे ॥ तीरथमां सिरदार॥साधु अनंता आग
थया ॥ इण गिरि पाम्या पार ॥सु० ५॥ सुरजकुंड भी
मकुंडमां ॥ नाह्या नहीं नर जेह ॥ गीतारथ गणधर
कहे ॥ मेला तेहना देह ॥सु० ६॥ रिसहेसर जिनमां
. वडो ॥ मंत्र मांहे नवकार ॥ सहु तीरथ मांही जोवतां
॥ शत्रुंजय शिरदार ॥सु० ७॥ न करी शत्रुंजय जातरा
॥ नवि कीधो उद्धार॥ निज धन तिहां खरच्यो नहीं
॥ तिणे हार्यो अवतार ॥सु० ८॥ जाणी पुण्य वाहड
तिहां ॥ मंडाव्यो उद्धार ॥ उंचुं अती रळीयांमणो॥ वा
ड वळी वीसतार ॥सु० ९॥ काम चलावी प्रासादनो ॥

पाटण आव्यो मंत्रीश ॥ पूरुं भुवन थयुं जिशे ॥ आ
व्यो वधामणी इश ॥सु०१०॥ दैरख्या मन मांहीं मंत्र
वी ॥ सोवन जिभ बत्रीश ॥ आपी वळीय वधामणी॥
आवी बीजे दिश ॥सु०११॥ श्री जिनभुवन ढळी प
मर्युं ॥ हरख अशाता मन्न ॥ दीध वधामणीया भणी
॥ चोसठ जीभ सोवन्न ॥सु० १२॥ दुख ते भुवन कर्युं
पमर्युं ॥ ढळ्यो जीवंतां सुख तेह ॥ हवे कराउं फेरी
वळी ॥ जिम चिरकाळ रहेह ॥सु०१३॥ मंत्री इशुं वि
माशीनें ॥ चाल्यो धरीय विवेक ॥ श्री शत्रुंजय आवी
यो ॥ शीलावट तेमव्या अनेक ॥सु०१४॥ पूछ्यो मं
त्री शिलावटां ॥ किम पमर्युं जिनगृह एह ॥ देवळ पव
न वशे पमर्युं ॥ म धरो मन संदेह ॥सु०१५॥ हवे चउ
वारो करुं भलो ॥ मीठो जिन प्रासाद ॥ निश्चल कही
ये चले नहीं ॥ करे गगनशुं वाद ॥सु०१६॥ पण एक
दोष मोटोअ छे ॥ पाछळ न हुवे संतान ॥ ढाल अ
ठ्याशीमी ए थइ ॥ कहि जिनहरप प्रधान ॥सु०१७॥
सर्व गाथा १९४६.

ढाळ ८९ मी.

दुहा ॥ सुणो शिलावट माहरो ॥ वचन कहुं मन

रंग ॥ फिकर नहीं मुज सुत तणी ॥ कर प्रासाद उतं
ग ॥१॥ पुत्र अने पुत्री घणी ॥ जेहने केडे होय ॥ मर
तां मात पिता तणे ॥ केडे नावे कोय ॥२॥ जो त
हाए कुलक्षणो ॥ तो कुळ खंपण कहेवाय ॥ खोवे ना
म पिता तणो ॥ जेहथी उजम थाय ॥३॥ सरीये मा
यों बापने ॥ कोणीक पिता विनास ॥ कंस पिताने दु
ख दीयो ॥ पुत्र नहीं ए पास ॥४॥ माय ताय बेटा
वहु ॥ भाइ बहेन कुटंब ॥ सगा सणीजा वालहा ॥ ए
सहु जगत विटंब ॥५॥ पुण्य पाप लेइ करी ॥ प्राणी
जाश्ये उठ ॥ सहुको बेठा जोयश्ये ॥ कोइ न जाश्ये
पुंठ ॥६॥ स्वारथ लगे सहुको सगो ॥ स्वारथ लगे म
हु नेह ॥ जब स्वारथ पोहोचे नहीं ॥ तबही दिखावे

ढाळ ॥ महाविदे खेत्र सोहामणो ॥ ए देशी ॥ तिणे
कारण तमो कीजीये ॥ चउ बारो प्रासाद लालरे ॥ रु
मा ने रळीयांमणो ॥ दीठां चित्त आल्हाद लालरे ॥ ति०
१॥ तुरत निपाव्यो देहरो ॥ दीपे तेज दिणंद लालरे
॥ बार इग्यार शनिवासरे ॥ बेठा रिषभ जिणंद लालरे
॥ ति० २॥ दंड कळस ध्वज जळहळे ॥ इंद्रभुवन आ

कार लालरे॥ हेमसुरीस मतिष्टियो॥ओछव करिय अपा
र लालरे ॥ति०३॥ चोवीस गाम पूजा भणी ॥ खर
चाये तिहां दाम लालरे ॥ गाम वसाव्यो तलहटी ॥
वाहडपुर इण नाम लालरे ॥ति०४॥ तिहां एक करा
वीयो॥ त्रिभुवनपाळ विहार लालरे ॥ पास जिनेशर
थापीया ॥ वरत्यो जय जयकार लालरे ति०५॥ ध
न धन वाहड मंत्रवी ॥ सफळ कीयो अवतार लालरे
॥तिहांथी चुंपे चालीयो॥ आव्यो गढ गिरनार लालरे
॥ति०६॥ आराधी अठम करी॥ अंबादेवी नाम लाल
रे ॥ आवी वाहडने कहे ॥ मुज समरी किण काम
लालरे ॥ ति०७ ॥पाय लागी मंत्री कहे ॥ इच्छा क
रवा पाज लालरे ॥ देवी कहे तुं तिहां करे ॥ चोखा
नाखुं आज लालरे ॥ ति०८ ॥ देवी वचन कह्यो जे
टले ॥ साळि तणी थई ढेरी लालरे ॥ सुभ म
हुरत लेइ तिहां ॥ पाजा करावे सुद्ध लालरे ॥ति०९
॥ दोय कोडी लाख सत्ताणके ॥ सोवन टंका मान
लालरे॥ तिहां लगाड्युं एटलुं ॥ धन वाहड परधान
लालरे ॥ति०१०॥ वाहडदे उदयन तणो ॥ उतार्यो
शिर भार लालरे॥ पुत्र जण्यो परमाण॥ने वार न

लोपे कार लालरे ॥ ति० ११॥ आव्यो पाटण गहगही ॥ लेई सुजस अपार लालरे ॥ कुमरपाळ भूपाळने ॥ आवी कीधा जुहार लालरे ॥ति० १२॥ डंडनायक अंबड कीयो ॥ कीधां तीनें काम लालरे ॥ कुळ दीपाव्युं आपणुं ॥ राख्युं उदयन नाम लालरे ॥ति० १३॥ अंबड नृपने पूछीने ॥ जाये भरुअच मांही लालरे॥ श्री मुनीसुव्रत देहरे ॥ आव्यो अधिक उछांह लालरे॥ति० १४॥ जिन मंदिर रळीयांमणो ॥ सामळीया विहार लालरे ॥ नाम इश्यो किण कारणे ॥ सुणज्यो तेह विचार लालरे ॥ति० १५॥ समळी एक इणे थानके ॥ वेठी तरुअर माळ लालरे ॥ आहेंडी सर सांधीयो ॥ वींधी ते ततकाळ लालरे ॥ति० १६॥ किणे श्रावके तेहनें ॥ संभळाव्यो नवकार लालरे ॥ तेह मरी थइ कन्यया ॥ शुक नृप घर अवतार लालरे ॥ति० १७॥ पंच परमेष्टी सुणी लसो ॥ जातिसमरण सार लालरे ॥ तिणे कराव्युं देहरुं ॥ नाम सामळीया विहार लालरे ॥ति० १८॥ अंबड देखी देहरो ॥ पाम्यो हरख विशाळ लालरे ॥ कहे जिनहरष पूरी थइ ॥ नव्याशीमी ढाळ लालरे॥ ति० १९॥ सर्व गाथा १७७२.

ढाळ ९० मी.

दुहा ॥ पण जिन मंदिर जाजरुं ॥ अंबम नय
ण निहाळ॥ फेरी नवो कराइवा ॥ तुरत थयो उजमाळ
॥१॥ तेमव्या चतुर सिलावटा ॥ मांमी राग विसाल॥
कोपा देवी नरवदा ॥ चांप्या पुरुष पयाळ ॥२॥ बो
ली वांधी वाकरी ॥ भाखे वयण कसूर ॥ देवळ जेह
करावशे ॥ मारी करुं चकचूर ॥३॥ मंत्री मन वीहनो
नहीं ॥ चलतो कीधो काम ॥ साहस देखी नरवदा ॥
वयण पयंपे ताम ॥४॥ अंबड तुं उत्तम पुरुष ॥ साह
सीक सतवंत ॥ कर जिनभुवन सुहामणो ॥ हुं तूठी ब
ळवंत ॥५॥

ढाळ ॥ नाभी अने मरुदेवी हीयडले हरष अ
पार ॥ए देशी॥ वळवाकुळ-उछाळे लगन शुभ, मुहुरत
वार॥ श्री जिनभुवन करावीयो ॥ उंचो हाथ अढार॥
संवत वार वीसांतरे ॥ कीधो सामळीया विहार ॥ श्री
मुनीसुव्रत थापीया आपीया द्रव्य अपार ॥१॥ संघ
घणा आवे मन भावे थरीय आणंद ॥ कुमर नरेश्वर
आवीया ॥ आवीया हेमसुरिंद ॥ बिंब नतिदा तिहां
करी ॥ बहु परे खरचीया दाम ॥ थापी मूरति सूरति

सुंदर मुगतिने काम ॥२॥ मंत्री उतारी आरती ॥ सुम
मति कुमर नरिंद ॥ चामर विंजे रीझे देखी जिन मुख
चंद ॥ अंबम हरसि वरसे दान जिम जळधार ॥ आर
ती वेळा लाख बत्रीस सोवन दीधा सार ॥३॥ अंबम
देवळ श्रृंगे चडीयो हरष धरंत ॥ दंड धजा तळे आ
वीयो भावीयो नृत्य करंत॥नाचंतो उघामे मस्तके छ
ळीयो मंत्रीस ॥ कोपी देवी सींधवा गरुअच कोरी अ
धीश ॥३॥ जाण्युं हेमसुरीसर ईसर देवी विरतंत ॥ दे
वी देवळ आवी ठावी काउसग करंत ॥ तोही देवी को
प न मेल्हे चेलणो नाम ॥ ओखल चावल खांडतां धू
जे देवल ठाम ॥४॥ तो ही न माने सींधवा मार्यो खी
लो ए घाय ॥ थरहरी देवी मूरति तोही कोप न जाय
॥ मंत्रनो जाप संभारीयो मारयो तीसरो घाय ॥ आ
वी चोसट जोगणी लागी श्री गुरु पाय ॥५॥ तारा१
त्रिपुरा२ तोतला३ तुलजा४ महीपला५ तारण६ ॥ हीं
गोला७ हरसिद्धी८ हीमाली९ दुख वारण ॥ चामुंमी
१० चंमी११ ने चंडिका१२ खपरा१३ देवी॥ सिंघ
वाहिनी१४ दुरगा१५ खोजा१६ नरसेवी१७ ॥६॥
खोमीयारी१८ वारीही वागेश्वरी१९ महा . मा२० ॥

अंबा२१ महाकाळी२२ कंकाळी२३ अंबाई२४ आई ॥ सिंधवाने२५ सचीयाय२६ ॥ साकळी२७ मात्र२८ मातंगी२९ ॥ कामाक्षा३० कामरा३१ जगदंबा३२ व इत्त सुरंगी ॥ ७॥ धनुषधरी३३ ज्वाळामुखी३४ स्त्रवभ खी३५ सुर सेवी ॥ मात भवानी३६ भद्रका३७ गारी ३८ अविका देवी३९ ॥ मघभरी४० वळीय वरुची ४१ गहिली४२ ने वहिरी४३ ॥ आशापुरी४४ पदमा यती४५ कालिका४६ ब्रलाणी४७ पहिरी॥ ८॥ विजया ४८ ने गिरिजा४९ चोरवामी५० भैरवी५१ काला५२ ॥ लीलावती५३ उर्वसी५४ कालिंगी५५ करे बहु चा ळा ॥ हरिसिद्धी५६ वीरसिद्धी५७ गोरज्या५८ उमया ५९ उसंडी ॥ नर्बदा६० गिरि देवी६१ सरवाणी६२ महा देवी६४ मुंनी६४ ॥ ९॥ वांधी चोसठ योगिणि जो गिणी करे पुकार ॥ छोमो त्रोमो बंधन सूरी करी अम्ह सार ॥ दीन वचन भाखे मुख देवी पाय नमेवी ॥ तु जग जीव तणो प्रतिपाळक तुम पाय शेवी ॥ १० ॥ हेमसूरी कहे सीधवा अंवग मन्नी कां छळीयो ॥ सु कृत काम करंतमां कीधो विघन वळीयो ॥ देवी ताम कहे हुं किंकर अवम केरी ॥ ए माहरो अपराध वि

राथी करुं नही फेरी ॥११॥ छोमी ताम कृपा करी देवी मुनी पाए लागी ॥ हम मसंस्यो धन धन मुनीसर तुं वडभागी ॥ वियन निवारयां अंबम केरां हम पसाय ॥ पुन्य दृटी करी देवी निज घरे सघळी जाय ॥ १२॥ आव्या अंबम कुमर सूरोसर पाटण मांहि ॥ गुरु व्याख्यान सुणे नर नृप अधिक उच्छांहि ॥ सुगुरु कहे सुणो कुमर नरेशर एक चित्त होय ॥ सोळ ससा बहु पुन्ये लहीये सांभळो सोय ॥१४॥ सगुरु शेवा ने सुकुळ जनम संघ भगति सदहिणा ॥ सुद्रव्य सेत्रुंज जात्र सुपात्र मुनीसर लहिणा ॥ सात खेत्र सत्य वचन सुमति समाधान सरीर ॥ समकित सील सिद्धांत साहस गुण संघपति धीर ॥ १५॥ सोळ ससामां संघपति अधिको जिनवर भाखे ॥ श्री शत्रुंजय संघ कढावे नामना राखे ॥ इंद्रमाळ पहिरीने संघवी नाम धरावे ॥ कहे जिनहरख ढाळ थइ निवई गुणीयण गावे ॥१६॥ सर्व गाथा १७७३.

ढाळ ९१ मी

दुहा ॥ व्रतधर श्रावकमां वडो ॥ ते मुनी पाय पडत ॥ मुनी आचारजने नमे ॥ आचारज अरिहंत

॥ १॥ अरिहंत संघ भणी नमे॥संघमां संघवी सार ॥ ते संघवीपद पुन्ये हुवे॥शेत्रुंज जात्र उदार ॥ २ ॥अन्य तिरथ खट मास लगे॥सेव्यां पुण्य प्रकास ॥ शेत्रुंजय एक खिण रहे ॥ तेहथी अधिकुं तास ॥ ३॥ नंदीसर यात्रा करे ॥ युगम गुणु फळ होय ॥ कुंडळद्वीप जुहारतां ॥ भ्रांति म धरज्यो कोय ॥४॥ रुचकद्वीप त्रिगुणुं हुवे ॥ पुण्ये जुहारया देव ॥ पुन्य चउगुणुं तेहथी ॥ गजदंता नी सेव ॥ ५॥ तेहथी बिगणुं पुन्य हुवे ॥ जंबु विरखें जाय ॥छ गुणुं देव जुहारतां॥धातकी खंडे थाय॥६॥ पुण्य बावीस गुणुं हुवे ॥प्रणम्यां पुष्करद्वीप ॥ सात गुणुं कनका चळे ॥ सदगति होय समीप ॥७॥ सहसगुणुं पुन्य ते लहे॥ समेत शिखर गिरि भाप ॥ लाख गुणुं अंजनगिरे ॥ अष्टापद दस लाख ॥८॥ कोडी गुणुं पुन्य तेहथी॥शेत्रुंज करतां जात्र॥ देवजुगादि जुहारतां ॥ पवित्र हुवे निज गात्र ॥९॥.

ढाळ ॥ श्री विमळासिरि सिर तिलो ॥ए देशी॥ सकळ तीरथ सीर सेहरो ॥ शेत्रुंजय अभीराम ॥ पाप पूरवला सहु खपे ॥ जपतां तीरथ नाम ॥स०१॥ चालें छहरी पाळतां ॥ निरमळ समकित शिळ ॥ भेटे तीरथ

आवशुं ॥ ते नर पामे लील ॥स०२॥ सूरजकुंम भीम
कुंममां ॥ नाही निरंमळ निर ॥ पूजे जिनवर प्रेमशुं॥
पावन होय शरीर ॥स०३॥ सात,छठ अठम वळी ॥
उपरे सहु चउविहार ॥ विकथा आरंभ,परिहरी ॥ ला
ख गणे नवकार ॥स०४॥ वे गति छेदे मूळथी॥वे गति
मां अवतार ॥ पशु पंखी जे जीवमा ॥ शेत्रुंजय गति
सार ॥स०५॥ पंच भरत ऐरवत मांहे ॥ महाविदेह म
झार ॥ तीरथ शेत्रुंजय सारिखो ॥ नहीं कोइ हीयमे
विचार ॥स०६॥ पहिली इण गीरी आवीया ॥ संघवी
संघ अभिराम ॥ जीर्ण उद्धार-करावीया ॥ तेहनां सु
णज्यो नाम ॥स०७ रुषभ वचन भरते कीयो ॥ सोवन
मे प्रासाद ॥ प्रथम भरत संघवी थयो ॥ मुंकी सहु वि
खवाद ॥स०८॥ भरत परे संघपति थया ॥ कोमि नव्वा
णुं राय ॥ लाख नव्वाणुं उपरे ॥ सहेस चोरासी थाय
॥स०९॥ भरत पाटे आदितजशा ॥ महाजशा वळ
वत ॥ अतिवळ पाटे तीसरे ॥ महावळ चोथे हुंत ॥
स०१०॥ वळवीर्य पाटे पांचमे ॥ कीर्त्तिवीर्य जळवीर्य
॥ ए साते नृप सारीखा ॥ सवळो जेहनो धैर्य ॥स०
११॥ भरत अने साते विचे ॥ वीत्यां पूरव कोम ॥ द

डवीर्य पाटे आठमे ॥ कीयो उद्धार सजोम ॥स०१२॥ भरत परे संघवी थयो ॥ जग मांहे जस लीध ॥ इंद्र प्रसंश्यो जेहने ॥ निरमळ निज कुळ कीध ॥स० १६॥ रिषभ तणा आठ पाटवी ॥ भुवन आरिसा मांही ॥ भरत तणी परे केवळी ॥ ए थया परम उछांह ॥स०१४॥ ते वार पछी त्रीजो कर्यो ॥ इशानेंद्र उद्धार ॥ चोथो उद्धार करावीयो ॥ माहेंद्र उदार ॥स०१५ कीधो उद्धार पांचमो ॥ पांचमो ब्रह्मेंद्र जेह ॥ चमरेंद्र छठो करावीयो ॥ सगर सातमो तेह ॥स०१६॥ कोडी पंचास थया भला ॥ वळी पंचाणुं लाख ॥ सहेंस पंच्योतेर संघवी ॥ सगर वारे ए भाख ॥स०१७॥ दस कोडी लाख सोहामणा ॥ बीस लाख थया उद्धार ॥ सगर समे बीब थापीया ॥ रतन कनकमय सार॥ स०१८॥ व्यंतर इंद्रे आठमुं॥ भुवन कराव्युं सार ॥ चंद्रजशा राजा थयो॥ नवमो तास उद्धार ॥स०१९॥ दशमो चक्रधर रायनो ॥ राम इग्यारमो जाण ॥ कहे जिनहरष पूरी थइ ॥ एकाणुं ढाळ वखाण ॥स०२०॥ सर्व गाथा २०२२•

ढाळ १२ मी.

दुहा ॥ पांडव संघ करी गया ॥ शेत्रुंजय सिरदार ॥ तिणे कराव्यो ऊमही ॥ द्वादशमो उद्धार ॥१॥ बींब कराव्यो काष्टमें ॥ लेपमें प्रतिमा कीध ॥ दीक्षा ग्रही केवळ लही ॥ थया शेत्रुंजे सिद्ध ॥२॥ पांमव वीर विचे वरस ॥ सहस चोराशी जाय ॥ वीर पछी विक्रम नृपति ॥ च्यारसें सितेर थाय ॥३॥ एकसो आठे वत्छरे ॥ विक्रमथी सुविचार॥जावड शेठ करावीयो॥ ए तेरमो उद्धार ॥४॥ पांमव जावम विचे थया ॥ संघवी पंचवीस कोम ॥ लाख पंचाणुं सहेंस वळी ॥ पंच्योत्तर सुजोम ॥५॥

ढाळ ॥ भलेरे पधार्या तुम्हे साधुजीरे ॥ए देशी॥ संवत बार चउदोत्तरेरे ॥ मंत्री वाहमदे सुविचाररे ॥ श्री शत्रुंजय शोभतोरे ॥ कीधो चउदो जिणे उद्धारों ॥ धन धन ते नर जाणीयेरे ॥१॥ जिणें कीधा तीरथ उद्धाररें ॥ मानव भव लाहो लीयोरे ॥ छेद्यां पूरव करम अपाररें ॥ध०२॥ संवत बार व्यासीयेरे ॥ होश्यें संघवी वळी वस्तपाळरें ॥ संघ करश्यें शेत्रुंज तणोरे ॥ विस्तरश्यें कीर्त्ति विशाळरे ॥ध०३॥ कोमी अ

द्वार वित वावरेरे ॥ उपरे लाख गुणचालीशरे ॥ हेम टका जिणे तीरथेरे ॥ रुडा खरचे अधिक जगीसरे ॥ ध०४॥ एकत्रीस कोडी सोवन भलारे ॥ उपर अधिका लाख छत्रीसरे ॥ आबू गिरनारे खरचीयारे ॥ संहु जाणे वीसवावीसरे ॥ध०५॥ लाख सवा जिनवर तणांरे॥रुमा बिंब भराव्या वस्तपालरे॥ संवत तेर इकोत्तरे ॥ साह समरो थाश्ये तिण कालेरे ॥ध०६॥ करश्ये उद्धार ते पन्नरमोरे ॥ समरा जावड विचे संघपतिरे ॥ त्रिण लाख सहस चोराशीयारे॥ हुंडुं पाळे जे समकितरे ॥ध०७॥ सतर सहेंस सोभागीयारे ॥ बारु संघ थया भावसाररे ॥ सोळ सहेंस क्षत्री थयारे ॥ वळी ब्राह्मण पनर हजाररे ॥ध०८॥ बार सहस कौटंबिकारे ॥ लेउआ कणबी थया नव सहेंसरे ॥ पांच सहेंस पीसताळीशगुंरे ॥ संघवी जाते कंशारा जस्सरे ॥ध०९ ॥ संवत पनर श्याशीयेरे ॥ होश्ये करमो शाह सिरदाररे ॥ धन खरची उलट घणोरे ॥ करशे शोळमो उद्धाररे ॥ध०१०॥ जे पुण्यवंत नर होश्येरे॥ जाश्येश्शे त्रुंज केरी जात्ररे ॥ जेह सुखेने वित वावरश्येरे ॥ न हुवे तेहने दुरगति पातरे ॥ध०११॥ दान न दीधुं शेत्रुं

जे जइरे ॥ पाळयुं शील न पोरुयां पात्ररे ॥ तास जन्म अहिल गयोरे ॥ नवि कीधी शेत्रुंजनी जात्ररे ॥ध. १२॥ जिन प्रतिमा जिन देहरुंरे ॥ न करव्यां जिणें दी नोद्धाररे ॥ शेत्रुंजगिरी चढीया नहीरे ॥ एळे तेहना गयो अवताररे ॥ध०१३॥ सिद्ध अनंता इहां थयारे॥वळी थाइये आग अनंतरे ॥ शत्रुंजय महिमा घणोरे ॥ इम भाखे श्री भगवंतरे ॥ध०१४॥ ए गिरीना गुण गावतारे ॥ कोइ पामी न शके पाररे ॥ बाणुं थइ ढाळ ए दसेरे ॥ जिनहरष भणे अधिकाररे ॥ध०१५॥ सर्व गाथा २०४२.

ढाळ ९३ मी

दुहा ॥ श्री शत्रुंजय गुण घणा ॥ कहेतां किम कहेवाय ॥ इंद्र सरिखा देवता ॥ ते पण पार न जाय ॥१॥ रिषभ जिणंद समोसरया ॥ पूरव नवाणुं वार ॥ तिणे ए तिरथ मोटको ॥ सहु तीरथमां सार ॥२॥

ढाळ ॥ अविका ताहरा हुंता अपराधो ॥ ए देशी ॥ शत्रुंज भेटीये ॥ भावे भव्य प्राणी ॥ भवनां पातिक नासे ॥ मुगतितणां सुख हेजे लहीये ॥ श्री जिनवर इम भाषे ॥शे०१॥ गणधर श्री पुंडरिक प्रभ

म जिन ॥ चत्री पुनम दीवशे ॥ पंच कोडीशुं मुगति, पुहुता ॥ सूत्र शिद्धांते दीसे ॥शे० २॥ काति मास तणी पुनम दिन ॥ द्रविमने वारिखिल्ल ॥ मुगति गया दश कोमी मुनीग्युं ॥ मुंकी माया शल्ल ॥शे० ३॥ नमि वि नमि दोय कोडी जतीशुं ॥ कीधो शिवपुर वास ॥ फा गुण शुदि दशमी सिद्धाचळ ॥ पूगी मननी आश ॥शे० ४॥ पाट असंख्याता रिसहेसर ॥ सहु शत्रुंजय च मीया ॥ सरवारथ शिद्ध शिध्धे पुहुत्या ॥ करम शत्रु शुं लमीया ॥शे० ५॥ राम भरत दसरथना बेटा ॥ लेइ संयम भार ॥ त्रण कोमशुं शेत्रुंज शिध्या ॥ टाळ्यो जिले अवतार ॥शे० ६॥ लाख एकाणुंशुं नारद ॥ मुनी चमीया शेत्रुंज श्रृंग ॥ मुगति गया मुनीवर पाय भए मुं ॥ निज मन करे रंगे ॥शे० ७॥ सबू प्रजून कुमर केशवना ॥ संयम केवळ वरीया ॥ साढी आठ कोमी मुनीशुं ॥शिव शेत्रुंजय सचरीया ॥शे० ८॥ वीश कोडी शु पाचे पांमव ॥ मुगतिपूरी गढ लीधो ॥ श्री विमळा चळ अणसण करीने ॥ करम तणो अंत कीधो ॥शे० ९॥ थावच्चो मुनी सहेस संघाते ॥ आवी अणसण लीधो ॥ करम खपावी केवळ पामी ॥ श्री शेत्रुंजय

सिध्धो ॥शे०१०॥ सुक तापस मुनी सहस यतीशुं ॥श त्रुंज लह्यो भव पार॥ सेलक पंच सयांश्युं पाम्या॥ मु गति तणां सुख सार ॥शे०११॥ एम अनेक मुनी मु गते पुहुता ॥ कहेतां पार न लहीये ॥ वळी अनागत काळे जास्ये ॥ गिरि देखी गहगहीये ॥शे०१२॥ तीर थ घणाअ छे जग मांहे ॥ कोइ नहीं इण तोले ॥ मु गति तणो ए थानक कहीये ॥ श्री मंधर इम बोले॥ शे०१३॥ सिध्धाचळ जे जात्रा जाये॥ धनधन ते नर नारी ॥ ढाळ थई ए त्राणुं पूरी॥ कहे जिनहरष विचारी ॥शे०१४॥ सर्व गाथा २०५८.

ढाळ ९४ मी.

दुहा ॥ विमलाचळ महिमा कह्यो॥मुनीवर हेमसु रिंद॥सांभळी मन हरखीत थयो॥ततखिण कुमर नरिंद ॥१॥ तन धन जोवन कारमो ॥ जात न लागे वार ॥ वहि ते वार विमलगिरी॥जात्र करुं शिरदार॥२॥धन ख रचुं शेत्रुंज जइ ॥ पूजु आदि जिणंद॥त धन दिन स फळो गमी॥चिंते कुमर नरिंद ॥३॥ इतला दिन अहि ले गया ॥ न लह्यो तीरथ भेद ॥ हेमशुरी सुरसाउले ॥ हवे मुज थयो उमेद ॥४॥

ढाळ ॥ भरत नृप भावशुंए ॥ ए देशी ॥ करे स
जाइ नृप हवेए ॥ भेटवा तीरथराय ॥ कुमर नृप संचरे
ए॥जाणेए जइए उतावळाए ॥ हील न खमणी जाय ॥
कु० १॥ भेटुं भेटुं रिषभना पाय॥कु०हीयमे हरख न मा
य॥कु० ए आंकणी॥ गज पुंठे देवल ठव्याए॥मांहे जि
नवर बिंब ॥कु० मन वंछीत सुख पूरवाए ॥ जाणे सुर
तरु झंब ॥कु०२॥ वाहमदे सरिखा भलाए ॥ बुद्धिवंत
मंत्री चोवीस ॥कु० अढार सहेंस विवहारीयारे॥ साथे
थया जगीस ॥कु० ३॥ नगरशेठनो दीकरोए॥आभमदे
इण नाम ॥कु० सोनईया लाहण करेए ॥ श्रावक घर
जिणे गाम ॥कु०४॥ गाम नगर वासी नराए ॥ साथे
थया अनेक ॥कु० भोजन भुख्या दूबळाए ॥ आपे
आणी विवेक ॥कु०५॥ खट दरिशण साथे चल्यांए॥
सहुनी ल्ये नृप सार ॥कु० हेमाचारज हरखस्युंए॥सा

द बेहता गजराज ॥कु० इग्यारसें अति सोभताए ॥ सि
णगारया भले साज ॥कु०९॥ रतन जमीत कचन
अणीए ॥ अबाभी शोभत ॥कु० कांने चामर वीजता
ए ॥ चाले गति मलपंत ॥कु०१०॥ हीमावर करता भ
लाए ॥ हयवर लाख इग्यार ॥कु० चचळ चपळ गति
चलेए ॥ सोवन साकळ सार ॥कु०११॥ लाख अढार
पायक पुलेए ॥ रथ पचास हजार ॥कु० सोवन सी
गे वळदीयाए ॥ पाए नेवर झमकार ॥कु०१२॥ नाथ
कनक रतने जडीए ॥ कोटे घूघरमाळ ॥कु० घम घम
चाले उतावळाए ॥ मृग जिम भरता फाळ ॥कु०१३
॥ अलब धजा नृर आगळेए ॥ आठ सहेस चालत॥
कु० केइ नर वेठा पालखीए ॥ नतवाल्हा मालत ॥
कु०१४॥ संघ तणी शोभा वनीए ॥ पार नही नर नार
॥कु० व्यापारी माही घणाए ॥ निज निज करें व्यापा
र ॥कु०१५॥ पटराणी राजा तणीए ॥ भोपदेवी वनी
नार ॥कु० काया कचन सारिखीए ॥ सोळ सज्या सि
णगार ॥कु०१६॥चद्रमुखी मृग लोयणीए ॥ वेणी श्या
म भुजग ॥कु० निकलंकी सुंदरीए ॥ सुघटी अंग सुरं
ग ॥कु०१७॥ आभरणे अति ओपतीए ॥ इंद्र तणी

जाणे नार ॥कु० वनता वेश वनावीयाए ॥ नख सी ख अवल आकार ॥कु०१८॥ राणी वेठी पालखीए ॥ चावे मुख तंवोळ ॥कु० ढाळ चोराणुं ए थइए ॥क रे जिनहरष कलोल ॥कु०१८॥ सर्व गाथा २०८१.

ढाळ ९५ मी.

दुहा॥वहोतेर सामंत रायने॥केडे सुंदर नार॥रुपे रंभा सारिखी॥पहेरया सहु शिणगार॥१॥पहेर्या सुंदर शोभता॥किणइक राता चीर॥किणइक पीळा पातळा॥ झळके मांहि शरीर॥२॥किणइक धवळा पहेरीया॥झी णा बूटीदार ॥ सुरिज किरण झगमगे ॥ मुंहगा मोल अपार ॥३॥ निला वस्त्र विराजता ॥ पहेरया किणइ क नार ॥ ओपे जाणे अपछरा ॥ नहीं एहवी संसार ॥४॥ श्यान वस्त्र पहेरयां अवल ॥ गोरी घणो उछांह ॥ जाणे चमके वीजळी ॥ काला वादळ मांह ॥५॥

ढाळ ॥ चोपइनी ॥ राग कालहरो परजीयो ॥ सुंदर नारी कर्या शिणगार ॥ रुप तणो जे करे अहं कार ॥ सामलडीने गोरी हसे ॥ श्युं शिणगार करी उ लसे ॥१॥ काळी सांभळ गोरी कहे ॥ तुं आदर किहां नवि लहे ॥ करमे तुज काळी थइ देह ॥ फोकट गर

व करे शु एह ॥२॥ जो करे तु शिणगार अनंत ॥ तोही वाल्हो न हुवे कंत ॥ उभि रहे तु जिहां जिहां जाय ॥ तिहां झवक अंधारो थाय ॥३॥ सांभळ गोरी बोल विचार ॥ फोकट मद कां करे अपार ॥ काळा पाणी आदर लहे घणूं ॥ हास न करीये काळा तणुं ॥४॥ काळा गज गाजे दरबार ॥ द्रोभि देखण सहु संसार ॥ श्याम घटा करी वरसे मेह ॥ सहुने वाहलो लागे तेह ॥५॥ काळो काजळ नयणे सोह ॥ देखी नरने उपजे मोह ॥ काळी कीकी नयण मझार॥ ते पाखे सुनो संसार ॥६॥ काळो मांथे वेणी दंम ॥ ते विण शोभा नहीं अखंड ॥ कस्तुरी पण काळी होय ॥ मुंघी आदर ये सहु कोय ॥७॥ काळी कोयल मधुरो चवे ॥ शब्द सुणी हरखित सहु हुवे ॥ काळा कान्ह नेमीसर पास ॥ दरशण दीठां परम उल्लास ॥८॥ काळी देखी म हसि गमार॥मांही गुण जोइजे सार॥ गोरा जो गुणहीणा होय॥तेहने मान न आपे कोय ॥९॥गोरा वगला वगलो भमे ॥ पण कोने दीठां नवि गमे ॥ गोरा भूति मागरा होय ॥ तेहनी ठोक करे सहु कोय ॥१०॥ धोळा माणस हुए रोगीयां ॥ पूरव पापे

थथा सोंगीया ॥ गोरा माथे.देखी.मूआल ॥ वर काम णि भागे ततकाळ ॥११॥ इण वचने गोरी, धमहमी॥ रहे काळी निज ठामे पमी ॥ लोहाला सरिखो तुज वान ॥ रुप विना श्युं करे अभिमान ॥१२॥ गोरा ते प रमेशर कीया ॥ गोरामां सहु गुण आवीया ॥ सोनानो पंजर होय ॥ मांहि काग न घाले कोय ॥१३॥ किहां चांदरणो किहां अंधेर ॥ गोरी, काळी एवडो फेर ॥ काळा वायस न गमे अपार ॥ गोरा हंस अलप स सार ॥१४॥ उजळ गंगा केरो नीर ॥ जेणे थाये पवीत्र शरीर ॥ उज्जळ गयण.विराजे चंद ॥ फेडी तिमर करे आणंद ॥१५॥ गोरो इंद्र तणो गजराज ॥ सुरपति वाहन करे अवाज ॥ गोरो चुमो स्त्रीने हाथ ॥ केल करे निज प्रीतम साथ ॥१६॥ उज्जळ मोती मेंहघां मोल. ॥.पुष्प कपूर नहीं किए तोल ॥ रुपो चंदनने घनसार ॥ दूध दहीं घृत उज्जळ सार ॥१७॥ गोरी काळी कीधो वाद ॥ पए इणमां को नहीं सवाद ॥ ढाळ थई पंचाणुं सार ॥ हवे जिनहरप सुणो अधिकार ॥ १८॥ सर्व गाथा २१०४.

ढाळ १६ मी.

दुहा ॥ वारे गरढी श्रावीका ॥ नाम सरुपदे जा स ॥ नारी वाद निनेमवा ॥ भासे मधुरी भास ॥ १ ॥ पुन्य करे तीरथ जइ ॥ खरचे द्रव्य अपार ॥ कळह उवाधि वादथी ॥ तेहमां किश्यो सवाद ॥ २ ॥ पुन्य करे तीरथ जइ ॥ खरचे द्रव्य अपार ॥ पोखे उत्तम पात्रने ॥ रुपवती ते नार ॥ ३ ॥ दान दीये कर दाहिणे ॥ न कहे मुख नाकार ॥ पर उपगार करे सदा ॥ सखर वास शिणगार ॥ ४ ॥ सात ददा अंगे धरे ॥ तेहनो रुप प्रमाण ॥ दया दान इंद्री दमन ॥ दुख भंजोवा सुजाण ॥ ५ ॥ दिन वचन निज दाखवे ॥ दुरजन न गणे कोय ॥ दोलत दाछे जे हुवे ॥ सहुमां अधिकी सोय ॥ रीस म करश्यो बहेनमी ॥ तम्हे सामिणी सिरदार ॥ रुप तुमारुं सोभश्ये ॥ पुन्य थकी निरधार ॥ ७ ॥

ढाळ ॥ उठि कलालण भरे घमोहे ॥ नयणां नींद निवारे ॥ ए देशी ॥ इणे वचने हरखित थइहे ॥ हियमा मांहीं विचारी ॥ मांहो मांहीं खमावीयोहे ॥ वे गुणवंती नारी ॥ वाइ सांभळोहे ॥ वेनी सांभळोहे ॥ सहीयर सांभळोहे ॥ ८ ॥ खमज्यो मुज अपराध ॥ गो

री वीनवेहे ॥ लुली लुली पाय नमेहे ॥ खमज्यो मुझ अपराध ॥ ए आंकणी ॥ केइक कामणी कंतश्युंहे ॥ चाले चढि चकडोळ ॥ केइ गज रथ पालखीहे॥ वंछी करे रंगरोळ ॥वा०२॥ कमळ मुखी मधुरे सरेहे॥ गावे गिरीवर गीत ॥ हियडो हेजे उलसेहे ॥ चाले कुमी रीत ॥वा०३॥ संघ जइ जिहां उतरेहे ॥ तुरत कुमार राजान ॥ भोजन करावे अति भलांहे ॥ विधी विधीना पकवान ॥वा०४॥ नाम कही श्युं दाखवुंहे ॥ जाणे सहु संसार ॥ संघ जिमावे भावश्युंहे ॥ मन वंछीत आहार ॥वा०५॥ उपर आपे अति घणाहे ॥ लविंग सोपारी पान ॥ भगति करे इम संघनीहे ॥ कुमरपाळ राजान ॥वा०६॥ विगताळा विवहारीयाहे ॥ फांदाळा फावंत ॥ वहेल सुखासन पालखीहे ॥ इम वेठा चालंत ॥वा०७॥ मांहीं बाई भलभलीहे ॥ सुकुलीणी सीरदार ॥ हाथे छछोहा वावरेहे ॥ ल्ये लाहो इण वार ॥वा०८॥ केइक पदचारी चालेहे ॥ कोइक सचित परिहार ॥ चवद नियम केइ धरेहे ॥ केइक धरे व्रत वार ॥वा०९॥ एहवा संघ मांहीं घणाहे ॥ धरमी नरने नार ॥ मङ्गल करे गाउ पंचनीहे ॥ राते ;—

लण निवार ॥वा०१०॥ जयणा करतो जीवनींहे ॥ चाले संघ समाज ॥ पंथे फळ चूंट नहींहे ॥ भेटयां विण गिरीराज॥वा० ११॥जयणा करता जाइयेहे ॥ त जीये सहु आरंभ ॥ भावे तीरथ भेटीयेंहे ॥ लहीये मु गती सुलंभ ॥वा०१२॥ जयणाश्युं संघ चालतोहे ॥ आव्यो धधुके गाम ॥ नयर सयल लाहण करेहे ॥सो नईयानी ताम ॥वा०१३॥ तिहांथी वालय चमारडीहे ॥ उतरीयो संघ आय ॥ बे परवत मोटा तिहांहे ॥ बे जिनभुवन कराय ॥वा०१४॥ एक रिषभ जिनवर त णोहे ॥ बीजो पास जिणंद ॥ तिहांथी चाली आवीया हे ॥ शेत्रुंजे आणंद ॥वा० १५॥ नयणे शेत्रुंज निरखी योहे॥हियमे हरखीत थाय ॥ अंजली भरी वधावीयो हे ॥ सोवन फुले राय ॥वा०१६॥ गिरिवर चडीया ग हगहीए ॥ नयणे दीठा स्वामि ॥ थाळ भरी मुगताफळेहे ॥ रीषभ वधाव्या ताम ॥वा०१७॥ देइ तिन प्रदक्षणा हे ॥ प्रणम्या तीरथ राय ॥ नाह्या सूरज कुंडमांहे॥ प्रभु चरणे चित लाय ॥वा०१८ ॥ केसर चंदन कुं कुमेहे ॥ कस्तुरी घनसार ॥ पूजे नृप जिनवर भणी हे॥ अगर उखेवे सार ॥वा०१९॥ कमळ सुगंधा कें

तकीहे ॥ जाइ जुइ मचकुंद ॥ फूल तणी आंगी रचे हे ॥ सइ हथे कुमर नरिंद ॥वा०२०॥ सत्तरभेद पूजा करीहे ॥ भाव धरी सुविसाळ ॥ कहे जिनहरष सोहा मणीहे ॥ थइ ए छन्नुं दाल ॥वा०२१॥ सर्व गाथा २८३२॥

हा सूर॥धनपति आगळ माहरो॥रति न वाधे नूर॥७॥

ढाळ॥ नींदमली वेरण हुइ रही ॥ ए देशी ॥ सां भळ नृप कुमर नरेशरु ॥ जिन उपरेहो एहनो वहु राग ॥ कहे हेमसूरी कुमर नरिंदने ॥जंवुने हित जिम मु गतिशुं ॥ गौतमनेहो वाहलो वितराग ॥क० १॥ मोटो मोटोहो जगमां सोभाग ॥ क० जिण पाम्यांहो शिवपु रनो माग ॥क० ए आंकणी ॥ जिम मानसरोवर हंस ने ॥ कोयलनेहो वाल्हो सहकार ॥क० निरधननेजि म धन वाल्हो ॥ वाळकनेहो माताश्युं प्यार ॥क०२॥ धनपाल महा कवियण भणी ॥ तिम वाल्होहो श्री री षभ जिणंद ॥क० एहनी नवि थाये वरावरी ॥ ए आ गळहो मांहरी मति मंद ॥क०४॥ राय कुमर कहे पर गुण ग्रहे॥ते गिरुआहो गुणवंत गंभिर ॥क० निज गुण हीणा करी दाखवे ॥ जाणीजेहो ते उत्तम धीर॥ क० ४॥ मुज नयणे तुम सरिखो यति ॥ कोइ नावेहो जो तां मुनीराय ॥क० तुज मांहीं दोष न को देखुं ॥ दु ध मांहींहो पूरा नवि थाय ॥क०५॥ सुणराजन ए ति रथ मोटो॥कर स्तवनाहो एहनी चित्त लाय ॥क० इहां पूरव नवाणुं रिषभजी॥आवी आवीहो फरश्यो गिरिरा

य ॥क०६॥ रायण तळे आवी समोसर्या ॥ तिणे का
रणहो एहने द्यो मान ॥क०,अठम एक इण ठामे करो
॥ वृक्ष रायणहो पूजो धरी,ध्यान ॥क०७॥ रायण
नो राय पूजा करी ॥,कर्यो अठमहो फरस्यो गिरीरा,
ज ॥क० त्रिहुं पासे दीध प्रदक्षणा ॥ आवी पूज्याहो
प्रभु शिवपूर काज ॥क०८॥नव रतन नव अंगे धरे॥,
सोवनमेंहो वर धज एकवीस ॥क०मोतीनां छ छत्र चा
मर कर्या ॥ जिनवरनेहो शिर धर्यां,जगीश ॥क०९॥
कंचण मणी थाळ भरी,॥ मुगताफळहो जिन आगळ
मेल्हो॥ क० गुण गीत गावे आगळ रही ॥ दुरगतिने
हो इम नाखे ठेल ॥क०१०॥ जिन भगति नृपति उ
भो करे ॥,एक चारणहो बोल्यो तिण वार ॥क० एक
फूले जे जिनवर पूजे ॥ ते पामेहो नर,शिव सुख सार
॥क०११॥ देखो जिनवरनो भोलिमा ॥ फूल माटेहो,
आपे शिवराज ॥क० एहवो जिनवर मोटो,दाता॥ त
जि बीजाहो सेवो किण काज ॥क०१२॥ रुअडो वि
मळाचळ राजीयो ॥ जे आपेहो निज अविचल थो,
न ॥क० पूजिजे आदिसर भणी ॥ रुअडो वळीहो तें
कुमर राजान ॥क०१३॥ एक आदिशर अरिहंतने॥,

बीजो राजाहो पाटणनो जेह ॥क० जो याचो तो ए याचज्यो ॥ जिम भांजेहो दालिदनो गेह ॥क०१४॥ आज कठिन करम सहु निरदळ्यां ॥ आज दीठाहो रिसहेस नरेश ॥क० पुण्योदय आज थयो सही ॥ मन वंछीतहो आज लाभ लहेश ॥क०१५॥ हवे चारण कुमर नरिंदनी ॥ करे किरतीहो गुण गावे जास ॥ क० जिनहरष ढाळ पूरी थइ ॥ सत्ताणुंहो मनने उल्लास ॥क०१६॥ सर्व गाथा २१५५॥

ढाळ ९८ मी.

दुहा॥ कुमर नरेशर ताहरो ॥ पुहवी प्रगट प्रताप ॥ हीम तणी परे अरियणां ॥ उपजावे संताप ॥१॥ प्रजापाळ भूपाळ तुं ॥ जीवे कोडि वरिस ॥ तुं उपगारी सहु तणो ॥ जगत्र दीये आसीस ॥२॥ सूरा तो दाता नहीं ॥ दाता तो नहीं सूर ॥ दाता ने सूरापणुं ॥ तुज गुण वे भरपूर ॥३॥ कुमर राय दीठा पछी ॥ बीजा नावे दाय ॥ झील्यां गंगा नीरमां ॥ वाहलीया न सुहाय ॥४॥ मानसरोवर हंसलो ॥ राचे सूर संग्राम ॥ कवियण राचे कुमरशुं ॥ दान मान अभिराम ॥५॥ बीजा नर याचुं नहीं ॥ याचुं तो जगदीश ॥ के याचुं कु

नर नरेशने ॥ पूरवे आश जगीश ॥६॥ तुं कुळदीपक दिन मणी ॥ तुं सायर गंभीर ॥ कल्पद्रुम याची करी ॥ याचुं केम करीर ॥७॥ पर मंदिर शेवा करे ॥ कुमर न भेटयो ज्यांह ॥ कुमर नरिंद भेटया पछी ॥ हाथ न ओडे क्यांह ॥ ८॥

ढाळ ॥ श्रेणीकराय हुंरे अनाथी निर्ग्रंथ ॥ राग केदारो ॥ एहवां वचन चारण कह्यां ॥ नृप सांभळी निज कान ॥ नव लाख तत सोवन टका ॥ दीधा रा येरे चारणने दान ॥ १॥ कुमर राय तुं मोटो दातार ॥ तुज सरीखोरे नहीं को संसार ॥ कु० ए आंकणी॥ चारण कहे कर जोडीने॥ साभळो अवनी नाथ॥ मुज अयाची तें कीयो ॥ नवि ओडुंरे किण आगळ हाथ॥ कु० २॥ आसीस दे चारण चल्यो ॥ पहेरगा अवसर माळ ॥ बहु मिल्या नर विवहारीया ॥ वानभट बोल्यो रे वयण रसाळ ॥ कु० ३॥ लाख च्यार सोवन हुं दीउं ॥ आठ लाख कहे भूपाळ ॥ वाहग्न कहे सोळ लाख धुं ॥ मुज आपोरे राजन इंद्रमाळ ॥ कु० ४॥ राजा कहे हुं आपशुं ॥ रुपा सोवन लाख बत्रीश ॥ श्रावक एक तिहां बोलीयो ॥ कर जोडीरे कहे सांभळ ईश ॥

कु०५॥ सवा कोमि सोवन हुं दीऊं ॥ राय तेऊयो ते शेठ ॥ आगळ आवी उभो रह्यो ॥ राय हरख्योरे देखी ते द्रेढ ॥कु०६॥ वासीअद्धं महुआ तणो ॥ हांसु पि ता धारु माय ॥ सुत तास नामे जगडुओ ॥ राजानेरे ते आव्यो दाय ॥कु०७॥ साहसी श्रावक जाणीने ॥ नृप ताम दीधी माळ ॥ माता तणे घाली गळे ॥ एम्युं कीधोरे कहे भूपाळ॥कु०८॥ मात समो तीरथ नहीं ॥ त्रिहुं लोक मांहीं कोय॥ जिणे माय मानी आपणी॥ घर बेठांरे तीरथ फळ होय ॥कु०९॥ जिणे माय उ यरे धारीयो ॥ मळ मूत्र नांख्यां धोय ॥ पूजे चरण माता तणा॥ गुण तोहीरे उसींकल न होय ॥कु०१० ॥ सोवन बराबर मायने ॥ जो तुला तोले कोय ॥ तीरथ करावे लेइ खंधे ॥ गुण तोहीरे उरण न होय ॥कु०११॥ प्रह उठी प्रणमे माय चरण ॥ पाणी पीये पग धोय ॥ इंद्रमाळ पहेरावे गळे ॥ गुण तोहीरे उर ण न होय ॥कु०१२॥ तिणे कारण शाह जगडुए ॥ माळ ठवी माय कोट ॥ एहवो अवसर किहां मळे ॥ नवि कीजेरे इहां मननी खोट ॥कु०१३॥ एक रतन कोडी सवा तणो ॥ आपीयो शेठे छोड ॥ राय हरखी

यो देखी करी ॥ कोइ बीजोरे नावे एहनी जोम ॥ कु०१४॥ ए जैन धरमी साहमी ॥ जिन धरमनो प्रतिपाळ ॥ जिन भगति एहने चित वशी ॥ पाय प्रणमुं रे कहे इम भूपाळ ॥कु०१५॥ गुण स्तव्या नृप जगडु तणा ॥ नृपना स्तवे गुण हेम ॥ धन धन कुमर नरिंद तुं ॥ जिन पूज्यारे आणी बहु प्रेम ॥कु०१६॥ एक ताम चारण बोलीयो ॥ सांभळ नृप कहु वात ॥ ए ढाळ अठाणुं थइ ॥ जिनहर्षपेरे गाई सुविख्यात ॥कु॰ १७॥ सर्व गाथा ३१८०.

ढाळ ९९ मी.

दुहा ॥ एक अचंभो जगतमां ॥ रुप धरे घनशाम ॥ आपे उज्जल जळ प्रबळ ॥ जगत वधारे मान॥ १॥ गाय चरे सुका तृणां ॥ पीये ते डोहळो नीर ॥ जोवो एह पटंतरो॥ श्रवे अमृत खीर॥२॥ उतपति तो मृग नाभिमां ॥ नाभि तणो मळ जेह ॥ कस्तुरी परिमल बहुल ॥ वाल्ही सहुने तेह ॥३॥ मोटा मुंहघां उपजे ॥ मुक्ताफल गज सीस ॥ नर नारी नृप आदरी॥ दखी धरे जगीस ॥४॥ नामे कहीये तातूओ ॥ रहे ते पाणी मांहि ॥ सांकळनी परे सांकळी ॥राखे कुंजर

सांहि॥ ५॥ तिम हेमाचारज प्रते ॥नीचा नमीया जेह॥ पामे ते ऊंचि मुगति ॥ मुज मन अचरिज एह ॥६॥

ढाळ ॥ दोई दल मेल्यारे दामिनी ॥ए देशी॥ हेम. तुम्हारा गुण घणा ॥ मुज मुखे रसना एक.॥.हुं मूरख किणि परे कहुं ॥मुज नहीं तेहवो विवेक॥हे०१॥पवन तणी परे हुं फिर्यो॥सहु. जग मेल्योरे जोय॥हेमसूरिसर सारिखो॥में दीठो नहीं कोय॥हे०२॥विद्या किरिया गुण साधुना॥सील जे निकलंक॥अंगे अवगुण जोवतां॥को इ न दीसे वंक॥हे०३॥ एकेकी जग. जोवतां॥सहु. मांहीं छे खोम ॥ खोम नहीं हेमसुरिनां ॥ कोण. करे तस होड ॥हे०४॥ हेम समो मुनिवर नहीं ॥ प्रतिबोध्यो जि णे राय ॥ जीव दया पाळक सही ॥ प्रणमुं लुलि लुलि पाय ॥हे०५॥ चारण कहे मुनी हेमनो ॥ में दीठो दीदा र ॥ पाप गया मुज परिहरी ॥ निधि पाम्या सिरदार ॥ हे०६॥ दाळीद्र गयो हवे माहरो ॥ वळीया सारा दीश॥ हेम तणो मुख देखतां ॥ तुठ्यो मुज जगदीश हे॥०७ ॥ चारण वचन सुणी करी ॥ हरख्यो कुमरनो मन॥ हेम सिस करी लुंछणा ॥ नव लख दीधा सोवन्न ॥हे०८ ॥ विमळाचळथी उतर्यो ॥ गिणतो जनम प्रमाण ॥ पग

पग सोवन नाखतो ॥ धरतो जिनवर आण ॥हे० ९॥
पहेराव्या चिर तलहटी ॥ जिमाड्यो सहु संघ ॥ शुभ
क्षेत्रे वित वावर्यो ॥ पाप तणो थळ संघ ॥हे० १०॥ शे
त्रुंजय टूंक पांचमो ॥ गिरुओ गढ गिरनार ॥ चाल्यो
संघ जुहारवा ॥ माणसनो नहीं पार ॥हे० ११॥ वाटें
जिनवर पूजतो ॥ चाल्यो कुमर सुजाण ॥ आवी दी
धा गिरी तलहटी ॥ जूनेगढ मेल्हाण ॥हे० १२॥ था
ळ भरी गज मोतीयां ॥ लुछणमा करे राय॥ संघ च
ढ्यो गिरी उपरे ॥ हियमे हरखीत थाय ॥हे० १३॥
देई तिन प्रदक्षणा ॥ प्रणम्या नेमी जिणंद ॥ पूजा कि
धी नव लखी ॥ हरखे देखी वृंद ॥हे० १४॥ अगर सु
गंध उखेवीया ॥ कीधी आरति राय ॥ पूजे सहु संघ
जिन भणी ॥ गुण गावे चित्त लाय ॥हे० १५॥ हेम
कहे नृप सांभळो ॥ लिखमी तास प्रमाण ॥ जेह धरा
वे तीरथे ॥ संघपति तिलक सुजाण ॥हे० १६॥ सेत्रुंज
य पुण्य जेटलुं ॥ रैवत तेटलुं होय ॥ पांचमो टूंक
शेत्रुंजनो ॥ पंचम गति ये सोय ॥हे० १७॥ पहेले आ
रे ए गिरि तणो॥ नाम हुतो कैलास ॥ उज्जेन नाम बी
जे आरे ॥ त्रीजे रैवत भास ॥हे० १८॥ नाम सरण चो

थे आरे ॥ पांचमें आरे गिरिनार ॥ नाम हुश्ये छठे आरे ॥ मंदभद्र सुविचार ॥हे०१९॥ समविश ते पहेले आरे ॥ बीजे वीश ते जाण ॥ सोमश वळी त्रीजे आरे ॥ चोथे दश सुपमाण ॥हे०२०॥ उंचो जोयण पांचमें ॥ दोय धनुष सत मान ॥ त्रिण्ह कल्याणक जिन तणां ॥ थयां अनंत प्रधान ॥हे०२१॥ पद्मनाभादिक सिज्झश्ये ॥ इहां बावीस जिणंद ॥ ए तीरथ महिमा निलो ॥ भेटयां परम आणंद ॥हे०२२॥ एहना गुण कहुं केटला ॥ एहना गुण सुविसाल ॥ कहे जिनहरष पूरी थइ ॥ एह नवाणुंमी ढाळ ॥हे०२३॥ सर्व गाथा २२०६.

ढाळ १०० मी.

दुहा॥वचन इश्यां गुरुनां सुणी ॥ राय कहे सुसनेह ॥ स्वामी प्रतिमा वज्रमय ॥ कवण करावी एह ॥१॥ कहे अतीत चोवीसीये ॥ सागर तृतीय जिणंद ॥ उज्जेणी नयरी तणो ॥ नरवाहन मणुरिंद ॥२॥ समवसर्या सागर तिहां ॥ राजा वंदण जाय ॥ जिनवरदीधी देशना ॥ सुणी सहु चित लाय ॥३॥ कर जोडी नृप पूछीयो ॥ मुज कदि केवळनाण ॥ थाश्ये सगिर

जिन कहे ॥ सांभळ तुं राजान ॥४॥ नेमि हुश्ये वावी समो ॥ तुझने मुगति तिवार ॥ नरवाहन वैराग्य धरि ॥ लीधो संयम भार ॥५॥

ढाळ॥ दादो दीपतो दीवाण॥ सुरनर जास माने आ ण ॥ए देशी॥ राग सोरठ ॥ सुद्ध संयम राय पाळी ॥ लह्यो सुर गति साररे ॥ देवलोक पांचमें इंद्र सागर ॥ आयु दस विस्ताररे ॥१॥ धन धन एह श्री गिरनारि॥ जिहां चड्यो नेमि कुमार ॥धन० ए आंकणी॥ अव धी ज्ञाने भव संभारी ॥ नेमि प्रतिमा तामरे॥ देहरासर ते नित्य पूजे ॥ भाव धरी अभिराम ॥ध०२॥ काळ बहु तिहां इंद्र पूज्या ॥ आयु पूरुं थायरे ॥ ते ठवि श्री गिरनार प्रतिमा ॥ काळ इम वहु जाय ॥ध०३॥ नेमि जिनवर थया परगट ॥ तेटले इंद्र जीवरे ॥महापली खितिसार नगरी ॥ सुखी लोक अतीव ॥ध०४॥ ना मे नृप पुन्यसार हुओ ॥ नेमि यादव रायरे॥ तिणे न यर आवी समोसरया प्रभु ॥ राय वंदण जाय ॥ध० ५॥ कर जोडी राजा सुणे ॥ जिनवर देसना सुरसाळ रे ॥ मिथ्यात परिहरि थयो श्रावक ॥ बार व्रत प्रति पाळ ॥ध०६॥ नेमि पूरव भव कहा तव ॥ नृप गयो

गिरनाररे ॥ बहु भाव भगति देव पूज्या॥ लह्यो हरष अपार ॥ध०७॥ आव्यो फिरी नयर राजा ॥ भव त णां दुख जाणिरे ॥ सुत भणी निज राज देई ॥ चित्त संयम आणि ॥ध०८॥ लेइ दिक्षा स्वामी शिक्षा ॥ कि कट कर्म खपायरे ॥सुभ ध्यान चढियो क्षपकश्रेणे ॥ मुगति पोहतो राय ॥ध०९॥ पुण्यसार मुगति गया के मे ॥ लेप बिंब उलासरे ॥ श्री नेमिनो गिरनारे मां डयो ॥ नमे सुरनर तास ॥ध०१०॥ नेमि मुगति गया पुंठे ॥ नव सयां नव वासरे॥ काश्मीर देश तणोज वा शी ॥ रतन श्रावक खास॥ध०११॥ गिरनारे यात्रा क रण आव्यो ॥ करे बिंब पखाळरे॥ तिणि त्रिणे पाणी सगति जिन ॥ बिंब थयो विसराळ ॥ध०१२॥ चित्त चिंता खेद पाम्यो ॥ करे तिहां उपवासरे ॥ अंबिका दे वी थइ परतक्ष ॥ कहे कोयल भास ॥ध०१३॥ कंचण बलाणे टूंक प्रतिमा ॥ तिहां जई तुं आणरे ॥ मत क रे चिंता शेठ मनमां ॥ भगति श्युं विसाण ॥ध०१४॥ रतन देवी तणे वचने ॥ बिंब थाप्यो एहरे॥ महिमा घ णी जिन बिंब केरी ॥ तिरे पूजे तेह ॥ध०१५॥ हेम वयणे कुमर हरख्यो ॥ पूजिया प्रभु नेमिरे ॥ इंदमाळ

टेईं राय उभो ॥ लीयो कोइ कहे एम ॥ध०१६॥ सवा कोडि देई सोवन ॥ लीये जगडु माळरे ॥ तुं माय कुखे भलो आव्यो ॥ भणे इम भूपाळ ॥ध०१७॥ छत्र चामर धजा तोरण ॥ करे भूप कुमाररे ॥ जिन भगति करी निज पाप धोयां ॥ पुण्यनो विस्तार ॥ध०१८॥ अश्व गज रथ आपीया बहु ॥ दीध कंचण कोडिरे ॥ ए ढाळ एकसो कही रुमी ॥ जीनहरषे जोडि ॥ ध० १९॥ सर्व गाथा २२३१.

ढाळ १०१ मी.

दुहा ॥ संघ भगति करी तिहां थकी ॥ चाल्यो चौलिक राय ॥ देवकिपाटण आवीयो ॥ अष्टम जिहां जिनराय ॥१॥ जिनवर पूजी नृप दीये ॥ जगडुने इंद्रमाळ ॥ रतन देई सवा कोडिनो ॥ ग्रही माळ ततकाळ ॥२॥ नृप पूछे जगडु भणी ॥ तुं दीसे मसकीन ॥ तुज किहांथी धन एटलो ॥ रतन दीयां तें तीन ॥३॥ कहे जगडु सुण नरपति ॥ मुज पिता हंसराज ॥ रतन पांच तेहने हुता ॥ त्रिण तीरथने काज ॥४॥ तेतो संघ मिल्यो नहीं ॥ मुजने दीधां तेह ॥ में खरच्या तेहना

दीयुं॥ ए स्यो तुमे महाराज ॥ उपगारी तुम सारिखो॥ कोइ न दीठो आज ॥६॥ आदर करी नृपने दीया ॥ राये लीधां तेह ॥ अडी कोडि धन देइ करी ॥ अधि को धरी सनेह ॥७॥ जगडु धन अवतार तुज ॥ रा य पसर्यो तास ॥ आव्या सहु तीरथ करी ॥ पाटण न यर उल्लास ॥८॥

ढाळ ॥ काछिवानी ॥ आव्यो पाटण राय हेस खी ॥ आव्यो० नयर सलूणो सहु सिणगार्यों ॥ ओ छाह्या बाजार ॥ हेसखी ओ० सोना देखी पुर सुर पुर हारीयो ॥१॥ धज तोरण चोसाल ॥ हेसखी ध० बांध्या कंचणना थाळ सोहामणा ॥ गलीये गलीयें फूल ॥ हेसखी ग० उज्जळ परिमल विखेरया घणा ॥ २॥ वाजां मंगळ भेरी ॥ हेसखी वा० ढोल नीसाणे दमामा वाजीयां ॥ सीणगार्या गजराज ॥ हेसखी सी० मद झरता जळधर जिम गाजीया ॥३॥ मोत्यां ज डित पलाण ॥ हेसखी मो० सोवन सांकळ भल सि णगारीयां ॥ हणहणता हयथ ॥ हेसखी ह० जाणे सूं रिय रथथी उतरयां ॥ लेई अनोपम भेट ॥ हेसखी ले० मुहता मंत्रीसर साहमा संचरया ॥ आमंबरशुं

साया।हेसखी आ० आवे सहुना देखी जोबन वरऴां ।।५।। विपुल थइ पुर नार ।। हेसखी वि० नयने जो वा दोडी सहु मिळी ।। उलट पलट सिणगार ।।हेसखी उ० कानें काजळ घाल्यो उतावळे।।६।। पाए पहेर्‍या हार।।हेसखी पा० बाहे पहेर्‍यां झाझर नेवर।। कर कं धुक सवाहि ।।हेसखी क० हाथे आरीसा ग्रही केइ सं चरा ।।७।। केइ उघाडे सीस ।।हेसखी के० केइ होमी कनि वाधी सामस्यो ।। तिलक बणायो गाल ।।हेसखी ति० नाक उपर चांमप्यो चादलो ।।८।। कंचू पहेर श रीर ।।हेसखी क० किणही चरणेही चीर न पहेर्‍यो।। रोतां बाळक मुकि ।। हेसखी रोतां० केइक दोमी जो वण राजीयो ।।९।। केइक नारीयो जाय ।। हेसखीके इ० अधरच उठी जोनम जीमति ।। मीडे आणे वेसा ण ।।हेसखी मीड० केइक दोमी धान परीसती ।।१०।। केई लेई रोतो बाळ ।।हेसखी केइ० दोडी हाथे झाली मे पहेरणो ।। देखण कुमर नरिंद ।।हेसखी देख० केइ क दोमी मुकी राधण ।।११।। विकळ थइ इम नार ।। हेसखी विकळ० टोळे टोळे उभी आवी करी ।। मिली या पुरुष अनेक ।।हेसखी मिली० कुमर नरेश प्रवेश

कीयो पुरी ॥१२॥ करे सोळेह सिणगार ॥हेसखी क
रे० कोकिल कंठे गावे सोहलो ॥ मोतीयमे भरी था
ळ ॥हेसखी मोती० नारि वधावे करि मन मोकळो ॥
१३॥ परजा घे आसीस ॥हेसखी पर० राजा आप
सनमान सहु भणी॥पूछे छे तुम खेम ॥हेसखी पूछे०स
हु सुखीया प्रभु सुनिजर तुम तणी ॥१४॥ आव्यो कु
मर नरिंद॥हेसखी आव्यो० जयजयकार थयो पाटण
पुरे ॥ एकसो एक ए ढाळ ॥हेसखी एक० कहे जिनहर
ष गाओ मीठे सुरे ॥१५॥ सर्व गाथा २२५२ ॥

ढाळ १०२ जी.

दुहा॥ कुमर नरिंद घर आवीयो ॥ सुख विलसे
निश दिश ॥ अठाई दिन आवीया ॥ ओछव अधिक
जगीस ॥१॥ चैत्र शुक्लना आठ दिन ॥ आसो आठ
दिवस्स ॥ इणे दिन सुर ओछव करे ॥नदीसर अवस्स
॥२॥ कुमरपाळ पण आवीयो ॥ जिन तिहुअण प्रासा
द ॥ वहुत्तर सामत संघश्युं ॥ घुरे निशान ने नाद ॥३
॥ सत्तर भेद पुजा करे ॥ गावे वावे राय ॥ओछव क
रता वहु परे ॥ आठ दीवश इम जाय ॥४॥ तदनतर
कनक रथ ॥ धज तोरण ने छत्र ॥ कनक कळस बा

सर युगल ॥ कीधा राय पवीत्र ॥५॥ श्री जिनवर नें वीसमां ॥ प्रतिमा थापी तास॥ चैत्र शुकल आठम दीने ॥ पुहुर पाछलो खास ॥६॥

ढाळ ॥ यत्त सिंधुआश्या रागे ॥ वाजित्र तिहां घणा वाजेरे ॥ जाणे नादे अंबर गाजे ॥ सहु संघ मंत्री नृप मिलीयारे ॥ जिन भुवन थकी नीकळीया ॥ १ ॥ पुष्प दृष्टी करे नर नारीरे ॥ गज रथ हेवर सिणगारी ॥ आव्या नृप दरवारेरे॥ पूजी नृप हरष वधारी॥ २॥ दुहो॥ हरखी नृप नाटक करे ॥ वीह्राणे सीह दुआर ॥ मंडप तळे रथ राखीयो ॥ पूजे पासकुमार ॥३॥ ढाळ ॥ पूजा आरती उतारेरे ॥ तिहांथी रथ चाल्यो त्यारे ॥ नाटकीया गावे माचेरे ॥ देखी सहुना मन राचे ॥४॥ चहुटे मंडप रथ राखेरे ॥ गुणीयण जिनवर गुण भाखे ॥ चोराशी चहुटे फिरीयोरे ॥ सहु नगर पवित्र जिणे करीयो॥५॥ दुहो॥कर्यो नगर सूर पूर जिस्यो ॥ रथयात्रा जिहां थाय ॥ करतां ओछव जिन तणो ॥ इणि परे वासर जाय ॥६॥ ढाळ ॥ पास रे पूनवना ए कहीयेरे ॥ त्रिण यात्रा पुन्ये लहीये ॥ अठाई तीरथ यात्रारे ॥ रथयात्रा शिव सुख पात्रा ॥

७॥ रायें ते तिणे कीधीरे ॥ सहु मननी आश्या सीधी ॥ नित्य गुरुनी शेवा सारीरे ॥ व्याख्यान सदा अवधारी ॥ ८॥ दुहा ॥ धारे वीर चरित्र नृप ॥ वांचे हेमसुरिंद॥ चेईनो अधिकार तिहां ॥ भाखे वीर जिणंद ॥ ९॥ ढाळ ॥ वीर जिन भाखे अधिकारोरे ॥ पूछें तव अभय कुमारो ॥ जीवित स्वामी मूरत्तीरे ॥ केती एक पूजा थित्ती ॥ १०॥ श्री वीर इश्युं तव भासेरे ॥ घणुं काळ एह पूजाश्ये ॥ आगळ थाश्ये भूपाळोरे ॥ नामे ते कुंअरपाळो ॥ ११॥ दुहा ॥ कुमारपाळ नित पूजश्ये॥ इम कह्यो वीर जिणंद ॥ हेम तणे मुख सांभळी ॥ हरख्यो कुमर नरिंद॥ १२॥ ढाळ ॥ हरख्यो नृप कुमर नरिंदोरे॥ मुज कीधी सार जिणंदो ॥ जिनवर जीभे चडीयोरे ॥ भव भवनो पातक झमीयो ॥ १३॥ राय पूछे कहे गुरुरायोरे ॥ ते प्रतिमा छे किण गयो ॥ वीतभोपाटण इण नामेरे ॥ ते प्रतिमा छे तिण ठामे ॥ १४॥ दुहा ॥ तिणे ठामे प्रतिमा रहे ॥ भंडारी भुंइ मांह ॥जिवित स्वामी जुहारवा ॥ चाल्यो घणे उछांह ॥ १५॥ ढाळ ॥ उछांह धरी तिहां पोहतोरे ॥ मन मांही नृप गहगहतो ॥ पूजा कीधी दित जाणीरे॥ते प्रतिमा पाटण आणी ॥ १६

॥ देहरासर मूरती थापीरे ॥ पूजि भव पीमा कापी ॥ भलां वार हजार ते गामोरे ॥ दीधां पूजाने कामो ॥ १७॥ दुहा ॥ काम रायने नवि गमे ॥ प्रतिमा उपर प्रीत ॥ पूजे केसर चंदने॥ राय श्रेणीकनी रीत ॥ १८॥ ढाळ ॥ रीति हरखे देखी स्वामीरे ॥ दालिद्री जिम निधि पामी ॥ जिन प्रतिमा जिनवर सरखीरे ॥ राय कुमर नरेशर निरखी ॥१९॥ हस्ती खंधे चमी रायोरे ॥ तिहुअण प्रासादे जायो ॥ जिनहरष पूजे त्रिण काळोरे॥ एकसो बीजी ए ढाळो॥२०॥सर्व गाथा २२७८॥

ढाळ १०३ जी.

दुहा॥ कुमर नरेशर एक दिन ॥ पूजेवा श्री वीर ॥ पट्टकुळ विण वावर्यो ॥ मांगे साहसधीर ॥१॥ नवो पटोळो चर कहे ॥ न मळे इहां महाराय ॥ ववेरा पाटण धणी ॥ पहिर्यां दह दिशे जाय ॥२॥ दूत पठाव्यों कुमर नृप ॥ पट्टकुळने काम॥ भेट भली लेई करी॥वेगे पुलीयो ताम ॥३॥ दूत जइ नृप विनव्यो ॥ कुमरपाळ भूपाळ ॥ तुम पासे मुज मोकल्यो ॥ मूंकी एह रसाळ ॥४॥ पट्टकुळ अण वावर्यो ॥ एक आपो, म्हाराज ॥ पाटण राय मंगावीयो ॥ जिन पूजाने का

ज ॥५॥ रीस करी राजा कहे ॥ तुज राजा शिर धू
ळ ॥मंगावे अण वावर्यो ॥ मुज पासे पटकुळ ॥६॥
इहां तु उभो रहीशमां ॥ जो हीयमे होय सान ॥ मान
भ्रष्ट करी काढीयो ॥ दई बहु अपमान ॥७॥ दाणीक
विता मांगीयो ॥ चामरथी नृप दास ॥ दरवाणीने दू
तने ॥ दूहवीयां विणास ॥८॥

ढाळ॥ देखो माई पूजा मेरे प्रभुकी अजब वणीरे
॥या छबी वरणी न जाय ॥ ए देशी ॥ राग केदारो॥
दूत अपमान्यो पाछो ॥ वळीयो रीसे भरीयोरे॥ आवी
यो निज नृप पासे ॥ कळकळतो थई रातडोरे ॥ दूत
सुणावेरे ॥ रायने अवगुण तास॥१॥ते राजा महा को
धीयो ॥ अभिमानीरे रुठो जाणे काळ ॥ त्रिण समतु
मने लेखवी॥नटकी बोल्योरे राजन तुमने गाळ॥दू०२॥
कान भरया तिणे रायना॥अधिका ओछारे वचन कहे
तिणि वार॥मदनभ्रम नृप उपरे ॥ कोप धरीने खीज्यो
राय कुमार॥दू० ३॥ब्राह्मणदे तमी कहे॥ तुम्हे जइ ला
वोरे मदनभ्रमने वाधि ॥ कटक लेई जुध कारणे॥सुभ
ट चाल्यारे आव्या तेहनी संधि ॥दू०४॥ कोट वींटी
रह्या पाखळे ॥ लसकर जोररे भेल्यो पूर प्राकार॥झा

ली बांध्यो रायने॥ कोडि सोवनरे सय वाजी इग्यार॥ दू०५॥ सात सहस घर साजवी ॥ वणे पटोळारे कव ज कीयां मंत्रीश ॥ गज चढि कुमर नरिंदनी ॥ आ ए फेरीरे वाहमदे धरी रीश ॥दू०६॥ गाधिमी घाली चमत्रो ॥ वाहड मंत्रीरे मदनब्रम नर नाह ॥ आणी पाए घालीयो ॥ बळवंत मंत्रीरे कुमर तणे उछांह ॥ दू०७॥ कुमर नरेशने दूहव्यों ॥ चरणे लागोरे ऊतरी यो मन रोश ॥ देश सवालख देई कहे ॥ सुण नरप तिरे जिन तणो उपदेश ॥दू०८॥ जीव तणी रक्षा क रो॥अकर निवारीरे कर्यो मत अन्याय ॥ प्रजा पाळे छोरु परे ॥मलपण लेजेरे लोको मांह ॥दू०९॥ जि नवर पूजा कारणे ॥ दूत पठाव्योरे मंगाव्यो पटकूळ ॥ दूत हील्यो तें माहरो॥ थइ अभिमानीरे मुज शिर घाली धूळ ॥दू०१०॥ मदनब्रम नृप लाजीयो॥ नीचुं जोवेरे हुं मूरख महाराज ॥ कर्यो जिस्यो पाम्यो ति स्यो ॥ हवे श्युं बोलुंरे मनमां आवे लाज ॥दू०११॥ तुम्हे मोटा छो राजवी ॥ मुज कारणेरे जोज्यो मत म तिवंत ॥ अवगुण केमे गुण करे ॥ ते विरलारे तुज सारिखा संत ॥दू०१२॥ दाय लही दुरजण हणे ॥ प

ण गिरुआरे न करे परनो विणास ॥ तें कीधुं तिम तुं करे॥ साहिब मोरारे हवे हुं ताहरो दास ॥दू०१३॥छती शक्ती जे नर खमे॥तेहनारे नित नित नमीये पाय ॥ तेहना गुण न विसारीये ॥ तेहने कानेरे कळवीजे निज काय ॥दु०१४॥ हुं उसींकळ किम हुश्युं॥ तुम श्युंरे करुणावंत कृपाळ ॥ दया पळाउ देशमां ॥ हवे न करुंरे पातक आळपंपाळ ॥दु०१५॥ कुमर तणे चरणे नमी ॥ नृर चाल्योरे मदनभ्रम निज देश ॥ देश ढंढेरो फेरियो ॥ मत-कोईरे हणज्यो जीव विसेस ॥दु०१६॥ दया पळावी बहु-परे ॥ टाळ्यां सहुरे अकराकर अन्याय ॥ कहे जिनहरष न्याई थयो॥ ढाळ एकसोरे तीन कहेवाय ॥दु०१७॥ सर्व गाथा २३०३॥

दुहा॥ कुमारपाळ तस देशमां ॥ दया पळावी एम ॥ धन धन चौलुकवंश नृप ॥ जेहनो गुरु श्री हेम ॥१॥ ववराथी साळवी ॥ आण्या सात हजार ॥ छत्र हेठ नहवरावीया ॥ पवित्र कीया सुविचार ॥ २ ॥ न्याति साळवी तेहनी ॥ थापी राय तिवार ॥पाटणमांहि वसावीया ॥ वणे पटोळां सार ॥३॥ ते पहेरी पूजा

करे ॥ विधीश्युं कुमर नरिंद ॥ जनम सफळ पोता णो॥ करे धरे आणंद ॥४॥ एक दीवश नरवर कुंर ॥ बेठो सभा मझार॥ बेठा पंडित ब्राह्मण ॥ पूछे तम कुमार॥५॥ आज कहो गुरु तिथि किसी ॥ बोल्या सूहि साकार ॥ हुती अमावसि पुण कही ॥ पूनिम तिथि तिणि वार ॥६॥

॥ ढाळ॥ सात सोपारी बीडलो हाथ ॥ ए देशी॥ ब्राह्मण हसि हसि बोल्या तिणि वार ॥ गरढा थयां गुरु मति गईजी ॥ आज अमावसि जाणे सहु संसार॥ ते हती कहोने पूनिम किम थईजी ॥१॥ काग कालाने कहे उज्जल एह ॥ मूरख माने तेहनो कह्योजी॥ कुमर तणे मन उपन्यो संदेह॥ राय विचारी मन मांहिं रह्योजी॥२॥ जलोरे भलो हेम ए तम ज्ञान॥ पूनिम कही अमावाशी भणीजी ॥ श्या सारु मानो तमे कुमर राजान ॥ बुद्धि निहाळी हाली गुरु तणीजी ॥३॥ हाकीनि त्यारे हेमसूरिंद ॥ रहो रहो मूरख वाद करो ब्रथाजी ॥ जो आज ऊगे पूनिम पूरो चंद ॥ नहींतो अमावसि जाणज्यो तथाजी ॥४॥ राजा परजा ब्राह्मण कीध प्रमाण॥ हेम विचारे मन मांहीं इश्युंजी ॥ मा

हरा सासननी हीला करश्ये अजाण॥कहेतां कहेवरा णुं हवे करीये किशुजी ॥५॥ तेहो देवीने भाखे हेमसूरिंद ॥ आज पूरणिमा कीधी जोईयेजी ॥ देवी पयंपी मनमां धर्यो आणंद ॥ चिंता म करश्यो इम धीरज दीयेजी ॥६॥चांद्रणी राते करुं गच्छराज॥ ब्राह्मणनो जिम पाणी उतरेजी ॥ वाधे सासन केरी अधिकी लाज ॥ सहु नर नारी जय जय ऊचरेजी॥७॥ राते आवीने कुंमळ मुंकयो आकाश ॥परतख गयणे चद्र विराजीयोजी ॥ बार जोयण सूधी थयो परकास ॥ हरखित थयो मन माही राजीयोजी ॥८॥ब्राह्मण केरां मूख हुआं मद॥ श्री जिन शासन इम दीपायोजी ॥ जग मांही साचा हेमसूरिद ॥साचो श्री जिनवर धरम कहावीयोजी ॥९॥ राति वितीत थयो परभात ॥ हेम खमावे संघ आगळे सहुजी ॥ पूनिम न हुती कीधी अछती वात॥ते मुज दुपण लागु छे वहुजी ॥१०॥ पण जिन शासन केरी राखवा लाज ॥ जुठु बोल्यो मुज मिच्छामि दुक्कडुंजी॥ सहु सघ साखे खामु छुं आज॥ जिम दुरगति दुख माहि नवि पडुंजी ॥११॥ आण न खंमे श्री जिनवरनीहे॥ में पाप भीरु थइ धरम दीपायोजी॥ दया शासन ऊपरे

बहु प्रेम ॥ असत्य वचननो दोष न आवीयोजी ॥ १२॥ पाप करंतो संकिस पुरीस जेह ॥ पाप करीने पर गट दाखवेजी ॥ पाप करंतां धूजे जेहनी देह ॥ ते न र सदगतिनां सुख अनुभवेजी ॥१३॥ दोष आलोइने हुआ निकलंक ॥श्री जिनशासन कारण इम करस्यो जी ॥ पातिक ठामे राखी मन मांहीं संक ॥ चारित्र पाळि निरमळ गुणे भर्योजी ॥१४॥ पाये नमी गुरुने कुमर भूपाळ ॥ कहणी करणी सारिखी ताहरीजी ॥ थई एकसो ने च्यार ए ढाल ॥ कहि जिनहरषे सहु ने हित करीजी ॥१५॥ सर्व गाथा २३२३॥

ढाल १०५ मी.

दुहा॥ कुमर कहे कर जोमीने ॥ सांभळ श्री गु रुराय ॥ तुं मोटो जग सापुरिस ॥ तुज गुण कह्या न जाय ॥१॥ तुज सारीखो जोवतां ॥ बीजो न मिले कोय॥जैन अपर कहो सेवनो॥द्वेष धणो किम होय॥२.

ढाळ॥ मोती थोनें हमारो ॥ए देशी॥ हेम कहे सु ण कुमर नरेशर ॥ नयरी अयोध्या रिषभ जिनेशर॥ रायजी मुज वचन सुणीने ॥ रायजी मुज वचन सु णो ॥ वचन सुणो पाटणना राजा ॥ वचन सुणो

ज बहुत दिवाजा ॥रा० समवसर्या वन मांहि आई ॥ वनपाळक जई दीध वधाई ॥रा०१॥ हरख्यो भरत नृपति मन मांही ॥ बार कोटि धन दीध उमाही ॥रा० सकट पंचसय मोदक भरीया ॥ बहु परिवार लेई संचरीया ॥रा०२॥ वंदि जई जिनवरने भावे ॥ पंचाभिग मन चित्त रहावे ॥रा० वस्तु सचित्त करे परिहारी ॥ मन राखे एकांत विचारी ॥रा०३॥ एक सामी उत्रासण ऊभे ॥ जिनवर देखे बे कर जोमे ॥रा० छत्र खडग चामर सहु मूके ॥ तीन प्रदक्षण राय न चूके ॥ रा०४ ॥ इणीपरे भाव भगतिशुं वंदी ॥ जइ पासे बेगे आणंदी ॥ रा० ॥ रिषभ जिणेशर धर्म प्रकासे ॥ दान सीयळ तप भाव उल्लासे ॥ रा०५ ॥ अधिक दान कह्यो जग माहि ॥ दान धर्म वधे उछांहि ॥ रा० दान तप जप क्रिरिया थाइ ॥ दाने पातिक दूरे पुलाइ ॥रा०६ ॥ दान दीये ते जगमां मोटो ॥ दान विना सघळो ही खोटो ॥ रा० दातानी आश्या सहु राखे ॥ दुर भक्ष जगमो लो ते पाखे ॥ रा०७ ॥ रिषभ कहे सांभळ भरतेशर ॥ वसुधा भरण पुरुष अलवेशर ॥ धन आभरण कह्यो नर केरो ॥ दीसे जेहथी पुरुष भलेरो ॥

रा०८ ॥ धननो आभरण दान कहीजें ॥ दानाभरण सुपात्र दीजे ॥ रा० दान सुपात्र थकी बहु तरीया ॥ मु गति तणा सुख अविचळ वरीया ॥ रा०९ ॥ भरत क हे सुणि वचन पितारो ॥ मुज घेर स्वामी वेगे पधारो ॥ रा० अन्न पान दीउ सहु मुनिवरने ॥ भगति भाव बहु परे आदरिने ॥ रा०१० ॥ भरत नरिंद सुणो कहुं तुमने ॥ राजपिंड कलपे नही अमने ॥ रा० थयो दि लगीर सुणी भरतेशर ॥ ताम पयंपे वचन सुरेसर ॥ रा०११ ॥ पोख्यां लाभ घणो साहमीनो ॥ भगति क री पुन्य खजानो ॥ रा० इंद्र वचन सांभळी नृप हरख्यो ॥ पुन्य खेत्र साचा करी परख्यो ॥ रा०१२ ॥ गया नु हुतरा गामो गामे ॥ आव्या श्रावक ठामो ठामे ॥ रा० श्रावकमा बीजा पण मिलीया ॥ भोजन काजे सहु अलफलीया ॥ रा०१३ ॥ खावानो लालच सहुको ने ॥ बाळ वृद्ध नरतोने मोने ॥ रा० झडपी ल्ये पाट ल आखलीया ॥ थाळी पण ल्ये केइक वळीया ॥ रा०१४ ॥ सूधा श्रावक हुओ ते लाजे ॥ भट पनो इण भोजन काजे ॥ रा० ए माहि जिमता लाज मरोजे ॥ लाखा देखी श्रावक खीजे ॥ रा०१५ ॥ ए भोजन

पावेही सरश्ये ॥ भोजन लालचीया मन हरश्यें ॥ रा० ढाळ भली जिनहरष वखाणी ॥ एकसो पांच मी तणी नीशाणी ॥ रा० १६ ॥ सर्व गाथा २३४८

ढाळ १०६ वी.

दुहा॥ केइ मागी झूंटि लिये ॥ उठी लिये केइ अन्न ॥ पेत किमे धापे नही ॥ एहवा लोक असन्न ॥ १ ॥ दिन दिन वाधे अति घणा ॥ पामे सरस आहार ॥ मधु मांखी जिम लालचे ॥ लागी रह्या वेकार ॥ २ ॥ चारे इंद्री सोहिला ॥ जिम तिम ए जिपाय ॥ भोजन भापण वे विषे ॥ जीभ न जीती जाय ॥ ३ ॥ सपर सरस भोंजन तणो ॥ चसको लागे जां ह ॥ रहे नही किमही कीयां ॥ दांतां पामंताह ॥ ४ ॥ उत्तम जो पामे अवल ॥ हरखे नही मन मांहि ॥ सर सो निरसो जिमतां ॥ न धरे अरति उछांह ॥ ५ ॥ आदर करी नोहुंतरी ॥ तो त्रिजे तेडि.जाय ॥ निर तोल्ये मूके नहीं ॥ अण भावतो न खाय ॥ ६ ॥

ढाळ॥ परदेशी यार मोरी अखीयां लगी ॥ ए द शी ॥ संतोषी नर एहवा होय ॥ जेहने मन लालच नहीं कोय ॥ सुण कुमर नरिंदतोने वात कहुं ॥ आं

कणी ॥ बारें श्रावक जग सिणगार ॥ परदूषण कहे नहीय लगार ॥ सु०१ ॥ पोखे पात्र जाणी भरतेश ॥ पण न करे कांइ विगति नरेश ॥ सु० ॥ रांधणीया रांधे आहार ॥ पूरु न पमे मनीप अपार ॥ सु०२॥ आवी नृप विनवीयो तिवार ॥ सामी मिलीया पुरुष अपार ॥ सु० श्रावक भेळा जिमे अनेक ॥ इम जिमतां नथी रहेतो विवेक ॥सु०३॥ नीति करो कांइ महाराय ॥ श्रावक मिथ्यात्वि ओळखाय ॥ सु० वचन खरुं मान्युं मन माँहि ॥ श्रावक व्रतधर राखों तांहि ॥सु०४॥ श्रावक ओळखवाने काम ॥ रतन कागणी लीधो ताम ॥सु० समकित धारी श्रावक खास॥ त्रिण रेखा करे हीयमे तास ॥सु०५॥ अवर सहुने दीधो सीख ॥ घर जाओ के मांगो भीख ॥ सु० साहमीनी करे भगती अपार ॥ जिमावे गमता आहार ॥ सु०६॥ चीवर भूपण दीये विसेश ॥ पुन्य करे इम भरत नरेश ॥ सु० काळे भरत गयो परलोक ॥ आदित्ययशा थयो पून्य संजोग ॥सु०७॥ ते पण भगति करे सुविचार ॥ कंठे घाल्या सोवन तार ॥ सु० आठ पाट लगे चाल्यो माग ॥ पछे रुप्या कंठे सूत्र

ना ताग ॥शु०८॥ काले जिनवर विरहो थयो ॥ नु नि जिन केवळज्ञान सहु गयो ॥ शु० काले श्रावक सीथला होय ॥ समकित व्रत विण थया रुहु कोय ॥ शु० ९॥ राते पण ते करे आहार ॥ दोष गणे नहीं मूढ गमार ॥ शु० स्नान सराध संवत्छरी करे ॥ कन्या गोहल दान उच्चरे ॥सु०१०॥ श्रावक वेठा काळ सयोग ॥ तेहने गुरु करि माने लोग ॥सु० घणो काळ इम चाल्यो जाय ॥ प्रगट थया श्रेयांस जिनराय ॥सु०११॥ सूधो धरम प्रकाश्यो तेण ॥ साधु श्रावक कह्या विवरी जेण ॥शु० मिथ्या तारग कीधो दूर ॥ तिमर रहे केम उगे शूर॥शु०१२॥ मिथ्यात्विनो कीधो छेद ॥ तिणे मुनी उपर ब्राह्मण खेद ॥ शु० एकसो छठी ढाळ विचार ॥ कही जिनहरप शुणो नरनार ॥ शु० १३॥ सर्व गाथा २३५०

ढाळ १०७ मी.

दुहा॥ जे जे पूछे कुमर नृप ॥ आवे तास जो वाप ॥ राजा मनमां चिंतवे ॥ भाख्युं हेम हसाव ॥ ॥१॥ तुं गुरु ज्ञानी नृप कहे ॥ तुं गिरुओ गुणवंत॥गा खे वयण सोहामणां ॥ जिम भाखे भगवंत ॥२॥ एक

मे व्याख्यानमां ॥ गुरु कहे मुखे हाय हाय ॥ भेळा करि कां वे पसि ॥ ध्रुं धधुं पूछे राय॥३॥ गुरु कहे पाटण देवकि ॥ चंद्रप्रभ जिन गेह ॥ ऊंदर बाढि लेइ गयो ॥ चंदरुआमां तेह ४॥ चंदरुओ लागी रह्यो ॥ देखी ए अनरथ ॥ तिण कारण में कर घर्यां ॥ राजा शुण्यो अरथ ॥५॥ सुगुरु परिक्षा कारणे ॥ खबर करावी तांह ॥ खरी वात जाणी करी ॥ हरख्यो नृप मन मांही ॥ ६॥

जी० मुनि वचने गुरु तेडी पाटणमां आणीया व०३॥ वांद्या तीन प्रदक्षणा देई सुगुरु भणी ॥व० जंगमां सहु ने मीठी आगत आपणी ॥व० बेठो जोमी हाथ नृपति गुरु आगळ ॥व० श्लोक कहे देवचंदमुनी सहु सांभ ळे ॥व०४॥ उठी गया देशन सुणी नर कर जोडिने॥ व० मांगे सोवनसिद्धि पाए सिर कडीने ॥व० हेमसूरि स कहे गुरु पास आयने॥व० महेर करीयो पूज्य क नक सिद्धि रायने ॥व०५॥ हेम वयण सुणी एह सुगुरु खीज्या घणुं ॥व० एतलोही आचार न जाणे मुनी तणो ॥व० विद्या अनरथ मूळ धूळ संयम करे ॥व० जाणे तोपण नैव विद्या समाचरे ॥व०६॥ संयम पाळे सुद्ध चारित्रनो जे धणी ॥व० सावद्य न कहे वात ते ह थोडी घणी ॥व० मंत्र यंत्र नैमित्त यति भाखे नहीं ॥व० अविचार्यो सावद्य कह्यां दूखण सही ॥व०७॥ सावद्य उपर वात कहुं सुण नरपति ॥रा० राजग्रही पुरवासी भीम क्षत्री मती॥रा० राय साथे ते भीम क्षत्री कटकी गयो ॥रा० बार वरस थयां नारी चीते थ्रंभ यो ॥रा०८॥ पाछो नाव्यो भीम खरच विण किम स रे ॥रा० जिम तिम करी कुळवंती दिन दोहिला भरे॥

॥इणे अवसर मुनि एक सुवेस सोहामणे ॥रा० धर्म लाभ देइ आवी ऊभो आंगणे ॥रा०९॥ नाखी निसा सो उठी नारि उतावली रा० नयणे वरसे नीर जाणे जल वादली ॥रा० आगल अबला आवी स्वामी कहे सुणो ॥रा० दुखिणी विण कंत मुने दुख छे घणो ॥ रा०१०॥ कदि मिलशे मुज नाह उछाह धरी करी ॥ रा० करुणावंत कृपाल कृपा मनमां धरी ॥व० ज्ञान प्रभुजी तास वयण एहवुं कहे ॥रा० वाहणे ताहरो कंत मिले तुं सुख लहे ॥रा०११॥ हरखी अबला वयण सुणी मुनिवर तणो ॥रा० वाहाणे आव्यो नाह लह्यो सुख अति घणो ॥रा० उन्हाळे दव जेम वुझे जल धर करी ॥रा० आलिंग्यो भरतार हीया मांहि धरी॥ रा०१२॥ आव्यो मुनिवर देखी आवो आवो भणे ॥ रा० लुलि लुलि लागे पाय आदरस्युं घणे ॥रा० अन्न पान पकवान दीये मुनिवर भणी ॥रा० क्रोध भ र्यो भापूर हीये तेहनो धणी ॥रा०१३॥ साचुं कहे के मारिश तुजने इण घमी ॥रा० इण मुनिवरस्युं तुज किसी छे प्रीतमी ॥रा० नारी कहे तुम नाह निमित क ह्यो इणे ॥रा० तिण कारण अन्न पान दीउं उलट घणे

॥रा०१४॥ ए मुनिवर गुणवंत कीधा गुणनो धणी ॥ रा० लागुं एहने पाय आयने ते भणी ॥रा० ढाळ थ इ जिनहरष एकसो सातमी ॥रा० साधु निमित्त प काशे नहीं जे संयमी ॥रा०१५॥ सर्व गाथा २३७८

ढाळ १०८ मी.

दुहा॥ भीम कहे मुज पूछीयो ॥ जो कहेशे मु नि एह ॥ तो हुं साचुं मानशुं ॥ मुज टळशे संदेह, ॥१॥ ए घोमी जणशे सही ॥ अवल वछेरो अंग ॥ पंच तिलक तेहने हस्ये ॥ सुंदर अंग सुरंग ॥२॥ भी म ढील न खमी शक्यो ॥ पेट विदार्यो तास ॥ वच न मिल्यो मुनिवर तणो ॥ खिन्नी थयो उदास ॥३॥ कीधुं कर्म चंमाळनुं ॥ मुजने, पमो धिकार ॥ एहवो पापी को नहीं ॥ मुज सरिखो संसार ॥४॥

ढाळ॥ वणझारानी देशी ॥ शुण राजा हो अन रथ देखी नारि ॥ बे हत्या थई मुज थती ॥ शुण रा जा हो ॥ शु० कंठ ठवी तरवार ॥ आतम घात करी सती ॥ शु०१॥शु० अबळादेखी सरुप ॥ ढाहा हुं थ यो पातकी ॥शु०शु। घोडी बाळ अनुप ॥ वळी घर णीनो घातकी ॥शु०२॥शु। सुघरणी विण घर शुन्य॥

घरणी मंडण घर तणो ॥शु०शु। सुघरणी घरनो पुन्य ॥ घरणी पुरुष सोहामणो ॥शु०३॥शु। घरणी घर आचार ॥ घरणी लज्या घर तणी ॥शु०शु। घरणी घर सिणगार॥घरणी घर केरो धणी ॥शु० ४॥शु। घरणी वि ण घरबार ॥ आवे पहीन माहुणो ॥सु०शु। घरणी वि ण संसार॥ दीसे पुरुष इयामणो ॥शु० ५॥शु। ते पोहो ती परलोक ॥ घरणी पाखे कळकळे ॥शु०शु। हीयमा माहि सोग ॥ दावानळ जिम परजळे ॥शु० ६शु। मरे बा ळापण माय ॥ जोवन वय नारी मरे ॥शु०शु। गरढ पणे न खमाय॥ पुत्र मरण तिने सिरे ॥शु०७॥शु। जी व्या मांहीं सवाद॥कोइ नहीं भीमो कहे॥शु०शु। वागे घ र घर नाद ॥ मरीये तो लज्या रहे॥शु०८॥शु। पाणी त णे विछोह ॥ धरतीही फाटि हीयो॥शु०शु। खोटो माह रो मोह॥ साथ न परणीशुं कीयो॥शु०९शु। इम कही म स्तक छेद॥भीमे पण कीधो तिहां॥शु०शु।मुनीवर पाम्यो खेद॥अनरथ घणो हुवो इहां॥शु० १०शु०। मरण गया जीव च्यार॥मुज वचने रिषि चिंतवे॥शु०शु।जीवीत प णो धिक्कार॥दुख फळ पामीश परभवे॥शु०११शु।पचखी च्यार आहार ॥ च्यारे सरणां उचरी ॥शु०शु। अणसण

करी अणगार ॥ जीवित घात पोते करी ॥शु० १२ ॥ शु। पंच जीवनी घात॥ सावद्य वचन थकी थइ ॥शु० शु। हुआ दुग्गति पात ॥ सावद्य वचन थकी कइ ॥ शु० १३॥शु। पाळो जे आचार॥ ते आरंभ न उपदि से शु०शु। जीव तणा दातार ॥ करुणा मन मांहे व सी ॥शु० १४॥शु। मुनीवर जेह दयाळ ॥ आगम ते ध न भाखे नहीं ॥शु०शु। एकसो आठमी ढाळ ॥ ए जि नहरष भली कही ॥शु० १५॥शु॥ सर्व गाथा २३६०॥

ढाळ १०९ मी.

दुहा॥ आत्म गवेखी जे हुवे ॥ न करे गृहस्थ प्र संग ॥ अति परिचय आदर नहीं ॥ थाये संयम भंग॥ १॥ गृहस्थ सदाइ मोकळा ॥ आरंभनो व्यापार॥ ते हशुं परिचय साधुने ॥ करवो नहीं केवार ॥ २॥ सकळ रिद्धि पुन्ये लही ॥ नहीं घर कुमणा काय॥सोवन सि खिथी ताहरे॥शुं ओछुं छे राय ॥ ३॥ देवचंदना वयण सुणी ॥ मनमां हरख्यो राय ॥ दोष खमावी आपणा ॥ वंदे मुनीना पाय ॥ ४॥ हेमसुरि देसन दीये॥ बेसि स भा मझार ॥ योगशास्त्र इम वांचतां ॥ आव्यो ए अ धिकार॥ ५॥जळधि नीर कोइक मवि॥वेळू नदि गिणाय

॥मेरु तोळाये त्राजू॥नारि चरित्र न लिखाय॥६॥

ढाळ॥ रे मन पंखीया म पडीश पंजरे ॥ संसार माया जाळरे ॥ ए देशी ॥ सांभळो श्री कुमर नरवर ॥ नारि चरित्र विचारिरे ॥ सीहपुर वर श्रीधर वसे॥ नागिला तस नारिरे ॥ सुण राजीया भाखे एहेम॥१ ॥ सुजाण वाणी वखाणरे ॥ घरण पुत्र तेहने सुंदर ॥ परणाव्यो सुजगीसरे ॥ श्रीदेवी नामे सीलवंती ॥ सुखे रहे निशिदीशरे ॥सु०२॥ सासू वहु वाझे नहीं पण ॥ निखर सासू नाररे ॥कळह कंदल करे अहनिशे॥ वहूसुं वेकाररे ॥सु०३॥ सापिणी जेम करे फुंफुं ॥ माकिणी सारीखरे॥पापिणी नवि रहे वरजी॥मसे देतां सीखरे ॥सु०४॥ एक दिन निज कंत केरी ॥ पमीवींटी क्यांहिरे ॥ जुडी वहुने लेइ मुंकी ॥ तेण तकता मांहिरे ॥सु०५॥ मुंद्रमी तव जुए सूसरो॥ वहु कहे तिणी वाररे ॥ मुंद्रमी में लही स्वामी ॥ ए ल्यो कहे साररे ॥सु० ६॥ मुंद्रमी जव वहु दीधी ॥ नागिला तिणी वाररे ॥ कहे घरनां चोर माणस ॥ करुं कासि पुकाररे ॥सु०७॥ चोरनो घर मांही वासो ॥शो हुवे भलो

॥सु०८॥ दीकराने क्रोध चमीयो ॥ करे क्रोध विणा सरे ॥ लेइ भोगळ नारि मारी ॥ सीस फूटयो तासरे॥ सु०९॥ पमी मुंइ मुरछित थइने ॥ पीहर गया उता होरे ॥ कहे पुत्री माय पीताने ॥ को म देमि राडिरे॥ सु.१०॥ गाळिथी बहु वढि वाधे ॥ वेमिथी गुण जायरे ॥ दोस सासू तणो केहनो ॥ लिख्यो सुख दुख थायरे ॥सु.११॥ करम कीधां कोइ न छूटे ॥ कर्म न गणे शर्मरे ॥ मुंज नल हरिचंद रावण ॥ रोळव्या सहु कर्मरे ॥सु.१२॥ बापने समजावीयो इम ॥ मरण पाम्यो तेणिरे ॥ भाव रुमी लही सदगति ॥ आराध्यो भव जेणरे ॥सु.१३॥ लोक मांहीं थइ फिट फिट ॥ नागिला नारि शिर धूळरे ॥ सहु नाखे एम भाखे ॥ कीयो अनरथ मूळरे ॥सु.१४॥ पुत्रनी पण थइ हीला ॥ लोकमां अपवादरे ॥ तास कन्या कोइ नापे ॥ गई लाज मर्यादरे ॥सु.१५॥ पिता परदेश जईने ॥ कर्यो तास विवाहरे ॥ नारि उमया धरण परणी ॥ आवीयो उछांहरे ॥सु.१६॥ नारि उमया ते संघाते ॥ भोगवे सुख साररे ॥ ढाळ थइ जिनहरष एकसो ॥ उपर नव श्रीकाररे ॥सु.१७॥ सर्व गाथा २४१३.

ढाळ ६६० मी.

दुहा ॥ उमया केहने नवि गमे ॥ सासूने दे गा
ळ ॥ टाकर टोळाशुं रमे ॥सासु तणो कपाळ॥ १ ॥खां
ंडि दळिने जळ गळि ॥ न करे घरनो काज ॥ वा
घिणि जिम सामी घसे ॥ लोक तणी नही लाज ॥ २॥
जूठी रूठी राक्षसी ॥ वेढि करणि वाचाल ॥ विढती
सासूने सिरे ॥ आपे अछतो आळ ॥ ३॥ सासू बीहे
वहु थकी ॥ हुती जे विकराळ ॥ वाघिणि सरिखी व
हुअरे ॥ सासु करी शीयाळ ॥ ४॥

ढाळ ॥ करम परीक्षा करण कुमर चल्योरे ॥ए
देशी॥ राग मारु ॥ वातमीयां सुणज्योरे नारि चरित्र
नीरे ॥ इम करतां दिन जाय ॥ सासूने ससरोरे काळ
प्रापत थयारे ॥ उमया हरखित थाय ॥वा०१॥ भगति
करेरे निज भरतारनीरे ॥ मन रिझवी भरतार ॥ पोता
नी इच्छायेरे रमे पर पुरुषशुंरे ॥ दुस्सीलणी ते ना
र ॥वा०२॥ सोमदेव नामेरे एक श्रावक वसेरे ॥ तेह
शु धरणने मित ॥ नारी वखाणेरे गुण मीत्र आगळेरे॥
सांभळ सगुणा मित ॥वा०३॥ सोत्र सुरंगीरे गुणवंत गो
रडीरे ॥ मुजशु रातो तेह ॥ सोमदेव कहे सांभळ मी

त्र तुरे ॥ नारिनो किश्योरे सनेह ॥वा०४॥ नारिनो न कीजेरे वेसासमोरे ॥ चंचळ नारीनी जात ॥ तेह नारीनोरे रंग पतंगनोरे ॥ हीए मुख जुइरे वात ॥वा०५ नारी क्यारीरे वहु अवगुण तणीरे ॥ कीजे नहीरे वेसास ॥ जो तुं मानेरे नहीं तो घर जइरे ॥ इणि परे कहेजेरे तास ॥वा०६॥ किण इक गामेरे चालुंछुं हु कामनिरे ॥ तुं रहेजे निज गेह ॥ तिमहीज कीधुंरे मीत्र तणुं कयुरे ॥ नारी कहे घरी नेह ॥वा०७॥ तुज विण कंतारे हुं कीणीपरे रहुरे ॥ एकलमी घर मांहे ॥ अबळा नारीरे जो रहु एकलीरे ॥ सहूको लागु थाय ॥वा०८॥ हुं कुळवंतीरे गुणवंती सतीरे ॥ न करुं केहनो प्रसंग ॥ पण गोळ देखीरे दाढ सहुनी गळेरे ॥ एहवो नारीनो अंग ॥वा०९॥ तुज विण सुनांरे मंदिर माळीयांरे ॥ तुज विण सुनीरे सेज ॥ तुज विण केहांरे सुख संसारनांरे ॥ तुज पाखें श्यो हेज ॥वा०१० ॥ तुज विण कंतारे न्हावण धोवणांरे ॥ पान फुलनो परिहार ॥ वस्त्र न पहेरुंरे कंता शोभतांरे ॥ हुं न करुं शिणगार ॥वा०११॥ कुशळे वाल्हारे वहेला आवज्योरे ॥ धरज्यो प्रिउमा प्रेम ॥ आयो वळीनेरे घरमां कि

पी रह्योरे ॥ नारी न जाणे तेम ॥वा० १२॥ कोइ नर आव्योरे एटले निसि समेरे । ले गइ महेल मझार॥ सेजमी समारीरे फूल भला पाथर्यारे ॥ शोळ संज्या शिणगार ॥वा० १३॥ ताजाने कराव्यारे भोजन जार नेरे ॥ दीधां फोफळ पान ॥ दीपक करीनेरे महेल दी पावीयोरे ॥ कर्यो सुर मंदिर समान ॥वा० १४॥ लुब धि नारीरे ते पर पुरुषश्युंरे ॥ करती विषय विलास॥ चरित्र निहाळ्यारे सहु निज नारीनारे ॥ धिग धिग ए घर वास ॥वा० १५॥ एहवुं देखीरें नर क्रोधे भर्या रे ॥ करुं नर नारिनी घात ॥ वळी विचार्युंरे नारी मारतारे ॥ विस्तरशे जग वात ॥वा० १६॥ देखी ऊं घ्यारे नरनारी बिन्हेरे ॥ जार हण्यो ततकाळ ॥ एटले थइ एकसो दसमी भलीरे ॥ कहे जिन हरष ए ढाळ ॥वा० १७॥ सर्व गाथा २४३४

ढाळ १११ मी.

दुहा॥ परनारिशुं प्राणीया ॥ कीजे नहीं सनेह॥ सुख थाभो ने दुख घणो ॥ परतक्ष विष फळ एह ॥ १॥परनारीश्युं प्रीतमी ॥ मत जोडे जगदीस ॥ जीवे तो अपयश हुवे ॥ नहीं तो खोवे शीस ॥२॥ जे न

र बळ वुद्धि आगळा ॥ मारी न शकै कोय ॥ ते प
रनारी संगते ॥ मरण लहे पर लोय ॥३॥ उमयाशुं
करी प्रीतडी ॥ मूओ तह पुरुष ॥ इणे अवसर जागी
तिहां ॥ जोवे जार निरख्य ॥४॥ पासे को दीसे नहीं।
मार्यो दीसे जार ॥ तव उभाणी नीसरी ॥ नाख्यो कुप
मझार ॥५॥ रवि सशि तारा ग्रह तणो ॥ लहीये तेहे
विचार॥पण नारिना चरित्रनो॥कोइ न पामे पार॥६॥

ढाळ॥ रहु रहु रहो वालहा ॥ए देशी॥ नारि च
रित्र तुमे सांभळो ॥ उमया तणा उपाय ॥रायरे॥ खी
र खांड घृत बाकळा ॥ थाळ भरीयो जाय ॥रायरे ना
री०१॥ केमे पति तेहनो थयो ॥ गइ समसान मझार॥
रा०॥ भूत प्रेत जिहां शाकिनी ॥ बीहे नहीं ते नार॥
रा०ना०२॥ उभराणी डुंगर चडी॥ पइठी गुफा मझार
॥रा० बेठी चोसठ योगिनी ॥ क्रिडा करे अपार॥रा०
ना०३॥ उमया पाए लागीने ॥ आगळ मुंक्यो थाळ
॥रा० निरखी हरखी योगिनी ॥ बोलावी ततकाळ॥
॥रा०ना०४॥ तुज कारज उमया सर्यो॥ कहे न स
र्यो माय ॥रा० मरण थयो मुज जारनो ॥ ते दुख
दीधे न माय ॥रा०ना०५॥ कृपा करो मुज उपरे ॥

विधा थो माय ॥रा० हुं वेसुं वृक्ष उपर॥ ते वृक्ष चाल्यो
जाय ॥रा०ना०६॥ वहु नरशुं सुख भोगवुं ॥ कदी न हु
वे विखवाद ॥रा० मारी केहनी नवि मरुं॥ नरां उतारुं
नाद ॥रा०ना०७॥ शुण उमया देवी कहे ॥महावळ दे
इण वार ॥रा० उमया कहे हुं आपशुं ॥ महावळ मुज
भरतार ॥रा०ना०८॥ अंजन आपो मुज भणी ॥ जि
म मांटी वश थाय ॥रा० काम सरे जिम माहरो ॥ तुमने
वळ दिनराय ॥रा०ना०९॥ विद्या अंजन आवीयो ॥
चाली वेसी वृक्ष ॥रा० मांटी पण क्रोमे चल्यो॥ दीठं च
रीत्र प्रतक्ष ॥रा०ना०१०॥ क्रमया आवी निज घरे ॥
धरण गयो मित्र पास ॥रा० नारी चरीत्र निहाळीयां ॥
सहु संभळाव्या तास ॥रा०ना०११॥ हवे घर नांहीं रहुं
नहीं ॥ सांभळ मित्र सुजाण ॥रा० करुं वेसास नारी त
णो ॥ तो खोऊं निज प्राण॥रा०ना०१२॥ सोम कहे मि
त्र सांभळो ॥ धन मुंकी मत जाय ॥रा० चंचळ नारी
एकली ॥ धनथी अवगुण थाय॥रा०ना०१३॥ नाकि
णने जर पिंचमी ॥ वेंलो न वळी वाम ॥रा० वानर ने
थीली वढव्यो ॥ वळतो केहने पाम ॥रा०ना०१४॥ ता
हरे पण धन जोइये॥ धन विण न सरे काज ॥रा०

तिण कारण धन लेइ चल्यो॥ वाधे सुख ने लाज॥ रा०ना०१५॥ मित्र वचन मानी करी ॥ धन, लीधुं करी वुद्धि ॥रा० धरण तुरत पंथे चल्यो॥ आगे मिलियो सिद्ध॥रा०ना०१६॥ चरणे लागीने कहे ॥ करम कीयां में कोड ॥रा० करम कथा मुज शी कहुं ॥ ब्रह्याथी छोड ॥रा०ना० १७॥ सिद्ध पुरुप वोल्यो तिसे॥ चिंता छे मुज एक ॥रा० सोवन पुरिसनो मंत्र छे ॥ धन विण न फळे छेक ॥रा०ना०१८॥ते धन मुज पासें नहीं ॥ धन विण आळ पंपाळ ॥रा० कहे जिन हरष पूरी थइ ॥ एकसो इग्यारमी ढाळ ॥रा०ना० १९॥ सर्व गाथा २४५९॥

ढाळ ११२ मी.

दुहा॥ धरण कहे धन ल्यो मझो ॥ करो सफळ निज काज ॥ सिद्ध पुरुप हरख्यो घणुं ॥ वचन शुणी अभीराम ॥१॥ धन लीधुं नहीं धरणनुं ॥ दीधां विद्या दान ॥ जेह थकी जाणीजीये॥ तीन काळनों ग्यान॥ २॥ धरण चरण प्रणमी चल्यो ॥ भमतो महावन मांहे ॥ मुनि विधयो एक वृक्ष तळे ॥ देखी थयो उछांह ॥३ मुनीवर केरा पाय नमी । कर जोडी कहे एम ।

वे हत्या मुज शिर चढी ॥ तेथी छुटुं केम ॥४॥ जैन धरम आराध तुं ॥ मुनि कहे जप नवकार ॥ सेत्रुंज य तिरथ जइ ॥ निज पातिक उतार ॥५॥

ढाळ॥ लंका ले जिगी सुण रावण ॥ए देशी॥व चन इश्यो मुनिवरनो सुणीयो ॥ जइ सत्रुंजय तिरथ फरस्यो ॥ पाप महावन लुणीयो॥व०१॥ श्रीजिनभा षित धर्म आराधे ॥ जपे नवकार सदाई ॥ निज ना रीथी मरतो मंदिर धरण न जाई ॥व०२॥ नारी मारे जो घर जइए ॥ नारी विषनी क्यारी ॥ राय प्रदेशी मुज सरीखा ॥ मार्या इणे धूतारी ॥व०३॥ मनमां ध रण विचारी एहवुं ॥ स्त्री घर मुंक्यो ताजा॥ नारी च रीत्रनो पार न लहीये ॥ हेम कहे सुण राज॥व०४॥ वात न बेसे ए मुज मन मांही ॥ हेम सुणो ससनेहा॥ केम गळे कुंजरने कीडी ॥ मुज मन एह सदेहा॥व० ५॥ इण अवसर एक पाटण मांही ॥ मरण लह्यो वि वहारी ॥ प्रीती धरी प्रीतमने केडे ॥ सती हुवे तस ना री ॥व०६॥ राय भणी आवी वीनवीयो॥ नृप कहे ह वे थइ संध्या ॥ मत बाळज्यो अवळा हुं पण ॥ आ वीश प्रात अवंध्या ॥व०७॥ मध्य निशा जब थाये

राजा ॥ हाथें खडग संवाहे ॥ सती बेठी जिहां वळया
वामे ॥ महा समसाण मांहे ॥व०८॥ नाद शुण्यो इण
अवसर श्रवणे ॥ जाणे किन्नर आलापे ॥ नादे सुरन
र नारी मोहाये ॥ दुखीयानां दुख कापे ॥व०९॥ पं
गु पुरुष तिहां बेठो गाये ॥ जिणे नादे रवि थंभे ॥ ते
पासे जइ बेठी नारी ॥ सांभळे थइय सचंभे ॥व०१०
॥ नाद सुणतां थइ कामातुर ॥ पंगु भणी कहे स्वामी
॥ मुजशुं भोगव भोग सुरंगा॥ कहुं तुजने शिर नामी
॥व०११॥माहरुं काम नहीं मुज म कहीश॥ दीन सती
मुख भाखे ॥ हुं आवी तुज आश्या करीने ॥ कां अ
वहेली भाखे॥व०१२॥ सती वयण सही शक्यो नहीं
॥ पंगु तणो चित चळीयो ॥ तिणि वेळा तिण वामत
तखिण॥ तिणि नारिशु मिलीयो ॥व०१३॥ करी कूक
म सती तिहां आवी ॥ वात सयळ नृप जाणी॥ थयो
परभात राजा पण आव्यो ॥ सती भणी कहे वाणी ॥
व०१४॥ कां पेसे तुं पावक मांहि ॥ कांइ वळे तुं वाउ
॥ कहे जिनहरष एकसो बारमी ॥ ढाळ थइ सुखदा
इ ॥व०१५॥ सर्व गाथा २४०८॥

ढाळ ११३ मी.

दुहा॥ चरणे लागुं नृप कहे॥ वहेन वचन मुज मान ॥ आपघात करतां हुवे॥ दुखीयो जिव निदान ॥ १॥ सती कहे नृप सांभळो ॥ पीउशुं अधिको नेम ॥ तेहशुं मिळवो माहरे ॥ इहां रह्यो कहो केम ॥ २॥ कुमर कहे सांभळ सती ॥ किहां मिलशे भरतार ॥ कीध कमाइ जूजूइ ॥ मिळवुं नहीं संसार ॥ ३॥ लख चोराशीमां भमे ॥ केहने न मिले कोइ ॥ जीव जाये गति जूजूइ ॥ होये विचारी जोइ ॥ ४॥ सती कहे खोटी म कर ॥ माहरे बळवुं आज॥ पीतम साथे बळुं नहिं ॥ तो किम वाधे लाज ॥ ५॥

ढाळ॥ करि शिणगार वृंदावन माल्हो॥ राधा रमवा चालीरे ॥ मारी सखीरे समाणी ॥ ए देशी॥ सतीय भणी बोलावी नेमी ॥ एकांते नृप तेमीरे ॥ कहे नृप उरगारी॥ कां चूके छे आ भव लीला ॥ धन भोगवे करी लीलारे ॥ क० १॥ सील जाणुं छु सहु हुं ताहरुं ॥ मान कह्युं तुं माहरुंरे ॥ क० वात गइ वीसरी रयणीनी ॥ काया मुंकी धणीनीरे ॥ क० २॥ जइ पांगुलाश्युं सगस कीधो ॥ अमृत तजी विष पीधोरे ॥ क० एहवां व

चन सुणीने रुठी॥ बुंब पामीने उठीरे ॥क०३॥ जोवो रे लोको सुविचारी॥ सशि सूर वरसे अंगारीरे ॥क० पाणीमांथी उत्ती झाला ॥ दूध थयो मिटि हालाहल ॥ क०४॥ काने कहेवाये राजा न्याइ ॥ते करे निच क माइरे ॥क० मुज कहे तुं था मुज नारी ॥ सुख भोग व संसारीरे ॥क०५॥ नियम कर्यो राजा अविचार्यो॥ नारि मुई सुख हार्योरे ॥क० नृपने न संर राणी पाखे ॥ तिणे मुजने इम भाखेरे ॥क०६॥ राय तणी इम ही ल करावी ॥ पावक नारि झंपावीरें ॥क० राय थयो दिलगीर सयाणो ॥ लोकों माहिं लजाणोरे ॥क०७॥ उतरीयो राजानो पाणी ॥ वात सहु जग जाणीरे॥क० लाज्यो नृप दरवारे नावे ॥ हेम कुमर तेमावेरे ॥क० ८॥ आवी गुरुने पाये लाग्यो ॥कां मन संसय भाग्यो रे॥क० वयण जेह भाख्या गुरुराये ॥ ते किम खोटा थायेरे ॥क०९॥ में मूरख मन शंका आणी ॥ सत्य तु म्हारी वाणीरे ॥क० तुम वयणे संका जो धारी ॥ ला ज गइ मुज सारीरे ॥क०१०॥ नारि चरित्र लिखे न हीं कोइ ॥ ते में मुंकी जोइरे ॥क० तुं नकलंकअछे मतधारी ॥ वात कही नृप सारीरे ॥क०११॥ हवे तुज

शिस कलंक उताकं ॥ लोक कहे सहु सांहरे ॥क० लोक सहु राजा तेमाव्या ॥हेम समीपे आव्यारे॥क० १२॥ पांगुल नरने इहां बोलावो॥वहेला वार म ला वोरे ॥क० पंगु पुरुषने तेमी लावे॥ हेमसूरिस बोला वेरे ॥क०१३॥ कीधां पूरव पाप कुवाटे ॥ पंगु थयो ते माटेरे ॥क०आ भव जो तुं जुठुं बोलीश॥ तो आ गे दुख पामिशरे ॥क०१४॥सती तणो तुज दुषण ला ग्यो ॥ तें तेहनो व्रत भाग्योरे ॥क० भाणे सील सती निज टाळ्यो ॥ परवशे अंग विटाळ्योरे ॥क०१५॥ ना ना करतां दोष लगायो॥ कुसती सील भंगायोरे॥ क० इण एकसोने तेरमी ढाळे ॥ नृप जिनहरष उजा ळेरे ॥क०१६॥ सर्व गाथा २५०२॥

ढाळ ११४ मी.

दुहा॥ पंगु वयण श्रवणे सुण्यां ॥ सहुनी भागी सं क ॥करे प्रसंसा रायनी ॥ ए जगमां निकलंक ॥१॥ ज्ञानि गुरु जाणी ॥ पूछे एम नृपत्ति ॥ पूरव भव हुं कुण हतो ॥ आगळ किहां उतपत्ति ॥२॥ वयर केम रेसंगशुं ॥ मंत्री उदयन हेम॥ महेर धरी मुज उपरे कहोने स्वामी केम ॥३॥ पांच बोल पूछ्या

॥ हेम कहे शुण राय ॥ चोसठ वरशे वीरथी ॥ जंबु नु गति सिथाय ॥४॥ प्रबल ज्ञान ते ले गयो ॥ अलप ज्ञान ते आज ॥ तें जे पूछो ते भणी ॥ करवो ताहरो काज ॥५॥

ढाळ॥ चांदारइ चांदणे करि शिणगारी ॥ राजा री राणी पाणी नीतरीजी ॥ए देशी॥ आवीयो हेमसूरी सिद्धपुर गाम ॥ सरसती सरिता तीरे रहीजी ॥ विधिशुं आराधे तिहां सूरि मंत्र ॥ अगम तप करी गहगहीजी॥ १॥ त्रिभुवस्वामी सासन सूरी ताम ॥ आवीने हेमने कहे सहुजी ॥ पूर्व भाषित तणुं सांभळी भेद ॥ सांभळो नृप तुमने कहुंजी ॥२॥ देश मेवाड ठाउ जयपुर द्रंग॥राय जयकेसी तिहां भलोजी॥ वीर नामे थयो तेहनो पुत्र ॥ व्यसन सातां तणो ते निलोजी॥ देशवटो दीयो तास भूपाळ ॥ मेवाम संधि जइ रह्योजी ॥ पल्लीपति केरमो थयो राजान॥ देश लुंटे न छूटे ग्रह्योजी ॥४॥ एक दीन माळव सारथवाह॥ बहु रिद्धि लेइ जातो हतोजी ॥ लुंटि लीधो वीर पल्लीपति साथ ॥ पाप तेहनो मूंकयो, जीवतोजी ॥५॥ द्वेष भर्यो आव्यो माळव मांहि ॥ राजा नो कटक लेइ आवीयोजी॥ पाणीये वीरनो वींटीयो पा

ळ॥ चोरपति वीर पुलावीयोजी ॥६॥ गर्भवती नारी च
डी तस हाथ॥ घाय मार्यो तेहने वाणीयेजी ॥ सिर चडी
दोय हत्या समकाळ ॥ स्त्री बाळ वे मूआं जाणीयेजी॥
७॥ गाम वाळी हणी नारी पाप ॥ कटक लेइ आव्यो
माळवेजी ॥ राय आगळ कहि वात सहु तेण ॥ नगरनो
नाथ खीजी चवेजी ॥८॥ फिट फिट पापी तें पाप बहु
कीध ॥ दुरगती गामी तुज शाणीयोजी ॥ ताहरुं मुख ह
वे मुज म देखाल ॥देश बाहिर काढयो वाणीयोजी ॥
९॥ लोक हीले निंदी करे फिटकार ॥ आव्यो वइरा
ग्य तापस थयोजी॥ कष्ट करे रहे वनह मझार ॥का
ळे मृत्यु तिणे तापस लह्योजी ॥१०॥तप वळ थयो जे
संगदेराय ॥ हत्या कीधी तेथी वाझीयोजी ॥ जू लीं
ख मांकण मारे नर जेह ॥तेहने पुत्र न सिर ताजीयो
जी ॥११॥ पशु पंखी माणस नान्हमां बाळ॥ नोरे वि
योग करे मायनोजी ॥ तेहने पेटे छोरु नवि थाय ॥

॥ हेम कहे शुण राय ॥ चोसठ वरशे वीरथी ॥ जंबु नु गति सिधाय ॥४॥ भवल ज्ञान ते ले गयो ॥ अजप ज्ञान ते आज ॥ तें जे पूछो ते भणी ॥ करवो ताहरो काज ॥५॥

ढाळ॥ चांदारइ चांदणे करि शिणगारी ॥ राजा री राणी पाणी नीसरीजी ॥ए देशी॥ आवीयो हेमसूरी सिद्धपुर गाम ॥ सरसती सरिता तीरे रह्योजी ॥ विधिशुं आराधे तिहां सूरि मंत्र ॥ अठम तप करी गहगह्योजी॥ १॥ त्रिभुवसामी सासन सूरी ताम ॥ आवीने हेमने कहे सहुजी ॥ पूर्व भावित तणुं सांभळी भेद ॥ सांभळो नृप तुमने कहुंजी ॥२॥ देश मेवाड ठाउ जयपुर द्रंग॥राय जयकेसी तिहां भलोजी॥ वीर नामे थयो तेहनो पुत्र ॥ व्यसन सातां तणो ते निलोजी॥ देशवटो दीयो तास भूपाळ ॥ मेवाम संधि जइ रह्योजी ॥ पल्लीपति फेरमो थयो राजान॥ देश लुंटे न छूटे गह्योजी ॥४॥ एक दीन माळव सारथवाह॥ बहु रिद्धि लेइ जातो हतोजी ॥ लुंटि लीधो वीर पल्लीपति साथ ॥ पाम तेहनो मूंक्यो जीवतोजी ॥५॥ छेप भर्यो आव्यो माळव मांहि ॥ राजानो कटक लेइ आवीयोजी॥ वाणीये वीरनी वींटीरे पा

ळ॥ चोरपति वीर पुत्ताशीयोजी ॥६॥ गर्भवती नारी च
डी तस हाथ॥ घाय मार्यो तेहने वाणीयेजी ॥ सिर चढी
दोय हत्या सनकाळ ॥ स्त्री वाळ वे मूआं जाणीयेजी॥
७॥ गाम वाळी हणी नारी पाप ॥ कटक लेइ आव्यो
माळवेजी॥ राय आगळ कहि वात सहु तेण ॥ नगरनो
नाथ खीजी चवेजी ॥८॥ फिट फिट पापी तें पाप वहु
कीध ॥ दुरगती गामी तुज प्राणीयोजी ॥ ताहरुं मुख ह
वे तुज म देखाल ॥देश बाहिर काढ्यो वाणीयोजी ॥
९॥ लोक हीले निंदी करे फिटकार ॥ आव्यो वइरा
ग्य तापस थयोजी॥ कष्ट करे रहे वनह मझार ॥का
ळे मृत्यु तिहां तापस लह्योजी ॥१०॥तप वळ थयो जे
संगदेराय ॥ हत्या कीधी तेथी वाझीयोजी ॥ जू लीं
ख मांकण मारे नर जेह ॥तेहने पुत्र न सिर ताजीयो
जी ॥११॥ पशु पंखी माणस नान्हनां वाळ॥ मोरे वि
योग करे मायनोजी ॥ तेहने पेटे छोरु नवि थाय ॥
थाये तो जीवे नहीं तेहनोजी ॥१२॥ हवे कहुं वीरवं
छीरतिवात॥वाटे मुनिवर मिल्यो तेहनेजी॥नाम छे ते
हनो यशोभद्रसूरि ॥ ज्ञान असय निधि जेहनेजी ॥
१३॥ वांदीने वेठो गुरु पास ॥धरम कथा कहे तेह गु

णीजी ॥ निरखी उत्तम नर सुगुरु सधीर ॥ वाणी सु णावे सोहामणीजी ॥१४॥ धर्म करोरे प्राणी आणी विवेक ॥ दान दया दम उपशम धरोजी॥सील पाळो टाळो बचनना दोष॥पाप अढार दूरे परिहरोजी॥१५॥वीर कहे गुरु सांभळो वात ॥ पशु जिम में भव नीगम्योजी ॥ दान तप सील भाव्यो नहीं भाव॥ धरम पाखे भव आथम्योजी ॥१६॥ पांचे में शेव्या आश्रव द्वार ॥ पाप करीने में पोतो भर्योजी ॥सुगुरु तुं मिल्यो हवे मुज भणी तार॥ दुरगतिनां दुखयी खरो डरव्योजी ॥ १७॥ प्रवहण सारिखो तुं गुरु राय ॥लोहडा सारिखो हुं सहीजी॥ एकसो चउदमी ढाळ रसाळ ॥ कवि जिनहरष भली कहीजी ॥१८॥ सर्व गाथा २५२५॥

ढाळ ११५ मी.

दुहा॥ भारी लोहना सारीखो ॥ तुं गुरु प्रवहण तार ॥ भव सायरमां बुडतां ॥ मुजने पार उतार ॥१॥ यशोभद्र मुनीवर कहे ॥ यथा शक्ति करी धर्म ॥ सुख पामिश सहु धर्मथी ॥ धर्म थकि अक्षय कर्म ॥ २॥ जीव घात न करुं हवे ॥ व्यसन न शेवुं तास ॥ गरु मुखे अगम करी चल्यो ॥ वीर वीर साक्षात ॥३॥

तिलंग देश तिहां नव लख ॥ नव लख तेहनां गाम ॥ एकसला नगरी तिहां ॥ आढर वणिक सुनाम ॥ ४ ॥ पुन्यवंत विवहारीयो ॥ जसु घर दान अपहु ॥ अन्न पान पामे सहु ॥ उत्तम घरनी चहु ॥ ५ ॥

ढाळ ॥ होजी सोनारो चकल्यो ने रुपारी मोर ॥ सांइधण पाणी सांचरी ॥ ए देशी ॥ होजी आढरने घरे आव्यो वीर ॥ भूख्यो मांगण लाजतो ॥ होजी मोटा मांगण मरण समान ॥ वीर विचारे आवतो ॥ १ ॥ होजी शेठ तणी हुं सारुं शेव ॥ काम करी भोजन करुं ॥ होजी तो क्षत्रिनो रहे विवहार ॥ एम करी पेट सुखे भरुं ॥ २ ॥ होजी शेठने आवी करीयो जुहार ॥ गलगल सादे बोलीयो ॥ होजी चाकर मुजने राखो शेठ ॥ काम करीश सहु तुम दीयो ॥ ३ ॥ होजी उत्तम नर देखी शेठ ॥ आदरशुं बोलावीयो ॥ होजी कुण नाम कुण ताहरी जात ॥ किहांथी कहे तुं आवीयो ॥ ४ ॥ होजी नाम ठाम सहु दाख्या वीर ॥ राख्यो आदर तेहने ॥ होजी भोजन देइसि करे काम ॥ वस्त्र देरमि तुज देहने ॥ ५ ॥ होजी घरनां काम करे सहु वीर ॥ रहे इणी परे सुखश्युं सदा ॥ होजी आव्या तेहवे पजूसण पर्व

॥ धरमी आराधे मुदा ॥६॥ होजी आठरना सुत च्या
र ॥ निज सुत नारि सहु मिळी ॥ होजी पचखीने बे
या उपवास ॥ धरमशाळाये मन रुळी॥ ॥७॥ होजी
वीर सहु करे घरनो काम ॥ आव्यो कोइ दीसे नहीं॥
होजी धरमशाळाए आव्यो ताम ॥ देखा सहु दीग स
ही ॥८॥ होजी वहुअर साहमो जोवे जाम ॥ वमव
मतो बोलि तिसे ॥ होजी हाजीने खाधाशुं काम ॥ पु
न्य पाप मन नवि वसे ॥९॥ होजी उत्तम पर्व पजुसण
आज ॥ उपवाशी लघु वृद्ध सहु ॥ होजी हाजीने पे
ट भरवाश्युं काम ॥ इश्युं वयण बोली वहु ॥१०॥ हो
जी वीर कहे सुण मोरी माय ॥ श्या माटे खीजो तु
म्हे ॥ होजी हुं पण आज करिश उपवास ॥ आज
आहार न ल्युं अमे ॥११॥ होजी शेठाणी कहे सांभ
ळ दास ॥ पांणे अन्न न करावीये ॥ होजी जाणे तो
रीसावे शेठ ॥ उलंठो अन्नने दीये ॥१२॥ होजी वीर
कहे करुं उपवास ॥ माता माहरी मन रुळी ॥ होजी
तुम उदर खीजे नही कोइ ॥ करो धर्म कारज मिळी
॥१३॥ होजी तुम साथे आवी पचखाण ॥ गुरु मु
खे करुं उपवासनो ॥ होजी पोसहतानी सभा मझार

॥ आयो ऊगो आसनो ॥ १४ ॥ होजी वीरने शेठ बो
लाव्यो ताम ॥ श्यें कारज तुं आवीयो ॥ होजी वीन
य करी कहे ताम ॥ आज पोसह करणो माहीयो ॥
१५ ॥ होजी वीर दुःकर थाशे उपवास ॥ म करिश
शेठे वारीयो ॥ होजी देखी तेहनो भाव अपार ॥ गु
रे पचखाण करावीयो ॥ १६ ॥ होजी करि उपवास
सुणे व्याख्यान ॥ शेठे निशि पोषध ग्रह्यो ॥ होजी आ
दर शेठ समीपे ताम ॥ वीर दास वेशी रह्यो ॥ १७ ॥
होजी पोसह पारी शेठ ॥ प्रभाते वीर सहीत आव्यां
घरे ॥ होजी ढाळ पनर एकसो थइ एह ॥ कहि जिनहर
ष प्रतीपरे ॥ १८ ॥ सर्व गाथा ३५१८.

ढाळ ११६ मी.

जिन पूजवा ॥ हीयमे हरप अपार ॥४॥ शेठ तास साथे करी ॥ आव्या जिन गृह द्वार ॥ निशिही कही मांहि गया ॥ बीजी मध्य गभार ॥५॥ देइ तीन प्रदक्ष णा ॥ चैत्यवंदनने ठाम॥ त्रीजि निशिही तिहां कहे॥ तीन अवस्था ताम ॥६,

ढाळ ॥ आइसडाना गीतनी देशी ॥ शेठ कहेरे वीर पूजो श्री जिनराय ॥ केसर चंदन घनसारस्युंरे॥ भला अगर उखेवोरे फुल चढाय ॥ जिनराय पूजो भलि भावस्युंरे ॥८॥ हवे वीर सधीर विचारे मन मां हीं इशुंरे ॥ पर द्रव्ये पूजा करतां पुन्य न होय ॥ थोभोहीरे जो पोता तणोरे ॥ जिन आगे लागो नावे पातिक धोइ ॥२॥ जिनराय पूजो भलि भावशुंरे ॥ ए आकणी ॥ एहवुं वीर विमाशी आतम कोडी पांचनी रे॥ लीधा मालण पासे कुशुम अढार ॥ लेइ जिन हरप चढावीयारे ॥ निज उलट भावे हीयमे हरष अ पार॥जि०३॥ मन रंगे आदर शेठ सेवक पूजा करी रे॥ आव्या पोताने मंदिर सुंदर गुण माळ॥ भोजन का जे बेठो गृहपतिरे॥ वीरने बेसारी आप्यो माटोरे था ॥जि०४॥ पहिले दूध साकर केरारे लीधा घंटडा

रे ॥ ताजी सुखडी मंगावेरे शेठ सुजाण॥ जलेवीरे सां
ऊ ऊजळीरे॥ पेंमा पावन साकरनारे आणी ॥जि०५
॥ नवि नवि जाति तणारे झाझा लाडुआरे॥ उपर खी
र झाझी खांम घृत परिघल परनाल ॥ पातळी पोळी
घी चोपमारे ॥ जिमी रस्ता केमे सुंदर साळने दाळ ॥
॥जि०६॥सथरा दहींरयुं वळी जिम्यारे कूर सोहामणा
रे ॥ चळुं कीधां दीधां फोफळ पान लविंग ॥ वीरनी
शेठे भगति भली करीरे ॥ जिन धरम उपर वाध्यो उ
छरंग ॥जि०७॥ मुनिवर विहरावीरे शेठे कीधुं पारणुं
रे ॥ आरोगे उपर वीना पान सुरंग ॥ उपगारी करे उ
पगारमांरे ॥ शेठ खरचे निज द्रव्य धरी उछरंग ॥जि०
८॥ सहु लोक कहे धन धन जगमा जस ॥ देईने जिमे
ते जग माही धन्य ॥ जिम्यां कहीये तेहनो खरोरे ॥
झोवरयो कहीये दीधा विण जिमे अन्न ॥जि०९॥ क
वित्व॥खोला वरटी तेल ॥ शाक पाखे निति सारी॥ मी
से भूंडो नार ॥ पेट कहो किणी परे ठरे ॥ उपर ढीली
घेंस छास तो ॥ माही पाणी मांही न मिले लूंण किसो क
हुं कर्म कहाणी॥ आहार अढाइ शेरनो ॥ शेर सवा
दाहिलो लहे ॥ विण दान कहीजे झोवरयो॥ भोजन

एहने कुण कहे ॥ ३॥ ढाळ पुर्वनी॥ हवे भोजन ताजां सरसांरे वीर घणा कर्यारे॥ थई वेदन चुंथाथे जीव शरीर ॥ शेठ पासे वीर जइ कह्योरे ॥ करि औषध उपचार थइ दीलगीर ॥जि० १०॥ बहु तेल अणाव्या ततखिण शेठ चोळवारे ॥ पोते चोळे शेठ वीर शरीर ने पाय ॥ माल्या बहु वैद तेडावीयारे ॥ वैदे ततखिण कीधां औषध दाय उपाय॥ जि०११॥ तिणे अवसर वीर विचारेरे मनमां एहवुंरे ॥ धनधन जिनशासन जिन धर्म रसाळ॥एक पूजारे कीधी जिन तणीरे॥एक कीधो में उपवास जइ पोशाळ ॥जि०१२॥ ते माटे ए सघळा माहरी सेवा कररे ॥ एतो श्री जिनवरना धरम तणो सुपसाय ॥ मुज पोतिरे पुण्य किहां थकीरे ॥ आराधुं श्री जिन धर्म पूजुं प्रभु पाय॥ जि० १३॥ धर्म ध्यान वश्यो वीरना हैडा मांही इश्युरे॥ जिन वचन शुण्यारे काने सार ॥ च्यारे सरणां तेहने दीयांरे ॥ वीर माण तज्यां शुभ ध्यान लहि तिणी वार ॥जि० १४॥ उत्तम माणसनी संगते सहु सारुं हुवेरे ॥ जिन आदर शेठ तणी संगते वीरदास ॥ जिनहरष कहे सुख पामीयारे ॥ एकसो सोळनी ढाळ कही ए खास ॥

जि०१५॥ सर्व गाथा २५५ए॥

ढाळ ११७ मी.

दुहा॥ गिरुआ गुज्जर देशमां॥ वसे दद्दथली गाम ॥ तिहुअणपाळ तस भारया ॥ कास्मेरी इण नाम ॥१॥ तसु कुखे तुं उपन्यो॥ हूओ कुमर नरेश ॥ फुल अढारे पूजीने॥ लह्या अढारे देश ॥२॥ आदर ते उदयन थयो ॥ यशोभद्र ते हेम ॥ आगळ विंतर गति हुस्ये ॥ कहे हेम गुरु एम ॥३॥तिहांथी चवी आ भरतमां ॥ भद्दिलपुर पुर नाम॥ शतानंद राजा तिहां ॥ स्त्री धारिणी अतिराम॥४॥ तास सुत नशत बळ वळी॥ भोगवे राज भंडार ॥ पद्मनाभ जिनवर तणो ॥ थाइश तुं गणधार॥५॥ अक्षय अचळ अनंत सुख ॥ नहिं ज्यां आळ जंजाळ॥थोमे काळे मुगति पद॥तुं पामिश भूपाळ॥६॥

ढाळ॥ पहिलो वधावो म्हारे सुसरारि होइजे ॥ बीजोहो वधावो म्हारा बापरी ॥ए देशी॥ गुरुनो वचन परीक्षा कारण॥ एकसिलाहो२ नगरि छे जिहांजी ॥ निज शेवक राजा तिहां मुंक्यो ॥ आदरहो२ घरे आव्यो तिहांजी॥१॥ दासी एक रहे घर मांहिं॥ वैदेहीहो२ नाम छे ते तणोजी ॥ यात सहु नर तेहने पूछि॥ दासीहो२ क

है दुख आपणोजी ॥२॥ आदरशेठ मोटो विवहारी ॥
च्यारेहो २ पुत्र सलक्षणाजी॥ जैन धरमने रंगे राता॥
वहु धनहो २ विलसे सुख घणाजी॥३॥ वीर इसे नामे
एक शेवक ॥ पूजाहो २ एक जिननी करीजी॥एक क
र्यो उपवास॥ पजूमणहो २ पारणे तेह गयो मरीजी॥४
॥ शेव शेठाणी गया परलोक ॥ वहुअरहो २ पुत्र च
ल्या सहुजी ॥ हुं जीवुं छुं दुखनी आधीसी ॥ दुखहो २
वात कहुं बहुजी ॥५॥ उत्तम जाये अल्प आउखे॥
पापीहो २ चिरंजीवी हवेजी ॥वात सुणी शेवक नृप पा
से ॥ आवीहो २ सवळीही चवेजी॥६॥ ज्ञान अधिक तु
म मांहि मुनिवर ॥ टाळ्योहो २ संसय इण घमीजी॥
कुण उंघता कुण जागता कहीये॥ वावेहो वावे संसा
र कुण वेलमीजी॥७॥ विष अमृत ने गहन नरगश्युं
॥ भाखोहो २ भेद सुहामणाजी ॥ मुरखने नित उंघतो
कहीये॥ जागेहो २ जेह विचक्षणाजी ॥८॥ जेहने वहु
तृष्णा ते वावे ॥ वलीहो २ संसारनी आसवाजी ॥ पर
निंदा ते विष हालाहल ॥ पंमितहो २ वाणी अमृत ल
वाजी ॥९॥ नारि चरित्र ते गहन कहीये ॥ परवशहो
२ तेह नरग गिणोजी॥ हरख्यो नृप ए अरथ सुणीने

आखोहो२ भेद वळी एह तणोजी ॥१०॥ कुण आंधो कुण सूर सुभट नर॥ गुरुताहो२ पणुं केहनें कह्योजी॥ल घुता दिन मित्र कुण वहिरो ॥एहनोहो२ अरथ तुमथी लह्योजी ॥११॥ कामी नर ते अंध कहीजे ॥ सूरो होर नारि वस नवि पमत्योजी ॥ गुरुतापणुं जे हाथ न कमे ॥ लघुताहो२ मांगण नर घडत्योजी ॥१२॥ धर्म विना ते दिन दोहिलो॥ धर्मजहो२ पमाडे मित्र जे ली ॥ श्रीजिन वचन सुणे नहीं श्रवणे॥ बहेरोहो२ क हीये पुरुप तेजी ॥१३॥ कुण अधम कुण मुंगो चंच ळ ॥ जीत्योहो२ जग केणे वस कर्योजी ॥ कुण प्रसं स्यो सार किश्यो कहे ॥ अधमजहो२ लेई व्रत परिह र्योजी ॥१४॥ जिन गुण गाय न जाणे मुंगो ॥ चंच ळहो२ दुरजन प्रीतमोजी ॥ क्षमता समता तिणे जग जीत्यो ॥ धायेहो२ वश्य निय वच जमोजी ॥१५॥ अलप रिद्धि दातार प्रसंसे ॥ देईहो२ मीठा ऊचरेजी ॥ सारमां सार कहीजे ते नर॥ गुरुनीहो२ प्रसंसा नृप करेजी॥१६॥तुं ज्ञानी सुजने मिल्यो ॥ तारकहो२ तुं जग जीवनोजी॥ सो जिनहरष सत्तरमी ढाळे ॥ धन धनहो धन जिण कुळे तुं ऊपनोजी ॥१८॥ सर्व गा

था २५८३॥

ढाळ ११६ मी.

दुहा॥ कुमर कहे उपगार तें ॥ मुज कीधा गच्छ राय ॥ धर्म कथा कहो मुज भणी ॥ जीव मुगति किम जाय ॥१॥ जिन पूजे जिनवर नमे ॥ जिनह न खंन आण ॥ जिन वयणे राता रहे ॥ ते पामे निरवाण ॥२॥ मुनिवर वंदे भगतिशुं ॥ मुनिवर आपे दान ॥ मुनिवरनी शेवा करे ॥ पामे केवळज्ञान ॥३॥ समकितशुं रंगे रमे ॥ सुणे सदा सिद्धांत ॥ ज्ञान आराधे निरमळो ॥ लहे मुगति एकांत ॥४॥ हीयडा मांहीं राखीये ॥ चतुर भावना च्यार ॥ मैत्रि द्वितीय प्रमोद गिणी ॥ करुणा मध्यस्थ सार ॥५॥

ढाळ॥ नच्छगढ़श जाणइरे वलाय ॥आवइ लोक सरीयो सिंघल्या वइलो धमाय॥ म्हाराहो राज नच्छरे घमाय॥ ए देशी॥ भावना कही तुम्हे नामे निरधार॥ एहथी पामेरे रुडो मुगति दवार॥ म्हार। मानीताहो पूज्य अरथ सुणाय॥ सहु जीव साथे राखे प्रेम परिणाम॥ पहिली ए कहीये मैत्री भावना नाम ॥म्हा०१॥ गुणवंतना गुण ग्रही चित्त लाय॥ बीजी प्रमोद भावना कहे

वाय॥म्हा० दीन दुखी देखी दया मनें मांहिं॥ ए कही करुणा भावना उच्छांहि॥म्हा०२॥ क्रूर करम करे जे नर नारि ॥ देव गुरु निंदि निन्हव अपार ॥म्हा० राग द्वेष नाणे चित्त मझार ॥ मध्यस्थ भावना एह विचार ॥म्हा०३॥ इणपरे आराधे साधे जिन धर्म॥ मूळथी उपामी नाखे आठे कृत कर्म ॥म्हा० कुमर नरिंद सुणी हरख्यो अपार॥ विविध प्रकारे करी पुण्य सिरदार॥म्हा०४॥ सात खेत्र श्रावकना कह्या जिनराय॥ निज वित वावे नृप तिहां शुभ भाय ॥म्हा० चउद सहेंस जिन कराव्या प्रासाद ॥ जिण दीठां भागे सहु मन विखवाद॥म्हा०५॥ जनम दिक्षा ने जिन न्यान निरवाण ॥ तिहां जिन भूवन कराव्या नृप जाण ॥ म्हा० सोळ सहेंस कर्या जिण ऊद्धार॥संप्रति नरिंद परे करे विस्तार॥मा०६॥ ऊंचो पंचविस धनुषस्युं प्रेम ॥ भुवन कराविं मांहिं थाप्या श्री नेम॥म्हा० नील रतन मय बिंब सुप्रधान॥ बहुत्तर जिनालुं तिहुअणपाळ अभिधान॥म्हा०७॥ तारिंगानो जिहां छे पर्वत विशाळ ॥एक प्रासाद कराव्यो भूपाळ ॥म्हा० गगनप्रमाणे ऊंचो हाथ चोवीस ॥मा०बिंब एकसो आंगुल एक ज

भीश ॥मा०८॥ अजित जिणंद मांहि थाप्या भगवंत ॥मुखडुं देखीनें लहीयें सुख अनंत ॥मा० आव्यो नृप चंबावती नयरी मझार ॥ हेमसुरिसरने जिहां दीक्षा अधिकार ॥मा०ए॥ आलिग वसही वीर सुमासाद॥ बिंब रतन मय कराव्यो आल्हाद ॥मा० पादुका कराव्या गुरु हेमना नरिंद ॥ पुस्तक भंमार तिहां कराव्या आणंद ॥मा०१०॥ त्रेसठ सिलाका महा पुरुष पवित्र ॥ हेमसुरिसर कीधा तेहनां चरित्र ॥मा०ग्रंथ तणी संख्या सहँस छत्रीस॥ सोवन अक्षरे रुमी लखावी अधीश ॥मा०११॥ ते पोथी लेइ धरी गजवर खंध ॥ संघ चतुर्विध धरम सबंध ॥मा० आणी आपी गुरु हेमसुरि हाथ ॥ सांजळे निरंतर ग्रंथ नर नाथ ॥मा०१२॥ इग्यारे रुमा बारेरे उपाग ॥ सोवन अक्षर नृप लिखावे सुरंग ॥मा० योगशास्त्र केरा बाररे प्रकाश ॥ वीस वीतराग केरां स्तवसुं विलास ॥मा०१३॥ बत्रीश प्रकाश ए सोवन लिखाय ॥ पोथी हाथे धारी सारी नित्य गुणे राय ॥मा० एकसो अढारमी थइ ए रसाळ ॥ कहे जिनहरष भिजावो रुमी ढाळ ॥मा०१४ ॥

सर्व गाथा २६०२॥

ढाळ ११९ मी.

दुहा॥ वरस वरस सेत्रुंजनी ॥यात्रा करे नरेश॥ समकितधरा श्रावक तणी ॥ भगति करे सुविशेश ॥१ ॥ चित करे दुर्वळ तणी ॥ संभाव्या शत्रुकार ॥ आवे पवन छत्रीस नई ॥ गृहस्थ तणो आचार ॥२॥ पाषी आठिम पारणां ॥ साहमीने सुमहुत्त ॥ राय करावे मा नशुं ॥ आदर देइ बहुत्त ॥३॥ दान मानशुं आपीये ॥ तो फळ होय अपार ॥ आदरमान विवेक विण ॥ न वधे सोह लिगार॥४॥ श्रेयांस धन नयसार कहे ॥ संगम चंदनबाळा ॥ दान दीउ बहु विनयश्युं ॥ लही सुगति ततकाळा ॥५॥अज्ञानी आपे प्रघळ ॥ न करे कोइ विचार ॥ पात्र कुपात्र न ओळखे ॥ वेहनो दान असार ॥६॥ कुमर विनय बहु साचवे ॥ आपे सहुने दान ॥लाभाचार विचारणा॥ करे कुमर राजान॥७॥

ढाळ॥ घरे आवोहो राय यादीरा ढोला ॥ए देशी॥ इण परे धर्म आराधतां ॥ करतां इम उत्तम पात्र ॥रा० जग मांहि जस जेहनो॥ थयों राजरिषि जस नाम ॥राजा०८॥ इम पुछेहो मन मोहन राजा ॥ हेमसूरी भणी ॥ शिर नामि राजा ॥ कर जोमी पाटण

स्वामी ॥ ॥राजा० इम० ए आंकणी॥ मुज कर्मे सुत
नवि थयो ॥ तिणे चिंता मुजने आज॥रा० महेर क
री मुजने कहो ॥ कुण भोगवश्ये ए राज ॥रा०३०२
॥ सूरि कहे राजा सुणो ॥ तुज पुत्रीनो सुत जेह ॥
रा० प्रतापमल्ल नाम जेहनो ॥ राज्य योग्य दीसे छे ए
ह ॥रा०३०३॥ बाळचंद्र वात सांभळी ॥ कही अज
यपाळने जाय ॥रा० भत्रीजो नृप कुमरनो ॥ तिणे म
नमां धरिय कषाय॥रा०३०४॥ बाळचंद्र वयरी थयो
॥ छळ जोतो रहे निसि दिस ॥रा० गुरुनुं भुंडुं चिंतवे॥
कडुउं बोले मन रीस ॥रा०३०५॥ गुरु चेले अणबणत
थइ ॥ मन भागां आवी राय॥रा० नयणे नयण मीले
नहीं ॥ एक एक भणी न सुहाय ॥रा०३०६॥ मांहो
मांहीं चडवमे॥ शिष्य फिटी थयो कूशिष्य ॥रा० आं
बो जाणी उछेरीयो॥नीममीयो धत्तुर वृष्य ॥रा०३०
७॥ जिम गर्गाचारय तणा ॥ दुखदाइ थया सिश्य व
र्ग ॥रा० गोसाळे जिम वीरने ॥ प्रतिकूळ कीया उपस
र्ग ॥ रा०३०८॥ बाळचंद्र तेहवो थयो ॥ निज पूरव
पाप पसाय ॥रा० वगध्यासी बोले नहीं ॥ पण ताके
दाय उपाय ॥रा०३०९॥ इण अवसरे नरपति कहे॥

तेमी गुरु हेमसुरिस ॥रा० मुज सगति पुन्य में कर्यों ॥ रही मनमां एक जगीश ॥रा०इ०१०॥ रुप कनक मणी रतनना॥ जिन बिंब भरावुं भूर ॥रा० पीतळ काष्ट पाषाणमें॥ निज मान प्रमाण संपुर॥रा०इ०११॥ सफळ इच्छा करो गुरु कहे ॥ राय न कीयो कोइ विलंब रा० मान प्रमाण करावीया ॥ सुदर जिनवरना बिंब ॥रा०इ०१२॥ मुहुरत सार लेई करी ॥ ओछव माड्यो पुर माहिं ॥रा० धर्म काजे धन व्यय करे ॥ संघ भगति करे उछांहि ॥रा०इ०१३॥ अंजन मुहुरत अवसरे ॥ बेग आचारज अढार ॥रा० धनीयाळा ऊपरे ठव्यो ॥ बाळचद्र कू सिश्य तिवार ॥रा०१४॥ अजयपाळ आवी कहे॥ बाळचंद्र बेठो इहा केम ॥रा० सिश्य कहे मुहुरत जोऊ ॥ जिम थाये सहुने खेम ॥ रा०इ०१५॥ जो भग हुवे मुहुरत तणो ॥ तो थाये प्रतिमा भंग ॥रा० हेमसूरिंद जाणे नही ॥ दुख लहे नृप नही उछरंग ॥रा०इ०१६॥ वचन सुणी बाळचंद्रनो॥ कहे इणीपरे तव अजयपाळ ॥रा० एकसो ओगणीस

ढाळ १२ मी.

दुहा॥ अजयपाळ कहे एहवुं॥ बाळचंद्र सुण वा
त॥ टाळि मुहुरत रायने ॥ जिम थाये व्याघात ॥१॥
मुहुरत भंग कीये मरे ॥ कुमरपाळ राजान॥ राज लेइ
तुजने करुं ॥ हेमसुरिंद्र समान ॥२॥ वचन सुणी गुर
थी फिर्यो ॥ लोभे लक्षण जाय ॥ हवे मुहुरत वेळा
थइ ॥ वहिला हुवो गुरुराय॥ ३॥ हेम ताम अंजन क
री॥ करी प्रतिष्टा सार ॥ भीम वणिक आव्यो तिसे॥ बिं
ब लेइ तिणि वार ॥४॥ पुन्य प्रतिष्टो बिंब ए ॥ थाये
जिम आनंद ॥ मुहुरत वेळा टळी गइ ॥ भाखे हेम
सुरिंद ॥५॥

ढाळ॥ नेणारोहे मुजरोदे रामा वांमणी ॥ए देशी॥
वचन इश्यां गुरुनां सुणी॥ मुख झांखो दोल मांहि दि
न ॥ मन मांहिं दिलगीर थयो भीम वाणीयो ॥ मान
व भव अयलो गयो ॥ धिग धिग हुं मानव पुन्यहिन
॥म०१॥ मन इच्छा मनमां रही॥ पुन्य पाखे किम था
य ॥म० भला मनोरथ सहु करे ॥ पुन्य पाखे ते इम
ही जाय ॥म०२॥ कूआ केरी छांह ज्युं ॥ मन मांहिं
मननी वात ॥म० करीय मनोरथ आवीयो ॥ मु

स पोति नही पुन्य संघात ॥म०३॥ इंश करे भाणी प णी ॥ जाणे ल्युं त्रिभुवन राज ॥म० पुन्यहीण पोता त णुं ॥ किम थाये सफळुं मन काज ॥म०४॥ सुकृत कोइ कीधो नहीं ॥ में भरीयो पशुआं जिम पेट ॥म० योवन पायो मायनो ॥ भूंइ मारी में भारी नेट ॥म०५ ॥ प्रतिमा पीतळ कादनी ॥ नान्ही तो अंगुष्ट प्रमाण॥ म० मुनिवर आव्यो एहवो ॥ कहीये ते शुद्ध श्रावक सुजाण ॥म०६॥ बिंब भराव्युं ते सुणी ॥ इहां आव्यो अंजनने काज ॥म० ते पण काज थयो नहीं ॥मुज थाशे शी गति महाराज ॥म०७॥ दुख भर इणि परे झूरतो ॥ देखीने करुणा धरी हेम ॥म० राग देखी श्रा वक तणो ॥ मन मांहि तव आव्यो प्रेम ॥म०८॥हेम सूरिसर पूछीयो॥ कांइ मुहुरत छाया छे शिश्य ॥म० मुहुरत हवणां छे खरो ॥ पहिले हुं चुक्यो परतक्ष ॥ म०९॥ चली हेम जोवे जिश्ये ॥भद्रा मुखे मुहुरतप नयुं ताम ॥म० हाथ घसे मुख निससे ॥ विणसाडयो दुशमन सहु काम ॥म०१०॥ अगनि साप जळ कामि नि ॥ राजेशर तस्कर हथीयार ॥म० दुशमनथी बीहे नहीं ॥ निश्चे ते दुख लहे अपार ॥म०११॥ चेलो मु

स दुशमन थयो ॥ दुशमननो में कर्यो वेशास ॥ म० .पापी मुजने छेतर्यो ॥ इणे पाड्यो भृग जिम मुज पा स॥म.५२॥ दूध भळाव्यो मांजारने ॥ वानरने आप्यो आराम ॥म. दुशमन काम भळावीयो ॥ निश्चय्यें वि णसे ते काम ॥म.१३॥ भावी न टळे केहथी ॥ श्यो कीज मन मांहीं खेद ॥म. अतर ज्ञान विचारीने ॥ न न चिंता गुरु नाखी छेद ॥म.१४॥ शुभ मुहुरत अंज न करी ॥ भीम हाथे आप्यों जिन बिंब ॥म. तुज घ रे रिद्धि भराइशे ॥ पुन्य कारिय करतो विलंब ॥म. १५॥ कुमर तमी गुरु इम कहे ॥ जिन मंदीर जिनप्र तिमा गंग ॥म. छठे अंग थाइश्ये ॥ वळी पफशे तुज अंग सुरंग ॥म.१६॥ माहरे पण छे ढुंकमो ॥ मरवा नो टाणो महाराय ॥म. तेतो चिंता मुज नही ॥ पण माहरो मुजने दुख थाय ॥म.१७॥ तुज सरीखो फर मातमा॥कोइ न हुवो न हुश्ये भूपाळ॥म. एकसोने वीतमी ॥जिनहरषे कही एमी ढाळ॥म.१८॥सर्व गाथा २६४०.

ढाळ १२१ मी.

दुहा॥ कुण करशे पशु जीवनी॥ भुख्यां तरश्यां सार॥ दुखियां दोहिला माणसां ॥कुण करशे उपगार

॥१॥ साहमीनें कुण पोसशे ॥ कुण देशे आधार॥ क हो किसी परे थाइशे ॥मुनिवर तणो विहार ॥२॥जि न मदिर जिन बिबनी ॥ कुण करशे हवे सार ॥ तुज पाखे भरशे कवण ॥ पुन्य तणो भंडार ॥३॥ सघ सि दाश्ये तुज विना ॥ सिदाश्ये जिन धर्म ॥ तुज विण काइ न जाणशे ॥ जैन वचनना मर्म ॥४॥ तुज पा ख सिदाइशे ॥ पुन्य तणां सहु ठाम ॥ तिण मुजने दु ख उपजे ॥ हेमसूरि कहे आम ॥५॥

ढाळ॥ में जाण्यो नहीं वीछुरन अइसौरे होय॥ ए देशी॥ राग केदारो विहागमो ॥ वचन इश्यां शुणी कुमर नरेशर ॥ शुभ ध्यान तिणी वार करे ॥ आराध न पाप आलोवे॥ व्रत टाळे अतीचार ॥१॥ भव भव कीधां पाप आलोवे राय ॥ आश्रव छांडी दुरगति दा यक ॥ सदगति करे उपाय ॥भ. ए आंकणी॥ करे खा मणा सहु संघातें॥ मुके पाप अढार ॥ पाप भराये जे हथी प्राणी ॥ छेहनो सुणो विचार ॥भ.२॥ जीव त णो हिंसा नवी कीजे ॥ वचन अळीक निवारे ॥ पर धन चोरी किमहि न कीजे ॥ दुर तजी पर नार॥भ. ३॥ धन उपर अति मूरछा न धरे ॥ मुंकी ममवी करो

थ ॥ मान माया लोभ दूर निवारे ॥ जिम हुए आतम शोध ॥भ.४॥ राग द्वेष वे वंधन जोमी ॥ कलह न दी जे कलंक ॥ परनी चाम्मी करतां माणी ॥ मनमां आ णो संक ॥भ.५॥ रतिने अरति न धरीये परना ॥ न कहो अवरण वाद ॥ माया मरखा वचन न वोले॥ तजि मिथ्यात प्रमाद ॥भ.६॥ पाप अढार आलायां इणि परे ॥ मिच्छादुकम्म देय ॥ पाप थकी वीहे उत्तम नर ॥ सरणां च्यार करेय ॥भ.७॥ पहिलो सरण अ रिहंतनो ॥ दोष अढार रहित्त ॥ समवसरण मध्य धर्म प्रकाशे ॥ अतिशय सुगुण सहित ॥भ.८॥ बीजो सरणो सिद्ध निरंजन ॥ सुख वळ वीर्य अनंत ॥ ज्ञान अनंत अचळ अक्षय पद॥ कीधो भवनो अंत ॥भ.९॥ साधु त णो सरणो हवे त्रीजो ॥ गुण धर सत्तावीस ॥ सुमति गुप ति चारीत्रज पाळे ॥ ज्ञान क्रिया निशी दीश ॥भ.१० ॥ धरम सरण चोथो चित्त धारे ॥ जिनवर भाख्यो जे ह ॥ दया मूळ अनुकूळ मुगतिशुं ॥ उत्तम सरणां एह ॥भ.११॥ लाख चोराशी जिव खमावुं ॥ पुढवी पाणी तेज ॥ वाउ सात सात लाख सहुनी ॥ मिच्छादुक्कड दे ज ॥भ.१२॥ दस लाख प्रत्येक वनसपतीनी॥ चउद ला

ख साधार ॥ बे ति चोरिंद्री जीव तणी गती ॥ बे बे ला
ख विचार ॥ भ० १३ ॥ च्यार च्यार देव नारकी
तिर्यंचनी॥ चऊद लाख मनुष्य ॥ परभव इण भवे जे
ह विराध्यां ॥ तेह खमावुं प्रत्यक्ष ॥भ०१४॥पनरह क
र्मादान तणा जे ॥ मुजने लाग्यां पाप ॥ ते आलो
ऊं निंदुं गरहुं ॥ निःशल्य थइने आप॥भ०१५॥ दुकृ
त निंदुं सुकृत अनुमोदुं ॥ इह भव परभव पाप ॥जा
ण अजाणपणे जे कीधां॥ ते आलोऊं आप॥भ०१६
॥ सामायक पोषध व्रत भाग्यां ॥ लाग्यां दोष अने
क ॥ अरिहंतादि आशातन करतां ॥ नाण्यो तिहां वि
वेक ॥भ० १७॥ माहरो जीव एकेंद्री मांहीं ॥ उपनो त
स अरलोह ॥ थइ हथीयार हण्या जीव बहुला ॥पा
पोपगरण मोह ॥भ०१८॥ ते वोसराऊं उपग्रण इण भ
वे ॥ तरुअर मूळी कीध ॥ वाहण यंत्र घाणी हळ मु
सळ ॥ ते वोसरावी दीध ॥भ०१९॥ वउणी जातिमां
हुं जइ उपनो ॥ सूत्र कताणो तास ॥ तेहनां गुंथ्यां
जीव हणेवा ॥ वोसराऊं जाळ पास ॥भ०२०॥ भम
तां देव तणी गति उपनो ॥ कीधां भोग अपार ॥ विं

भ०२१॥ परमाधामी देवें अधर्मी ॥ थयो बहु पाप सं योग ॥ मारया वींध्यां वाळ्या नारक ॥ शेक्यां अ गनि प्रयोग॥भ०२२॥ नारकी भव माहीं हुं आव्यो॥ वेढ करी धरी क्रोध ॥ शस्त्र विहुर्वी नारक छेद्यां॥ की धो सबळ विरोध ॥भ०२३॥ भमतां मानव गति में पा मी॥नीच कुळे अवतार ॥तिहां बहु जीव तणां वध की धां ॥ भक्षण कीधां अपार ॥भ०२४॥ तिर्यंचनी गती मांहिं आव्यो ॥ थयो हुं हिंसक जीव ॥ जीव हण्या तिणे भवे में पापी ॥ कीधां पाप सदीव ॥भ०२५॥ इ म भव भमतां दुकृत कीधां ॥ आळोवे भूपाळ ॥ कहे जिनहरष सुकृत अनुमोदे ॥ एकसो एकवीसमी ढाळ॥ ॥भ०२६॥ सर्व गाथा २६८०॥

ढाळ १२२ मी.

दुहा॥ दान शीयळ तप भावना ॥ श्री जिनवरनी भक्ति ॥ सेवा कीधी साधुनी ॥ धर्म कर्यो निज शक्ति ॥१॥ ते अनुमोदुं हुं वळी ॥ जैन कराव्या बिंब ॥जि न प्रतिमा साहमी भक्ति ॥ अनुमोदुं अविलंब॥२॥ पु स्तक जेह लखावीयां ॥ बिंब प्रतिष्टा जेह॥ यात्रा क री तीरथ तणी ॥ हुं अनुमोदुं तेह ॥३॥ जिन वाणी

श्रवणे सुणी ॥ टाळ्यां अकर अन्याय ॥ अनुकंपा आणी हीये ॥ ते अनुमोदे राय ॥४॥ बारह गुण अरिहंतना ॥ आठ सिद्ध जगदीश ॥ आचारय छत्रीस गुण ॥ उझवाय पचवीस ॥५॥ उत्तम गुण मुनिवर तणा ॥ धारुया सत्तावीस ॥ बारह व्रत श्रावक तणा ॥ अनुमोदुं निशि दीश ॥६॥ जिनवर वचनें अवरमां॥ उत्तम जे गुण होय ॥ ते पण अनुमोदुं सहु ॥ नांखुं पातिक धोय ॥७॥

ढाळ॥ चेतोरे चित प्राणी ॥ए देशी॥ सुकृतनी अनुमोदनारे ॥ करे कुमर भूपाळ॥ पाप सहु आलोइया ॥ थाये तेहथीरे हळुओ ततकाळके ॥१॥ भाखेरे भव्य प्राणी ॥ भव्य प्राणीरे श्री कुमर नरेश ॥ जिणे टाळ्योरे निज पाप किलेशके॥भा० ए आंकणी॥ हेमसुरिदना पाय नमीरे ॥ कर जोडी कहे राय ॥ बोध बीज तें मुज दीयो ॥ इह परभवरे शेवुं तुज पायके ॥ भा०२॥ श्रावक हुं तुजथी थयोरे ॥ तुजथी पाम्यो धर्म ॥ तुमथी सहु सुख पामीयां ॥ मिथ्या मतिरे मुज भागो भर्मके ॥भा०३॥ हेम कहे राजा सुणोरे॥ तें शुद्ध पाळ्यो धर्म॥जिन शासन दीपावीयो ॥तुज पोतिरे

हलुआं कर्मके ॥भा०४॥ हेम इस्युं नृपने कहेरे ॥ मत देज्यो मुज पाट॥ उवेखी बालचंद्रने ॥ रामचंद्रनेरे था प्यो गहगाटके ॥भा०५॥ तिणे अवसर सुणज्यो हवेरे ॥ बात थइ विपरीत ॥ मांथे मणी छे हेनने ॥ ते जो गीरे दीठी थइ प्रीतके ॥भा०६॥ योगी बहु बुद्धि केळवीरे ॥ मणी लेवानें काज ॥ पण तें हाथ नवी चढे॥ तव आव्योरे जोगीमो वाजके॥भा०७॥वहिरी मुनिय र आवतारे ॥ दीठो तेणे नगन्न ॥ आवी पासे उभो र ह्योरे ॥ कहे विहरीरे श्युं लाव्या अन्नके ॥भा०८॥ इ म कही झोळी मांहिरे ॥ योगी घाल्यो हाथ ॥ नखमां विष राख्यो हुतो॥ ते पसरयोरे मोदकनी साथके॥भा० ९॥ पोशाळे मुनीवर आवीयारे ॥ आलोइ सहु भात॥ झोळो गुरु आगळ धरी ॥ गुरु आपेरे विहची तिल मात के ॥भा०१०॥ ते लाडु पोते लीयोरे॥ कीधो तस आ हार ॥ काया लागी धूजवा॥ जीव थायेरे आकुल ति ण वारके॥भा०११॥ तेमी ततखीण हींमीयोरे॥ पूछे हे मसूरिद ॥ केहना घेरथी लाडुओ॥ तें विहरयोरे ते भा खे मुणिंदके ॥भा०१२॥ वहिरयो श्रावकने घेररे॥ पण एक सुणो विचार ॥ वाटे एक योगी मिल्यो ॥ ते फर

शीर गयो ए आहारके ॥भा०१३॥ वेवी वात हवे स हीरे॥ योगी घाली घात॥ विष मिश्रित मोदिक भख्यो ॥ जीववानीर हवे केही वातके ॥भा०१४॥ विष पस र्‍यो मुनिवर भणीरे ॥ साते धाते जोर॥ चेलाने तेमी कहे ॥ कह्यो करज्यो मत करज्यो सोरके ॥भा०१५॥ देवांगत थाउं जिसेरे ॥ चेह करज्यो इण ठाम ॥ दूध पात्र भरि मुंकज्यो ॥तिण मांहिरे पमशे मणि तानके॥ भा०१६॥ ते मणि संग्रहज्यो तुलेरे॥ शिखामण गुरु दी ध ॥ एकसो बावीसमी ढाळ ए ॥ जिनहरषेरे संपूरण कीधके ॥भा०१७॥ सर्व गाथा २७०४॥

ढाळ १२३ मी.

दुहा॥ हेम हवे अणसण करे ॥ धरि रिदे अरि हंत ॥ आतम साखे आराधना ॥ रिषिपति तेम करं त ॥१॥ चउ गतिमां भमतां थकां॥ जे में मेळ्यां पा प ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसरुं॥ न करुं एहशुं व्याप ॥२॥ लाख चोराशी जीवशुं ॥ माहरे समता भाव ॥ इण भव परभव दूहव्यां ॥ खामुं इण प्रस्ताव ॥३॥ च तुर च्यार सरणां कर्यां ॥ आलोया अतिचार ॥ दश मे द्वारे हेमनो ॥ प्राण गयो तिणि वार ॥४॥ भुवनप

ति सुर उपना ॥ जिहां बहु सुख समृद्धि ॥ देव तणा सुख भोगवे ॥ पुन्ये पामी रिद्धि ॥५॥ जनम थयो श्री हेमनो ॥ इग्यारे पस्ताळ ॥ काती शुदि पूनम दिने ॥ घर घर मंगळमाळ ॥६॥ इग्यारसें चउपने॥ जेणे दीक्षा लीध ॥ इग्यारे वासठ समये ॥ आचारय पद दीध ॥७॥ संवत बार ओगणत्रीसमे ॥ पुहुता मुनि परलोक ॥ वरस चोराशी आऊखु ॥ कीरति जास त्रिलोक ॥८॥

ढाळ॥ मारी वहेनी कहे कांइ अचरीज वात ॥ ए देशी॥ सुर लोक पुहुता मुनि जिशे ॥ नृप कुमरपाळ तिवार ॥ भला चूआ चंदन अगरशुं ॥ करे काया संसकार ॥१॥ मोरा सदगुरु तुं मुज गुरु सिरदार ॥ धरम तणो दातार ॥ तुं जग जीव आधार ॥ तुज विण सुनो संसार ॥मो०२॥ मुज धरम मारग तें दीयो॥ मुज कीयो तें उपगार ॥ पशु थकी माणस कीयो ॥ न लहुं तुज गुण पार॥मो०३॥ सुख दुख कहेतो तुज भणी ॥ जिम मागे बाळ ॥ कांइ गुपत वात न राखतो॥ प्रीति तणो प्रतिपाळ ॥मो०४॥ तुं ज्ञाननो दरीयो हुतो ॥ सहु ज्ञान तुज आधार ॥ हवे ज्ञान किहां रहेशे

नइ ॥ तुज पाखे निरधार॥मो०५॥ संसय सहुना टा
ळतो ॥ देशना अमृत धार ॥ केवळी कळियुगनो हुतो
॥ मोटो तुं अणगार ॥मो०६ ॥ तुज विना सूनो द्रं
गमो ॥ तुज विना सुनो राज ॥ तुज विना सुनो हुं
थयो ॥ कोइ न सुजे काज ॥मो०७॥ मुज रात दि
न सुख सालशे ॥ अवलोकि अहीठाण॥ इहां वसता
गुरु माहरा ॥ इहां गुरु करता वखाण ॥मो०८॥ मु
ज विरह वेदन दइ गया ॥ लेइ गया सघळो सुख॥
जिम पंजरे पोपट पड्यो ॥ दिलमां माने दुख ॥मो०
९॥ अज्ञान हीयमाथी हवे॥ कुण काढशे ए सह्य ॥म
न हुंम मन मांहिं रह्यो॥ जिम गुंगानी गह्य॥मो०१०
॥ निज वस्त्र फाड्यो नांखीयां ॥ मोहे कर्यो अज्ञान॥
लोटे आलोटे रेतमां ॥ विकल थयो राजान ॥मो०
११॥ रोवे रडे खिण भुंइ पडे ॥ मुखे हेम हेम झपंत॥
।ववीयडो पावस रते ॥ पीउ पीउ जेम रटंत॥मो०१२
॥ भसम लेइ समसाननी ॥ अंगे लगावे राय ॥ त्यां
सूए धरती भोजवी ॥ मोहे नृप मुंझाय॥मो०१३॥मो
हाथे बांधीयो ॥ छुटे नही ते पास॥ गुरु विरह गरु
दुखमां पड्यो ॥ पार न पामे तास॥मो०१४॥

झाणा आदमी ॥ जोवे न वाट कुवाट॥मुख थकी जि म तिम उचरे ॥ रावळो मोह उचाट ॥मो० १५॥ इम मो हनीने वश पड्यो ॥ दुख धरे बहु भुपाळ ॥ जिन हर ष ए पूरी थइ ॥ एकसो त्रेवीसमी ढाळ ॥मो० १६॥ सर्व गाथा २७२१॥

ढाळ १२४ मी.

दुहा॥ मंत्रीसर परधान सहु ॥ समजावे भूपाळ ॥ रा जन मोह निवारीए ॥ जगनो गति संभाळ ॥१॥ निश्चळ कोइ रह्यो नहीं ॥ जिन चक्री हळधार ॥ जायो ते जा वा भणी ॥ अथिर सहु संसार ॥२॥ जे उगे ते आथमे ॥ फूले ते कुमळाय ॥ जे चणीये ते ढही पडे ॥ जा ये ते मरी जाय ॥३॥ जे शिर छत्र धरावता ॥ गणता जग त्रिण मात ॥ ते पण पोहता परभवे ॥ अवर तणी शी वात ॥४॥ रामचंद्र रावण किहां ॥ किहां राजा हरिचंद्र ॥ पांडव कौरव सहु गया ॥ इंद चंद गोविंद ॥५॥ इम दृष्टांत देइ घणा ॥ टाळे नृपनो सोग ॥ गुरु गुण हीये वश्या ॥ जिम योगीसर योग ॥६॥.

ढाळ॥ हरख भरी हमशुं बोलज्योरे॥ ए देशी॥ रा ग सोरठ॥ गुण समरे निज गुरु तणारे ॥ जिम चात

क जळधार ॥ गज समरे वंध्याटवीरे ॥ जिम कोयल सहकार ॥ किणहीश्युं नेहलो म लागज्योरे॥ नहिं मा णस गहेला होय ॥ नेह नयण गमे रोइ रोइ॥ तुंतो कुमर नरेशर जोइ॥एहवो नेह म करश्यो कोइ॥कि० ४॥ निरधन समरे धन भणीरे ॥ वाळक समरे माय॥ चकवी चाहे सूरनेरे ॥ वछ समरे जिम गाय ॥कि० ५॥ घर समरे परदेशीयारे ॥ मानसरोवर हंस ॥ इम नेह लाग्यो हेमशुंरे ॥ नृपनो जिम नख मंस॥कि०६ ॥ खावां पीवां सहु तज्यांरे ॥ तज्यां सहु सुख देह॥ झूरि झूरि पंजर थयारे ॥ एहवो पापी नेह॥कि०७॥ अरहण माय गहेली थइरे ॥ मरुदेवा थया अंध॥ गो यम झूर्यो वीरनेरे॥ मोह सवळ प्रतिबंध ॥कि०८॥ चिं ता न करे राजनीरे ॥ बेसे नहीं दरवार ॥ हेम हेम मु खे उचररे ॥ हेम तजी कहो केम ॥कि०९॥ हेम वच न हीयमे धरेरे ॥ हेम वचनश्युं प्रीत ॥ राग तज्या सं सारनारे ॥ धरम धर्यो निज चित॥कि०१०॥ जाणे गु णे क्रिरिया करेरे॥ सेवे नहीं परमाद ॥ आतम उपसम रस भर्योरे ॥ सकळ तज्यो विखवाद ॥कि०११॥ व इरागे मन वाळीयोरे ॥ मोहनि बळ गइ छाक ॥ सुख

जाण्यां संसारनांरे ॥ जेहवां फळ किंपाक ॥कि० १२ ॥ काठि जिम गुजरातमांरे ॥ पापी पामे वाट॥ तिम एह तेरह काठीयारे ॥ रोके शिवपुर वाट ॥कि० १३॥ धरम संच्यो बहु दिवशनोरे ॥ जे धन लेता लूटि ॥ काया पाटण माहियीरे॥ काढ्या काठी कूटि ॥कि० १४॥ निज लय लागी धर्मशुंरे ॥ धरम रंगाणी देह ॥ नेह लगाव्यो धर्मशुं॥अवर अथीर तजी नेह ॥कि० १५॥ साते खेत्रे धन वावरेरे॥ धन नहीं आवे साथ॥ साथे तेहिज आवशेरे ॥ दीधो जमणे हाथ ॥कि० १६ ॥ नेह लगावो धर्मशुंरे ॥ जेह उतारे पार ॥ नेह लगावी कारमोरे ॥ प्राणी थाये ख्वार ॥कि० १७॥ काया माया कारमीरे ॥जाणी कुमर भूपाळ॥ तज्यो जिनहरष सनेहलोरे॥ एकसो चोवीसमी ढाळ ॥कि० १८ ॥ सर्व गाथा २७५३॥

ढाळ १२५ मी.

दुहा॥ कुमर नरेशर आपणो ॥ जाणी आसण काळ ॥ बांधी चतुर विचारीने ॥ पाणी पहेली पाळ॥ १॥ चूके नहीं चतुर नर ॥ साधे आतम काज॥ भव सायर तरवा भणी ॥ बेसो धर्म जहाज ॥२॥ क

ल्हे किणे दीठो दीवश ॥ खबर न लहीये आज ॥ क
रवुं ते करी लीजीये ॥ तुरत धरमनो काज ॥३॥ क
रीशुं करीशुं जे कहे ॥ जरा पुहुती आय॥ मंदीर ला
गो द्वारथी॥ किमही न काढ्यो जाय ॥४॥ कुण जा
णे किम होइश्ये ॥ अंतकाळ ए जीव ॥ पहिले धरम
करतडां ॥आळस म करि कलीव ॥५॥इम निज आ
तम शीखवे ॥ कुमर राय तिणी वार ॥प्रतापमल्ल तेमी
करी ॥ कीधो तिलक विचार ॥६॥

ढाळ॥ नणदीहे नणदी वालुंरे बुंदीरी चाकरी ॥ वालुं बुंदीरो देश मोरी नणदी ॥ए देशी॥ साजनहो सा जन ॥ अजयपाळ चिंते सुणी॥ राज आवे मुज हा थ ॥ मोरा साजन ॥ दाय उपाय कोइ करी॥ जो मा रुं नरनाथ ॥१॥ मोरा साजन धिग धिग पापी राज ने ॥राज्ये मराव्यो राज ॥मो० लाज गमावे लोभीयो ॥लोभी करे अकाज ॥मो०धि०२॥सा० राय भणी वि ष आपीयो ॥ थयो आकुलित शरीर ॥मो० सीप मं गावी ततखिणे ॥ जाये विष तेहने नीर ॥ मो० धि०३॥सा० सीप कोइ आपे नहीं ॥ अजयपाळनी शी ख ॥मो० जो कोइ जइ आपशे ॥ तास मगावीश भी

ख ॥मो॰धि॰४॥ सा. सारन कीधी नृप तणी ॥किए
ही न पूछी वात ॥मो॰ आथमतो वादे नहीं ॥ऊगमता
नी जात ॥मो॰धि॰५॥सा. प्राण तज्या पाटण धणी॥
शुभ परिमाणे तिवार ॥मो॰ वितरनी गती उपनो ॥ पा
म्या सुख श्रीकार ॥मो॰धि॰६॥सा. कुमर सारिखो रा
जवी ॥ मूओ जहर प्रयोग ॥मो॰ बीजानो श्यो आ
शरो॥ पामे विपति वियोग ॥मो॰धि॰७॥सा. विष प्रयो
गे नृप मूओ॥ विष प्रयोगे हेम॥मो॰ कोइ म कहेश्यो
एहवो ॥ हीये विचारो एम ॥मो॰धि॰८॥सा. खायक
समकितनो धणी ॥ गुरु जेहनो श्री वीर ॥मो॰ ते श्रेणी
क कठ पंजरे ॥ छंमंड्या प्राण शरीर ॥मो॰धि॰९॥सा.
चेमो श्रावक वीरनो ॥ जिनशुं प्रेम अपार ॥मो॰ को
णिक आगळ हारीयो ॥ मूओ गुफा दुआर ॥मो॰
धि॰१०॥सा.कृष्ण मूओ वनसासमां॥पाए लाग्यो तीर
॥मो॰ पण पद लहेशे जिन तणो॥उत्तम पुरुष सधीर॥
मो॰धि॰११॥ सगर तणा सुत सामटा ॥ साठ सहेस
सिरदार ॥मो॰ तीरथ रक्षा कारणे ॥ वळी मूआ ति
णी वार ॥मो॰धि॰१२॥सा. पहिले बांध्युं आउखुं ॥
ते भोगववुं अवश्य ॥मो॰ आ भव पुन्य कीधां हुए॥

या राय ॥ द्वेषी कुमर नरिंदनो ॥करे अनरथ अन्या य ॥१॥ देवल पाडे जिन तणा ॥ भांजे बिंब विशाळ ॥ धर्म ठाम सहु पाडीया ॥ पाडयां पोपधशाळ ॥२ ॥ पाटणमां पाडी करी ॥ जिन गृह बिंब अछेह॥ चा लयो तारिंगा भणी ॥ पाडवा जिन गेह॥३॥ पाटणना विवहारीया ॥ सहु मिलि करे विचार ॥ गज पाटे बे ठो गधो ॥ तेजी पाटे टार ॥४॥ हंस कुळे थयो का गडो ॥ उग्रसेन कुळ कंस ॥श्रेणीकने कूणिक थयो॥ कीधो पिता विध्वंस ॥५॥ अजयपाळ तेहवो थयो ॥ कीधो कुळ सकलंक ॥ खोयो नाम कुमारनो॥ कर्या अकृत्य निशंक॥ ६॥ केहनो कांइ नवि चले ॥ भांजे घडी अनेक ॥ एक कहे मणुओ इहां॥ छे ते नांहि वि वेक ॥७॥

ढाळ॥ गजरांना गीतनी देशी॥ ततखिण तिहां ते डाबीयोरे॥आवी उभो ताम ॥ सहु उठी उभा थया ॥ सहुने लिधो निज काम॥१॥वलाइ ल्यूं करो अम्ह का मनोरे ॥ अरे मणुआ बुद्धिवंत ॥ अरे बहु विद्यावंत॥ अरे सतुरिस गुणवंत ॥ अरे उपगारी संत ॥व.२॥ वा त कही सहु ते भणीरे ॥ लंजक बोल्यो ताम ॥ राय

णी समजावशुं ॥ लेशुं मुह मांग्यां दाम ॥व.३॥ जे मांगीश ते आपशुंरे ॥ राय भणी समजाय ॥ जिन मंदिर अगार तुं ॥ ताहरा पूजीश्ये पाय ॥व.४॥ वचन शुणी तिहांथी चल्योरे ॥ बेटो साथे लीध ॥ वेष कर्यो राजा तणो ॥ आडंबर तिणे बहु कीध ॥व.५ आगळ मुहुज घणा चल्यारे॥ पाछळ्यां लेठ कुपुत्र ॥ मणुओ तव खीजी कहे ॥ भलां बोळ्यां तें घरसुत्र ॥व.६॥ पुत्र जण्या सुख कारणेरे ॥ वयरी हुआ तेह ॥ लंठ लजावे तातने ॥ करे आप कलंकित देह ॥व.७॥ ते जाया जाया भलारे ॥ बाप रखावे नाम ॥ नाम गमावे बापनो ॥ ते जाया कहो किण काम ॥व.८॥ ते जाया श्ये कामनारे ॥ माय न पूजे पाय ॥ सुखकारी नहीं बापने ॥ ते अछता मांहि गणाय ॥व.९ ॥ एक जाया कुळ उद्धरेरे ॥ एक कुळ खांपण होय ॥ सायर सुत विष चंद्रमा ॥ तुं एह पटंतर जोय ॥व. १०॥ जे रचना तात कररिे ॥ पाळे तेह कुपुत्र ॥ ते सरिखो पापी न को ॥ तेहने मुखे विष्टा मुत्र ॥व.११॥ इश्यां वचन मणुआ तणारे ॥ पुत्र सुणी कहे एम ॥ राय तणी निते चलुं ॥ मुज उपर खीजो केम ॥व.१२

या राय ॥ द्वेषी कुमर नरिंदनो ॥करे अनरथ अन्या
य ॥१॥ देवल पाडे जिन तणा ॥ भाजे बिंब विशाल
॥ धर्म ठाम सहु पाडीया ॥ पाडल्यां पोषधशाळ ॥२
॥ पाटणमां पाडी करी ॥ जिन गुरु बिंब अछेह॥ चा
लायो तारिंगा भणी ॥ पाडवा जिन गेह॥ ३॥ पाटणना
विवहारीया ॥ सहु मिलि करे विचार ॥ गज पाटे बे
ठो गधो ॥ तेजी पाटे टार ॥४॥ हंस कुळे थयो का
गडो ॥ उग्रसेन कुळ कंस ॥श्रेणीकने कूणिक थयो॥
कीयो पिता विध्वंस ॥५॥ अजयपाळ तेहवो थयो ॥
कीधो कुळ सकलंक ॥ खोयो नाम कुमारनो॥ कर्या
अकृत्य निशंक॥ ६॥ केहनो कांइ नवि चले ॥ भांजे
घडी अनेक ॥ एक कहे मणुओ इहां ॥ छे ते मांहि वि
वेक ॥७॥

ढाळ॥ गजराना गीतनी देशी॥ ततखिण तिहां ते
डावीयोरे॥आवी ऊभो ताम ॥ सहु ऊठी ऊभा थया ॥
सहुने सिधो निज काम॥१॥बलाइ ल्युं करो अम्ह का
मडोरे ॥ अरे मणुआ बुद्धिवंत ॥ अरे बहु विद्यावंत॥
अरे सगुरिस गुणवंत ॥ अरे उपगारी संत ॥ब.२॥ बा
त कही सहु ते भणीरे ॥ लंतक बोल्यो ताम ॥ राय

नणो समजावशुं ॥ लेशुं मुह मांग्यां दाम ॥व.३॥जे मांगीश ते आपशुरे ॥ राय भणी समजाय॥ जिन मंदिर उगार तुं ॥ ताहरा पूजीश्ये पाय ॥व.४॥ वचन शुणी तिहांथी चल्योरे ॥ बेठो साथे लीध ॥ वेष कर्यो राजा तणो ॥ आमंबर तिणे बहु कीध ॥व.५ आगळ मुहुत घणा चल्यारे॥ पामयां लंठ कुपुत्र ॥ मणुओ तब खीजी कहे॥ भलां बोल्यां तें घरसुत्र ॥व.६॥ पुत्र जन्या सुख कारणेरे ॥ वयरी हुआ तेह ॥ लंठ लजावे तातने ॥ करे आप कलंकित देह ॥व.७॥ ते जाया जाया भलारे ॥ बाप रखावे नाम ॥ नाग गमात्र बापनो ॥ ते जाया कहो किण काम ॥व.८॥ ते जाया श्ये कामनारे ॥ माय न पूजे पाय॥ सुखकारी नहीं बापनें ॥ ते अछता माहिं गणाय ॥व.९ ॥ एक जाया कुळ उद्धरेरे ॥ एक कुळे खापण होय ॥ सायर सुत विष चंद्रमा ॥ तुं एह पटंतर जोय ॥व.१०॥ जे रचना तात करारे ॥ पाने तेह कुपुत्र ॥ ते सरिखो पापी न को ॥ तेहने मुखे विष्टा मुत्र ॥व.११॥ इश्यां वचन मणुआं तणारे ॥ पुत्र सुणी कहे एम ॥ राय तणी निते चलुं ॥ मुज उपर खीजो केम ॥व.१२

जिथ्यो राजा परजा तिसीरे ॥ जूओ वाप विगासि ॥ कुमर कान उत्तम कर्यो ॥ नूर नाम गमावे तास ॥व. १६॥ जिन मंदीर सुंदर करव्यांरे ॥ दीठां भागे भूख॥ अजयपाळ ते पामीयां ॥ तुमने घरनुं श्यो दुख ॥व. १४॥ संगत लागी रायनीरे ॥ मंदीर टाळुं वाप ॥ विगमे साधु कुसंगथी ॥ लगे संगतिथी पाप ॥व.१५॥ गांछा नी संगत थकीरे ॥ वांस फमाड्यो गात ॥ हंस काग नी संगेत ॥ ततखिण पामे मृत्यु घात ॥व.१६॥ नीच संगतिथी गुण गळेरे ॥ उंच संगति गुण थाय ॥ मुज संगति थइ रायनी ॥ तिणे कीधो एह अन्याय ॥व.१७॥ पाळीने मोटो कीयोरे ॥ परणावी बहु नार ॥ कुमार पाळ मत्रीजमो ॥ तेहनां तुं काम विचार ॥व.१८॥ ए तेहनो जो नवि थयोरे ॥ तो मुज वांक म टाळ ॥ नृप जिनहर्ष सुणावीयो ॥ एकसो छवीसमी ढाळ ॥ व.१७॥ सर्व गाथा २७०५॥

ढाळ १२७ मी.

दुहा. ॥ लंव कहे सुण पुत्र तुं ॥ एहवुं बोल म धीठ ॥ कानें झाल्या हाथीया ॥ रस्या न किणही दीठ ॥ १॥ कुण वारे राजा भणी ॥ राजा करे सो न्याय ॥ सा

यर जळधर नरपती ॥ किणही कळ्या न जाय ॥२ ॥ सीया तीयां पाणीया ॥ चोथो राय विचार ॥ नी ची गती ए च्यारनी ॥एहनी वात निवार ॥३॥ लोक पाळ ए पांचमो ॥ प्रजा तणो रखवाळ ॥ कुण शिख वशे एहने ॥ ए मोटो भूपाळ ॥४॥ त्रिभुवन कुळ ए उ पनो॥ ए परमेश्वर राम ॥माठुं न हुवे एहथी॥ सानि न हुवे शाम ॥५॥ कारण भीम आगे थया ॥ कीधा उ त्तम काम ॥अजयपाळ पण तेहवो ॥ किम गमश्ये नि ज माम ॥६॥

ढाळ॥ विमळजिन माहरी तुमशुं प्रीत ॥ए देशी ॥ वचन इश्या नृप सांभळीजी ॥ मनमा आवी लाज ॥ हाहा कुळ खपण थयोजी ॥ कीधां बहुत अकाज ॥१॥ नृपति मन मानी साची वात ॥ कुळ अंगार हु थयोजी ॥ कीधी नृपनी घात ॥नृ० ए आंकणी ॥क्रो ध रायनो उतर्योजी ॥ हीयो ठरीयो हीम ॥ धरमता म हवे पामवाजी॥ राय कहे मुज नीम ॥नृ०२॥ आ चारज रामचंद्रनेजी ॥ तेडाव्यो तिणी वार ॥ आपो पद रामचद्रनेजी ॥ वीनती करु वार वार ॥नृ०३॥रा मचंद्र कहे नृप सुणोजी ॥ तुम्हे कहो ते न्याय ॥पण

नहीं आज्ञा गुरु तणीजी॥कहो किम पद दीशराय॥नृ०
४॥ राय कहे मुज आगन्याजी ॥ द पदर्शी मुनिरा
य ॥ कहो न मानिश साहरोजि ॥ दुंख पामीश निज
काय ॥नृ०५॥ राम कहे राजा सुणाजि ॥ गुरुनु व
चन प्रमाण ॥ मे करवुं नवि लोपवुंजि॥ जब लग घ
टमां प्राण ॥नृ०६॥ दमम दुवालम तर करीजि ॥ मा
ने नहीं गुरु आण ॥ अनंत संसारी ते हुवेजि ॥ तर
कीधो अप्रमाण ॥नृ०७॥ म कर यती माहारण घणुं
जि ॥ मुज वचने द पाट॥ थोडाथा अनरथ घणोजि
॥ उपावेश्या माट ॥नृ०८॥ गुरु लोपी महा पातकी
जि॥ सांभळ गुणवंत भूप ॥ देखी पखीने कहोजि ॥
केम पडुं भव कूप ॥नृ०९॥ अजयपाल कोप्यो घणुं
जि ॥ भाखे इघ जम अश्न ॥ अय सील ताती उपरे
जि॥ द पद के कर सज्न ॥नृ०१०॥ ॥िपिवर कहे सु
ण राजवीजि ॥ लोपूं नही गुरु आण ॥ ताती लोह
सोला तणीजि ॥ मुजने मरण प्रमाण ॥नृ०११॥ मर
ण कर्या आगे घणाजि॥अनंत अनती वार ॥गुरु का
जे काया तजुंजि ॥ तो पामुं भव पार॥ नृ०१२॥ आ
गे पण मुनिवर थयाजि ॥ सह्या परीसह घोर ॥ खंद

क सूरि सिश्य पांचसेंजि ॥ घांणी पील्या जोर ॥नृ० १३॥ मुनिवर गजसुकमाळनोजि ॥ सोमिल वाळ्यो सिश ॥ ध्यान थकी चूक्यो नंहींजि ॥ पाय प्रणमुं नि शादिश॥नृं०१४॥ मेतारज मुनिवर तणोजि ॥वाध्र वीं टयो लेइ सीश ॥ सोनारे उपसर्ग कीयोजि ॥ नांणी मन मांहि रीस ॥नृं०१५॥ काया कीधी चोलणीजि ॥ सहु छंछोल्यो शरीर ॥ अढी दीवस कीमी तणीजि ॥ वेदन सइ थइ धीर ॥नृं०१६॥ घरणी भव पहिलीं त णीजि ॥जंबुका अति विकरांळ ॥ वयर वशें काया भखीजि ॥ अवंतीसुकमाळ ॥नृं०१७॥ थइर भयांतर ने वशेजि ॥खंदकरिषिनी खाल ॥ उतारी कोप्यो न हींजि ॥ ततखिण थयो निहाल ॥नृं०१८॥ बहु मुनि वर आगे थयाजि ॥ हुं पण तेहनो वाळ ॥ कहे जि नहरष वीह नंहींजि ॥ एकसो सतावीसमी ढाळ॥नृं० १९॥ सर्व गाथा २८२०॥

ढाळ १२८ मी.

दुहा. ॥ मरण तणो भय मुज नहीं ॥ श्युं देखा ले राय ॥ लोपु नहि गुरु आगन्या ॥ कर जिनआ वे दाय ॥१॥ ए पापी मुज मारशे ॥ चित वि॰

म ॥ तो पंमित मरणे मरुं ॥ करे आराधन ताम ॥ १ ॥ पाप आळोवे आपणां ॥ योनि चोराशी लाख॥ पाप लागां भमतां थकां ॥ आलोया निज साख॥ ३ ॥ जे में जीव विराधीया ॥ कीधां काज अकाज ॥ त्रिविध त्रिवधे पाये नमी ॥ तेह खमावुं आज ॥ ४ ॥ सहु मीत्र छे माहरा ॥ शत्रु न को संसार ॥ समता भाव हीये धरी॥ सरणा कीधा च्यार ॥ ५ ॥ सूतो रिषि सोल्ल वप रें॥ घास तणे परे देह ॥ बळयो चळयो मुनिवर नहि ॥ पहुतो सुरगति तेह ॥ ६ ॥

ढाळ॥ अम्मा मोरी परणायहे ॥ अम्मा मोरी जे समेरा जादवाहेहांजी ॥ ए देशी ॥ अम्मा मोरी धन रामचंद्रहे॥ अम्मा मोरी हेम सुगुरुनो वचन न लोपीयो हेहांजी ॥ अ० अजयपाळ नरिंदहे ॥ अ० पदवी माटे तेश्युं कोपीयोहेहांजी॥ १॥ अ० अगनि परजाळला भाणहे॥ अ० बीह न आण्यो मनमां रायनोहेहांजी॥ अ० पाळी गुरुनी आणहे॥ अ० जतन न कीधो जेणे कायनोहेहांजी ॥ २ ॥ पाय नमीजे तासहे ॥ अ० जोमडोये तेहना गुण गाइयेहेहांजी ॥ अ० राख्यो जिणे जस वादहे ॥ अ० तेह तणे नामे वलि जाइयेहेहांजी ॥ ३ ॥ स

स्यो परिसह जोरहे ॥अ० आण न खंमी हेमसूरिसनीहे
हांजी॥कीधो करम कठोरहे ॥अ० शी गति थाशे एअ
वनिशानीहेहांजी ॥ ४॥ भंमाणो वाळचंद्रहे ॥अ० लो
क कहे धिग धिग ए रायनेहेहांजी ॥ पापी हण्यो मु
निंद्रहे ॥अ० अधम तणो मुख देखे कुण जायनेहे
हांजी ॥ ५॥ वाळ ब्राह्मण स्त्री वाळहे ॥अ० पातिक मो
टां ए जगे जाणीयेहेहांजी ॥ ए अधिक कहेवायहे ॥
अ० रिषि हत्यानो पाप वखाणीयेहेहांजी ॥ ६॥ मुनि
वर मांहि पधांनहे ॥अ० आचारज अरिहंत बरोबरी
हेहांजी ॥ निरमळ श्रुत जसु ग्यानहे ॥अ० तेहनी ह
त्या इणे पापी करीहेहांजी ॥ ७॥ भमश्ये घणो संसारहे
॥अ० रिषि घाति ए दुख लहेशे घणोहेहांजी॥ नरग
निगोद मझारहे॥अ०पीलाशे प्राणी पापी तणोहेहांजी॥
८॥वाळचंद्र तणो अपवादहे॥अ०थयो पुर मांहिं फि
ट फिट सहु करेहेहांजी ॥ कलंक चमठ्यो निसवादहे
॥अ० कलंक चमठ्यो ते किमही न उतरेहेहांजी॥ ९॥
लोकां मांहिं फजीतहे॥अ० थयो वाळचंद्र घणुं घणोहे
हांजी॥ नृपश्युं भागो चीतहे ॥अ० एहनो संगते थया
लजामणोहेहांजी॥ १०॥खोइ कुळनी लाजहे॥अ० का

ळो टीलो भाळ चमावीयोहेहांजी ॥ कीधो अधम का जहे ॥अ० रिषि घाति विष कुमर भणी दीयोहेहांजी ॥११॥ हुं थयो गुरु द्रोहीमारहे॥अ० ए पापी नृपनो में कलो कर्योहेहांजी॥थयो सहु मांहिं ख्वारहे॥अ० हत्यारो मारो मनमां धर्योहेहांजी ॥१२॥ बहु परे की धी शेषहे ॥अ० बाळचंद्र चित लगायनेहेहांजी॥ आ व्यो सर्वानुभूति देवहे ॥अ० भाखे इणीपरे हण जइ रा यनेहेहांजी ॥१३॥ कीधुं वचन प्रमाणहे ॥अ० देव ह णेवा नृप पासे गयोहेहांजी॥ रयवाडी राजानहे॥अ० रमवा काज असवारी थयोहेहांजी॥१४॥ऊभो तरुअ र छांहहे ॥अ० सुरवर पेठो वाजीमां जइहेहांजी ॥च पाभी भूंइ मांहिंहे ॥अ० नांख्यो नृपने वात इशी थइ हहांजी ॥१५॥ अजयपाळना प्राणहे ॥अ० निकळतां किणे दीठा नहींहेहांजी ॥ कहे जिनहरष सुजाणहे ॥ अ० एकसो अठावीस ढाळ पूरी थइहेहांजी॥१५॥ स र्व गाथा ४०५२॥

ढाळ १२९ मी.

दुहा॥ जसे नृपने मारीयो॥ खुशी थया सहु को य ॥ मरी करी दुरगति गयो॥॥ पाप तणां फळ जोय

॥१॥ अति लोभी नर जे हुवे॥ पाप करे निरभीक॥
लाज गमे लक्षण गुमे ॥ दुरगति तास नजीक ॥२॥
जे नर थाये लोभीया॥ न करे तत्व विचार ॥ थो
मा सुखने कारणे ॥ घणो लीये सिर भार ॥३॥ लो
भी जीत्यो जग सहु ॥ लोभ न जीत्यो जाय ॥ भर
त बाहुबळ वे भिमत्या ॥ न गण्या सगपण भाय ॥
४॥ लोभे काको मारीयो ॥ रिषिपति हत्या कीध ॥
अजयपाळ दुख पामीयो ॥ दुरगतिनां फळ लीध॥५
बाळचंद्र दुखीयो थयो ॥ जो कीधो गुरु द्रोह ॥ पर
भव दुरगतिमां पमत्यो ॥ आ भव न लही सोह ॥६
॥ दुखीयो थयो बहु पापथी ॥बाळचंद्र अजयपाळ॥
इम जाणी पातिक तजो॥ सुख पामो सुविशाळ ॥७॥
ढाळ॥ बार वरसांरी साहिबो चाकरी पधार्या॥
तेरमे वरसे घर आयाहे सोहागिणी राणी हाजर हुए हु
लराइजे ॥ए देशी॥ एह चरित्र निज हीयमे धारी ॥
लोभ तजो नर नारीहो॥ सोभागी भवियण धर्मश्युंहो
चित लाइजे ॥ पाप तजोरे दुरगति दातारी ॥ धर्म क
रो सुविचारीहो ॥सो०१॥ सदगुरु वाणी मीठी अमीय
समाणी ॥ सांभळ उजट आणीहो ॥सो० बुझोरे तुम्हे

उत्तम पाळो ॥ पामो मुगति पटराणीहो ॥सो० २॥ दान
शील तप भावना भावो॥ समता जीव रहावोहो॥सो०
श्री जिनवरने चरणे चित लगावो॥ मन वंछीत फळ
पावोहो ॥सो० ३॥ हिंसा मिरखा अदत्त निवारो ॥चो
थुं ब्रह्मव्रत धारोहो ॥सो० परियह रात्रीभोजन वारो
ए रुड निज आतम तारोहो ॥सो० ४॥ च्यार कषाय
महा दुख दाता ॥ रहो समताशुं रातहो ॥सो० ज्ञाना
दिक भोजनशुं राता ॥ जिम पामो सुख साताहो ॥सो०
५ ॥श्री जिन भगति करो मन भावे॥ दुरगति नेडि ना
वेहो ॥सो० पांच कोडीना फुल प्रभावे ॥ कुमारपाळ
राजा पावेहो ॥सो० ६॥देश अढारमां आण मनावी॥
सघळे दया पळावीहो ॥सो० एहवो राज लीला जे पावे॥
ते जिन भगति प्रभावेहो ॥सो० ७॥ जीव दया पाळक
थयो राजा॥ अजी पुरे जस वाजाहो ॥सो० आगळ
सुरर लहेशे पळी ताजा ॥ ज्ञानादिक जिहां

चळ नाम रहायो ॥ जिन शासन दीपायोहो ॥सो०
१०॥ उत्तम नरनां चरित्र सुणीजे ॥ भावे चरित्र भणी
जेहो ॥सो० करम प्रबळ तुरत हणीजे ॥ पातिक घास
लुणीजेहो ॥सो०११॥ रिषभ कीयों में रास निहाळी
॥ विस्तर मांहिथी टाळीहो ॥सो० रास रच्यो निज म
ति संभाळी ॥ रसना पवित्र पखाळीहो ॥सो०१२॥सं
वत सत्तर बेताळीसे ॥ आसो शुदि सुजगीसेहो ॥सो०
विजय दशमि दिन तापस न दीसे ॥ नयर पाटण मन
हीसेहो ॥सो०१३॥ अधिको ओछो कहेवराणो होई॥
मुजने दोश न कोइहो ॥सो० रास कीधो पूरब रास
जोइ ॥सांभळज्यो सहु कोइहो ॥सो०१४॥ खरतरग
च्छ मांहिं विराजे॥ श्री जिनचंद्रसूरि छाजेहो ॥सो०
वाचक शांतिहरष गणि गाजे ॥ खेम शाखा माहिं रा
जेहो ॥सो०१५॥ तास चरण पंकज रस रातो ॥ भम
र तणी परे मातोहो ॥सो० कहे जिनहरष हरष भर गा
तो ॥रास सहुने सुहातोहो ॥सो०१६॥ अठावीससें गा
थानो दावो ॥ उपरे छहोंतर गवोहो ॥सो० रास रुमी
परे एह मल्हावो ॥ एकसो ओगणत्रीस ढाळ गावोहो॥
सो०१७॥ सर्व गाथा २८७६॥ सर्व ढाळ १२९. ग्रंथ

उत्तम प्राणी ॥ पामो मुगति पटराणीहो ॥सो॰२॥ दान सील तप भावना भावो॥ समता जीव रहावोहो॥सो॰ श्री जिनवरने चरणे चित लगावो॥ मन वंछीत फळ पावोहो ॥सो॰३॥ हिंसा मिरखा अदत्त निवारो ॥चो थो ब्रह्मव्रत धारोहो ॥सो॰ परिग्रह रात्रीभोजन वारो ॥ इम निज आतम तारोहो ॥सो॰४॥ च्यार कषाय तजो दुख दाता ॥ रहो समताशुं राताहो ॥सो॰ ज्ञाना मृत भोजनशुं राता ॥ जिम पामो सुख साताहो ॥सो॰ ५ ॥श्री जिन भगति करो मन भावे॥ दुरगति नेमि ना वेहो ॥सो॰ पांच कोडीना फुल प्रभावे ॥ कुमारपाळ राज पावेहो ॥सो॰६॥देश अढारमां आण मनावी ॥ सघळे दया पळावीहो ॥सो॰एहवी राज लीला जें पावे॥ ते जिन भगति प्रभावेहो ॥सो॰७॥ जीव दया पाळक थयो राजा॥ अजी घूरें जस वाजाहो ॥सो॰ आगळ सुख लहेशे वळी ताजा ॥ ज्ञानादिक जिहां झाझाहो ॥सो॰८॥जीव दयानो फळ देखाड्यो ॥ पाप कुपंथ नृ प छाण्ड्योहो ॥सो॰ समकितशुं बारह व्रत पाळ्यां॥ दु खण तेहनां टाळ्यांहो ॥सो॰९॥ गुरु हेमाचारज सा खो ॥ श्राद्ध कुमारपाळ इषोहो ॥सो॰ जगमां अवि

चळ नाम रहायो ॥ जिन शासन दीपायोहो ॥सो०
१०॥ उत्तम नरनां चरित्र सुणीजे ॥ गावे चरित्र भणी
जेहो ॥सो० करम प्रबळ तुरत हणीजे ॥ पातिक घास
लुणीजेहो ॥सो०११॥ रिषभ कीयो में रास निहाळी
॥ विस्तर मांहिथी टाळीहो ॥सो० रास रच्यो निज म
ति संभाळी ॥ रसना पवित्र पखाळीहो ॥सो०१२॥ सं
वत सत्तर वेताळीसे ॥ आसो शुदि सुजगीसेहो ॥सो०
विजय दशमि दिन तापस न दीसे ॥ नयर पाटण मन
हींसेहो ॥सो०१३॥ अधिको ओछो कहेवराणो होई॥
सुजने दोश न कोइहो ॥सो० रास कीधो पूरव रास
जोइ ॥सांभळज्यो सहु कोइहो ॥सो०१४॥ खरतरग
च्छ मांहिं विराजे॥ श्री जिनचंद्रसूरि छाजेहो ॥सो०
वाचक शांतिहरष गणि गाजे ॥ खेम शाखा मांहिं रा
जेहो ॥सो०१५॥ तास चरण पंकज रस रातो ॥ भम
र तणी परे मातोहो ॥सो० कहे जिनहरष हरष भर गा
तो ॥रास सहुने सुहातोहो ॥सो०१६॥ अठावीससें गा
थानो दावो ॥ उपरे छहोतर गावोहो ॥सो० रास रूमी
परे एह मल्हावो ॥एकसो ओगणत्रीस ढाळ गावोहो॥
सो०१७॥ सर्व गाथा २८७६॥ सर्व ढाळ १२९॥ ग्रंथ

संख्या ४१६० इति श्री कुमारपाळ राजानो रास.





जाहेरखबर.

सर्वे साहेबोने खबर आपवामां आवे छे जे आ पुस्तक जेओने जोइए तेओने अमदावाद मधे घांचीनी पोळमां प्रसिद्ध कर्त्ताने त्यांथी तथा अमदावाद टाइम्स प्रेसमांथी रोकडी कीमते मळशे. देशावरना घराकोए टपाल खरचना छ आना वधारे मोकलवा नाट पेड कागळ लेवामां आवशे नही.

अमारे त्या बीजा घणी जातनां जैन धर्मना तथा कायदाओनां तथा वार्त्ताओ वीगरेनां पुस्तको मळेछे माटे जेओने जोइए तेओए अमारा उपर कागळ लखी मोकलशो तो ते घणी कीफायतथी मळशे.

अमारा छापखानामां सर्वे जातनुं गुजराती शास्त्री इंग्रेजी टाइपनु तथा सीलानुं काम छपाय छे माटे ते जेओने छपाववु होय तेओने कीफायतथी छापवामा आवशे.